Vijaya™

ज्ञान एवं पाठ्यक्रम

(Knowledge and Curriculum)

Dr. Avtar Singh Rahi

VIJAYA PUBLICATIONS
LUDHIANA

ज्ञान एवं पाठ्यक्रम

Published b
Vijay K
Vijay
546

Pt.S.R.S.B.Ed.C.
2455
AL-10 / S-2

PT. SITA RAM SHASTRI B.Ed. TRAINING COLLEGE
LIBRARY
Acc. No. 2455
BHIWANI

By

Dr Avtar Singh Rahi
M.Sc. NET M.Phil. Ph.D. (Chemistry),
M.Ed. Ph.D. (Education), PGDHRM PGDJ MBA
Head and Associate Professor
Government Post-Graduate College
Ambala Cantt.

VIJAYA PUBLICATIONS
EDUCATIONAL PUBLISHERS
546, Books Market, LUDHIANA – 141008

Published by :
Vijay Kumar Tandon
Vijaya Publications
546, Books Market, Ludhiana (Pb.)
E-mail : vijayapublication@yahoo.in
Contact : 98140-67258, 97793-68600

COPY RIGHT

This book or part thereof may not be reproduced in any form without the written permission of the publishers.

Price : ₹ 275/-

ISBN : 978-93-84004-79-8

Printed by
New Simran Offset Printers
Jalandhar

प्रस्तावना

शैक्षिक ज्ञान सृजन और मल्टीमॉडल पाठ्यक्रम विकास एक वैचारिक और राजनीतिक आधार, जो शिक्षा के क्षेत्र में बहुविध प्रथाओं का समर्थन करता है, का विकास करता है। यह शैक्षिक प्रक्रियाओं में डिजिटल प्रौद्योगिकी के उपयोग के संबंध में दार्शनिक और सैद्धांतिक चिंताओं के साथ व्यावहारिक बातचीत फ्रेम करता है। ज्ञान जानकारी का पर्याय बन गया है और कि जानकारी तक पहुँच सीखने के बराबर होती है। इस पुस्तक में ऐसी सोच को चुनौती दी गई है। सोच, सोच का मतलब और पुनर्विचार, शिक्षकों और छात्रों, पर प्रभाव डालते हैं और पाठ्यक्रम को प्रभावित करते हैं। शिक्षा, ज्ञान और यह पुस्तक, सीखने के नये अनुभवों से भरपूर है। नवाचार और परिवर्तन, शिक्षकों, छात्रों और पाठ्यक्रम को प्रभावित करते हैं। जैसे शिक्षक तेजी से प्रशासन, योजना और निर्देश के क्रियान्वयन में नई प्रौद्योगिकियों का इस्तेमाल कर रहे है, पाठ्यक्रम में संशोधन स्पष्ट है। नए अनुप्रायोग, सोच, कल्पना, संवेदना, निगरानी और कार्यान्वयन को लगातार तेज कर रहे हैं, सूचना और ज्ञान के नए रूप जन्म ले रहे हैं। ज्ञान के आकर और विस्तार के कारण, पाठ्यक्रम में सुधार आवश्यक है। पाठ्यक्रम में बदलाव स्पष्ट है, लेकिन इस परिदृश्य में, प्रभावी और मूल्यवान पाठ्यक्रम क्या हो सकता है, यह एक बहुत ही प्रख्यात सवाल हमारे सामने मुंह बाये खड़ा है।

ये पुस्तक, शिक्षाप्रद जानकारी और ज्ञान के इस युग में, शिक्षण और सीखने में बदलाव की समर्थक है। प्राथमिक, माध्यमिक, कॉलेज और विश्ववियालय कक्षाओं में पैटर्न और ज्ञान सृजन की प्रथाओं की जांच करके, लेखक समानताएं और शैक्षिक स्तर, विषय, और स्कूल में और आउट-ऑफ-स्कूल सेटिंग्स को जांचते हैं। यह पुस्तक मॉडल, विचार, उदाहरण और सिद्धांत प्रस्तुत करती है ताकि महत्वपूर्ण अग्रणी प्रतिबिंब, जोकि स्थानीय / वैश्विक संदर्भ, इतिहास, संस्कृति और अवधारणायें होती हैं, ढूंढे जा सकें। मुझे आशा है कि ये पुस्तक शिक्षार्थियों की, ठोस और निरपेक्ष, सूचना और ज्ञान पाने में सहायता कर पायेगी, और उनकी सभी सक्रिय और असंतुष्ट सवालों को संतुष्ट करेगी।

लेखक इस मूल्यवान दस्तावेज के लिए सर्वशक्तिमान ईश्वर, विजया प्रकाशन, सभी नजदीकी और प्रिय, और परिवार के सदस्यों का आभारी है जिनके सक्रिय सहयोग और जानकार सुझाव से यह पुस्तक संलेखन संभव हो सका। लेखक सभी शिक्षकों और शिक्षार्थियों का भी आभारी है। कृपया अपने बहुमूल्य सुझाव और प्रतिक्रियायें भेजना मत मत भूलियेगा।

शुभकामनाओं सहित,

–डा अवतार सिंह राही

SYLLABUS

CHAUDHARY RANBIR SINGH UNIVERSITY, JIND

KNOWLEDGE AND CURRICULUM

Time: 3 Hours **Max. Marks: 100**

(Theory: 80, Internal: 20)

Objectives

After completion of the course, student teachers will be able to:

- Understand the concept of knowledge and knowing
- Understand the different ways of knowing
- Understand the facets of knowledge
- Understand the epistemology of different philosophies
- Understand the concept of curriculum
- Understand the approaches of curriculum development
- Know various designs of curriculum
- Understand the importance of curriculum change

Unit 1

Knowledge: Key Concepts

Meaning of Knowledge and Knowing, Kinds of knowledge and Sources of knowledge; Methods of acquiring Knowledge; Distinction between - Information and Knowledge, Belief and truth, Reasoning and Analysis; Different Ways of Knowing - Relative roles of the knower and the known in knowledge transmission and construction; Contribution of the teachers in assimilation and dissemination of information and knowledge.

Unit-2

Different facets of knowledge and relationship

such as : Local and University; Concrete and Absolute; Theoretical and Practical; Contextual and Textual; School and Out of School.

Culture and Knowledge

Role of culture in knowing; Ways of knowledge rendered in to action; Emerging problems relating to knowledge.

Epistemology of Indian Philosophies – Sankhya; Vedanta.

Epistemology of Western Philosophies –

Idealism, Naturalism, Pragmatism and Existentialism.

Unit-3

Conceptual Framework of Curriculum

Curriculum – Meaning, nature and its organizing curriculum components; Principles of curriculum construction; Bases of curriculum.

Different Approaches to Curriculum Theory

Traditional approach; Learner driven approach; Critical approach.

Curriculum Process and Different ways of Approaching Curriculum Theory

Curriculum as product; Curriculum as process; Participatory approach.

Unit-4

Curriculum Design Models

Discipline Centered Design, Learner Centered Design & Problem Centered Design.

Components required in Curriculum Development.

Curriculum Change: Meaning, Need and Factors affecting Curriculum Change.

KNOWLEDGE AND CURRICULUM (KUK & CDLU)

Time: 3 Hours | **Max. Marks: 100**
(Theory: 80, Internal: 20)

Course Contents

Unit-I

1. **Knowledge Basis of Education**
   - Basic concepts of Education: Teaching, Training, Learning, Skill, Beliefs and Education.
   - Contribution of Gandhi & Tagore in relation to child-centered education (activity, Discovery, Dialogue)
   - Concept, sources & types of Knowledge

Unit-II

2. **Social Basis of Education**
   - Basic concepts of Society: Socialization, Equity and Equality, Modernity with reference to industrialization, democracy and individual Autonomy.
   - The role of culture, economy and historical forces in shaping the aims of education.

- Individual opportunity, social justice and dignity in context of democratic education.
- A study of Secularism, Nationalism and Universalism and their interrelationship with education.

Unit-III

3. Curriculum Development

- Concept of Curriculum and Syllabus: Dimensions of Curriculum and their relationship with aims of education.
- Curriculum at different levels- National, State and School.
- Determinants of curriculum: Philosophical, Psychological, Sociological, Political, Culture and Economic.
- Basic considerations in Curriculum Development.

Unit-IV

4. Curriculum Practices

- Teachers' experiences and concerns: Laboratory work, Library and References, Field Survey, Group Discussion.
- Nature of learner and learning process and subject matter.
- Knowledge and ideology in relation to curriculum and text books.
- National curriculum framework: Concept need and process of development.

Practicum/ Sessionals

Any two of the following:

i. Socio-economic educational survey of near by village/ urban settings.

ii. Role of education in empowerment of weaker sections of society.

iii. To analyze and prepare a report on the present curriculum of Haryana School Education Board/ CBSE in the light of various determinates of curriculum development.

iv. Filed survey on impact of present system of education on:

a) Socialization of child

b) Modernization with reference to industrialization and individual autonomy.

v. To survey and prepare a project report on how far the present system of education is able to inculcate secularism, nationalism, and universalism.

विवरणिका

अध्याय - 1 ज्ञानः महत्त्वपूर्ण अवधारणाएँ 1-56

ज्ञान का अर्थ

सम्प्रत्ययिकरण ज्ञान

ज्ञान को समझना-समझाना

ज्ञान की प्रकृति

जीवन में ज्ञान का महत्त्व

ज्ञान और जानकारी के बीच अंतर

विश्वास और सच (सत्य) के बीच फर्क

तर्क और विश्लेषण के बीच अंतर

जानना क्या है

ज्ञान के प्रकार

ज्ञान एक प्रकार के रूप में

ज्ञान के स्रोत

ज्ञान प्राप्त करने की विधियां

जानने के तरीके

ज्ञान, जानने वाले और जानकारी

ज्ञान सम्प्रेषण और निर्माण में ज्ञाता व ज्ञात की सम्बंधित भूमिका

सूचना और ज्ञान के आत्मसात और प्रसार में शिक्षकों का योगदान

बदलती शिक्षा

अध्याय - 2 ज्ञान और रिश्ते के विभिन्न पहलु 57-73

स्थानीय और सार्वभौमिक

ठोस और निरपेक्ष

सैद्धांतिक और व्यावहारिक

प्रासंगिक और शाब्दिक

स्कूल में और स्कूल से बाहर

अध्याय - 3 संस्कृति और ज्ञान 74-99

संस्कृति की विशेषतायें

जानने में संस्कृति की भूमिका

संस्कृति के कार्य

कार्रवाई करने के लिये ज्ञान के तरीके

ज्ञान से संबंधित उभरती समस्यायें

अध्याय - 4 भारतीय दर्शन की ज्ञान-मीमांसा 100-122

सांख्य

वेदान्त

20वीं सदी में तुलना

अध्याय - 5 पश्चिमी दर्शन की ज्ञान-मीमांसा 123-160
आदर्शवाद
प्रकृतिवाद
व्यवहारवाद
अस्तित्ववाद
अध्याय-6 वैचारिक पाठ्यक्रम की रूपरेखा 161-187
पाठ्यक्रम - अर्थ और प्रकृति
पाठ्यक्रम के घटक
पाठ्यक्रम के लिए निर्माण / विकास सिद्धांत
पाठ्यक्रम की नींव (आधार)
अध्याय-7 पाठ्यक्रम सिद्धांत के अलग-अलग दृष्टिकोण 188-203
परंपरागत दृष्टिकोण
शिक्षार्थी आधारित दृष्टिकोण
पारंपरिक पाठ्यक्रम विकास बनाम छात्र केंद्रित पाठ्यक्रम
गंभीर दृष्टिकोण
किस दृष्टिकोण का उपयोग करें?
अध्याय-8 पाठ्यक्रम प्रक्रिया और पाठ्यक्रम सिद्धांत तक पहुंचने के विभिन्न तरीके 204-216
उत्पाद, ज्ञान के रूप में पाठ्यक्रम
पाठ्यक्रम प्रक्रिया के रूप में
क्यों नहीं प्रक्रिया और उत्पाद?
पाठ्यक्रम भागीदारी क्यों होना चाहिए?
क्यों भागीदारी दृष्टिकोण का इस्तेमाल नहीं कर रहे हैं?
अध्याय-9 पाठ्यक्रम डिजाइन मॉडल 217-270
विषय केंद्रित डिजाइन
शिक्षार्थी केंद्रित डिजाइन
समस्या केंद्रित डिजाइन
शिक्षार्थी केंद्रित बनाम पाठ्यक्रम केन्द्रित शिक्षक
पाठ्यक्रम विकास में आवश्यक घटक
पाठ्यक्रम को डिजाइन करने के पैटर्न
पाठ्यक्रम परिवर्तन: अर्थ और जरूरत
बदलाव के प्रकार
बदलाव के रूप
पाठ्यक्रम परिवर्तन के लिए रणनीतियाँ
योजना और क्रियान्वित बदलाव
पाठ्यक्रम परिवर्तन को प्रभावित करने वाले कारक
कुछ संदर्भित पुस्तकें 271-272

1 Chapter

ज्ञान: महत्वपूर्ण अवधारणाएँ
KNOWLEDGE: KEY CONCEPTS

आज इस प्रतिस्पर्धा के युग में सृजन और ज्ञान का प्रसार तेजी से एक महत्वपूर्ण कारक बन गए हैं। ज्ञान आजकल एक वस्तु या बौद्धिक संपत्ति के रूप में देखा जा रहा है जबकि यह अन्य मूल्यवान वस्तुओं से बिल्कुल अलग है, ज्ञान की अपनी कुछ विशेषताएं हैं। ज्ञान – अंतर्दृष्टि, समझ और व्यावहारिकता जिसके कि हम सब अधिकारी है, से मौलिक स्वभाव व समझदारी से कार्य करने की अनुमति देता है। समय के साथ काफी ज्ञान भी, सभी प्रकार के संगठनों के भीतर और सामान्य में समाज के रूप में अन्य अभिव्यक्तियों जैसे किताबें, प्रौद्योगिकी प्रथाओं और परंपराओं में तब्दील हो जाता है। ये परिवर्तन विशेषज्ञता का परिणाम है और जब उचित इस्तेमाल हो तो प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए बहुत मददगार साबित होते है। ज्ञान एक प्रमुख कारक है जो व्यक्तिगत, संगठनात्मक और सामाजिक बुद्धिमान व्यवहार, संभव बनाता है। एक व्यवस्थित दृष्टिकोण (systematic approach), रोज़मर्रा के सम्बंध में कुशल और प्रभावी निर्णय लेने के लिए सक्षम, एक सतत ज्ञान का सही समय पर, सही लोगों को प्रवाह प्रदान करने के लिए, जानकारी के उपयोग का प्रबंधन सिखाता है। ज्ञान मुख्तया जानने के लिये, अनुभवात्मक या व्यक्तिगत मूल्यों, विचारों और अनुभव के आधार पर की गई एक और अधिक पहल व व्यक्तिपरक तरीका है:

डाटा (Data): एक सामग्री है जो सीधे समझी या प्रमाणित की जा सकती है।

सूचना (Information): एक सामग्री है कि जो डेटा का विश्लेषण व प्रतिनिधित्व करती है।

ज्ञान (Knowledge): कठिन शब्दों, पाठ या चित्र संग ढालने व समझने-समझाने के लिए मुश्किल।

ज्ञान का अर्थ

MEANING OF KNOWLEDGE

ज्ञान जागरूकता या कुछ और इस तरह के तथ्य, सूचना-विवरण या कौशल है जो खोज या सीखने के द्वारा, अनुभव या शिक्षा के माध्यम से हासिल किया जाता है। ज्ञान धारणा, संचार और तर्क है, ज्ञान मनुष्य में योग्यताओं व पावती की क्षमता से संबंधित होना भी है। ज्ञान अर्जन में जटिल संज्ञानात्मक प्रक्रियाऐ शामिल है। ज्ञान का उल्लेख विषयों के सैद्धांतिक या व्यावहारिक समझ के लिए कर सकते हैं।

ज्ञान की परिभाषा विचारकों और जानकार लोगों के बीच चल रही बहस का विषय है। प्लेटो द्वारा असमर्थित एक शास्त्रीय परिभाषा के अनुसार, एक बयान तभी ज्ञान कहा जा सकता है यदि वह तीन मानदंड अर्थात उचित, सच और विश्वास के तराजु में तोला जा सके। रॉबर्ट नॉजिक सत्य की ख़ोज की आवश्यकता को ज्ञान मानते है। रिचर्ड किरक्हम ज्ञान उस विश्वास को मानते है जो सबूत, इसकी सच्चाई और जरूरी तर्क लिए है। लुडविग व्हितजेंसटीन का तर्क है कि ज्ञान अलग मानसिक स्थितियों के लिए नहीं बल्कि अलग-अलग तरीके से किसी बात को कहना है। अलग से मतलब यहाँ वक्ता नहीं है लेकिन वे गतिविधियां है जिसमें वे लगे हुए हैं। उदाहरण के लिए, केतली उबल रही है, इस का अर्थ है कि केतली के अन्दर जो है वह उबल रहा है। मन का एक विशेष स्थिति में होना ज्ञान नहीं है, मन के साथ एक विशेष कार्य को करने की स्थिति में होना ज्ञान है ।

कई सहमत होंगे कि ज्ञान के हस्तांतरण में लेखन और पढ़ना (कई प्रकार के) सबसे व्यापक और महत्वपूर्ण उपकरणों में से एक है, हालांकि लिखित शब्द की उपयोगिता का तर्क और समाज पर इसके प्रभाव की उलझन हमेशा विद्वानों की समस्या रही है। ज्ञान के शास्त्रीय व आधुनिक सिद्धांतों, विशेष रूप से दार्शनिक जॉन लोके के प्रभावशाली अनुभववाद के अनुसार मन एक मॉडल है जो शब्दों के विचार बनने की कोशिश पर, परोक्ष या स्पष्ट रूप से आधारित थे। भाषा और विचार के बीच की बहस ने सादृश्य ज्ञान की एक ग्राफिक गर्भाधान नींव रखी जिसमें मन को एक विशेष स्थान प्राप्त था, जैसे कि सामग्री का एक कंटेनर हो जिसमें अक्षर, संख्या या प्रतीकों के साथ तथ्यों के साथ है। यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें पृष्ठ पर शब्दों का स्थानिक संरेखण करते हुए शायद महान संज्ञानात्मक वजन किया है, लेकिन इतना तो

है कि शिक्षकों के पृष्ठ पर और नोटबुक्स में जानकारी के दृश्य संरचना करने के लिए बहुत करीबी ध्यान दिया हो। एंड्रयू रॉबिन्सन ने जोर दिया कि आधुनिक दुनिया में ज्ञान का दृश्य चित्रण अक्सर मौखिक ज्ञान से सच्ची होने के रूप में देखा गया था। यह पश्चिमी बौद्धिक परंपरा है जिसमें आम तौर पर मौखिक संचार को लिखित संचार से ज्यादा झूठ के प्रसार के लिए माना सोचा है। क्या यह कहा गया था, की रिकॉर्ड या जो मूल रूप से यह कहा, संरक्षित करना कठिन है क्योंकि आम तौर पर न तो स्रोत होता है और न ही सामग्री को सत्यापित किया जा सकता है । बातुनी और अफवाहें दोनों मीडिया में प्रचलित उदाहरण हैं। लेखन की मूल्यवानता के रूप में, मानव ज्ञान की हद अब तो इतनी महान है और लोगों को ज्ञान अर्जन में इतनी रुचि है कि लेखन को ज्ञान पर कब्जा करने और साझा करने के लिए केंद्रीय माना जाता है।

पुस्तकालय आज लाखों ज्ञान (कल्पना के कार्यों के अलावा) की पुस्तकों से भरे पडे है। अब हाल ही में रिकॉर्डिंग ज्ञान के लिए ऑडियो और वीडियो प्रौद्योगिकियां भी उपलब्ध हो गए हैं। इन के उपयोग के लिये हालाँकि उपकरण और बिजली की आवश्यकता है। मौखिक शिक्षण और ज्ञान उन लोगों के लिए सीमित है जो ट्रांसमीटर तक पहुंच सकते हैं या लिखा, पद सकते हैं और व्याख्या कर सकते हैं। लेखन अभी भी सबसे अधिक उपलब्ध है और रिकॉर्डिंग और ज्ञान संचारण के सभी रूपों में सबसे सार्वभौमिक है। यह ज्ञान मानव जाति में हस्तांतरण के लिए प्राथमिक प्रौद्योगिकी के रूप में और सभी संस्कृतियों और भाषाओं की दुनिया के लिए चुनौती लिए खड़ा है। समाजशास्त्री मरविन वर्बित के अनुसार ज्ञान धार्मिकता के प्रमुख घटकों में से एक के रूप में समझा जा सकता है। धार्मिक ज्ञानः सामग्री, आवृत्ति, तीव्रता और केन्द्रीयता, इन चार आयामों में विभाजित किया जा सकता है। किसी की धार्मिक ज्ञान की सामग्री एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न हो सकते हैं, साथ ही व्यक्ति के मन (आवृत्ति), ज्ञान की तीव्रता और सूचना की केन्द्रीयता की धार्मिक परंपरा में या किसी व्यक्ति के लिए कब्जा हो सकता है। दर्शन के इतिहास प्रतिबिंब ज्ञान पर शोध से भरे पड़े हैं, लेकिन सवाल है अवधारणाओं, भेद, संश्लेषण और टेक्सोनोमीस का।

वेबस्टर डिक्शनरी के अनुसार, ज्ञान तथ्य या परिचितता के साथ, अनुभव या एसोसिएशन के माध्यम से कुछ जानने की हालत है।

अरस्तू के अनुसार, ज्ञान शक्ति है।

सुकरात के अनुसार, ज्ञान उच्चतम पुण्य है।

आदर्शवादी, विचारों के ज्ञान को ज्ञान, मानते है।

प्रो रसेल के अनुसार, ज्ञान वह है जिससे मनुष्य का मन प्रकाशित होता है।

प्रो जोअद के अनुसार, ज्ञान हमारी मौजूदा जानकारी और अनुभव को बढ़ाने के लिए एक अतिरिक्त शक्ति है।

ज्ञान की उपयोगित परिभाषा है, विचार या समझ जो एक इकाई के पास इकाई के लक्ष्य(ओं) को प्राप्त करने के लिए प्रभावी कार्रवाई करने के लिए इस्तेमाल किये जा रहे हैं। यह ज्ञान उस इकाई के लिए विशिष्ट है जिसने इसे बनाया है।

ज्ञान को परिभाषित करने में Know का होना जरूरी है। अधिकांश लोगों को ज्ञान क्या है, पूछने से पहले अपनी स्थिति का मूल्यांकन करना जरूरी हैं। लोग सिर्फ सामान को जानने का दावा करते हैं और हममें से ज्यादातर अपने उस ज्ञान के साथ अचम्भित भी हैं। इस के लिए कारण तो बहुत सारे हैं लेकिन सबसे अधिक संभावना है कि लोग समय के साथ एक परिभाषा गढ या मान लेते हैं और शब्द का क्या अर्थ है, की एक सामान्य समझ नहीं रखना चाहते है। हम में से कई शायद कहना चाहेंगे कि ज्ञान को परिभाषित करते हुए कुछ सच्चाई शामिल होनी चाहिए:

निश्चितता (Certainty) - यह मुश्किल है लेकिन असंभव नहीं

साक्ष्य (Evidence) – कहने के लिए कुछ आधार

व्यावहारिकता (Practicality) - यह वास्तव में वास्तविक दुनिया में काम करने के लिए है

व्यापक सहमति (Broad agreement) – बहुत सारे लोगों का बात या निष्कर्ष को मानना

मान लीजिए किसी व्यक्ति के एक हाथ में दर्द है। दर्द बहुत ज्यादा और तीव्र है। व्यक्ति डॉक्टर को यह बता सकता है कि उस के हाथ में दर्द है और कि वह जानता है कि वह बता सकता है उस के हाथ में दर्द में है लेकिन वह व्यक्ति उस दर्द को परिभाषित या विस्तारित नहीं कर सकता। दुर्भाग्य से वह मरीज या कोई और, दर्द का दावा करने के लिए साक्ष्य प्रस्तुत नहीं कर सकते। मरीज को दर्द महसूस हो रहा है, इशारे, निश्चितता और व्यावहारिकता

का संकेत यह साबित कर सकते हैं और दूसरों को यह इंगित हो रहा है, व्यापक सहमति भी हैं। सतही तौर पर तो कम से कम ऐसा है कि लोगों को पता है ज्ञान क्या है।

ज्ञान के बारे में जानकारी के लिए सूचना व ज्ञान के रिश्ते के बारे में समझने की आवश्यकता है। रोजमर्रा की भाषा में, जानकारी - सार्थक पैटर्न में व्यवस्थित डेटा, और ज्ञान - जो ऐतिहासिक रूप से कुछ है, के बीच भेद करने के लिए किया गया है - सच है और वह विश्वसनीय है । ज्ञान को परिभाषित करने के प्रयासों का आकलन करते हुए, मनुष्य के मन में अक्सर ज्ञान के दो रूप आते देखे गये है - तर्कसंगत और सहज ज्ञान। पश्चिम में सहज ज्ञान का अक्सर तर्कसंगत वैज्ञानिक ज्ञान के पक्ष में अवमूल्यन कर दिया जाता है और विज्ञान के उदय ने भी यह दावा करने के लिए प्रेरित किया है कि सहज ज्ञान वास्तव में ज्ञान बिल्कुल नहीं है। हालांकि एक व्यक्ति से ज्ञान के हस्तांतरण में निहित की मान्यता कठिनाइयां दूर करने के लिए मौन के महत्व को उजागर करती है। पूर्व में, सहज ज्ञान के महत्व को मनाने के लिए तर्कसंगत के साथ तुलना करने की परंपरा है। उदाहरण के लिए, उपनिषद उच्च और कम ज्ञान के बारे में बताते हैं और कम ज्ञान का विभिन्न विज्ञानों से सम्बन्ध जोड़ते हैं।

ज्ञान के अर्थ के बारे में बहस हजारों साल से जारी है और आगे भी जारी होने की पूरी संभावना लग रही है।

सम्प्रत्ययिकरण ज्ञान
CONCEPTUALIZING KNOWLEDGE

ज्ञान के दर्शन में सबसे पुराना और सबसे विश्वसनीय परंपराओं में से एक, जायज सच्चे विश्वास (justified true belief), के रूप में ज्ञान की विशेषता है। यद्यपि कुछ दार्शनिकों का मानना है कि जायज सच्चा विश्वास वास्तव में पर्याप्त रूप से ज्ञान की प्रकृति को चिह्नित कर, ज्ञान का सबसे प्रमुख साधन हो सकता है। इस प्रकार, ज्ञान तीन तत्वों से मिलकर बना हो सकता है:

1. मानव विश्वास या मानसिक अभ्यावेदन (mental representations) जोकि मामलों की एक स्थिति प्रतिनिधित्व करते हैं।
2. मामलों की और अभ्यावेदन की वास्तविक स्थिति।
3. तार्किक और अनुभवजन्य कारकों की वैधता।

मान लीजिये कि किसी छात्र का जवाब है कि पानी के लिए फार्मूला है, (H_2O). अब यह नहीं कहा जा सकता छात्र ज्ञानवान है। यह रट्टा या तोतारटन्त या शायद छात्र द्वारा इस बारे में सुना है, हो सकता है। लेकिन अगर एक केमिस्ट, वैज्ञानिक या शिक्षक ऐसा बोलता है तो यह ज्ञान का परिणाम हो सकता है क्योंकि उसका प्रतिनिधित्व सार्थक नेटवर्क और ज्यादा पूर्व ज्ञान और सावधान निगमनात्मक काम से जायज है।

औचित्य (Justification), ज्ञान के विचार के लिए केंद्रीय गुण है। क्या औचित्य, ज्ञान का गठन करने के लिए आवश्यक है, जैसे सवाल दार्शनिकों के बीच बहस का मुख्य मुद्दा है। तीन प्रमुख दृष्टिकोण है स्पष्ट करने के लिए, कैसे न्यायोचित विश्वास का गठन कर रहे हैं:

1. मौलिकता (Foundationalism): यह मौलिक व सच्चे विश्वासों जिसमें से अन्य निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं स्पष्ट करने के लिए प्रयास करता है।

2. जुड़ाव (Coherentism): ज्ञान में प्रणालियां होती हैं और प्रणालियां तार्किक आधार पर मापी जानी चाहिए और वह भी इस तरह कि बाहरी तथ्यों से मेल खायें।

3. विश्वसनीयता (Reliablism): अच्छे और बुरे विश्वासों को विकसित करने के अलग अलग तरीके होते हैं और जायज़ विश्वास वह विश्वास है कि जो अच्छे और विश्वसनीय तरीकों के आधार पर बनते हैं।

हालांकि दार्शनिक असहमत है कि क्या सबसे मौलिक है, लेकिन ज्यादातर लोगों का मानना है कि औचित्य में इन सभी तत्वों को शामिल करना चाहिए।

ज्ञान को समझना-समझाना
UNDERSTANDING KNOWLEDGE

एक घटना की दार्शनिक समझ के लिये विभिन्न संभव तरीके हैं। ऐसा ही एक दृष्टिकोण है; अन्य घटनाओं के सम्बन्ध में घटना को समझने का प्रयास करना। एक विस्तृत और पूर्ण परिशुद्धता के साथ अगर ऐसा करते हैं तो घटना की परिभाषा को प्राप्त किया जा सकता है। कभी कभी इसे प्रश्न में घटना के एक विश्लेषणात्मक कमी के लिए खोज भी कहा जाता है। यह भी कहा जा सकता है कि घटना की अवधारणा के विश्लेषण के रूप में प्रस्तुत वर्णन किया

गया है। ज्ञान के दृष्टिकोण की प्रकृति को समझने के लिए पिछले पचास या ज्यादा वर्षों से ज्ञान मीमांसा के प्रयास किये जा रहे है।

न्यायोचित-सच्चा-विश्वास ज्ञान का सम्बन्ध
The Justified-True-Belief Conception of Knowledge

गौर करिये किसी की किसी को किसी तरह से जानने की इच्छा है। व्यक्ति को जानते हुए भी परिभाषा के उदाहरण से एक सच्चे और अच्छी तरह से जायज़ विश्वास के साथ जानने की कोशिश की जाती है और ये भी जानने की कोशिश की जाती है कि इस तरह के ओर मामले भी हैं। ज्ञान विश्वास है लेकिन सिर्फ एक विश्वास नहीं। ज्ञान हमेशा एक सच्चे विश्वास जैसा होता है लेकिन किसी भी सच और अच्छे विश्वास की तरह। किसी भी अच्छी तरह से जायज़ सच्चा विश्वास - ज्ञान हमेशा एक अच्छी तरह से जायज सच्चा विश्वास है। यहाँ जायज का क्या अर्थ है ये निम्न दो संभव रूपों में समझ सकते हैं:

साक्ष्य (Evidence) - सम्भव अनुभव और विचार, जो कुल मिलाकर आपके विश्वास को हर तरह से मजबूत करें। वह सबूत जिससे अपने विश्वास के सच होने की दिशा में कोई औचित्य हो।

विश्वसनीयता (Reliability) - अक्सर हम अपने पर विश्वास करते है कि इस तरह के और इस तरह से जो कार्य हम कर रहे है वह सही है, वह ज्ञान है। यह औचित्य जिससे कि हम अपने विश्वास के सच होने की दिशा में सोचते हैं वह विश्वसनीयता है।

अपनी कल्पना से प्रत्येक मामले में एक व्यक्ति एक विश्वास रखता है जो सच हो सकता है और अच्छी तरह से उचित भी हो सकता है। हालाँकि यह एक सामान्य दृश्य है पर किसी भी दशा में यह ज्ञान नहीं हो सकता, इसे ज्ञान नहीं कहा जा सकता।

ज्ञान परिभाषित करते हुये निम्न तीन शर्तों को शामिल करना आवश्यक है और दार्शनिकों का मानना है कि जब एक व्यक्ति इन तीन शर्तों को पूरा करता है तो यह कहा जा सकता है कि जो कुछ भी व्यक्ति कह रहा है वह कुछ सच हो सकता है:

व्यक्ति का विश्वास है कि बयान सही व सच्चा है।

बयान के सभी तथ्य सही है।

व्यक्ति का अपने बयान पर विश्वास होना जायज हो सकता है।

आस्था (विश्वास) Belief

लोग विश्वास भरी बातें करते हैं। विश्वास चट्टान या नाव की तरह नहीं, जहां से आप उन्हें भर लायें या समुद्र तट नहीं जहाँ आप टहलते रहें। वे आपके दिमाग में रहते हैं और आम तौर पर जिस तरह से आप दुनिया (या दुनिया के कुछ पहलू) को समझते हैं, के रूप में देखे जाते है। अगर आप मानते हैं कि एक विश्व सीरीज कभी नहीं जीती जा सकती हैं तो आप बस मान लीजिये कि वास्तव में विश्व सीरीज कभी भी नहीं जीती जा सकती। आप इस वाक्य को ध्यान से पढ़ें तो आप देखेंगे कि इस में बस इतना है कि आप को लगता है या आप ऐसा सोच रहे हैं। कई दार्शनिकों के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है। इससे संकेत मिलता है कि जो आपको लगता है, वह गलत भी हो सकता है। दूसरे शब्दों में, यह भी कहा जा सकता है कि आप दुनिया को जिस तरह से देखना चाहते हैं, दुनिया वास्तव में वैसी नहीं है और इसलिए भी कहा जा सकता है कि विश्वास और सूची में अगले सूत्र, सच्चाई के बीच में भी अंतर है। दार्शनिकों जैसे प्राधुनिक और अस्तित्ववादियों को लगता है कि इस तरह से विश्वास व सत्य में भेद नहीं किया जा सकता है। कुछ दार्शनिकों का तर्क है कि सच में विश्वास के लिए एक अच्छा परीक्षण यह है कि आप कैसे व्यवहार करते है। लोग आम तौर पर इस तरह से तर्क करते है कि वे क्या कहते हैं वास्तव में नहीं और न ही इस तरह से कि वे क्या कहना चाहते हैं।

सत्य Truth

कुछ तो सच है, अगर दुनिया वास्तव में इस तरह से है। सच आपके दिमाग में नहीं है लेकिन कहीं तो है। बयान कि विश्व सीरीज कभी नहीं जीती जा सकती है, सत्य हो सकता है अगर योधे एक विश्व सीरीज कभी नहीं जीत पायें। बयान दुनिया बनाते हैं, दुनिया को दिशा देते हैं और दुनिया को उस तरह से बनाते हैं जिस तरह से यह दुनिया वास्तव में है। दार्शनिक सच्चाई व बयान इस तरह से लिखते है कि लोग जान सकें कि दुनिया के बारे में एक प्रचलित बयान गलत या सही हो सकता है। शायद अब आप मान पायें कि विश्वास, सच्चाई के बयानों से कैसे भिन्न होते हैं। जब आप कुछ मानते है या स्वीकार करते हैं तो इस का मतलब ये है कि आप उस बयान या प्रस्ताव को सत्य स्वीकार कर रहे है। यह झूठ भी हो सकता है, शायद यही कारण है कि आपके विश्वास दुनिया जो वास्तव में है, के साथ मेल नहीं खाते।

औचित्य Justification

ज्ञान का बीज अगर विश्वास है तो क्या व कैसे विश्वास, ज्ञान में बदल जाता है? बस यहीं औचित्य कार्य में आता है। एक व्यक्ति तभी कुछ जानकार कहा जा सकता है अगर वह यह विश्वास करता है कि सच के लिए क्या उचित है। औचित्य के सम्बन्ध में दर्जनों प्रतिस्पर्धी सिद्वांत हैं और यहाँ कोई आम सहमति नहीं है कि कौन सा सही है। यह शायद बताया जा सकता है कि कब विश्वास जायज माना जा सकता है और कब नहीं। सामान्यतः दार्शनिकों का मानना है कि व्यक्ति की धारणाओं का उचित होने या ना होने का फैसला निम्न तरह से लिया जा सकता है:

- इच्छित सोच (उदाहरण के लिए, मैं वास्तव में चाहता हूँ कि तुम मुझे प्यार करो इसलिए मैं मानता हूँ तुम मुझे प्यार करते हो)।
- भय या अपराध की सोच (उदाहरण के लिए, आप मौत से डर रहे हैं और इसलिए पुनर्जन्म में विश्वास करते हो)।
- अंदाजा लगाने की सोच।
- गलत तरह का गठन (उदाहरण के लिए, यदि आप एक क्षेत्र, जिसके बारे में आप को कुछ नहीं पता है, की यात्रा कर रहे हैं और 500 गज दूर से एक सफेद स्थान देखते हैं और निष्कर्ष निकालते है कि यह एक भेड़ है)।
- भाग्यवादी होने की सोच (उदाहरण के लिए, आप वैसे ही सोच लेते है कि अगला व्यक्ति जिससे आप मिलने वाले हैं उसकी हेज़ेल आँखें होंगी और जब आप उसे मिलते हैं तो यह पाते है कि उस व्यक्ति की हेज़ेल आँखें है)।

औचित्य को भूल पाना मुश्किल है क्योंकि विश्वास सभी आकृति और आकार में आते हैं और किसी एक को मानना बहुत ही कठिन है। सूरज पृथ्वी से लगभग 93 लाख मील की दूरी पर है, भगवान का अस्तित्व है या आपकी पीठ में थोडा सा दर्द है, पर विश्वास करना उचित हो सकता है या औचित्यपूर्ण हो सकता है। फिर भी औचित्य, ज्ञान के किसी भी सिद्वांत में एक महत्वपूर्ण तत्व है और दार्शनिकों का विचार केंद्र भी है।

ज्ञान की प्रकृति

THE NATURE OF KNOWLEDGE

हम सब हमारे सवालों के जवाब सीखने में रुचि रखते हैं। ऐसा करने के लिए हम वैकल्पिक बातों के बीच चयन करते हैं, हमें प्रत्येक विकल्प की संभावना परिणामों को जानना होता है, कुछ के पूर्वानुमान भी बनाते हैं और बेहतर या बदतर के पैमाने पर उन परिणामों की वांछनीयता का मूल्यांकन किया जाता है। और जवाब का सवाल जैसा हम जानना चाहते थे, का उपयोग करने के लिए हमें भरोसेमंद सूचना की जरूरत होती हैं। अगर हमें, अपने प्रश्नों का वही उत्तर चाहिए जो हम जानना चाहते हैं तो हमें शब्दों के सही इस्तेमाल को समझने की जरूरत है। हम प्रत्येक कारण व पेशकश के द्वारा हमारे निर्णय और दावे का समर्थन करते हैं। और जब हम इन कारणों की पेशकश करते हैं हम बताने की कोशिश करते हैं कि हम जानते हैं। हमारे बीच संघर्ष का एक संभावित स्रोत हटाने के लिए हमारा एक साथ, एक बात पर सहमत होना लाभप्रद है। चाहे यह आप या मैं है या कोई ओर, जब हम कुछ जानने का दावा करते हैं तो उस दावे से क्या मतलब है, हमारा यह पता होना आवश्यक होता है। क्यों कि ी जवाब पर विश्वास की तुलना से अधिक वांछनीय इन सवालों के जवाब जानना है, जैसे कि हम दावा कर सकें कि मुझे पता है या सिर्फ मुझे ही पता है। किन परिस्थितियों के तहत इस तरह के दावे को उचित और वैध कहा जा सकता है, कब हम लोग कहते हैं कि इस तरह के दावे अमान्य या धोखा देने वाले है। या ये सिर्फ एक मनोवैज्ञानिक या मानसिक स्थिति है जिसे चुनौती नहीं दी जा सकती है। एक धारणा है कि योग्यता के आधार पर सकारात्मक मूल्यांकन की एक विशेष परिस्थिति हो, या हम जानते हैं कि एक विशेष प्रामाणिक स्थिति के साथ एक कारण पेशकश करने के लिए। सोचने से विश्वास करने और जानने तक बयान प्रसारण की डिग्री बढ़ जाती है। सच्चाई के बयान में सोचना और विश्वास करना, संदेह की डिग्री बढ़ाता है। जबकि हम जानते हैं का आश्वासन, एक बहुत उच्च डिग्री होने का दावा करता है। चाहे विश्वास के रूप में ज्ञान मायने रखता है, पर अंततः यह एक व्यक्तिपरक मूल्यांकन है। ज्ञान और अंदाजे के बीच है, निरंतरता भरी एक लाइन। एक तरफ हम मानते हैं कि हमारे विश्वास अपर्याप्त है और दूसरी तरफ हम मानते हैं कि हमारे विश्वास ज्ञान के रूप में उत्तीर्ण। लाइन के साथ-साथ हम अनिश्चितता की स्थिति में होते हैं। लाइन से दूर हम एक विश्वस्त विश्वास

के घेरे से भर जाते हैं। लेकिन लाइन के स्थान पर, जहां एक विशेष विश्वास की आवश्यकता होती है, यह काफी हद तक एक व्यक्तिपरक मूल्यांकन है। तर्क, तर्क-विश्लेषण और आलोचना, केवल विकल्पों के बीच भेद करने के लिए होते है कि क्या उन मान्यताओं को सही ठहराने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। ज्ञान विश्वास की एक प्रजाति है। यह स्पष्ट रूप से एक माननीय शीर्षक ही है जो कुछ मान्यताओं पर दिया गया है। यह एक सकारात्मक प्रामाणिक मूल्यांकन है कि दूसरों से अलग करती है। यह मंजूरी, प्राधिकरण, गारंटी, सुरक्षा, जमीन, औचित्य, पुष्टि, और सबूत का वायदा है। यह विश्वास के लिए सफलता की स्थिति है। अब प्रश्न ये है कि क्यों हम वो बातें जिन पर हम विश्वास करते हैं, उन पर मतभेद है और वो बातें जिन पर हम जोरदार विश्वास करते हैं, हम उन्हें एक अलग नाम, ज्ञान, से पुकारते है।

क्यों ज्ञान मूल्यवान है?

Why is Knowledge Valuable?

ज्ञान हमारे अस्तित्व के लिए संघर्ष करने के काम आता है। बाघ किस पेड़ के आसपास घूम रहा है यह पता करने के लिए ज्ञान हमारे काम आता है। कहीं दोपहर का खाना करना या कहीं दोपहर का खाना बनना या कहीं दोपहर का खाना बनाना, एक उचित या अनुचित, ज्ञान या अज्ञान, हमारे अस्तित्व का आधार सिद्ध करने का, एक बड़ा जोखिम हो सकता है। अधिक उपयोगी है, अधिक सच है, पर भरोसा, अपेक्षित परिणाम मिलने की संभावना, के भेद करने की अवधारणा ज्ञान है। अधिक संभावना, अस्तित्व का लाभ प्रदान करते हैं। किस तरह व कौन से पेड़ के पीछे बाघ घूमता है, के विश्वास की मान्यता, विश्वास और अधिक अन्य अनुचित मान्यताओं से सच होने की संभावना प्रस्तुत करता है। ज्ञान ही शक्ति है। प्राचीन यूनानी दार्शनिकों ने ज्ञान को, अपने आप से अधिक शक्तिशाली होने के लिए माना। लेकिन आधुनिक मनुष्य के लिए ज्ञान, दुनिया में शक्ति दिखाने को एक विधा भर है। ज्ञान में, हमारे वातावरण में हेरफेर करने व उसे नियंत्रित करने की शक्ति है। अगर आप की चाहत व जरूरत, एक नदी के ऊपर पुल का निर्माण करने की है तो, आप यह तभी कर सकते हो अगर सबसे अच्छे तरीके के बारे में कुछ ज्ञान हासिल कर सको और उस पर भरोसा करते हो कि यह कैसे करना है पर यदि कुछ अनुचित मान्यताओं के साथ इसे करने की कोशिश करोगे तो बजाय इसे

बनाने के, एक असफल बल्कि एक घातक उपक्रम के होने की संभावना ज्यादा है। बिल्डर जब यह कहता है,

वह सोच रहा है कि यह कार्य छह मास में हो सकता है,

वह मान रहा है कि यह कार्य छह मास में हो सकता है,

वह कह रहा है कि यह कार्य छह मास में हो सकता है,

वह कह रहा है कि उसे पता है यह कार्य छह मास में हो सकता है,

तो आप पुल बिल्डर की किस, कही बात पर विश्वास करेंगे? याद रखिये कि आप अपने जीवन के साथ भरोसा करने जा रहे हैं।

सोचना, मानना, कहना और पता होना, सभी अलग-अलग बातें है व सभी का अलग-अलग अर्थ। जब आप इन सबमें से किसे ज्ञान कहेंगे?

1. शिक्षण एक बेहद जटिल व्यवसाय है जिसे संदर्भ, विषय और शिक्षार्थियों में विविधता का एक बड़ा सौदा करने के लिए अनुकूल किये जाने की जरूरत है।

2. हमारे अंतर्निहित मान्यताएँ और मूल्य जो आमतौर पर एक विषय डोमेन में अन्य विशेषज्ञों द्वारा साझा किये जाते हैं, हमारे शिक्षण के दृष्टिकोण को आकार देते हैं।

3. सीखने के विभिन्न सिद्धांत, ज्ञान की प्रकृति पर अलग-अलग विचारों को प्रतिबिंबित करते हैं।

4. सम्बंधता के संभावित अपवाद के साथ अनुभवजन्य साक्ष्य सीखने के सिद्धांतों का समर्थन करने के लिए प्रत्येक के कुछ अपने नियम है। ज्ञान के सन्दर्भ में मूल्यों और मान्यताओं में ज्यादा फर्क वही है जो प्रत्येक सिद्धांत के प्रभाव के बारे में है।

5. शैक्षणिक ज्ञान, ज्ञान के अन्य रूपों से अलग है और आज के इस डिजिटल युग में तो ओर भी अधिक प्रासंगिक है।

6. शैक्षणिक ज्ञान, अकेला ही नहीं जो ज्ञान की ही तरह आज के समाज में महत्वपूर्ण है। शिक्षकों के रूप में हमें ज्ञान के अन्य रूपों और हमारे छात्रों के लिए अपनी क्षमता के महत्व के बारे में पता होना चाहिये ताकि हम अध्ययन सामग्री और आवश्यक कौशल की पूरी रेंज इस डिजिटल युग में छात्रों के लिए प्रस्तुत कर सकें।

शैक्षिक ज्ञान और ज्ञान के अन्य रूप

Academic knowledge and other forms of knowledge

शैक्षणिक ज्ञान के अलावा ज्ञान के और कई रूप हैं जो मूल्यवान या उपयोगी हैं। सरकार, उद्योग और व्यापार से, व्यावसायिक या विभिन्न कौशलों के विकास पर जोर बढ़ता जा रहा है। शिक्षक या प्रशिक्षक, ज्ञान के इन क्षेत्रों के विकास को अच्छी तरह से करने के लिए जिम्मेदार हैं। विशेष रूप से कई कौशल है जहाँ व्यक्तिक निपुणता की आवश्यकता होती है जैसे संगीत या नाटक में प्रदर्शन कौशल, मनोरंजन में कौशल, खेल या खेल प्रबंधन में कौशल, आदि कुछ उदाहरण हैं, जब ज्ञान के इन रूपों को परंपरागत रूप से कभी भी शैक्षिक विचारित नहीं किया गया है। हालांकि एक डिजिटल समाज की एक विशेषता के नाते, तेजी से उन्नत हो रहे इन व्यावसायिक कौशलों को अब शैक्षणिक ज्ञान या बौद्धिक और वैचारिक ज्ञान के साथ ही प्रदर्शन कौशल के बहुत उच्च अनुपात की आवश्यकता हैं। उदाहरण के तौर पर, गणित और विज्ञान के क्षेत्र की क्षमता के प्रयोग की मांग, अब कई व्यवसायिक और इस तरह के नेटवर्क इंजीनियर, बिजली इंजीनियर, ऑटो यांत्रिकी, नर्सों और अन्य स्वास्थ्य पेशेवरों के व्यवसायों में, उच्च स्तर के लिए, हो रही हैं। उनके काम में, ज्ञान घटक की हाल के वर्षों में काफी वृद्धि हुई है। काम की प्रकृति भी बदल रही है। उदाहरण के लिए, ऑटो यांत्रिकी, अब तेजी से निदान और वाह्न के मूल्य के घटक के रूप में समस्या को सुलझाने पर तेजी से डिजिटल आधारित हो रहा है और घटकों के मरम्मत की बजाय अब उन्हें प्रतिस्थापित करने पर ज्यादा जोर दिया जा रहा हैं। नर्स-चिकित्सक अब डॉक्टर या चिकित्सा विशेषज्ञों द्वारा किए गए कार्य के क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं। कई कर्मचारियों को भी, अब मजबूत अंतर व्यक्तिगत कौशल की जरूरत है, खासकर जब वे जनता के साथ सामने संपर्क में हैं। एक ही समय में और अधिक परंपरागत रूप से शैक्षिक क्षेत्रों और कौशल विकास पर अधिक ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है ताकि शुद्ध और लागू ज्ञान के बीच कुछ हद तक कृत्रिम सीमाओं को तोड़ने के लिए शुरुआत की जा सके। सारांश में, नौकरियों में अब दोनों, शैक्षणिक और कौशल के आधार पर ज्ञान की आवश्यकता होती है। उच्च शिक्षा और कौशल के आधार पर ज्ञान को भी एकीकृत और सम्प्रत्ययिकरण किए जाने की जरूरत है। नतीजतन, शिक्षण और शिक्षा के लिए जिम्मेदार लोगों कि मांग में वृद्धि हुई है, लेकिन सब से ऊपर, इस

डिजिटल युग में अध्यापकों की इस नई मांग का मतलब है कि अपने स्वयं के कौशल स्तर पर इन मांगों के समान वृद्धि की जरूरत।

ज्ञान को निम्नलिखित बातों पर भी वर्णित किया जा सकता है:

1. ज्ञान शक्ति है।
2. ज्ञान अनुभव आधारित है।
3. ज्ञान हमेशा गतिशील और अस्थिर होता है।
4. ज्ञान लगातार प्राप्त और संसाधित जानकारी पर आधारित होता है।
5. ज्ञान एक सच्चा व स्थितिजनक निर्णय है।
6. ज्ञान तथ्यों और मूल्यों पर आधारित होता है।
7. ज्ञान एक विशाल विविध और विशाल सागर की तरह है।
8. ज्ञान हमेशा निश्चित है और किसी भी संदेह से दूर।
9. ज्ञान घृणा, गद्दारी, बंधन या इंद्रियों के व्यसनिक प्रकार के बारे में नहीं होते हैं।
10. ज्ञान जीवन भर चरणबद्ध प्रगति या विकास का नाम है।
11. ज्ञान असीम है। अधिक अनुभव के साथ अधिक ज्ञान होगा।
12. ज्ञान प्यार, अपनापन और समझ ही जानता है।
13. ज्ञान कभी नहीं तोड़ता, बल्कि समन्वय करने व जोड़ने के लिए होता हैं।
14. ज्ञान सकारात्मक व रचनात्मक दृष्टिकोण और व्यवहार का परिचय देता है।

जीवन में ज्ञान का महत्व
IMPORTANCE OF KNOWLEDGE IN LIFE

ज्ञान कुछ जानने की हालत को दर्शाता है। यह जानकारी, तथ्यों, सिद्वांतों, कौशल और समझ आदि है जोकि शिक्षा और अनुभव के माध्यम से हासिल किया जाता है। ज्ञान जीवन का शक्तिशाली और महत्वपूर्ण हिस्सा है। ज्ञान जीवन में एक शक्तिशाली अधिग्रहण की तरह है, जो जब किसी को दिया जाये, तो भी कम नहीं होता है। हमारा ज्ञान, हमारे पूर्वजों, विद्वानों द्वारा इकट्ठा किये गये, सामूहिक विचार, एक समृद्ध विरासत और जानकारी है, जो उन्होंने हमारे लिये पीछे छोडा है। किसी ने कहा है कि अज्ञान अगर भगवान का अभिशाप है तो ज्ञान वह महान पंख जिसमें व्यक्ति को स्वर्ग में ले जाने की महत्वपूर्ण शक्ति होती है। एक प्रसिद्ध संस्कृत कवि का कहना है कि एक

शिक्षित व्यक्ति हर जगह सम्मानित होता है। एक जानकार व्यक्ति का महत्व काफी ज्यादा है। जहां कहीं भी वह जाता है, वह श्रद्धा व विशेषाधिकार का अधिकारी होता है और हर कोई उसकी बात सुनता है। ज्ञान की शक्ति उसे इस तरह की उच्च पदवी प्रदान करती है। यह ज्ञान ही है कि जो असीम शक्ति के साथ, उसे शारीरिक शक्ति की तुलना में ज्यादा मजबूती प्रदान करता है। ज्ञान प्रकृति व विपदाओं को जीतने में भी मदद करता है और इसी विजय ने मानव को प्रगति और सभ्यता के लिए प्रेरित किया है। किताबें और अखबार, मानव ज्ञान का सबसे बड़ा स्रोत है। विज्ञान, साहित्य, दर्शन, इतिहास आदि भी ज्ञान के महान स्रोत के रूप में हमें समृद्ध कर रहे हैं। आदमी को अधिक से अधिक ज्ञान के लिए खोज जारी रखनी चाहिए। ज्ञान के लिए उनकी प्यास कभी भी संतुष्ट नहीं होनी चाहिए। ज्ञान के लिए यह प्यास, कई वैज्ञानिक, चिकित्सा और भौगोलिक खोजों का कारण बनी है। कई लोग वैज्ञानिकों बन गए हैं। उन्होने कई वैज्ञानिक उपकरणों का आविष्कार किया है। हर इंसान ने ज्ञान के लिए जोर दिया है। ज्ञान जीवन के लिए शक्ति लाता है। जो लोग ज्ञानी है, वे दूसरों की कमान और दुनिया पर राज करने में सक्षम हैं। लेकिन शक्ति जो ज्ञान से आती है उसे मानव जाति की प्रगति के लिए ही इस्तेमाल किया जाना चाहिए और दुरुपयोग नहीं किया जाना चाहिए। सही मायने में भी यही है कि मानवता व शक्ति, दोनों ही ज्ञान से बहती है। ज्ञान जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

1. बेहतर सीखना (Learning): सीखना एक अवधारणा है जोकि किताबें या वर्गों तक ही ही सीमित नहीं है। आप सचमुच हर दिन कुछ नया सीख सकते हैं और यह शायद आसान भी है। आप खुद के बारे में जान सकते हैं जोकि आप को पहले नहीं पता था, आप अपने एक दोस्त के बारे में कुछ जान सकते हैं या एक पूर्ण अजनबी के बारे में भी। आप अच्छी ग्रेड प्राप्त करने या कुछ बेहतर सीखने के सम्बंध में भी सोच सकते है। ज्ञान, एक नियमित आधार पर हासिल सीख हैं।

2. सीखने के साथ स्थापित लक्ष्य: कभी कभी लोग, खुद को, वे क्या सीख सकते हैं और क्यों, पर खुद को किंकर्तव्यविमूढ पाते हैं। वे कुछ समझ ही नहीं पाते कि महत्वपूर्ण लक्ष्यों को ढूंढना, उन्हें स्थापित करना और फिर से सीखने के लिए पहुंचना, और अधिक ज्ञान प्राप्त करने में एक महान व पहला

कदम है। ज्ञान प्राप्ति में हौंसला, समझ व ललक एक महत्वपूर्ण कार्य अदा करते हैं।

3. मुश्किल व असम्भव बातें पहले व तेजी से सीखें: अधिक ज्ञान अगर आपके पास है तो मुश्किल चीजों को आसान करना व अन्य बातें, आप के लिए जानना, सम्भव व सक्षम हो जाएगा। एक सरल अवधारणा है कि मुश्किल चीजें असम्भव से व भटकाव की तरफ ले जाते है, लेकिन एक बार आप इस अवधारणा के मूल सिद्धांतों को जान लो तो आप आसानी से और अधिक मुश्किल काम सीख सकते हैं। अपने ज्ञान का लाभ उठाते हुए इसे उपयोग करें और आदर्श प्राप्त करने के लिए अपनी बुद्धि का पूरा उपयोग कीजिये।

4. ज्ञान की मदद से समस्याओं का समाधान: जीवन में आप लगातार हर दिन समस्याओं से जूझते है, यहाँ तक कि कभी ऐसा भी आप उन पर काबू नहीं पा सकते या उनका सामना नहीं कर सकते। ज्ञान के साथ, आप गंभीर सोच की अपनी क्षमताओं में सुधार कर सकते हैं। आप को कक्षा में कई समस्याओं का सामना करना है, जीवन में भी कई वास्तविक समस्याओं का सामना कर सकते हैं। कई बार बहुत सारे लोग यह सवाल पूछते हैं कि वे कभी भी, जीवन में, क्या क्लास में सीखा, उपयोग करेंगे? अब इस सवाल का क्या जवाब होगा जबकि हम समस्याओं का सामना हर दिन करते हैं और जो सीखा है, उसी के सहारे ही तो यह हो पाता है, तो ज्ञान का प्रयोग तो हर दिन हुआ है। यह सिर्फ गणित और विज्ञानं की ही बात नहीं बल्कि इतिहास के रूप में भी ऐसा ही है। इतना ही नहीं, इस ज्ञान की मदद से आप विशिष्ट समस्याओं से निपटने का दावा करते है, उन स्थितियों में भी जहां आप को गंभीर रूप से लगता है कि आप अनुभव ही आपकी मदद कर सकता है। अब आप समझ सकते हैं कि बौद्धिक धैर्य की आवश्यकता आपको किस व किस तरह की प्रतिक्रिया करने के लिए हैं। आप कुछ समस्याओं के साथ निपट सकते हैं और कुछ के लिए स्वीकार करते हैं जब वे आपकी मानसिकता से सम्बन्धित नहीं हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आप अपनी समस्याओं को दूर करने के लिए, ओर अधिक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

5. अपने आप को समझना: ज्ञान से, वास्तव में आप खुश हो सकते हैं जैसेकि आप खुद के बारे में सोचते हैं और खुद को समझ सकते हैं। क्या आपको खुशी प्रदान करता है, आप क्या तलाश रहे हैं और क्या आप सीखना चाहते है,

ज्ञान विभिन्न तरीकों से आपकी मदद करता है। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण यह है कि आप खुदको समझ पाते हैं कि आप कौन हैं, ज्ञान आपको यह समझने में आपकी मदद करता है।

ज्ञान जीवन की कम्पास है। यह जीवन में कुछ पाने, लक्ष्य तय करने, पूर्वानुमान करने के लिए और जीवन में अच्छी-बुरी घटनाओं के लिए तैयार करता है। ज्ञान शक्ति हो सकता है और जीवन में आप क्या चाहते हैं, बनने की क्षमता देता है।

ज्ञान और जानकारी के बीच अंतर
DIFFERENCE BETWEEN KNOWLEDGE AND INFORMATION

मानव मन, सामग्री या चीजों की तरह है जोकि दैनिक आधार पर, सूचना के आदान-प्रदान पर आधारित है। कई बार लोग, क्या देखा है, अनुभव के आधार पर, सुना-पढ़ा है, सीखा है, या कुछ प्रयोग करने के बाद निष्कर्ष निकाल लेते हैं। ये धारणाएं, डेटा, सूचना, ज्ञान, समझ या बौद्धिकता के रूप में मन में लोग वर्गीकृत कर लेते हैं। बौद्धिकता के अलावा, सूचना और ज्ञान का मस्तिष्क में वर्गीकरण, अतीत में दर्ज की गई घटनाओं के एक परिणाम के रूप में होता हैं। सूचना, एक डेटा (Data) ही है जिसे रिलेशनल कनेक्शन के माध्यम से कुछ अर्थ दिया गया है। कंप्यूटिंग के लिहाज से यह डेटा है जिसे संसाधित किया गया है। डेटा हर वक्त उपयोगी हो, यह जरूरी नहीं। उदाहरण के लिए, एक डेटाबेस में संग्रहीत डेटा, एक प्रक्रिया या कुछ और के बारे में जानकारी देने के लिए एक कार्यक्रम हो सकता है; उदाहरण के लिए, एक बैंकिंग प्रणाली में, किसी खाता विशेष में राशी जमा करने या निकालने के विवरण से यह निर्धारित कर सकते हैं कि उस व्यक्ति को ऋण दे सकते हैं या नहीं और उस खाते में ऋण का रिकॉर्ड कैसे है या उस खाते की शेष राशि में वृद्धि हुई द्वारा कार्रवाई की जा सकती है या नहीं, कहीं न कहीं एक डेटाबेस में यह सब संग्रहीत है, उससे यह भी जानकारी प्राप्त होती है कि लेन-देन के बारे में उस का व्यवहार कैसा है और उसमें पुनः ऋण प्राप्त किया गया है, आदि। इससे यह पता चलता है कि जानकारी के बिना, आपको ज्ञान प्राप्त नहीं होगा। ज्ञान एक तरीका है जो यह उपयोगी बनाता है कि ज्ञान में, जानकारी का संक्षिप्त और उचित संग्रह है। ज्ञान एक नियतात्मक प्रक्रिया है, जहां सूचना का क्या पैटर्न है, को संदर्भित करता है। हम भी सकारात्मकपूर्ण यह कह सकते हैं कि जब एक व्यक्ति को कुछ के बारे में कुछ जानकारी है, तो यह कि उसे इस

बारे में ज्ञान है। यही कारण है कि ज्ञान उनके लिए कुछ उपयोगी और यहां तक कि लागू उपयोग होगा लेकिन फिर भी अगर मामला है, जो ज्ञान नहीं है तो उपलब्ध सूचना अनुमानित ज्ञान होता है। जैसेकि उदाहरण के तौर पर, प्राथमिक स्कूल के बच्चे पहाड़ा (समय तालिका) के ज्ञान को याद करते हैं, अगर उनसे पूछा जाये कि 3 गुना 3 का परिणाम तो वे एकदम से या थोड़ा धीरे-धीरे यह बता देते हैं कि उत्तर ९ है। हालांकि बच्चों को इस सब का कोई कारण या महत्व नहीं पता होता है। जब बच्चों को 2300 गुणा 150 का परिणाम क्या होगा, पूछा जाये तो शायद वे नहीं बता पाएंगे क्योंकि वह प्रवेश तालिका में नहीं है। यह सच, विश्लेषणात्मक क्षमता और अनुभवजन्य तथ्यात्मक ज्ञान में भेदं बताता है, बस पहाड़े के कुछ सेट याद करने को, ज्ञान नहीं कहा जा सकता है।

1. सूचना सिर्फ संसाधित डेटा है जबकि ज्ञान वह जानकारी है जिसे उपयोगी बनाया गया है।

2. सूचना या जानकारी प्राप्त करने में सक्षम होना, ज्ञान प्राप्ति के लिए एक आवश्यक कदम है।

3. जिस तरह से डेटा होता है उसी तरह की सूचना होती है जबकि ज्ञान, जानकारी के भीतरी पैटर्न की जांच करने संबंधित है।

4. ज्ञान प्राप्ति में लोगों को कुछ संज्ञानात्मक और विश्लेषणात्मक क्षमता की जरूरत होती है जबकि जानकारी पाने के लिए संज्ञानात्मक क्षमता की जरूरत नहीं होती।

सूचना	ज्ञान
मूर्त – मानव बनाई/बताई	मनुष्य प्रक्रिया - सोच / जागरूकता
प्रसंस्करण बदलता प्रतिनिधित्व	प्रसंस्करण में परिवर्तन चेतना
भौतिक वस्तु	मानसिक वस्तु
संदर्भ स्वतंत्र	संदर्भ अर्थ को प्रभावित करता है
इकाई	जागरूकता और अंतर्ज्ञान
आसानी से हस्तांतरणीय	स्थानांतरण/हस्तांतरण सीखने की आवश्यकता है
कम कीमत पर प्रतिलिपि प्रस्तुत करने योग्य	हूबहू प्रतिलिपि नहीं प्रस्तुत की जा सकती

विश्वास और सच (सत्य) के बीच फर्क

DIFFERENCE BETWEEN BELIEF AND TRUTH

विश्वास स्वीकृति, राय या अस्तित्व पर आधारित है।

1. एक स्वीकृति कि बयान सच है या कि कुछ मौजूद है।

2. कुछ सच या सही के रूप में स्वीकार करना, या मजबूती से राय या बात को मानना।

सत्य तथ्य या वास्तविकता है।

1. गुणवत्ता या सच होने की स्थिति।

2. जो सच या तथ्य या वास्तविकता के अनुसार है जैसेकि, मुझे सच बताओ।

इन में से प्रत्येक एक व्यक्तिपरक और उन्हें करने के लिए एक उद्देश्य की ओर है। इन में से प्रत्येक में अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग चीजों का अलग-अलग मतलब हो सकता है। इन में से प्रत्येक के लिए अंतहीन बहस की जा सकती है। इसलिए, एक ही बात जो दोनों में एक जैसी है, शब्दों में पूरी तरह से, सम्बन्धित सभी दृष्टिकोण को समझना-समझा पाना कठिन है। कभी-कभी जीवन बना पाने की मानवीय योग्यता और सामूहिक तौर पर उसे जीना, झूठी मान्यताओं, गलत ज्ञान या असत्य पर आधारित होना पाया जाता है, इतिहास में इसके कई उदाहरण मौजूद हैं। जो सच था, कल झूठ या जो झूठ था, कल सच पाया जा सकता है। दुनिया के प्रति मानवीय समझ और एक-दूसरे के प्रति समझ, क्षणिक साबित हो जाती है। अज्ञान, हर जगह हर किसी की आम स्थिति है क्योंकि वहाँ हमेशा हम चाहते हैं, हम जानते हैं कि कुछ कर सकते हैं, या पता नहीं कि कुछ कर सकते हैं और अचानक या अक्सर, किसी भी विषय के बारे में हमारे पूरे परिप्रेक्ष्य बदल जाते है। किसी का मानना या जानना कि निर्माण उद्देश्यपूर्ण है या बेमतलब, अस्तित्व के होने ना होने या स्वीकार करने ना करने के मद्देनजर कुछ भी

नहीं है। हम मौजूद हैं। हमारा अनुभव मौजूद है। हमारे दृष्टिकोण मौजूद हैं। ये संदेह से परे है कि देखने वाला, देखे जाने को प्रभावित करता है। क्वार्कों और मेसॉनों के स्तर पर, विचारों के स्तर पर, चेतना की उपस्थिति वास्तविकता को प्रभावित करती है। क्वांटम-उलझन साबित करता है कि सब कुछ जुड़ा हुआ है, वह भी अणु-परमाणु स्तर पर। ब्रह्मांड के दूसरे पक्ष को भेजा गया एक विभाजित परमाणु मूल वैज्ञानिक प्रयोगशाला में शेष के लिए एक साथ बंद हो जाएगा।

विश्वास वह मनोवैज्ञानिक स्थिति है जिसमें व्यक्ति, प्रस्ताव या आधार रखते है, जो सच है। सत्य व्यक्ति की एक उद्देश्यपूर्ण स्वतंत्र स्थिति है। एक गलत विश्वास कितना भी गंभीर क्यों न हो, ज्ञान नहीं माना जाता है। फ्लैट पृथ्वी सिद्धांत में एक गंभीर आस्तिक नहीं जानता है कि पृथ्वी फ्लैट है। इसी तरह, सच्चाई तभी है कि जब कोई मानता है कि कुछ है, सही है क्योंकि अगर कोई मानने वाला नहीं है तो सच्चाई कोई मायने नहीं रखती है।

विश्वास, सत्य और ज्ञान के बीच का सम्बन्ध जटिल है और विद्यार्थिओं के लिए महत्वपूर्ण भी क्योंकि यह उनकी सोच के आधार को समझने व दर्शाने का आधार स्तम्भ हैं। यह गतिविधि छात्रों को विश्वास और ज्ञान के बीच भेद करने के लिए, उन्हें सक्षम करने के लिए, अपने विश्वासों को चुनौती देने के लिए प्रोत्साहित करती है। प्लेटो द्वारा वर्णित शास्त्रीय परिभाषा के अनुसार, ज्ञान के रूप में प्रभाव व महत्व पाने के लिए, किसी बयान को जायज, विश्वस्त, सत्य और औचित्यपूर्ण होना चाहिए। इसलिए, विश्वास और ज्ञान के बीच रिश्ता है कि एक विश्वास ज्ञान तभी है जब, विश्वास सच आधारित है और विश्वासकर्ता के पास विश्वास करने के लिए एक औचित्य (उचित और जरूरी प्रशंसनीय दावे/सबूत/मार्गदर्शन) है।

अगर कोई मानता नहीं है तो वह सच्चाई नहीं हो सकती, न ही ज्ञान हो सकता है क्योंकि ज्ञान होने के लिए, यह बहुत जरूरी है कि उसे कोई मानने वाला हो, तभी वह प्रभावित होगा।

तर्क और विश्लेषण के बीच अंतर

DIFFERENCE BETWEEN REASONING AND ANALYSIS

जब हम कुछ करते हैं या हमें कुछ करने को दिया जाता है तो हम जो पहले से ही जानते हैं, से तुलना करते हैं और फिर एक निष्कर्ष के साथ निर्णय करते हैं कि हमें क्या करना चाहिए, तर्क कहलाता है। जबकि हमारी

तार्किक क्षमता जन्म के साथ ही आती है लेकिन यह कौशल सिखाया और सुधारा जा सकता है। तर्क कौशल अक्सर अवचेतन मन के साथ अचानक और सेकंडों के भीतर होता है। लेकिन कभी-कभी हमें चीजों के माध्यम से सोचने के लिए, एक निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए, एक कठिन प्रश्न या स्थिति के प्रस्तुत होने की जरूरत होती है। तर्क कौशल दिन-प्रतिदिन के जीवन के लिए आवश्यक हैं: तर्क संभव विकल्पों के बीच चुनाव करने के लिए, सकारात्मक और नकारात्मक स्थितियों के बीच भेद करने के लिए, किसी समस्या को ढूंढने और उसे हल करने के लिए और भी बहुत कुछ करने का फैसला करने के लिए, जरूरी है। जब हम कुछ और अधिक विशिष्ट उदाहरण पर विचार करें, तो इस समीकरण को ध्यान में रखें जो आप को समझने के लिए मदद कर सकते हैं: तर्क कौशल का उपयोग असली दुनिया में हर समय किया जाता है। उदाहरण के लिए, आप को एक पारिवारिक समारोह के लिए आमंत्रित किया गया हैं लेकिन आप को स्कूल के एक महत्वपूर्ण काम को भी खत्म करना है। यहाँ तर्क की आवश्यकता है क्योंकि आपके पास दो विकल्प है जिनपर विचार करना है, स्कूल के साथ परिवार को संतुलित करने की कोशिश। इसके अलावा, हम अक्सर ऐसी स्थितियों में फंस जाते हैं जब हमें सही और गलत के बीच, नैतिकतापूर्ण निर्णय करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। हो सकता है, आपके मित्र आपको धूम्रपान करने या शराब पीने के लिए मजबूर करें जबकि आप शायद ऐसा नहीं करना चाहते तो इस अवस्था में आपको नैतिकतापूर्ण निर्णय करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। इस मामले में, आपको हानिकारक प्रभाव और जो आपके मित्रों को भाता है और मज़ा आता है, में से एक को चुनना पड़ेगा तो यह, मित्र बनाम नैतिक चुनाव के बीच कारण, कह सकते हैं।

तर्क में तार्किक, जानकारी, तथ्यों और मान्यताओं के माध्यम से काम करने के लिए चीजों की स्थापना और तथ्यों को सत्यापित करने की भावना बनाने की क्षमता है। यह तथ्य या निष्कर्ष और निर्णय के गठन की प्रक्रिया है। यदि सादा और सरल शब्दों में कहें, यह प्रस्तुता से जुड़कर एक तार्किक निष्कर्ष तक सोचने की क्षमता है। तर्क दो प्रमुख प्रकार के हो सकते हैं: आगमनात्मक तर्क और निगमनात्मक तर्क। आगमनात्मक तर्क (reasoning), तर्क का एक रूप है जो उपमा, उदाहरण, टिप्पणियों और अनुभवों का उपयोग निर्णायक प्रस्ताव बनाने के लिए करता है। आगमनात्मक तर्क (Logic) भी नमूने मामलों, प्रयोगों और प्राकृतिक आंख प्रेक्षण के रूप में प्रकृति, विज्ञान के

क्षेत्र में पैटर्न आवर्ती के सामान्य टिप्पणियों और हर रोज घटनाओं के आधार पर अनुभवजन्य बयान तैयार करते हैं। यह ज्यादातर, वस्तुओं या प्रकार के गुणों और संबंधों को, पिछली टिप्पणियों के आधार पर, समझाने के लिए प्रयोग किया जाता है । यह समझा जाना चाहिए कि प्रेरक तर्क निरपेक्ष निश्चितता के माध्यम से नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष और भविष्यात्मक निश्चितता के माध्यम से अपने निष्कर्ष को स्थापित करने की कोशिश करते हैं। निगमनात्मक तर्क (reasoning), ऐसा तर्क है जिसमें निष्कर्ष, स्थितिय और तथ्यात्मक प्रस्ताव से सम्बन्धिय और तार्किकता, का रूप है। ये निगमनात्मक तर्क (arguments) ध्वनि और सुसंगत तर्क की अवधारणा पर आधारित हैं। परिस्थितियाँ यदि सत्य हैं तो निर्माण न्याय के साथ व्यवस्थित तर्क अपने निष्कर्ष तार्किक निश्चितता के एक डिग्री के साथ कुछ बनाने में एक निगमनात्मक तर्क में वैध माना जाता है। निगमनात्मक तर्क (reasoning), शुद्ध तर्क (logic) से तर्क (reasoning) की समझदारी है। यह ध्वनि और शुद्ध तर्क (logic) माना जाता है।

विश्लेषण, समाधान की तुलना में समस्याओं के बारे में है, कैसे की बजाय क्यों, आविष्कार नहीं शोध, आलोचना नहीं स्वीकृति, अपघटन नहीं पुनर्संयोजन, प्रगट हो सकता है की तुलना में अंतर्दृष्टि, भ्रम की स्थिति की तुलना में स्पष्टता, खुले बजाय विकार से, लोगों को नहीं बल्कि मशीनों की तुलना में, औचित्य नहीं बल्कि इस दावे की तुलना में, सवाल जवाब के बजाय, राय से तथ्य, हठधर्मिता से स्वतंत्रता, अल्पज्ञता से गहराई, एक के बजाय एकाधिक दृष्टिकोण, भविष्य के बजाय अतीत, ठहराव की तुलना में गति, प्रक्रिया से परिणाम, कठोरता के बजाय अनौपचारिकता और निरपेक्षता रिश्तेदारों के बजाय से सम्बन्धित है।

एक बेहतर समझ हासिल करने के लिए, एक जटिल विषय या पदार्थ को छोटे भागों में तोड़ने की प्रक्रिया, विश्लेषण है। वहाँ विश्लेषण के कई प्रकार हो सकते हैं। एक तो इसी अध्याय में ही शामिल हैं। एक अन्य संभावित विश्लेषण किसी अन्य पाठ या एक ताजा अंक के लिए फ्रायड के विचारों को लागू करने के शामिल हो सकता है। कोई भी विश्लेषण, पर्याप्त गहराई में डेटा पर विचार और पर्याप्त स्पष्टता के साथ पाठक, यहां तक कि जो लेखक के निष्कर्ष से सहमत नहीं, को समझाने के लिए, सम्भव होना चाहिए। विश्लेषण, उनके अंतर्संबंधों को उजागर करने के लिए, अपने घटक भागों में इसे तोड़ने

के द्वारा, डेटा या जानकारी का एक व्यवस्थित परीक्षा और मूल्यांकन है। विश्लेषण, तथ्यों को उजागर करने और कारण-प्रभाव रिश्तों को समझने, इस प्रकार की समस्या को हल करने और निर्णय लेने के लिए आधार प्रदान डेटा और तथ्यों की परीक्षा है।

जानना क्या है

What is Knowing

जानना (Knowing) व्यक्तियों के अध्ययन के व्यवहार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि लोगों को अपनी धारणाएं, व्याख्याओं के लेंस के माध्यम से दुनिया को देखने के लिए और दुनिया की समझ के अनुसार करने और मानने का मौका मिलता है। जानने का ज्ञान, जानकारी या समझ रखने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह भी साक्ष्य है अंदर कि जानकारी के रूप में। जानने कि निम्नलिखित धारणाएं हो सकती है:

1. जानने से ज्ञान की वृद्धि होती है

जानना प्रतिबिंब की एक वस्तु नहीं है, यह सिर्फ कुछ ऐसा है जैसे सब लोग सांस लेते है और ऐसा कुछ नहीं कि, प्रतिवादी सवाल का मतलब समझ न पाए। जानने की प्रक्रिया का मतलब है एकत्रित किया जाना, और परिणाम है ज्ञान के टूटे टुकड़े। शिक्षा और ज्ञान को एक समानांतर गंतव्य के लिए अग्रणी पटरियों के रूप में माना जाता है। लोगों जानकारी या बस तथ्यों को, सीखने के असतत इकाईयों के साथ, ज्ञान की समानता के लिए करते हैं और मानते हैं कि यह सब, शिक्षार्थी के मस्तिष्क में इन असतत इकाईयों का हस्तांतरणभर है। यह सब कुछ इस तरह से है जैसे इक एक विशेष प्रकार की दुकान (जैसे कक्षा) में सब कुछ इकट्ठा करने और एक लोभी संग्रहकर्ता (जैसे शिक्षार्थी) को एक दुकानदार (जैसे शिक्षक) की कुछ या बहुत कुछ खरीदने की पेशकशभर है। यहाँ खरीदने से मतलब है; ज्ञान में वृद्धि करने के लिए, प्रक्रिया पर ध्यान केंद्रित कर, लेबल को छोटा करने का समर्थन करना।

2. जानने का मतलब ज्ञान याद रखना है

जानने का मतलब याद रखना है और याद को पुन: पेश करने की क्षमता है। पुन: पेश करना एक उत्पाद है जबकि प्रक्रिया है याद रखना। कभी-कभी जानने को बैंकिंग कि तरह से भी देखा जाता है जहां छात्रों को जानने के

लिए आह्वान नहीं किया जाता है बल्कि शिक्षक द्वारा सुनाई गई सामग्री को याद करने के लिए कहा जाता है।

3. जानना: तथ्यों, प्रक्रियाओं आदि को, जो बनाए रखा जा सकता है और / या अभ्यास में या के लिए उपयोग किया गया, का एक अधिग्रहण है

जानना, प्रक्रिया का चयन और उन तथ्यों, प्रक्रियाओं, विचारों आदि जो बाद के जीवन में उपयोगी हो सकता है, को याद रखना है। जानने को एक मात्रात्मक घटना के रूप में देखा जाता है और यह एक एल्गोरिथ्म या नक्श की तरह लागू करने जैसा हैं। शिक्षार्थी के जानने के लिए, क्या तय किया जाए या क्या नहीं, भविष्य में क्या उपयोगी हो हो सकता है, यह सब सीखना है जानना है। सीखने का यह दृश्य न केवल याद रखना जरूरी है बल्कि यह अभ्यास का एक स्वाद तब तक आवश्यक है जब तक कि कोई पारंगत न हो जाये।

4. जानना अर्थ की अमूर्त (abstraction of meaning) है

सोच के इस स्तर पर, मन बनी-बनाई बातों (तथ्य, प्रक्रियायें) से हट कुछ अर्थपूर्ण व्यवहार की तरह सोचता है। जानने का मतलब अब केवल पुन:निर्माण प्रकिर्या जैसा नहीं रह गया है बल्कि इसके बजाय, लोग क्या पढ़ते या सुनते है से, अर्थ सार संक्षेप की एक प्रक्रिया के रूप में हो जाता है। प्रक्रिया, विषयों में सम्मलित विभिन्न दृष्टिकोण, विषय के भीतर विचारों से संबंधित गहराई को समझने की है और बड़ी हो रही तस्वीर के माध्यम से मतलब की बातों तक पहुँच जाने की है। बातों का अर्थ निकाल, उनसे अपना नजरिया प्रस्तुत करके, अर्थ दृढ़ता से बाहरी विशेषज्ञों के सामने प्रस्तुत कर सक्रिय रूप से भाग लेने की हैं। इस जानने के उत्पादक्तापूर्ण सोच का एक तरीका है, बौद्धिक क्षमता पर जोर देने के साथ, उच्च शिक्षा के उद्देश्यों से तार्किक और विश्लेषणात्मक रूप से जुडना।

5. जानना वास्तविकता की एक समझ लक्षित प्रक्रिया है

जानना, उम्मीद भरी विशेषता है जहाँ, लोगों को क्या पता है, की मदद से जहाँ वे रहते हैं, वहां की वास्तविकता समझने और पिछले स्तर से संस्थागत स्थिति की सीमा के बाहर महत्वपूर्ण अंतर देखने-समझने की क्षमता मिलती है। पिछले स्तर में सीखते अधिक तकनीकी समझ की बजाय, जानना व्यक्तिगत अर्थ के रूप में ज्यादा प्रतिबिम्बित होता है। जानने को एक यात्रा के रूप में देखा जाता है जहाँ यात्री के रूप में शिक्षार्थी का साथ सहयात्री (शिक्षक

और दूसरे लोग) देते है जो जांच करने और स्थानीय दृश्यों का आनंद लेने में साथ शामिल होते हैं। साथ में, यात्रियों को इस यात्रा के माध्यम से अपने क्षितिज को बड़ा करने का मौका मिलता है। शैक्षिक संदर्भ में यह व्याख्या दी जा सकती है कि शिक्षार्थियों और शिक्षक को नए तरीकों की तलाश व चीजों को एक साथ देखने व अलग-अलग दृष्टिकोण से उन्हे चारों ओर दुनिया की एक बेहतर समझ के लिए एक मौका मिला है। मतलब यह कि इस माहोल से चीजों को अलग देखकर, अलग तरह से देखकर, विभिन्न दृष्टिकोण से चीजों को देखने का तरीका बदलने में सक्षम किया जाता है।

6. जानना स्वयं-बोध है

जानने का एक अस्तित्व आयाम है: शिक्षार्थी की स्वयं को जानने की ओर ध्यान केंद्रित किया जाना। इस प्रक्रिया का पहलू आत्म-जागरूकता को बढाना है, इस सवाल के जवाब की तलाश करना है "मैं कौन हूँ? खुद की तलाश आत्म प्रतिबिंब की परम वस्तु बन गया है। उत्पाद है आत्म-बोध; वह बनना जैसे कि वे सोच रहे हैं। जानने के लिए उचित रूपक है; अपनी-अपनी विशेषता से, सीखना और बढ़ना, मजबूती से एक बगीचे (पर्यावरण) में धंसे एक वृक्ष की तरह लोगों को छाया और सुरक्षा प्रदान करने और माली (महत्वपूर्ण अन्य लोगों) कीतरह दूसरों का ख्याल रखना। जानने और सीखने का यह विचार बढती आत्म-जागरूकता के रूप में फिर से लेबल किया जाने की आवश्यकता है।

ज्ञान के प्रकार

KINDS OF KNOWLEDGE

ज्ञान, वास्तविकता के विशेष पहलुओं की समझ और जागरूकता है। यह वास्तविकता के लिए लागू कारणों की प्रक्रिया के माध्यम से प्राप्त स्पष्ट व सुबोध जानकारी है। याद्दाश्त () लोगों को कि उन्हें अतीत में क्या पता था जानने की अनुमति देती है और ज्ञान से जानने, सीखने और व्यवहार करने के लिए उन्हें मदद मिलती है। दार्शनिकों मोटे तौर पर तीन डोमेन में ज्ञान बांटा गया है:

1. **व्यक्तिगत ज्ञान** (Personal knowledge) मुहारात्मक अनुभव, विशेष स्वभाव वरीयतायें और आत्मकथात्मक तथ्यों से संबंधित है।

4. जानना- कैसे (Knowing-How)

ज्ञान-जो है से, ज्ञान-कैसे के अंतर का संभावित महत्व है। जान[illegible] कैसे, का मतलब है किसी का कैसे कुछ करना, एक घड़ी पर कैसे स[illegible] पढ़ना, दोस्त को कैसे फोन करना, एक विशेष भोजन कैसे पकाना, और [illegible] कुछ। ये कौशल या कम से कम क्षमतायें तो हैं। अक्सर ज्ञान-कैसे व्यावहा[illegible] ज्ञान के रूप में करार दिया जाता है। किसी का यह जानना कि कैसे वि[illegible] भोजन पकाया जाता है, वास्तव में क्या केवल सत्य का बहुत ज्ञान है – [illegible] यही ज्ञान है कि – क्या सामग्री चाहिए, कैसा संयोजन होगा, कितना स[illegible] लगेगा और पसंद पर क्या असर होगा- पसन्द आएगा या नहीं? जानना-[illegible] किसी भी तरह अलग है, भले ही यह ज्ञान-कैसे होने का अहसास करवाता [illegible] यह ज्ञान-कैसे से भी अधिक कुछ है।

सामान्य बातचीत में लोग ज्ञान का उपयोग इस तरह से करते हैं:

जानना कि (तथ्य और जानकारी)

जानना कैसे (कुछ करने की क्षमता)

कभी कभी, लोग शब्द ज्ञान का उपयोग ऐसे करते हैं कि वे जैसे [illegible] जानकारी है; कि कोई जानता है तो कैसे तैरना होता है, जब कहीं पानी [illegible] छोड़ दिया जाये तो कुछ हाथ-पैर हिलाओ और डूबने से बच जाओ। हाला[illegible] कहने के लिए तो ठीक है पर कैसे, वास्तव में, कोई तैरने में सक्षम या अस[illegible] हो सकता है, यह कोई नहीं बता सकता। मन या मस्तिष्क में होने वा[illegible] क्रियाएँ वास्तव में बताई नहीं जा सकती, या यूँ कहें कि उन का वर्णन न[illegible] किया जा सकता।

ऊपर लिखा समझने में नाकाम रहने वालों के लिए, कुछ भ्रम [illegible] स्थिति हो सकती हैं। अगर लोगों को दुनिया में सबसे अच्छे सार्वजनिक व[illegible] से निर्देश मिलता है, इसका मतलब यह नहीं है कि वह भी उत्कृष्ट बात [illegible] सकते हैं, या वह भी दूसरों को हिदायत दे सकता हैं। उन्होंने कहा कि वे [illegible] करते हैं कोई यह कहने के लिए सक्षम हो सकता है। उदाहरण के लिए [illegible] कहते सकते है कि वे किस तरह का अभ्यास करें। लेकिन यह नुक्ता [illegible] लिए और दूसरों के लिए काम नहीं भी कर सकता है। एक बहुत कम स[illegible] सार्वजनिक वक्ता या यहां तक कि एक जिसने कभी भी नहीं सार्वजनिक [illegible] बात की है, हो सकता है एक बेहतर शिक्षक साबित हो।

मुद्दा यह है कि जानना-जो है और जानना-कैसे, ज्ञान की दो अलग अलग प्रकार हो सकती हैं।

ज्ञान एक प्रकार के रूप में

KNOWLEDGE AS A KIND

किस तरह की बात ज्ञान है? विशेष रूप से, क्या यह प्राकृतिक या स्वाभाविक है- वैज्ञानिक दृष्टि से सुशोभित दुनिया में एक प्राकृतिक तरह का तत्व। वैकल्पिक रूप से, क्या ज्ञान आंशिक रूप में एक पारंपरिक या aकृत्रिम तरह का होता है- पहचानने और मूल्यांकन के बारे में हमारी प्रथाओं का एक हिस्सा, एक सामाजिक वर्णनीय प्रकृति के रूप में। ज्ञान की एक प्रासंगिक पहचान और व्याख्यात्मक पहलू है- हमारे जैसे प्राणियों की प्राकृतिक दुनिया के एक प्राकृतिक घटक के रूप में कार्य करने के लिए। मान्यताओं का उपयोग करके लोग - भीतर रास्ता खोजने के द्वारा - दुनिया में कामयाब हो सकते हैं। क्या इस वजह से कि विश्वास को ज्ञान माना जा सकता हैं। क्या यही कारण है कि प्राकृतिक रूप में मनुष्य इतने स्पष्ट रूप से समृद्ध है। दर्शन, मनोवैज्ञानिक संदर्भ में यह बताता है कि जब लोग तर्क के रूप में समझने के लिए विश्वास का प्रयोग करें तो उन्हें तर्कसंगत रूप में यह करना चाहिये, यह मनोवैज्ञानिक और शारीरिक विशेषताओं का वर्णन करने के लिए वैज्ञानिक तरीके से अलग नहीं होना चाहिये। प्राकृतिक कानून या कम से कम प्राकृतिक नियमावली तो होनी ही चाहिये कि जो भी हम जानते हैं, वैज्ञानिक रूप से सम्भव है।

जानना एक विशिष्ट पारंपरिक उपलब्धि है। कैसे लोग, अन्य लोगों के साथ बातचीत करते हैं, वे सभी पहलु सामाजिक रूप से गठित और मंजूर पैटर्न से मिलकर हो। शायद, शिक्षार्थियों का समूह, ज्ञान के रूप में जो चाहिये, वह चुन सकते हैं। शायद इसी सब को 'जानना' कह सकते है। इस तरह के दृश्य में कह सकते हैं कि कैसे ज्ञान विश्वास से अलग है। और लोग ऐसा जानबूझकर भी करते हैं ताकि खुद को और दूसरों को सामाजिक मानदंडों के ढाँचे के अनुरूप दिखा सकें और अन्य लोगों और उनकी अवधारणाओं, लक्ष्य और मूल्यों के अनुसार जवाब दे सकें। जैसे जैसे सभ्यताओं का विस्तार होता है, और रूप बदलता है, सभ्यतायें न केवल अपने रूप में, बल्कि अपनी सामग्री (अर्थात् क्या ज्ञात है), अपने मूल प्रकृति (यानी जाने कैसे होता है और यहां तक कि सामान्य तौर पर यह क्या घटित करने के लिए आवश्यक है), में परिवर्तन कर सकती है। विभिन्न सामाजिक व्यवस्थायें, सोच के विभिन्न

तरीके, नए लक्ष्य और नये मूल्य लेकर आती है। इस सन्दर्भ में कह सकते हैं कि ज्ञान शायद एक ऐसी कृत्रिम कलात्मकता है जोकि अक्सर, जानबूझकर या संभवतः, सामाजिक समूहों में लोगों द्वारा बनाई गई और लोगों द्वारा उन्हीं सामाजिक समूहों में प्रयोग किया जाती है। संक्षेप में, हो सकता है जानना, सामाजिक दृष्टि से उपयुक्त तरीके से कामकाज का एक मामला है।

ज्ञान के स्रोत
SOURCES OF KNOWLEDGE

लोगों के पास ज्ञान के रूप में एक बहुत बड़ा ख़जाना है। लोग खुद के बारे में जानते है, उन्हें अपने चारों ओर की दुनिया के बारे में पता है, उन्हें अमूर्त अवधारणाओं और विचारों के बारे में पता होता है। दार्शनिकों को अक्सर ये आश्चर्य होता है कि यह सब ज्ञान अंततः कहाँ से आता है। जाहिर है, लोग बहुत सारी बातें किताबों से, मीडिया और अन्य लोगों से सीखते हैं। इन स्रोतों से जानकारी प्राप्त करने के लिए, हालांकि लोगों को पहले से ही बहुत सी बातें पता होना चाहिए: कैसे पढ़ना चाहिए, किस बात के लिए क्या कारण हो सकता है, किस-किस पर विश्वास करना चाहिए। इन बातों को जानने के लिए अभी और अधिक ज्ञान की आवश्यकता है। ज्ञान प्राप्त करने का सबसे मौलिक तरीका क्या और कौन सा है? ज्ञान के परम स्रोत के सम्बन्ध में दो प्रतिस्पर्धा परंपरायें हैं:

अनुभववादः अनुभववादी मानते है कि हमारे ज्ञान के साधन, अंततः हमारी इंद्रियों या अपने अनुभवों से है। वे शायद इसलिए सहज ज्ञान का अस्तित्व, अर्थात् ज्ञान के हम जन्म से अधिकारी हैं, से इनकार करते हैं। अनुभववाद वैज्ञानिक ज्ञान के साथ अच्छी तरह से फिट बैठता है जोकि प्रयोग और प्रेक्षण पर जोर देता है। यह ज्ञान के कुछ प्रकार, उदाहरण के लिए, शुद्ध गणित या नैतिकता का ज्ञान के लिए जोर डालते हैं।

बुद्धिवादः तर्कवादी मानते है कि हमारे ज्ञान का कम से कम कुछ हिस्सा तो किसी कारण से सम्बन्धित है और यही कारण, हमारे ज्ञान के सभी रूपों का अधिग्रहण करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसमें स्पष्ट रूप से एक सीमा होती है कि सार-सोच के माध्यम से हम क्या सीख सकते हैं, लेकिन बुद्धिवादी यह दावा जरूर करते हैं कि कारण अवलोकन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और इतनी कि, मन में ज्ञान-अधिग्रहण की प्रक्रिया, होश में ज्ञान-अधिग्रहण की प्रक्रिया से भी अधिक मौलिक है।

ज्ञान मीमांसा में, ज्ञान के लिए सम्मान के साथ एक आम चिंता का विषय है कि क्या सूचना के स्रोत, ज्ञान देने में सक्षम हैं। ज्ञान के प्रमुख स्रोतों में से कुछ निम्नलिखित हैः

1. धारणा - कि जो इंद्रियों के अनुभवों के माध्यम से जाना जा सकता है। अनुभव ज्ञान का प्राथमिक स्रोत अनुभववाद कहा जाता है। हम चीजों को जानते हैं क्योंकि हम उन्हें अपने होश-दृष्टि, श्रवण, गंध, स्वाद और स्पर्श या इन के संयोजन के माध्यम से अनुभव कर सकते है।

2. कारण - कारण को ज्ञान के एक स्रोत के रूप में माना जा सकता है कि या तो सत्य मौजूदा ज्ञान से, या चीजों को एक प्राथमिकताओं सीखने, शुद्ध कारण के माध्यम से (जैसे गणितीय सत्य के रूप में), आवश्यक सत्य की खोज पर विचार किया जा सकता है। कारण ज्ञान का प्राथमिक स्रोत है इसीलिए इसे बुद्धिवाद कहा जाता है। कारणीय सत्य (जैसे कि तार्किक और गणितीय सत्य के रूप में) है के बारे में कारण ही हमें ज्ञान हमें प्रदान कर सकते हैं। कारण शब्दों को परिभाषित करने से, परिभाषाओं के विश्लेषण से, और तर्क के नियमों को लागू करने से, पता किये जा सकते है।

3. आत्मनिरीक्षण - आंतरिक आत्म मूल्यांकन के माध्यम से पाया जा सकने वाला आत्मिक ज्ञान। आमतौर पर, यह धारणा की तरह से माना जाता है (उदाहरण के लिए मुझे पता है कि मुझे भूख लगी है या थक गया हूँ)। आत्मनिरीक्षण कि, हमारे मन या चेतना में क्या हो रहा है, हम क्या सोच रहे हैं, हम किसे याद कर रहे हैं, हम क्या याद कर रहे हैं, हमारी क्या संवेदनाएँ हैं, हमारी भावनायें क्या हैं, आदि। हमारी जागरूकता, आत्मनिरीक्षण क्या जरूरी या व्यक्तिपरक है। हालांकि यह सब निजी है और वहाँ सत्यापित या साबित करने के लिए या किसी और के बारे में कौन, क्या सोच या महसूस कर रहा है, सत्यापित करने के लिए कोई रास्ता नहीं है।

4. याद्दाशत (Memory) - चाहे वह अतीत की घटनाओं या मौजूदा जानकारी हो - मेमोरी ज्ञान का भंडारण है कि अतीत में क्या सीखा गया था। मेमोरी कुछ नया उत्पन्न नहीं करता है या कुछ नया बनाने सम्बन्धी मान्यतायें भी नहीं हैं- यह पिछले विश्वासों के साथ संपर्क में रहता है।

5. गवाही (Testimony) - गवाही दूसरों पर निर्भर करती है और ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें यह संवाद करने के लिए प्रोत्साहित करती है। कुछ इनकार करते हैं कि गवाही ज्ञान का एक स्रोत हो सकता है, और जोर देते हैं कि

गवाही के माध्यम से प्राप्त मान्यताओं को ज्ञान मानने के लिए सत्यापित किया जाना चाहिए।

प्रेरणा, रहस्योद्घाटन, अंतर्दृष्टि, अंतर्ज्ञान, परमानंद, दिव्य दृष्टि और सुप्रीम, यह सात स्थितियाँ ज्ञान के सात आयाम हैं। ज्ञान के स्रोत निम्नलिखित हैं:

इंस्टिंक्ट (Instinct): एक चींटी यदि किसी के दाहिने हाथ पर काटने लगे तो बायां हाथ स्वचालित रूप से चींटी दूर हटाने के लिए, दाहिने हाथ की ओर चला जाता है। मन यहाँ कोई कारण नहीं ढूंढता है। जब आप अपने पैर के पास एक बिच्छू देखते हैं, तो आप पैर अचानक, स्वचालित रूप से वापस खींच लेते हैं। इसे स्वाभाविक या स्वतः प्रतिकिर्या कहा जाता है। इस तरह की यांत्रिक प्रतिकिर्या के दौरान कोई विचार नहीं आता है। यह वृत्ति जानवरों और पक्षियों में भी पाई जाती है। पक्षियों में मुक्त दिव्य प्रवाह और खेलने के साथ, अहंकार हस्तक्षेप नहीं करता है। इसलिए पक्षी जो अपनी वृत्ति के माध्यम से करते हैं वह, मनुष्य द्वारा जो किया गया है कि तुलना में अधिक से अधिक सही कहा जा सकता है।

कारण (Reason): कारण का महत्व वृत्ति की तुलना में अधिक है और इसीलिए यह केवल मनुष्य में पाया जाता है। यह तथ्य, वक्तव्य, कारण से प्रभावी करने के कारणों का पता, परिसर से निष्कर्ष करने के प्रस्ताव, आदि साक्ष्य एकत्र करता है। इससे निष्कर्ष निकालते है, फैसला करते है और अंतिम निर्णय भी करने के लिए यह काम आता है। यह सुरक्षित रूप से लोगों को अंतर्ज्ञान के दरवाजे तक ले जाकर वहाँ छोड़ सकता है। विश्वास, कारण, ज्ञान और विश्वसतता (Belief, reason, knowledge and faith), चार महत्वपूर्ण मानसिक प्रक्रियायें हैं। डॉक्टर और कुछ दवाओं के नुस्खे से आप की गहन जांच के बाद निदान और उपचार की स्वीकृति विश्वास है। क्या दवा से रक्त शुद्ध होगा या क्या लसीका आदि को प्रोत्साहित करेंगे, यह दवा को स्वीकार करने के लिए कारण है। दवा की प्रभावकारिता और डॉक्टर की प्रवीणता में परिपूर्ण विश्वास को बढ़ाने में सक्षम, एक नियमित और व्यवस्थित पाठ्यक्रम के द्वारा रोग का इलाज ही ज्ञान है। अगर आप इस डॉक्टर और इन दवाओं को लेने की सलाह अपने दोस्तों को देते हैं ताकि उन्हें भी उपचार से लाभ हो तो यह विश्वसतता हैं।

अंतर्ज्ञान (Intuition): अंतर्ज्ञान व्यक्तिगत आध्यात्मिक अनुभव है। यह शरीर के कामकाज के माध्यम से प्राप्त अंतर्ज्ञान है। यह भी सुपर-मन या सुप्रा-मानसिक चेतना के रूप में भी जाना जाता है। यह समाधि या सुपर होश में स्थिति के माध्यम से सच या तत्काल ज्ञान की प्रत्यक्ष धारणा है। अंतर्ज्ञान में कोई तर्क प्रक्रिया नहीं होती है। यह प्रत्यक्ष धारणा है। अंतर्ज्ञान कारण तो ढूंढ सकता है लेकिन यह कोई विरोध नहीं करता है। बुद्धि किसी को अंतर्ज्ञान के दरवाजे तक तो ले जा सकती है पर इससे आगे नहीं ले जा सकती है। अंतर्ज्ञान विशेष ज्ञान की तरह है। आध्यात्मिक चमक और सत्य, प्रेरणा, रहस्योद्घाटन और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि की झलक, अंतर्ज्ञान के माध्यम से आते हैं।

आत्म बोध (Self-realization): स्व-बोध, स्वयं या आत्मा के ज्ञान की स्वीकारोक्ति है। कारण कि ज्ञान के बजाय आत्म-बोध का प्रयोग किया जाता है कि यह स्वयं के ज्ञान का अनुभव है, न कि मात्र बौद्धिकता के आधार पर प्राप्त ज्ञान। यह ज्ञान का उच्चतम रूप है। केवल यही वास्तविकता है।

ज्ञान प्राप्त करने की विधियां

METHODS OF ACQUIRING KNOWLEDGE

विज्ञान को ज्ञान प्राप्त करने के तरीके के मामले में, अनुभव और कारण के संयोजन के, एक विशेष मामले की तरह माना जाता है, जबकि प्रेरणा या अंतर्ज्ञान, अक्सर वैज्ञानिक खोज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है और यह अनुभव सार्वजनिक रूप से सत्यापित किया गया है और पहले से ही स्वीकार कर लिया गया है। यह सच भी है कि लोग वैज्ञानिक या साहित्य या धार्मिक शास्त्र या कोई दूसरे की रिपोर्ट को दोहराने या किसी और का अनुभव या विचारों का परीक्षण करते रहते हैं। सामान्यतः निम्नलिखित चार तरीकों के द्वारा, लोग सच्चाई का पता लगा सकते हैं।

1. अगर सूचना के स्रोत पर लोगों को भरोसा है तो वे कह सकते हैं कि कहा गया या बताया गया या लिखा गया सच हो सकता है।
2. कुछ अंतर्ज्ञान या व्यक्तिगत प्रेरणा के माध्यम से भी लोग जो कहा गया या बताया गया या लिखा गया है, को सच कह सकते है।
3. व्यक्तिगत अनुभव से। यह अक्सर कई लोगों के लिए सच जानने का एक शक्तिशाली तरीका है।

4. कारणों द्वारा या उपर्लिखित तीन बिन्दुओं के बारे में तार्किक और समीक्षक सोच के माध्यम से।

ज्ञान प्राप्त करने के इन तरीकों में से प्रत्येक संभावित त्रुटिपूर्ण है। लोग एक अन्यथा विश्वसनीय स्रोत से, जोकि गलत भी हो सकता है, में से भी तो कुछ पढ सकते हैं। लोगों को हुई प्रेरणा, जोकि आगे की जांच पर गलत साबित हो सकती है, को भी सच मान सकता हैं। व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से त्रुटि की संभावना, प्रकाशीय भ्रम की तरह जगजाहिर है। और जाहिर है, कारण भी त्रुटि के लिए सक्षम हो सकते है, क्योंकि इतने सारे वैज्ञानिकों या विचारकों और शिक्षकों की, डेटा या अध्याय के एक ही सेट के लिए, कई बार, बहुत बार, अलग-अलग व्याख्या होती है। लोग व्यक्तिगत अनुभव, अचेतन ज्ञान या अप्रभावी दृष्टिकोण का उपयोग धर्म, दर्शन या विज्ञान के साथ जुडे मानदंडों या ज्ञान या जानकारी या तरीकों के लिए कर डालते है। इन स्रोतों में से, प्रत्येक दृष्टिकोण के प्राथमिक ध्यान केंद्रित के रूप में, इस तरह के आयामों के संदर्भ में विचार-विमर्श किया जा सकता है, जिस पर ज्ञान आधारित है। निम्न तालिका इस अवधारणा के सन्दर्भ में एक सिंहावलोकन प्रस्तुत करती है।

Table: Science of Personal Experiences & Reasons
तालिकानिजी अनुभवों और कारणों का विज्ञान :
(आयाम, अनुभव, अंतर्ज्ञान, धर्म, दर्शन, विज्ञान)

DIMENSION	EXPERIENCE	INTUITION	RELIGION	PHILOSOPHY	SCIENCE
Methods of Acquiring Knowledge	Personal interaction with the material, human and spiritual aspects of self and environment	Meditation, Reflection, Dream analysis Right-brain thinking techniques	Prayer, Meditation, Reading/listening to scriptures, Discipline of material self/ego, Association with other believers	Observation Reflection Discourse Other methods used in science and religion Left-brain thinking techniques	Careful description/ data collection Correlational/ predictive Experimental/ causal Association/ literature

जानने के अन्य तरीकों से जहाँ मानव व्यवहार को समझने के लिए महत्वपूर्ण योगदान मिलता हैं, वैज्ञानिक ज्ञान और तरीकों की शक्ति हमें बताती है कि कैसे ज्ञान के बारे में हमारी धारणा इन तरीकों से बनी जो कभी गलत भी हो सकती थी। जरूरत के लिए ज्ञान प्राप्त करने को अलग-अलग तरीके हैं, या शायद संभव नई समझ है जिससे कि संघर्ष को हल कर सकते हैं या समझ से संघर्ष के मध्य कोई मार्ग। अंत में, यदि कोई अवधारणा concept), परिकल्पना (theory) या सिद्धांत (principle) सही है, तो यह प्रत्येक और हर तरह का ज्ञान प्राप्त करने के लिए, हर तरह से मान्य किया जाए। वैज्ञानिक विधि का प्रयोग वैज्ञानिक ज्ञान का एक डाटाबेस उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। वैज्ञानिक ज्ञान के आम तौर पर स्वीकार पदानुक्रम में शामिल हैं:

1. तथ्य - एक विचार या कार्रवाई जिसे कि सत्यापित किया जा सकता है, उदाहरण: नाम और महत्त्वपूर्ण गतिविधियों की तारीख, नवीनतम जनगणना में संयुक्त राज्य अमेरिका की आबादी.

2. अवधारणाएँ - जिनके तहत घटनाओं, स्थानों, लोगों के विचारों, आदि के वर्गीकरण के लिए कों, उदाहरण के लिए: एक कुर्सी (एक अवधारणा) फर्नीचर जिसमें बिठाने के लिए एक फ्लैट टॉप के रूप में डिजाइन किया गया टुकड़ा है, एक कुर्सी फर्नीचर जिसे बैठने के लिए डिजाइन किया गया है।

3. सिद्धांत - तथ्यों और / या अवधारणाओं के बीच रिश्ता। उदाहरण के लिए: परिवार में बच्चों की संख्या, इन बच्चों के लिए राष्ट्रीय स्तर पर मानकीकृत उपलब्धि परीक्षणों पर औसत स्कोर से संबंधित है।

4. कानून - मजबूती से स्थापित, अच्छी तरह से परीक्षण किया गया सिद्धांत या परिकल्पना। उदाहरण: सुदृढीकरण देने के लिए एक निश्चित अंतराल, अनुसूची व्यवहार पर एक निश्चित प्रभाव पैदा करता है।

दो अन्य महत्त्वपूर्ण पद कि कैसे वैज्ञानिक इस ज्ञान को व्यवस्थित करने के बारे में सोचते हैं:

1. हाइपोथिसिस (Hypotheses) - एक वैज्ञानिक अध्ययन में क्या पाया जाएगा, के बारे में शिक्षित अनुमान, खासकर सम्बन्धित रिश्ते (सिद्धांतों) और कारण रिश्तों (कानून) के संदर्भ में। उदाहरण के लिए, छोटी कक्षाओं के लिए, स्नातकीय छात्रों की आदतों का अध्ययन एक कॉलेज के पाठ्यक्रम में सफलता का एक बेहतर पैमाना है।

2. परिकल्पना (Theories) - तथ्यों, अवधारणाओं और सिद्धांतों के कई निष्कर्षों को संगठित करने और विवरण और स्पष्टीकरण के लिए अनुमति देने का सेट। उदाहरण के लिए, पियेजे के संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत, एरिक्सन के सामाजिक-भावनात्मक विकास के सिद्धांत, स्किनर का कंडीशनिंग सिद्धांत।

मानव मन, असतत तत्वों या तथ्यों के मामले में कारण नहीं सोचता है, बल्कि यह अवधारणाओं के मामले या तथ्यों के वर्गीकरण के लिए नियमों में जानकारी, प्रक्रियाओं से सम्बंधित है। जब हम तथ्यों और अवधारणाओं (अर्थात् सिद्धांतों का विकास) के बीच संबंधों के निर्माण की बात करते हैं तो लोगों को याद करने, समझने के लिए और जानकारी के एक आश्चर्यजनक उपयोग करने की बात करते हैं। लोग भी, वर्तमान से भविष्य परिस्थितियों के अनुसार, भविष्यवाणी करने में सक्षम हैं।

हर कोई सब कुछ नहीं जानता है, और यहां तक भी कि विद्वान भी, में क्या ज्ञेय है और क्या नहीं, वे भी नहीं जानते। ज्ञान के दार्शनिक उदाहरणों, व्यक्तियों को अलग-अलग समय पर अलग-अलग ज्ञात है क्योंकि ज्ञान की पहुँच अलग-अलग लोगों तक अलग-अलग तरह से है। न यह पूछना आवश्यक ही होगा कि ज्ञान लोगों तक कैसे पहुँचता है, लोगों द्वारा कैसे अधिग्रहण किया जाता है, साथ ही यह भी जानना नहीं है कि इन सभी मामलों में ज्ञान लोगों द्वारा कैसे बनाए रखा जाता है। अवधारणा या उदाहरण के तौर पर दार्शनिकों के पास ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे यह जाना जा सके कि प्रत्येक व्यक्ति किस तरह से ज्ञान प्राप्त करता है या उसे किसी भी तरीके से बनाये रखता है। यह सामान्य तरीके से एक प्रश्न माना जा सकता है और एक विशिष्ट तथ्य या सच्चाई का पता करने के लिए साधन। सदियों से इन प्रश्नों के जवाब दार्शनिक निम्नलिखित सोचों के रूप में देते आते हैं:

- कुछ या सारा ज्ञान सहज या जन्म आधारित है।
- कुछ या सारा ज्ञान पर्यवेक्षणीय है।
- कुछ या सारा ज्ञान गैर-अवलोकनीय है और अकेले विचार से ही उपलब्ध हो जाता है।
- कुछ या सारा ज्ञान आंशिक रूप से अवलोकन द्वारा तथा आंशिक रूप से देखने और सोचने से एक बार में ही प्राप्त नहीं होता है।

सहज ज्ञान (Innate Knowledge): अगर ज्ञान के कुछ उदाहरणों को एक व्यक्ति जीवन में धारण करता है तो वे खुद को कैसे उसके या उसके जीवन के भीतर प्रकट करते होंगे? कैसे व्यक्ति या वास्तव में किसी और को यह पता चलता होगा कि उसे सहज ज्ञान प्राप्त है? जो सहज रूप में पता हो सकता है, उस पर ही यह निर्भर करता है - जैसेकि व्यक्ति को जन्म के समय से ही प्राप्त ज्ञान। उदाहरण के लिए, अगर लोगों को जीवन की शुरुआत ही कुछ व्याकरण के नियमों को जानकरी हो तो, यह सहज ज्ञान, तेजी से, व्यापक और विश्वसनीय भाषा सीखने में शामिल हो जाएगा। आसानी से और तेजी से अगर कोई कुछ सीखता है तो यह उदाहरण है किसी व्यक्ति के पास कुछ सहज ज्ञान के होने का। लेकिन ज्ञान-कैसे (knowledge-how) की ऐसी अभिव्यक्तियां, वास्तव में ज्ञान-उस (knowledge-that) के भीतर उपस्थित या प्रतिबिंबित हो सकता है। जाहिर है, यह पता लगाना कि कोई विशेष ज्ञान, सही मायने में सहज है, मुश्किल हो सकता है। जो ज्ञान सहज नहीं है, लेकिन जो आसानी से, अनायास अधिग्रहण कर

लिया गया है, उसे भी सहज महसूस कर सकते हैं। और तब भी जब एक कार्रवाई को, जैसेकि भाषा सीखने को, ज्ञान-कैसे के रूप में प्रकट किया जाना, वहाँ एक दार्शनिक सवाल पैदा होता है कि जो भी हुआ, यह क्या पहले से ही, भीतर विद्यमान ज्ञान, के कारण था, और जो निष्क्रिय था और बाद में सक्रिय हो गया। इस सवाल का जवाब यह हो सकता है कि वहाँ कुछ संबंधित पूर्व ज्ञान-कैसे उपस्थित था जोकि ज्ञान-उस में प्रस्तुत हो गया।

अवलोकन ज्ञान (Observational Knowledge): क्या विशुद्ध रूप से या सीधे पर्यवेक्षणीय ज्ञान हो सकता है? जब आप एक बिल्ली अपने सामने सोती हुई देखते हो तो क्या आप उसे देखते हैं और केवल यह देखते हैं कि बिल्ली वहाँ सो रही है? अवलोकन होता रहता है और जाने-अन्जाने में ज्ञान का निर्माण होता रहता है। फिर भी, क्या वहाँ कुछ वैचारिक (conceptual) या यहां तक कि परिकल्पित (theoretical) ज्ञान के साथ-साथ, एक अवधारणात्मक (perceptual) अनुभव मौजूद होता है? अन्यथा, कैसे आपका अनुभव आपके लिए इस विवरण का गठन कर सकता है? क्या वैचारिक ज्ञान आपके अवलोकन अनुभव के अनुसार जानकारी या सामग्री देता है? अगर ऐसा भी है तो कोई भी साधारण अनुभव, किसी भी कल्पना को ज्ञान में बदल सकता है? क्या कोई मूलभूत (foundational) अवलोकन ज्ञान भी हो सकता है? कुछ पारंपरिक ज्ञान-शास्त्री यह मानते हैं कि विशुद्ध रूप से या सीधे अवलोकन ज्ञान, क्या ज्ञान मूलभूत ज्ञान हो सकता था? यह अनुभव, जो ज्ञान के रूप में हमें दिया गया होगा, ज्ञान के कई रूपों में हो सकता है, वो धारणात्मक रूप से आसान भी हो सकता है। कितना अवलोकन, अवलोकन ज्ञान के लिए आवश्यक है? आप एक बिल्ली जैसे जानवर को, बिल्ली मानने के लिए, कितनी देर तक टकटकी बनाए देखते रहोगे? आप को कैसे पता चलेगा कि आप एक बिल्ली को देख रहे हैं? क्या आप को जरूरत है कि आप उसके चारों ओर चक्कर काटें, विभिन्न कोणों से यह छानबीन करें, बार-बार उसका अवलोकन करें, और तब भी आप यह सोचें कि क्या आप एक बिल्ली को देख रहे हैं? और फिर क्या आप अपनी अन्य इंद्रियों को शामिल करेंगे? क्या, बिल्ली की तरह दिखने वाला या महकने वाला जानवर, एक बिल्ली हो सकता है? उदाहरण के लिए, अगर आपके पास ज्ञान है तो यह सब सोचने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी। सभी सवालों के जवाब में मानक ज्ञान की जरूरत होती है: पर्यवेक्षणीय ज्ञान के लिए किन मानकों को पूरा करना होगा? पर्यवेक्षणीय सबूत, कौन-कौन से मानक पूरा करने होंगे कि यह अवलोकन ज्ञान हो जाये?

विशुद्ध रूप से, सोच से जानना: जब दार्शनिक सोच से या अवलोकन की बजाय प्रतिबिंब द्वारा विशुद्ध रूप से प्राप्त किये जा रहा ज्ञान की संभावना के बारे में पूछते हैं, तो एक आश्चर्य हो सकता है कि क्या एक प्राथमिकताओं भरा ज्ञान संभव है? ऐतिहासिक दृष्टि से, जिन लोगों का यह मानना है कि कुछ इस तरह के ज्ञान संभव है, उन्हें तर्कवादी कहा जाता है। कैसे वहाँ एक प्राथमिकताओं भरा ज्ञान हो सकता है? यह मुश्किल है, कम से कम कहने के लिए, कि ख्यात (putative) ज्ञान पर्यवेक्षणीय नहीं होगा, यह है कि यह सोच या प्रतिबिंब द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, शुद्ध गणित और इसके बारे में हमारा ज्ञान। आप जानते हैं: 2 + 2 = 4. यह भौतिक वस्तुओं के लिए भी लागू किया जा सकता है; बहरहाल, हमें इनकार हो सकता है कि यह सब तरह की वस्तुओं के बारे में है। लेकिन फिर हमें समझना चाहिए कि कैसे हम जानते हैं कि 2 + 2 = 4 होता है, बल्कि एक तरह से यह बहुत कम, सीधे पर्यवेक्षणीय है, यह तो एक गणितीय सच है। उदाहरण के लिए, हम यह तो जानते हैं, आंशिक रूप से विभिन्न भौतिक अभ्यावेदन (representations) का निरीक्षण व्याख्या करने के लिए कैसे अंक (2 और 4) और संकेत (+ और =) का अवलोकन जानने के द्वारा होगा? यह भी कि कैसे हम जानते हैं कि 2 + 2 = 4 का ज्ञान कम से कम या विशुद्ध रूप से सोच की बजाय अवलोकन का परिणाम है? क्या प्राथमिकताओं भरा ज्ञान पर्याप्त हो सकता है? ऐसा सोचा जा सकता है कि शुद्ध प्रतिबिंबित और इसलिए प्राथमिकताओं भरा ज्ञान संभव है, जब सत्य जाना जा रहा है। *'सभी स्नातक अविवाहित हैं'* यह सच हो सकता है लेकिन अभी तक सतही है: यह किसी के लिए भी जो एक स्नातक की सभी अवधारणाएँ समझता है के लिए लिए असूचनीय (uninformative) है। *'एक से अधिक अनन्तता (इन्फिनिटी) है'*, सच है लेकिन सतही है: जो अनन्तता की सभी अवधारणाओं को समझते हैं, के लिए जानकारीपूर्ण है। यदि 'वहाँ एक से अधिक अनंतता है' अकेली सोच से तो ज्ञेय है, जोकि एक प्राथमिकताओं भरा ज्ञान हो सकता है। लेकिन अगर सत्य 'सभी स्नातक अविवाहित हैं' केवल सोच से ही ज्ञेय हैं, तो शायद वह एक प्राथमिकताओं भरा ज्ञान नहीं हो सकता है। तो, क्या होना चाहिए? क्या मानक एक प्राथमिकताओं भरे ज्ञान को मानने के लिए चाहिए होता है? अगर वहाँ एक प्राथमिकताओं भरा ज्ञान हो सकता है, क्या मानक किसी को संतुष्ट करने के लिए आवश्यक होंगे? एक व्यक्ति दोनों, देख रहा है और सोच भी रहा है; और अगर हम अवलोकन में अचूकता चाहते हैं तो शायद हम इसे अचूक ही मानेंगे क्योंकि वह व्यक्ति, एक ही वक्त देखने के साथ सोचने का कार्य भी

कर रहा है। सिर्फ देखना, अगर अचूक नहीं माना जा सकता है, तो सोच का साथ जुड़ जाना, अचूकता को शायद ज्यादा नजदीक ले आता है। सोचने के साथ देखना, हालाँकि नाटकीय रूप से अचूकता में सुधार नहीं कर पाता है, जब तक कोई मन का पूर्ण उपयोग न करें।

सोच-व-देख कर जानना: बेशक, हम दावा कर सकते हैं कि हम केवल कमजोर हैं जब सिर्फ अवलोकन पर या प्रतिबिंब पर ध्यान दे व अन्य सब की अनदेखी करें। निश्चित रूप से, हमारे ज्ञान दोनों अवलोकन और तर्क का मिश्रण है। शायद ऐसे ही हमें knowers के रूप में आगे प्रगति मिल सकती है? संभवतः स्वयं के द्वारा और कारण के द्वारा अवलोकन की प्रभावशीलता सीमित है। फिर भी, गठबंधन करने से उन सीमाओं, या उनमें से कुछ पर तो काबू पा ही सकते है। अवलोकन और प्रतिबिंब में से अगर प्रत्येक की अपनी सीमायें है, तो उन का संयोजन उन कमजोरियों को दूर कर सकता है। परिणाम कुछ-एक धुंधला हो सकता है, इसलिए भी कि हम जान नहीं पाते कि क्या, किसी खास अवसर पर या देखने में कमजोरी है और कमजोरी पूरी तरह से है।

जानने के तरीके
WAYS OF KNOWING

कैसे व्यक्ति अपने ज्ञान का निर्माण करते हैं, लोगों को तरीकों का पता लगाने के लिए कैसे प्रोत्साहित किया जाता है, ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों को समझने के लिए, उनके योगदान के नजरिए से ऐसा होना, ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में लोगों की समझ बढ़ाना हैं। नीचे जो बताया गया है, वह जानने के प्रत्येक तरीके का संक्षिप्त परिचय है।

1. **भाषा:** कैसे भाषा ज्ञान को आकार प्रदान करती है? क्या भाषा का महत्व, ज्ञान के क्षेत्र में, एक विशेष संस्कृति में जमीनी सच्चाई है? कैसे ज्ञान के निर्माण में विभिन्न रूपकों का इस्तेमाल होता हैं? भाषा मानसिक रूप से लोगों को जानने और जटिल संचार प्रणाली का उपयोग करने की अनुमति देता है, ख़ासकर उन को जो माध्यम (सिस्टम) को खुद देख सकते हैं। भाषा का मतलब, संचार, विचारों के निर्माण, ज्ञान या सोच, जो एक माध्यम के रूप में भंडारण के प्रयोजनों के लिए नियमों का एक सेट होता है, के अनुसार संयुक्त सहमति या पारंपरिक अर्थ के साथ, संकेत की एक प्रणाली होते हैं। संकेत में पत्र, प्रतीक, आवाज, इशारे, छवियां और भी वस्तुओं को शामिल करने के लिए बहुत मोटे तौर पर व्याख्या, शामिल किये जा सकते है। भाषा हमारे दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, लेकिन यह भी संभावित समस्या क्षेत्रों से भरा होता है, उदाहरण के लिए, अस्पष्टता, ताना, विडंबना और अनुवाद के मुद्दे। भाषा ज्ञान व संवाद स्थापित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालांकि, यह और भी अधिक केंद्रीय भूमिका व अनुभवों को दर्शाता है, लेकिन यह उस भाषा में बहस या सिर्फ दुनिया के हमारे अनुभवों का वर्णन नहीं है, वास्तव में भाषा का संरचनाओं के जुड़ाव के रूप में देकहा जाता है। भाषा महज एक विचार या विचारों का एक हिस्सा नहीं है और न ही ज्ञान का कोई दावा या कोई पार्सल, बल्कि भाषा तो स्वतंत्र रूप से मौजूद है। राय यह है कि दुनिया के बारे में तथ्यों को जब भाषा के द्वारा निर्धारित किया जाता है तो इसे भाषाई नियतिवाद कहा जाता है।

2. **इन्द्रिय धारणा:** हमें कैसे पता होता है कि हमारी इंद्रियां विश्वसनीय हैं? उम्मीद या भावना की इंद्रिय धारणा में क्या भूमिका है? इंद्रिय धारणा में भाषा की क्या भूमिका है? इंद्रिय धारणा एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम बाहर की दुनिया के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकते है। दृष्टि, स्पर्श, गंध, स्वाद और सुनना: परंपरागत रूप से, यह पाँच इंद्रियां मानी जाती हैं। हालांकि, कई लोगों का तर्क है कि गर्मी, दर्द, आंदोलन की भावना, संतुलन की भावना, भूख और प्यास के होश की भावना और हमारे शरीर के अंगों की समझ, आदि भी इन्द्रिय भावना के रूप में माना जाना चाहिए। ऐतिहासिक रूप से देखें तो हमें पता चलेगा कि इन्द्रिय भावना से ज्ञान के आधार को चुनौती दी गई थी। वास्तव में, यह पहले से प्राप्त उम्मीदों, वैचारिक चौखटे और सिद्धांतों के अनुसार दुनिया में ज्ञान की व्याख्या की एक सक्रिय प्रक्रिया के रूप में देखना है। क्या हम सीधे दुनिया को जिस रूप में है उसी रूप में देखते है या ये कि यह एक सक्रिय प्रक्रिया है जहां हम अपने अनुभवों को खुद की विषय सामग्री के बारे में ज्यादा आपूर्ति के रूप में कुछ सहमति, कुछ असहमति के सम्बन्ध में मानते हैं।

3. **भावना:** क्या भावनायें सार्वभौमिक हैं? क्या हमें अपनी भावनाओं पर नियंत्रण करना चाहिए या कर सकते हैं? क्या अच्छे तर्क के लिए, भावनायें दुश्मन हैं, या आवश्यक है? प्राकृतिक रूप से भावनाओं को, शारीरिक कारण और प्रभाव आधारित प्राकृतिक प्रक्रियाओं के उत्पाद के रूप में देखा जाता हैं? भावनाओं को चूंकि शरीर के साथ जोड़ा जाता है, इसलिए इन्हें सार्वभौमिक और सभी संस्कृतियों भर में एकसार कहा जाता हैं। हालांकि, वहाँ सांस्कृतिक आधारित

भावनाओं के कई उदाहरण सम्भव लगते है। विपरीत दृश्य भी है जब भावनाओं को एक सामाजिक चेतना पर निर्भर महसूस करते है, और इस सब का कोई प्राकृतिक आधार मौजूद नहीं पाया जाता है। उदाहरण के लिए, भावनाएँ जैसे शर्मीला, को सही और गलत की एक धारणा के रूप में माना जाये। भावनाओं को कभी कभी जानने के एक अविश्वसनीय तरीके के रूप में भी माना गया है। भावनाएँ, उदाहरण के लिए, विकृत ज्ञान के लिए तर्कहीन बाधायें होने के रूप में भी कई बार आलोचित की गई है। हालांकि, अन्य लोगों का मानना है कि न केवल भावनाओं से सामाजिक और सांस्कृतिक अनुभव और व्यवहार की समझ बनाने के लिए मदद मिलती है, वे हमारी मदद करने, हमारे आसपास की दुनिया को समझने के लिए आवश्यक हैं बल्कि ये हमारे सामाजिक, नैतिक और राजनीतिक ज्ञान के स्रोत भी हैं।

4. कारण (reason): कारण और तर्क के बीच क्या अंतर है? आगमनात्मक तर्क कैसे विश्वसनीय है? क्या हम जाहिर तौर पर तर्कहीन हैं? कारण, हमें हमारी इंद्रियों के तत्काल अनुभव से परे जाने के लिए अनुमति देता है। इसका तर्क से नजदीकी सम्बन्ध है- ज्ञात स्रोत या परिस्थिति से मान्य निष्कर्ष की बात का अनुमान लगाना। मानव तर्क, प्रकृति में आनुमानिक भी हो सकता है, ऐसा अनुमान जिसका किसी परिस्थिति से सम्बन्ध नहीं जोड़ा जा सकता। तब यह एक दिलचस्प सवाल बन जाता है कि क्या यह समझदारी और तर्क के नियमों के मानकों की संस्कृति पर आधारित हैं? किस तरह के कारण स्वीकार्य होंगे, ये ज्ञान के क्षेत्रों के अनुसार होते है। आगमनात्मक तर्क, सामान्यतः विशेष रूप से आगे बदने कि श्रृंखलित सामर्थित प्रक्रिया है जोकि निगमनात्मक तर्क के विपरीत है। आगमनात्मक तर्क अपनी प्रकृति के अनुसार आनुमानिक परिणाम होता है। शाब्दिक बयान अक्सर ब्यौरे की एक अनंत सेट का अवलोकन करने में कठिनाइयों को देखते हुए सख्ती से साध्य नहीं हैं। यह प्राकृतिक विज्ञानों में भी, लेकिन मानव विज्ञान जैसे मनोविज्ञान और अर्थशास्त्र के में भी महत्व का है।

5. कल्पना: एक वास्तविक दुनिया के बारे में ज्ञान के निर्माण में कल्पना की क्या भूमिका है? क्या कल्पना वह सत्य प्राकट कर सकती हैं जोकि वास्तविकता छुपाती है? दूसरों को समझने में कल्पना की क्या भूमिका है? कल्पना अक्सर संकीर्ण अर्थों में, क्षमता भावना अनुभव के प्रोत्साहन के बिना, एक मानसिक प्रतिनिधित्व के रूप में करने के रूप में, पहचानी जाती है। परंपरागत रूप से,

कल्पना का सम्बन्ध कल्पित और किसी की एक मानसिक छवि के साथ किया गया है। हालांकि, अभी हाल ही में कल्पना में दिलचस्पी आधारित कल्पना, कल्पित कल्पना पर ध्यान केंद्रित किया है। कल्पना की शक्ति और महत्व का प्रभाव चिकित्सीय स्थिति द्वारा बताया गया है, उदाहरण के लिए, स्थितियां जिनमें कल्पना बाधित हो सकती है जैसे गंभीर ऑटिज्म (autism), या स्थितियां जिसमें भ्रम पैदा होता है जैसे गंभीर सिज़ोफ्रेनिया (schizophrenia)। कल्पना को कभी-कभी रचनात्मकता, समस्या सुलझाने और मौलिकता के साथ जुड़े होने के रूप में एक व्यापक तरीके में भी देखा जाता है। यहाँ यह समस्या हल करने के लिए अन्यथा विविध विचारों के बीच कनेक्शन के निर्माण के रूप में भी हो सकता है। यह विज्ञान और कला में सरचनात्मक समस्याओं को सुलझाने के मॉडल बनाने या सिद्धांत के निर्माण में उपयोगी हो सकता है। कल्पना है, यह भी कभी कभी विश्वास नहीं होता है, क्योंकि यह कुछ ऐसा है जो अलग-अलग है और व्यक्तिपरक भी, यह किसी के मन में होता है। कल्पना कभी-कभी प्रतितथ्यात्मक तर्क के साथ भी जुड़ी हुई होती है; कल्पना "क्या हुआ अगर ऐसा होगा ...", या "तो क्या हुआ होता ..."। कल्पना कभी-कभी, संभावना के साथ भी जुड़ी हुई होती है जहाँ यह तर्क दिया जा सकता है कि कुछ बातें है जो केवल कल्पना से ही सम्भव हो सकती है। इस तरह, कल्पना कुछ लोगों द्वारा क्या संभव है और क्या संभव नहीं है के रूप में भी देखी जाती है। दैनिक जीवन में, कल्पना मनोरंजन के क्षेत्र में एक विशेष भूमिका निभाती है, उदाहरण के लिए, काल्पनिक फिल्में या टेलीविजन कार्यक्रम। हालांकि, यह तर्क दिया जा सकता है कि कल्पना की भी एक गहरी भूमिका है, उदाहरण के लिए, नैतिक शिक्षा के क्षेत्र में, सहानुभूति के विकास, या आत्म अभिव्यक्ति के लिए अवसर और स्वयं की एक वृद्धि की समझ में।

6. आस्था (faith): क्या मानवतावाद या नास्तिकता को एक आस्था के रूप में वर्णित किया जाना चाहिए? क्या आस्तिक विश्वासों को ज्ञान माना जा सकता है क्योंकि वे एक विशेष संज्ञानात्मक संकाय या दिव्य भावना से उत्पादित होते हैं? क्या आस्था मनोवैज्ञानिकीय जरूरत को पूरा करती है? आस्था का अक्सर धार्मिक आस्था के लिए विशेष रूप से उल्लेख किया जाता है, लेकिन आस्था के लिए एक पर्याय के रूप में ये धर्मनिरपेक्ष अर्थों में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। हालांकि ज्यादातर, आस्था का सम्बन्ध एक देवता या देवताओं के साथ जुड़े होना है, आस्था आस्तिक हुए बिना भी धार्मिक होना, से भी जुड़ा हुआ है,

उदाहरण के लिए, बौद्ध धर्म। वैकल्पिक रूप से, यह अनुभव और वास्तविकता की एक खास व्याख्या के रूप में भी देखा जाना जरूरी है जो धार्मिक नहीं है, जैसे मानवतावाद के लिए एक प्रतिबद्धता। तार्किकता का दावा है कि आस्था के बयानों में कोई सार्थक संज्ञानात्मक सामग्री नहीं होती है, तो यह कहना कि आस्था कुछ जानने का तरीका है, के कोई मायने नहीं है। हालांकि, कई लोगों के लिए आस्था एक महत्वपूर्ण तरीका है जो खुद को व दुनिया को समझने-समझाने की एक कोशिश है। सबूत जिन पर आस्था आधारित है विवादास्पद कि श्रेणी में आते है। यह विशेष रूप से Scripture का उदाहरण है, जो धार्मिक समूह के भीतर अक्सर अचूक सबूत के रूप में देखे जाते हैं, जबकि धार्मिक समूह के बाहर वे अधिक चौकस हो सकते है। आलोचकों का तर्क है कि आस्था तर्कहीन और बेतुका है, दूसरों का कहना है कि आस्था को तर्क से परे, विशुद्ध रूप से तर्कहीन होने के एक तरीके के रूप में देखा जाना चाहिए। दरअसल, हालांकि आस्था की अक्सर कारण के साथ तुलना की जाती है, कई धर्म, आस्था और कारण के अन्योन्याश्रित संबंध को मानते है, उदाहरण के लिए, प्राकृतिक धर्मशास्त्र का तर्क है कि यह कारण के ही माध्यम से भगवान तक पहुँचना संभव है, और कई धर्म कारण को एक ईश्वर प्रदत्त उपहार के रूप में मानते हैं। कुछ लोगों का तर्क होता है कि आस्था की आलोचना और विवाद का दावा गलत है, ये मानते हुए कि आस्था विश्वास का ही एक रूप है और ज्ञान का एक उदाहरण है जो सबूत आधारित नहीं है। दरअसल, कुछ परंपराओं में जहाँ विश्वास साक्ष्य के आधार पर नहीं है, को सबूत आधारित विश्वास से बेहतर देखा जाता है, वहां सबूत के लिए मांग को विश्वास की कमी के रूप में देखा जाता है। इस विवाद को देखते हुए, शिक्षकों को आस्था को, जानने के एक तरीके के रूप में महत्वपूर्ण मानते हुए, चर्चा के लिए अवसर प्रदान करना चाहिए। आस्था को, जानने के एक तरीके के रूप में शामिल किए जाने को, धर्म या ज्ञान के अन्य क्षेत्रों में, कल्पनातीत स्वीकृति के लिए, एक बहाने के रूप मे नहीं देखा जाना चाहिए।

7. **सहज बोध:** क्यों कुछ लोगों को दूसरों की तुलना में अधिक सहज ज्ञान युक्त माना जाता है? क्या कुछ खास चीजें हैं जिन्हें सब कुछ जानने के लिए सक्षम होने के लिए पहले आपको पता चाहिए? क्या आप को अपने अंतर्ज्ञान पर भरोसा करना चाहिए? कभी-कभी तत्काल अनुभूति, या जो ज्ञान निष्कर्ष, सबूत या औचित्य के बिना तुरंत वर्णित है, को अंतर्ज्ञान कहते हैं। अंतर्ज्ञान की

अक्सर, कारण के साथ तुलना की जाती है, क्योंकि यह तर्कसंगत प्रक्रियाओं के उपयोग के बिना जानने के रूप में माना जाता है। अंतर्ज्ञान कभी-कभी वृत्ति और सहज ज्ञान की अवधारणाओं के साथ जुड़ा हुआ है। उदाहरण के लिए, कुछ तर्क देते है, हालांकि हमें किसी विशेष भाषा का सहज ज्ञान नहीं होता है, भाषा का प्रयोग करने की हममें एक सहज ज्ञान युक्त क्षमता होती है। अंतर्ज्ञान का ज्यादातर प्रयोग हम नैतिकता के क्षेत्र में नैतिक अंतर्ज्ञान, या सही और गलत के सहज भाव के रूप में करते है। वैज्ञानिक प्रगति में इसे एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए कुछ लोगों द्वारा देखा जाता है। अंतर्ज्ञान से कुछ जानना ऐसा ही है जैसे आत्मनिरीक्षण या एक तत्काल जागरूकता के माध्यम से कुछ पता करना। इस तरह से, कुछ लोगों का तर्क है कि इसे सही साबित करना असंभव है, या इसे आगे कोई औचित्य की आवश्यकता नहीं है। कुछ लोगों को दूसरों की तुलना में अधिक सहज ज्ञान रूप में माना जाता है, सहज ज्ञान युक्त लोग अक्सर त्वरित ले लेते हैं जिनका औचित्य दे पाना मुश्किल होता है। हालांकि, कुछ जानने के एक अलग तरीके के रूप में, अंतर्ज्ञान के अस्तित्व से इनकार करते है। उदाहरण के लिए, यह सुझाव दिया गया है अंतर्ज्ञान एक शब्द है जो अक्सर इस तरह के पहले अनुभव, जोरदार भाव धारणा और एक सक्रिय कल्पना के रूप में जानने के अन्य तरीके का एक संयोजन का वर्णन करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

8. **याद्दाशत (memory):** क्या कुछ बातें हैं जो हमारे व्यक्तिगत उपस्थित अनुभव से परे हैं? क्या प्रत्यक्षदर्शी गवाही, सबूत का एक विश्वसनीय स्रोत माना जा सकता है? क्या हमारे विश्वास हमारी स्मृति को दूषित कर सकते हैं? ज्ञान के कई विचार-विमर्श, प्रकार, विश्वासों और ज्ञान के गठन पर ध्यान केंद्रित करते हैं बजाय इसके कि व्यक्तियों को याद करना। हालांकि, व्यक्तियों के पास अधिकांश ज्ञान स्मृति के रूप में है और इससे पता चलता है कि हम कैसे जानकारी बनाएं रखते हैं और कैसे अतीत की घटनाओं और अनुभवों को खंगालते हुए व्यक्तिगत ज्ञान का गठन किया करते है। याद्दाशत, और विशेष रूप से आदत का प्रक्रियात्मक ज्ञान और याद के साथ एक मजबूत सम्बन्ध है कि कैसे कार्य किये जाते हैं। धारणा के विपरीत, याद्दाशत वे बातें दर्शाता है जो वर्तमान में नहीं हो रहा हैं। और कल्पना के विपरीत, याद्दाशत वे बातें दर्शाता है जो हमें वास्तव में क्या हुआ होगा, के लिए संदर्भित करता है। कुछ लोगों का तर्क होता है कि याद्दाशत ज्ञान का एक स्रोत ही नहीं है, बल्कि एक प्रक्रिया है

जिसे हम अतीत में से ज्ञान प्राप्त करने के लिए करते है। हालांकि, याद्दाशत या स्मृति से, अतीत का ज्ञान प्राप्त किया जाता है, यह तर्क दिया जा सकता है कि नया ज्ञान भी याददाशत पर ही निर्भर है और स्मृति से ही प्रभावित। उदाहरण के लिए, हम कैसे नई स्थितियों और अनुभव की व्याख्या करेंगे, ये सब पिछली घटनाओं और अनुभव से प्रभावित हो सकते हैं। इस प्रकार, मौजूदा ज्ञान के लिए एक "भंडारण इकाई" के अलावा, स्मृति एक तंत्र भी है कि जो हमें नए और अनूठी स्थितियों पर कार्रवाई करने के लिए अनुमति व सहायता देता है। स्मृति के महत्व चुनौतियों भी है कि अगर हमारी स्मृति खो जाये तो क्या हो सकता है? क्योंकि हमारे व्यक्तिगत ज्ञान का इतना भण्डार स्मृति के रूप में है, स्मृति की विश्वसनीयता के लिए आसपास के मुद्दे भी महत्वपूर्ण हैं। स्मृति पुनर्प्राप्ति भी अक्सर, अविश्वसनीय रूप में मानी जाती है, क्योंकि यह व्यक्तिपरक या भावनायों से प्रभावित हो सकती है। हालांकि, हम हमारी स्मृति पर हर दिन भरोसा करते हैं और क्योंकि हमारी कई यादें विश्वसनीय सी लगती हैं, यह हमें आत्मविश्वास देता है कि हमारी अन्य यादें भी विश्वसनीय ही हैं।

जानने के तरीके अलग-अलग काम नहीं कर सकते। जानने के तरीकों को अलग-अलग देखा भी नहीं जाना चाहिए। ये ज्ञान के निर्माण और ज्ञान के दावों के गठन में विभिन्न तरीकों से मदद करते हैं। शब्द तालिका, मेज, या नीला रंग को समझने में सक्षम होने के लिए की भाषा की जरूरत है, और ये एहसास भी कि एक टेबल के नीले रंग का होने की भी संभावना है। वैचारिक कारण के आधार पर प्रणाली की जरूरत है और धारणा भावना को समझाने के लिए हैं कि क्या एक टेबल देखना, देखना है और ये भी कि टेबल का रंग नीला हो सकता है। इस तरह यह कह सकते हैं कि जानने के अलग-अलग तरीकों से ज्ञान के क्षेत्रों में ज्ञान उत्पन्न करने के लिए, और अधिक व्यापकता के लिए बहुत साडी संरचनाओं में एक साथ बुना जाता है।

ज्ञान, जानने वाले और जानकारी

Knowledge, Knowers and Knowing

अगर हमें समझना हो कि क्या ज्ञान है (किस तरह का, क्या उसके घटक या विशेषताएं हैं), क्या और कैसे यह हमारे लिए उपलब्ध है, जानकारी के बीच जानकारों की क्या भूमिका होगी, हमें इस पर चिंतन करना चाहिए। ऐसा करने का एक तरीका अपने निहित मूल्य जानने में है कि अगर वहाँ कोई रास्ता है तो क्या

हम किसी भी सवाल का सामना करने के लिए तैयार है। क्या हम जानकारी का विश्वास या इज्जत इसलिए करते हैं कि वे मुख्य रूप से दूसरों के लिए जानकारी का विश्वसनीय खजाने के रूप में है? और हम जानकार वैसे ही पैदा करते हैं, जैसे जानकारों के रूप में लोगों की व्याख्या? इस अर्थ में, कैसे लोगों को सामाजिक रूप से, जानकारी का एक अंतर्निहित हिस्सा मानते है? ज्ञान जानने के विभिन्न तरीके हैं, जिनमें से कुछ अच्छी तरह से हमारे जीवन के कामकाज में महत्वपूर्ण योगदान कर सकते है। और यह जानने की एक आंतरिक सुविधा हो सकती है। इच्छाधारी या इच्छित सोच ज्ञान नहीं हो सकती है। लेकिन यह सत्य के लिए आपके जीवन को महत्वपूर्ण तरीके से प्रभावित कर सकती है, यदि आप सच के लिए कुछ जानने की कोशिश कर रहे हैं। इस सन्दर्भ में, शायद एक व्यावहारिक उद्देश्य या जरूरत, किसी संतोषजनक मामले का एक अंतर्निहित हिस्सा हो सकता है।

ज्ञान निष्क्रिय संचित नहीं होता है, बल्कि, व्यक्ति द्वारा सक्रिय प्रयास या अनुभूतियों का परिणाम है। अनुभूति (cognition) एक अनुकूली (adaptive) प्रक्रिया है जो एक व्यक्ति के व्यवहार को और अधिक व्यावहारिक बनाने के लिए एक विशेष वातावरण को दिखाने का कार्य करता है। जानकारी, दोनों जैविक और न्यूरोलॉजिकल निर्माण में और सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषा के आधार पर बातचीत की जड़ों में है। रचनावाद का आवश्यक बिंदु है कि शिक्षार्थी, सक्रिय रूप से अपने अनुभवों से, अपने स्वयं के लिए ज्ञान और विभिन्न अर्थों का निर्माण करते है। रचनावाद, ज्ञान निर्माण में शिक्षार्थी की सक्रिय भूमिका को, उसके अनुभव (दोनों व्यक्तिगत और सामाजिक) व वास्तविकता के सही प्रतिनिधित्व के रूप में डिग्री की वैधता को स्वीकार करता है। ये चार मौलिक सिद्धांत, शिक्षण के बुनियादी सिद्धांतों, सीखने और प्रक्रिया जानने के रूप में रचनावाद द्वारा वर्णित, के लिए आधार प्रदान करते हैं।

जानकारी क्या है और कैसे जानी या ली जा सकती है, यही शिक्षा-शास्त्रियों का रचनावाद है। रचनावादी वास्तविकता की व्यक्तिक व्याख्या में विश्वास करते हैं, यह मानते हुए कि जो जानते हैं और जो जानना है, दोनों सम्बंधित व अविभाज्य हैं। ज्ञान का ज्ञाता से स्वतंत्र रूप से अस्तित्व नहीं है; ज्ञान न तो पुनर्निर्मित किया जा सकता है और न ही किसी अन्य व्यक्ति को प्रेषित किया जा सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में, मानव के सीखने की प्रकृति और स्थिति के बारे में सोच में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया है कि मानव सीखने के विभिन्न आयामों को बढ़ावा देने लगा है। दुनिया का ज्ञान हमारे दुनियावी अनुभवों और तेजी से, सही तरीके से प्रतिनिधित्व करने का परिणाम है। ज्ञान शिक्षार्थी की स्वतंत्र रूप से

अस्तित्व के लिए माना जाता है, और यह उसके बाहरी वास्तविकता से, बाह्य घटनाओं के अनुरूप, आंतरिक वास्तविकता के साथ सीधे मेल खाती है। शिक्षार्थी की भूमिका, ज्ञान के निर्माण और बदलने में एक कल्पना के रूप में समझी जाती है। किसी की मानसिक संरचनाएँ, दुनिया के संगठन को प्रतिबिंबित करने कि तरह विकसित होती हैं। छात्रों को अपने स्वयं के ज्ञान के लिए, संशोधन और मौजूदा ज्ञान से नई समझ पैदा करके उनके संज्ञानात्मक संरचनाओं को आगे बढ़ाने के लिए, लेखक की तरह कार्य करने के लिए कहा जा सकता है। इसे व्यक्ति या सामाजिक रूप से मध्यस्थता खोज उन्मुख शिक्षण गतिविधियों के माध्यम से पूरा किया जाता है।

एक उच्च अन्यान्योकिर्या (interactive) प्रक्रिया के माध्यम से, सीखने के सामाजिक परिवेश केंद्र स्तर पर, शिक्षार्थी अपने स्वयं के अर्थ को निखारने और दूसरों के अर्थ खोजने में मदद करें। इस तरह से, ज्ञान पारस्परिक रूप से निर्मित हो जाता है। सामाजिक संबंधों के संज्ञानात्मक रूप से देने और लेने के माध्यम से, निजी ज्ञान का निर्माण किया जा सकता है। इसके अलावा, जिस संदर्भ में सीखना होता है, आकस्मिक सोच से अविभाज्य है। शिक्षार्थी को व्याख्या करने के लिए, सक्रिय रूप से नए अनुभवों को ग्रहण करना होगा और ऐसा करने से पहले उसे ये जानना है कि किसी विषय के बारे में उसे क्या पता है। छात्र जानकारी के निष्क्रियता के माध्यम से नहीं, एक सक्रिय निर्माण प्रक्रिया के माध्यम से ज्ञान का विकास कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में, शिक्षार्थियों को अपनी खुद की समझ का निर्माण करना चाहिए। कैसे जानकारी प्रस्तुत की जाती है और कैसे शिक्षार्थि ज्ञान के निर्माण की प्रक्रिया में समर्थन हासिल करते हैं, प्रमुख महत्व का विषय है। पहले से मौजूद ज्ञान, शिक्षार्थियों के प्रत्येक शिक्षण कार्य करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। छात्र की वर्तमान समझ, कुछ भी नया सीखने की व्याख्या के लिए तत्काल संदर्भ प्रदान करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के मौजूदा ज्ञान संरचना की प्रकृति या प्रवृति, क्या सीखा है और क्या और कैसे वैचारिक परिवर्तन होता है, पर एक शक्तिशाली प्रभाव डालती है। छात्रों के साथियों व वरिष्ठों की समझ व सोच प्रक्रिया, दूसरों के विनियोग के विचारों और सोच के तरीकों से संभव है। किसी व्यक्ति की सामाजिक वातावरण से नई समझ, उचित और व्याख्यात्मक कुशल निर्माता बनने के लिए विशिष्ट बौद्धिक कौशल, अधिक सक्षम वयस्कों और साथियों से समझने व सीखने की आवश्यकता है। इस प्रकार उत्पादक सीख रणनीति (सीखने के लिए सीखना) को स्पष्ट रूप से छात्रों को सिखाया जा सकता है या छात्रों द्वारा खोजी जा सकती है, जब वे समस्याओं को

सुलझाने के लिए रणनीति खोजने की कोशिश कर रहे होते हैं। शिक्षार्थि पूर्व अनुभवों व अलग-अलग धारणाओं पर आधारित अपनी वास्तविकता का निर्माण कर सकते हैं। इस प्रकार, प्रत्येक व्यक्ति का ज्ञान अपने इन्द्रिय या अपने पूर्व अनुभवों के अनुसार है, कि ये कैसे अनुभव कर रहे हैं और कैसे वे ये सब का आयोजन कर सकते है। लक्ष्य है, शिक्षार्थियों की प्रभावी शिक्षण रणनीतियां और उन का उपयोग कर ज्ञान के विकास में मदद, और उस ज्ञान का विनियमित प्रोत्साहन।

शिक्षक को जानकारी और डेटा संरचना में महत्वपूर्ण विचारों का प्रतिनिधित्व करने के लिए कई तरीकों का चयन करना चाहिए, जिससे शिक्षार्थियों को प्रदान करने, जोड़ने को, एकीकृत करने और नया सीखने के विस्तार और ज्ञान की स्थापना के कई तरीके प्राप्त हो सकें।

LIBRARY BHIWANI

ज्ञान सम्प्रेषण और निर्माण में ज्ञाता व ज्ञात की सम्बंधित भूमिका
Relative Roles of the Knower and the Known in Knowledge Transmission and Construction

क्या ज्ञान (जो कुछ भी वास्तव में यह है या क्या करता है), ज्यादा के लिए एक मानक के रूप में हो सकता है? संभवतः जानकरी के रूप में हम, हमारे जीवन के लिए एक अंतर्निहित योगदानकर्ता के रूप में विभिन्न कार्य प्रदर्शन करते है। और इस तरह जानते हुए भी, संभव बिंदु के रूप में, कुछ संभव प्रस्ताव होते है, जिनमें ज्ञान के निहित मूल्य पर असर हो सकता है। हम आलेख में, पहले से कहे विचार, विचारों को जानने की प्रकृति पर असर के साथ कुछ या उन सभी के मिश्रण की बात कर सकते है। उन संयोजनों में से कुछ दूसरों की तुलना में अधिक प्राकृतिक हो सकते है। शायद अस्तित्व के लिए, विशेष रूप से तथ्यों को, यदि कोई हो, एक क्रम में पता करने की जरूरत है। लेकिन कुछ भी नहीं जानते हुए, कहीं रहने की कल्पना कीजिये। वहाँ अभी भी आपके जीवन के भीतर, कार्रवाई और राय के लिये बहुत सारी परिस्थितियाँ हो सकती है। यह जानकारी के अस्तित्व को व्यक्तिगत बनाने के लिए, बहुत है। यह सुझाव हालांकि अस्पष्ट है, लेकिन पर्याप्त संकेत है कि अगर किसी को कुछ भी नहीं पता है, कोई भी, किसी भी तरह की जानकारी नहीं है, तो संभव है की वह मूल्यवान तरीके से जिंदगी न बिता पाए। कुछ हद तक, किसी की जिन्दगी का कई बार, आनुवंशिक रूप से भी स्वाभाविक अवमूल्यन हो जाता है। महत्वपूर्ण ज्ञान से वास्तव में एक ठोस दृश्य के होने, ध्यान केंद्रित समय बिताने में और अधिक गहराई से सोच-विचार कर, वास्तव में हमें बेहतर जीवन

जीने में मदद मिल सकती है। वास्तव में, ज्ञान कई चुनौतियों, जिनका हम दिन में सामना करते हैं, की जड़ है। सभी निर्णय, जिस से हम और दूसरों को भी जीने का अधिकार मिलता है, ज्ञान के हमारे विभिन्न दृष्टिकोण पर आधारित हैं। रोजमर्रा के उपयोग में, ज्ञान विभिन्न वस्तुओं, घटनाओं, विचारों या बातें करने के तरीके के बारे में जागरूकता या परिचितता को दर्शाता है।

जबकि पाठ्यक्रम की राजनीतिक परियोजना बहुत स्पष्ट है, इसकी शैक्षणिक कमियों को स्पष्ट करना जरूरी हो गया है। पाठ्यक्रम सुधारों की प्रक्रिया में परिवर्तन की प्रकृति और बदलाव के पीछे तर्क पर विचार करना आवश्यक है। ज्ञान, जानने वाले और जानकारी के विचार के संबंध में पाठ्यक्रम में परिवर्तन का पता लगाने की बहुत जरूरत है। सामाजिक न्याय प्राप्त करने का अंतिम लक्ष्य समय के साथ, जानने वाले और जानकारी या शिक्षार्थी और सीखने से, क्या सीखना है या एक विशेषाधिकार ज्ञान पर स्थानांतरित हो गया है। नए पाठ्यक्रम, मजबूत सामाजिक लक्ष्यों सहित, क्या सीखा था और कैसे, अतीत असमानताओं को संबोधित करने और हर क्षेत्र में मानव अधिकार और लोकतंत्र को बढ़ावा के लिए उद्देश्य से सम्बंधित हो गया हैं।

सूचना और ज्ञान के आत्मसात और प्रसार में शिक्षकों का योगदान
Contribution of the Teachers in Assimilation and Dissemination of Information and Knowledge

अच्छे शिक्षण, शिक्षण की एक संचालन परिभाषा के साथ शुरू होते है। शिक्षण के बारे में तीन निम्नलिखित विचार प्रभावित करते हैं: संचरण के रूप में शिक्षण, लेनदेन के रूप में शिक्षण और परिवर्तन के रूप में अध्यापन।

संचरण (transmission) के रूप में शिक्षण: इस दृष्टिकोण से, शिक्षण एक विंदु (शिक्षक से) से दुसरे बिंदु (छात्रों को) ज्ञान संचारण का कार्य है। यह एक शिक्षक केंद्रित दृष्टिकोण है जिसमें शिक्षक ज्ञान की मशीन, सत्य के मध्यस्थ और सीखने का अंतिम मूल्यांकनकर्ता है। इस नजरिए से, किसी शिक्षक की नौकरी, एक पूर्व निर्धारित क्रम में, एक नामित स्वरूप के साथ, छात्रों को ज्ञान की आपूर्ति करना है। शैक्षणिक उपलब्धि के लिए छात्रों को, प्रदर्शन दोहराने या ज्ञान के इस नामित स्वरूप को शिक्षक के लिए या किसी अन्य एजेंसी या संस्था को मापने को ज्ञान वापस (retransmit) करने की क्षमता के रूप में देखा जाता है। इस दृष्टिकोण से, मानकीकृत परीक्षणों को छात्रों की सीखने की क्षमता का एक उपयुक्त उपाय माना जाता है। जबकि यहाँ विशिष्ट उदाहरण मौजुद हैं, जो इस दृष्टिकोण से उपयोगी है, शिक्षण और सीखने के लिए एक सामान्य दृष्टिकोण के रूप में कम ही अनुसंधान सामग्री पाई गई हैं।

लेनदेन (transaction) के रूप में अध्यापन: इस दृष्टिकोण से, शिक्षण ऐसी स्थितियां बनाने की प्रक्रिया है जिसके तहत छात्रों का, ज्ञान का निर्माण करने में प्रयुक्त सामग्री के साथ सम्बन्ध, जोड़ा जा सकता हैं। रचनावाद, शैक्षिक लिहाज से इसी तरह का दर्शन-शास्त्र है। इसमें, ज्ञान निष्क्रिय प्राप्त नहीं होता है; बल्कि, यह सक्रिय रूप से, अपने अतीत के ज्ञान और नई जानकारी के साथ अनुभवों को जोड़कर, छात्रों द्वारा कुछ नया व अनोखा निर्माण करना है। और जिस तरह छात्र का अतीत का ज्ञान और अनुभव अलग-अलग होते हैं, तो व्याख्या, समझ, और नई जानकारी भी अलग-अलग होती है। शिक्षक का कार्य शिक्षार्थियों के मस्तिष्क में ज्ञान डालने का नहीं हैं; बल्कि, वे अनुभव हैं जिनकी मदद से यह छात्रों को नई व अर्थपूर्ण जानकारी बनाने के लिए सहायता कर सकते हैं। शैक्षणिक उपलब्धि, एक रचनावादी नजरिए से छात्रों की उपलब्धि के इस ज्ञान का उपयोग, एक या एक से अधिक सांस्कृतिक सेटिंग, वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करने के लिए मूल्ययान है।

परिवर्तन (transformation) के रूप में शिक्षण: इस दृष्टिकोण से, शिक्षण में कई संभावित विभिन्न स्तरों (संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक, सहज, रचनात्मक, आध्यात्मिक, और अन्य) पर शिक्षार्थी को बदलने की योग्यता है। परिवर्तनकारी शिक्षण दोनों छात्रों और शिक्षकों को समाज के सदस्यों के रूप में, मनुष्य के रूप में और शिक्षार्थियों के रूप में अपनी पूरी क्षमता का पता लगाने के लिए आमंत्रित करता है। मुख्य परिवर्तनकारी लक्ष्य है, अधिक पोषित व बेहतर मनुष्य बनाने में मदद करना और सभी मानव, संयंत्र और पशु जीवन के आपसी सम्बन्ध विकसित करने में सक्षम होना। समग्र शिक्षा, शैक्षिक दर्शन का एक परिवर्तनकारी दृश्य है। लर्निंग का होना तब माना जाता है जब ये अनुभव, परिवर्तन प्रकाश में लाते हैं जो खुद के लिए, दूसरों के लिए और पर्यावरण की देखभाल के लिए चेतना या समझ की ओर ले जाते है। इस नजरिए से, शैक्षणिक उपलब्धि, आत्म-विकास के समान है। यही कारण है कि, यह खोज और पूरी हद संभव करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति की अद्वितीय प्रतिभा और क्षमताओं के विकास के रूप में माना जाता है। शैक्षणिक उपलब्धि से स्वयं और किसी चेतना के विस्तार के कई आयामों के बारे में पता लगाया जा सकता है।

ज्ञान, ज्ञाता से स्वतंत्र रूप से अस्तित्व में नहीं रह सकता हैं; और न ही ज्ञान पुनर्निबित और प्रेषित किया जा सकता है। लर्निंग वातावरण को सक्रिय, जानबूझकर, जटिल, प्रसंगता, चिंतनशील, संवादी, सहयोगी और रचनात्मक सीख प्रदान करने वाला होना चाहिए।

ट्रांसमीटर (transmitter) के रूप में शिक्षक: व्यावहारिक दृष्टिकोण के अनुसार, वास्तविकता स्वतंत्र रूप से मौजूद होती है और शिक्षार्थियों को इंद्रियों के माध्यम से विशेष रूप से ज्ञान प्राप्त होता रहता है। लर्निंग एक स्विचबोर्ड की तरह काम करता है, जैसे इस का ओन होना - एक व्यक्ति का दूसरे को वास्तविकता के सार्वभौमिक विशेषताओं के बारे में बताना। बी ऐफ़ स्किनर के मुताबिक, ज्ञान अधिग्रहण होता है जब प्रोत्साहन और प्रतिक्रिया के बीच बंधन एक सुदृढ़कर्ता के माध्यम से मजबूत बनाया जाता है। शिक्षक के प्राथमिक कार्य है: जानकारी और कौशल को तोड़ कर छोटे-छोटे भागों में बांटना, उन्हें एक संगठित तरीके से प्रस्तुत करना और फिर छात्र व्यवहार है कि शिक्षकों और प्रसंग द्वारा प्रस्तुत वास्तविकता को छात्रों को नामित करना। ट्रांसमीटर के रूप में शिक्षक के लिए कक्षा गतिविधि का अर्थ है, अध्याय में वर्णित सवालों का जवाब देना, किसी व्याख्यान से नोट लेना, या एक कंप्यूटर द्वारा प्रदान संकेतों का जवाब देना। उदाहरण के लिए, छात्र जानकारी का इस्तेमाल ब्रिटिश शासन के दौरान किसी भारतीय या अमेरिकी क्रांति के लिए अग्रणी घटनाओं पर एक व्याख्यान के दौरान अपनी सहमति या असहमति से कर सकते हैं, जिसका श्रेणियों के विद्रोह और विद्रोह के माध्यम से असंतोष और सविनय अवज्ञा आन्दोलन, आदि चुनौतीपूर्ण गतिविधियों हो सकती है। यह और अन्य वर्ग गतिविधियों अगले अध्याय में और अधिक विस्तार में वर्णित हैं। छात्रों की अभ्यास वर्गीकरण के कौशल व गतिविधियां बहुत महत्वपूर्ण हैं, लेकिन सवालों को प्रतिक्रियायें सही है या गलत के रूप में चाहिए न कि व्याख्याओं के रूप में जिन्हें कि गंभीर रूप से जांच साक्ष्य के आधार पर निर्णायक माना जा सके।

प्रबंधक (manager) के रूप में शिक्षक: व्यवहारवादी प्रतिमान में पिछले कई दशकों में एक नाटकीय बदलाव आया है। भाषा विज्ञान के क्षेत्र में व्यावहारिकता के लिए एक बड़ी चुनौती नोम चोमस्की द्वारा दी गई है, जिसने तर्क दिया है कि भाषा का अधिग्रहण करने की बच्चों में एक सहज क्षमता होती है, और उनके मन को एक निष्क्रिय पात्र जैसे नहीं माना जाना चाहिए जिसमे भाषाई ज्ञान फैलता हो। कंप्यूटर की मदद से, संज्ञानात्मक वैज्ञानिकों ने सीखने के मनोविज्ञान में मॉडलिंग द्वारा एक क्रांति शुरु कि है कि कैसे शिक्षार्थियों का पूर्व-ज्ञान (समूहों में संग्रहीत जिसे

स्किमेता कहा जाता है) न केवल छनता है, बल्कि संवेदी गतिविधि के रूप में यह वास्तव में संशोधित होता है। पूर्व मौजूदा स्मृति संरचनायें, उत्तेजनाओं के साथ, शिक्षार्थी की बातचीत, शिक्षण का एक महत्वपूर्ण कार्य, को प्रभावित करती है कि इस दृश्य में, मदद करने के लिए छात्रों को अपने पूर्व ज्ञान और धारणायों की जानकारी हो, और फिर एक साथ निपटने के लिए तेजी से विशेषज्ञ के तरीकों के साथ उन्हें प्रदान करने के लिए जानकारी युक्त वातावरण हो। प्रबंधक के रूप में शिक्षक बेडौल जानकारी के लिए रणनीतिकर मॉडल हो सकता है, आयोजक छात्रों को अग्रिम और अवधारणा नक्शे का उपयोग कर कनेक्शन का निर्माण करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, और अंत में छात्रों को अपने स्वयं सोच प्रक्रियाओं को विनियमित करने के लिए तकनीक प्राप्त करने में मदद लेनी चाहिए। ऐसे वातावरण में, छात्र अनुभव हासिल कर, सूचना लेकर, सवाल पूछ कर, प्रबंध करके, शिक्षकों की मदद से, छात्र ऐतिहासिक सामग्री की समीक्षा करने के लिए, अपने स्वयं के स्वतंत्र क्षमताओं का विकास करते हैं।

सुविधा या सहयोगी (facilitator or collaborator) के रूप में शिक्षक: प्रबंधक के रूप में शिक्षक छात्रों को, ट्रांसमीटर के रूप में शिक्षक की तुलना में, अधिक सक्रिय भूमिका की अनुमति दे सकता है, जबकि लर्निंग निम्नलिखित जुडवा परिस्थितियों पर आधारित है:

1. ज्ञान ज्ञाता के अधिकार-क्षेत्र के बाहर का सत्य अधिकार है, और
2. सीखना (लर्निंग) सत्य को प्राप्त करने की प्रक्रिया है।

लोग सार्वभौमिक रूपों या ज्ञान के ढांचे (अर्थात् पूर्व तार्किक, ठोस या औपचारिक) को विकसित करते हैं जोकि उन्हें वास्तविकता का अनुभव करने के लिए सक्षम कर सके। इससे यह विचार पनपता है कि एक स्वायत्त दुनिया का अस्तित्व शिक्षार्थी के बाहर मौजूद हो सकता है, जिस तक उसकी पहुँच सीमित है। शिक्षा में कैसे लोग मौजूदा मानसिक योजनाओं में नई जानकारी को आत्मसात करते है और कैसे वे योजनाओं के पुनर्गठन के बारे में प्रतिकूल जानकारी को भी आत्मसात कर पाते है, पर जोर दिया जाता है।

बदलती शिक्षा

Transforming Education

लर्निंग तीन विचार या दृष्टिकोण पर आधारित हो सकती हैं; हालांकि, यह मेरी टिप्पणी है कि सबसे शक्तिशाली और बनाए रखने के सीखने के अनुभव बनते हैं

जब मुख्यतः व्यवहार और परिवर्तनकारी दृष्टिकोण उपयोग किया जाता है। शिक्षण के परिवर्तनकारी दृश्य में रचनावाद के बुनियादी तत्वों को शामिल किया गया है जिसमें शामिल है - चेतना और आपसी सम्बन्ध। इस नजरिए से, काम कर रहे स्कूलों को जांच स्थल कहा जा सकता है जहां पर सवाल जवाब से भी महत्वपूर्ण हो जाते हैं। यहां शिक्षकों की प्राथमिक भूमिका है - खोज और उनके भीतरी कोर को विकसित करने और उनके हितों और पूरी हद संभव करने के लिए छात्रों कि अद्वितीय प्रतिभा को विकसित करना; दूसरे शब्दों में, स्वयं सहीकरण। पाठ्यक्रम एक साधन है, यह अंत प्राप्त करने के लिए। शैक्षणिक उपलब्धि बारीकी से आत्म-विकास के साथ जुड़ी हुई है और बहुत ही व्यक्तिगत है। निजीकृत लक्ष्यों व प्रामाणिक आकलन का इस्तेमाल, अच्छी तरह से सीखने के लिए किया जा रहा हैं। स्कूल और शिक्षक जिम्मेदार हैं, व्यक्तिगत लक्ष्य, छात्रों और शिक्षकों के आंदोलन का आकलन करने, और किसी हद तक की जांच करने के लिए, जो छात्रों को सार्थक सीखने के अनुभव दे सके।

प्रश्न (Questions)

1. आप ज्ञान से क्या समझते हैं? विस्तार से समझाओ।
2. ज्ञान की प्रकृति का वर्णन करें।
3. ज्ञान की विभिन्न परिभाषाओं पर चर्चा करें।
4. ज्ञान के अर्थ पर विस्तृत चर्चा करें।
5. ज्ञान को परिभाषित करें और उस पर चर्चा करें।
6. ज्ञान सम्प्रत्ययिकरण से क्या मतलब है? चर्चा करें।
7. ज्ञान की अवधारणा का वर्णन करें।
8. ज्ञान को समझने में औचित्य की भूमिका का संक्षिप्त में वर्णन करें।
9. क्या आपके पास ज्ञान को समझने के लिए कोई विचार या उपाय है?
10. ज्ञान की दृष्टि से उचित-सच्चा-विश्वास अवधारणा का वर्णन करें।
11. ज्ञान का विवरणात्मक अध्ययन करते समय सत्य की भूमिका स्पष्ट करें।
12. क्यों ज्ञान मूल्यवान है? वर्णन करें।
13. शैक्षणिक ज्ञान और ज्ञान के अन्य रूपों के बीच की कड़ी के बारे में चर्चा करें।
14. आप समझ के अन्य रूपों के साथ ज्ञान की प्रासंगिक तुलना करें।
15. ज्ञान जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है। चर्चा करें।
16. ज्ञान कुछ जानने की हालत को दर्शाता है। वर्णन करें।

17. ज्ञान असीम शक्ति के साथ मनुष्य को लैस करता है, क्या उचित है?
18. आप कैसे समझा सकते है कि ज्ञान, मनुष्य के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है?
19. ज्ञान और जानकारी के बीच अंतर स्पष्ट करें।
20. विश्वास और सच्चाई के बीच अंतर स्पष्ट करें।
21. ज्ञान कैसे विश्वास और सच्चाई से संबंधित है? स्पष्ट करें।
22. विश्वास, सत्य और ज्ञान के बीच अतरंगता पर चर्चा करें।
23. कारण और विश्लेषण के बीच अंतर स्पष्ट करें।
24. जानकारी या जानना से आपका क्या मतलब है? विस्तार से चर्चा करें।
25. धारणा 'जानकारी या जानना' क्या हो सकता है? स्पष्ट करें।
26. ज्ञान के विभिन्न प्रकार क्या और कौन से हैं?
27. कैसे ज्ञान दूसरों को हस्तांतरित किया जा सकता है? चर्चा करें।
28. ज्ञान के वाहकों पर चर्चा करें।
29. 'जानना-वह' 'जानना-कैसे' से किस तरह से अलग है? विस्तार से चर्चा करें।
30. 'ज्ञान के प्रकार' और 'ज्ञान-एक वस्तु' के बीच के अंतर पर विस्तार से चर्चा करें।
31. ज्ञान के स्रोतों पर विस्तार से चर्चा करें।
32. 'धारणा' और 'आत्मनिरीक्षण' में अंतर स्पष्ट करें।
33. 'वृति' और 'अंतर्ज्ञान' को परिभाषित करें और अंतर स्पष्ट करें।
34. ज्ञान कैसे प्राप्त किया जा सकता है? प्रकाश डालिए।
35. ज्ञान प्राप्त करने के तरीकों पर चर्चा करें।
36. 'हाइपोथिसिस' और 'थेओरिस' में अंतर स्पष्ट करें।
37. सहज ज्ञान क्या है? प्रकाश डालिए।
38. पर्यवेक्षणीय ज्ञान क्या है? प्रकाश डालिए।
39. 'विशुद्ध रूप से सोच से जानना संभव है या नहीं? चर्चा करें।
40. 'सोच-जमा- देखने से जानना', आप इससे क्या समझते हैं?
41. जानने के विभिन्न तरीकों पर चर्चा करें।
42. व्यक्ति कैसे अपने ज्ञान का निर्माण करते हैं? वर्णन करें।
43. ज्ञान के निर्माण में भाषा की भूमिका पर चर्चा करें।
44. ज्ञान के उत्पादन में कल्पना की क्या भूमिका है? चर्चा करें।
45. ज्ञान, जानने वाले, और जानना या जानकारी में संबंध स्पष्ट करें।

46. ज्ञान ट्रांसमिशन और निर्माण में 'ज्ञाता' और 'ज्ञान' की भूमिका पर चर्चा करें।
47. ज्ञान ट्रांसमिशन और निर्माण में 'ज्ञाता' और 'ज्ञान' की भूमिका में अंतर स्पष्ट करें।
48. शिक्षक आत्मसात और ज्ञान के प्रसार में क्या योगदान कर सकते हैं? चर्चा करें।
49. ट्रांसमिशन, लेनदेन और परिवर्तन के रूप में अध्यापन की भूमिका पर चर्चा करें।
50. ज्ञान हस्तांतरण में शिक्षक की भूमिका पर चर्चा करें।
51. ज्ञान प्राप्त करने की तकनीकों का वर्णन करें।

Chapter 2
ज्ञान और रिश्ते के विभिन्न पहलु
DIFFERENT FACETS OF KONWLEDGE AND RELATIONSHIP

ज्ञान किसी की परिचितता, जागरूकता या समझ या कुछ और, इस तरह के तथ्यों, जानकारी, कौशल का वर्णन है, जो अनुभव या शिक्षा के माध्यम से खोजने या सीखने के द्वारा या के रूप में प्राप्त किये जाते है। शिक्षा एक पीढ़ी से दूसरे करने के लिए लोगों को संस्कृति और परंपरा प्रदान करने में मदद करता है। यह एक व्यक्ति को स्वयं की क्षमता और प्रतिभा का एहसास करने में मदद करता है। यह सीखने और शिक्षण के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित है जैसे रसायन विज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान, समाजशास्त्र, भाषाई विज्ञान, आदि, जिनमें कई सिद्धांत शिक्षा मनोविज्ञान के साथ जुड़े हुए है। ज्ञान इन परंपराओं और समाज की भलाई के लिए, न की स्वार्थीपन के लिए, आदर्श विकसित करने के लिए मदद करता है। ज्ञान एक सत्ता है जो अनुभव और शिक्षा के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। यह एक विशेष तथ्य या किसी घटना को समझने के बारे में है। इसमें शामिल है- कच्ची-पक्की जानकारी, बात को समझने के लिए और लोगों को उचित संसाधनों संबंधित होने वाले कौशल का विकास। किसी के पास चिकित्सीय, वैज्ञानिकीय या व्यावसायिक ज्ञान हो सकता है। दोनों, ज्ञान और शिक्षा समानार्थक शब्द है, लेकिन अभी भी उन दोनों के बीच एक सीमा रेखा है। ज्ञान जीवन के अनुभवों और उम्र से मिलता है, जबकि शिक्षा किताबों से सीखी जाती है और कभी नहीं अनुभव की जा सकती है। ज्ञान तथ्यों से संबंधित है, जबकि शिक्षा शिक्षण, महत्त्वपूर्ण सोच और अपने आप को जानने से संबंधित है। शिक्षा उम्र के साथ बढ़ती है जबकि ज्ञान में ऐसी कोई विकास दर नहीं होती है, यहां तक कि एक बच्चा भी किसी वयस्क की तुलना में अधिक जानकार या ज्ञानवान हो सकता है। किसी को भी एक व्यवस्था के बिना शिक्षा प्राप्त नहीं हो सकती है क्योंकि ये प्रक्रिया अधीन है, जबकि ज्ञान एक प्रणाली है और इसे खुद ही ग्रहण करना पड़ता है। दोनों के बीच एक और अंतर यह है कि ज्ञान, ज्ञान द्वारा ही प्राप्त होता है या कि ये आत्म प्रेरित है जबकि शिक्षा को, छात्रों के लिए, शिक्षकों द्वारा पढ़ाया जाता है। शिक्षा सीखने की एक प्रक्रिया है, जिसमें विभिन्न तथ्यों, विचारों और सिद्धांतों की बात आती है। जबकि दूसरी ओर ज्ञान, इन तथ्यों और सिद्धांतों का अनुप्रयोग है। इसके लिए कोई निर्धारित दिशा निर्देश नहीं है। शिक्षा, नियमों, विनियमों और पाठ्यक्रम का एक पूर्वनिर्धारित सेट है जबकि ज्ञान में ऐसी कोई सीमा नहीं है है। यह शिक्षक, माता-पिता, दोस्तों, जीवन की दर्दनाक क्षणों, खुशी के क्षणों, बच्चों आदि या

स्वयं के प्रयासों द्वारा भी अधिग्रहीत हो सकता है। दोनों के बीच प्राथमिक अंतर यह है कि शिक्षा औपचारिक प्रक्रिया है, जबकि ज्ञान अनौपचारिक अनुभव है। शिक्षा, स्कूल, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों की तरह औपचारिक संस्थाओं के माध्यम से अधिग्रहण की जाती है, जबकि ज्ञान वास्तविक जीवन के अनुभवों से प्राप्त किया जाता है। इसलिए कहा जा सकता है कि शिक्षा एक प्रक्रिया है ज्ञान को प्राप्त करने व उसके सही उपयोग के लिए, जबकि ज्ञान अच्छी शिक्षा, साथियों, परामर्श और व्यापक तथ्यों को पढ़ने व अधिग्रहण करने की एक प्रक्रिया है। निश्चित रूप से, ज्ञान में शामिल सभी तरह की प्रकृति का प्रतिनिधित्व करना संभव नहीं है। ज्ञान को समझने के लिये नीचे दिए गए अनुसार कई दृष्टिकोण हैं:

स्थानीय और सार्वभौमिक
LOCAL AND UNIVERSAL

ज्ञान और जानकारी का लोगों के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। ज्ञान और सूचना के आदान-प्रदान में, अर्थव्यवस्था और समाज को बदलने की शक्ति है। जानकारी के लिए सार्वभौमिक पहुँच, शांति, सतत आर्थिक विकास और सांस्कृतिक संवाद निर्माण की कुंजी है। जागरूकता बढ़ाने, नीति निर्माण और क्षमता निर्माण के माध्यम से सामग्री, प्रौद्योगिकी और प्रक्रियाओं में खुलेपन को बढ़ावा देने की जरूरत है। इस लगातार बदलते माहौल में सफल होने और समस्याओं को जीवन के हर पहलू में प्रभावी ढंग से हल करने के लिए व्यक्तियों, समुदायों और जातियों दक्षताओं का एक महत्वपूर्ण सेट प्राप्त जानकारी लेने के लिए हमें सक्षम होना चाहिए, ताकि गंभीर रूप से मूल्यांकन हो और नई जानकारी व ज्ञान पैदा हो। सूचना व साक्षरता, लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए नए अवसर पैदा कर सकते हैं।

1. ज्ञान को जानने के लिए सीखना (Learning how to learn knowledge)

ज्ञान प्रबंधन में विद्वान नेताओं की विशेषतायें उन्हें दूसरों से अलग करती हैं क्योकि वे हैं, विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों, संगठनों के विभिन्न प्रकार, विभिन्न संस्कृतियों में उनके अनुभव, जो उन्होंने पढे हैं, सीखे है, जाने हैं; कि कैसे पढना और न पढना महत्वपूर्ण हो सकता है। एक और विशेषता है कि छात्रों से सीखने की इच्छा और छात्रों के लिए सतत प्रोत्साहन से जानने के लिए एक नया विचार या एक नए नजरिए के साथ आने की इच्छा। छात्रों को पहले से स्थापित ज्ञान को चुनौती देने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। यह एक पारंपरिक शिक्षक-छात्र

मॉडल की तुलना में शिक्षकों पर भारी बोझ देता है। लेकिन छात्र उपलब्धियां और नवीनता के मामले में इसका परिणाम उल्लेखनीय हो सकता है।

2. कहीं भी और कभी सीखना (Learning anywhere and anytime)

परिभाषा के अनुसार, जो कार्यक्रम एक भौतिक स्थान तक ही सीमित होते हैं, वह जिन तक स्थानीय संकाय की हमेशा पहुंच होती है और स्थानीय स्तर पर रहने छात्रों की जिन तक पहुंच है, उनकी सामग्री व अनुभव ज्यादा नहीं होते बजाये उन की तुलना में, जो पूरे संसार से सामग्री, शिक्षकों और छात्रों को आकर्षित कर सकते हैं। शिक्षा का सार्वभौमीकरण और विविधीकरण छात्रों को कैरियर विविध पेशेवरों के रूप में संशोधित कर सकते हैं, जिन्हें अपने संगठन के भीतर ज्ञान प्रबंधन की जिम्मेदारी दी गई है। वे विना स्थानांतरित के जल्दी से अच्छा कार्य शुरू कर सकते है। ज्ञान प्रत्क्ष्यता एक ऐसा तरीका है जिसमें छात्र, शिक्षक साक्षात्कार देख सकते हैं, विशेषज्ञ से प्रश्न पूछ सकते हैं, शिक्षक के साथ स्थान बदल सकते हैं और प्रत्यक्ष कोचिंग प्राप्त कर सकते हैं। एकाधिक शिक्षण साइट बनाई जानी चाहियें जहां छात्रों और शिक्षक समुदाय का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विकास किया जा सके। ऑनलाइन सीखने की, एक आलोचना, छात्रों के अलगाव और छात्रों और प्रशिक्षकों के बीच मजबूत सबंधों को विकसित करने के लिए अवसर की कमी की संभावना के रूप में भी है।

3. दोनों औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के लिए अवसरों की जरूरत
The need for both formal and informal learning opportunities

छात्रों में अच्छे मूल्यों को उभारने के लिए, व्यावसायिक नेटवर्किंग अवसर, एक बेहतर पेशकश साबित हो सकते हैं। यहां महत्वपूर्ण कारक है- शिक्षकों का चयन जो छात्रों के हित में हो और छात्र पेशेवर करियर को बढावा देना। यह एक चुनौतीपूर्ण कार्यक्रम है जहां छात्र विभिन्न क्षेत्रों और विश्व भर में बिखरे हुए हैं। छात्रों को अपने स्थानीय ज्ञान समुदायों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने की जरूरत है। इसके अलावा, पाठ्यक्रम पढाने और कार्यशालाओं का नेतृत्व करने के लिए अनुभवी ज्ञान प्रबंधन विशेषज्ञों को लाकर, छात्रों को व्यावसायिक नेटवर्क का निर्माण करने के अवसर देना चाहिये।

4. ज्ञान मार्ग जो ज्ञान की ओर जाता हो
The learning path that leads to knowledge

सैद्धांतिक और व्यवहारिक ज्ञान में संतुलन बनाया जाना महत्वपूर्ण है। सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है ऐसा संकाय ढूंढना, जो सैद्धांतिक ज्ञान और प्रासंगिक व्यावहारिक अनुभव, दोनों में प्रभावी हो। छात्रों को सैद्धांतिक ज्ञान तो

सीखना ही चाहिये जिस पर अभ्यास आधारित है, लेकिन व्यवहारिक अभ्यास को भी सीखना चाहिए। हालांकि मामले के अध्ययन के माध्यम से भी सीखना संभव है, लेकिन अभ्यास सीखने के लिए सबसे प्रभावी तरीका अनुभवी शिक्षकों से सीखना है। व्यवसायी शिक्षकों से सीखना, छात्रों को नौकरी पर सफल होने की महत्वपूर्ण जरूरत है। यह विश्वसनीयता के लिए चुनौती भरा है।

शिक्षण संकाय, सहयोग के माध्यम से, प्रयोग के माध्यम से, लगातार सीखने और अपढता (unlearning) के माध्यम से और विषयों में जोखिम उठा नए विचारों को आगे ले जाने के लिए और कभी कभी नाकाम रहने लेकिन असफलताओं से सीखने के, अनुशासन की कुंजी है। व्यावहारिक प्रभाव के लिये, शिक्षण संकाय को अनुसंधान करना होगा, विकास और नए विचारों को खुले उपयोग पत्रिकाओं के माध्यम से ग्रहण करना होगा, कांफेरेंसस व व्यापार पत्रिकाओं के माध्यम से, संगठनात्मक श्वेत पत्र द्वारा योगदान से, और अग्रणी ज्ञान संगठनों के माध्यम से ज्ञान-समीक्षा करनी होगी।

स्थानीय ज्ञान पारंपरिक ज्ञान की तरह से है, जो एक खास जगह से जुडा होता है, और एक पीढ़ी से दूसरी, एक अभ्यास से दूसरे अभ्यास तक फैलता है। स्थानीय ज्ञान वर्चस्व और संकरण के कई रूपों के अधीन, जानने के तरीके के रूप में, स्थितीय कहा जाता है। स्थानीय ज्ञान का ये असतत फार्म वैज्ञानिक ज्ञान के मुकाबले में या तो अवर या बेहतर कहा जाता है। प्रबंधकीय कौशल की कमी, स्थिरता की कमी, पर्यावरण नैतिकता की कमी, लंबी अवधि की योजनाओं की कमी, विज्ञान और विज्ञानं के स्थान पर अंधविश्वास, आदि विशेषज्ञता ज्ञान और जानने के स्थानीय तरीकों के बीच अंतर बताते हैं। कभी कभी स्थानीय ज्ञान, नहीं-ज्ञान, के रूप में भी माना जाता है। ज्ञान के सार्वभौमिक पहलू विशेषज्ञों की सलाह लेने में मदद करते है जो स्थानीय पहलू के माध्यम से संभव नहीं है। स्थानीय ज्ञान भी आवश्यक है क्योंकि ज्ञाता स्थानीय आधार पर जानने से ही शुरू करता है। स्थानीय मूल बातें दक्षता प्रदान करती है और सार्वभौमीकरण विशेषज्ञ क्षेत्रों में प्रवाह और प्रावीणता प्रोत्साहित करती है।

ठोस और निरपेक्ष

CONCRETE AND ABSOLUTE

निरपेक्ष एक दार्शनिक शब्द है, जो वस्तुओं, प्रक्रियाओं और ज्ञान के आपसी निर्भरता के विषय सम्बन्धी है। निरपेक्ष का मतलब है- स्वतंत्र और स्थायी, योग्यता के अधीन न होना। निरपेक्षता, समझ के विभिन्न चरणों के माध्यम

अनुसार होना है, लेकिन ज्ञान की प्रगति कभी समाप्त नहीं होती है, इसलिए पूर्णता संबंधिय ही हो सकती है। हालांकि, एक संबंधिय सच में, परम सत्य के कुछ बिंदु हो सकते हैं तो वहाँ संबंधिय के भीतर हमेशा निरपेक्षता तो होगी ही। बोध पर्यवेक्षक के सापेक्ष है, लेकिन दुनिया का अस्तित्व, निरपेक्ष है। इसमें तर्क करने के अग्रणी सभी चरण शामिल हैं; यह अपने सभी चरणों और बदलाव के साथ विकास की प्रक्रिया है।

ठोस या कंक्रीट एक दार्शनिक अवधारणा है जिसका वैचारिक ज्ञान के विकास के साथ संबंध है। एक ठोस अवधारणा कई चीजें का संयोजन है। एक अवधारणा जैसे कि एक नंबर या एक परिभाषा, सार के रूप में होती है, क्योंकि यह बहुत सारे पहलुओं में से सिर्फ एक ठोस बात को इंगित करता है, कि ये एक नया विचार है जो बारीकियों और संघों के लाखों लोगों के लिए अभी तक अर्जित नहीं किया गया है। अवधारणायें अधिक ठोस होती हैं और अधिक सम्बन्धीय होती हैं। कंक्रीट लैटिन भाषा कांक्रिट्स से बना है, जिसका अर्थ एक क्रिया कोकेसिएर से है, यानी कि ठोस फ्यूज के तत्वों के साथ एक पत्थर की तरह ठोस बनाने के लिए। दार्शनिक चिंता का विषय, इस प्रकार की सुविधा और पूरे के बीच इस रिश्ते की प्रकृति के साथ है। सबसे पारंपरिक और मानक अर्थ में, गुणों का मूर्त वस्तुओं के साथ अनुभव और धारणा, ठोस होगा। मानसिक रूप से ध्यान केंद्रित करने या विशेष सुविधाओं या उन वस्तुओं की विशेषताओं पर ध्यान देना ही सारग्रहण है।

शुद्ध खुफिया और शुद्ध वस्तु जैसे तात्विक वास्तविकतायें, की भूमिकाओं के बीच संतुलन बनाए रखा नहीं जा सकता है। हम इसके बजाय, दो वैकल्पिक विचार से एक का चयन करना होगा: ज्ञाता पर जोर देना और जानकारी की उपेक्षा करना, या ज्ञाता की अनदेखी करना और जानकारी की वास्तविकता पर ध्यान केंद्रित करना। सभी दर्शन और सभी वास्तविकतायें, दिव्य अहंकार के साथ शुरू होते हैं, मायावी लेकिन विशुद्ध रूप से सक्रिय तात्विक आत्म, केवल प्राथमिक अनुभव पर एक अनिश्चित काल के दोहराया प्रतिबिंब में पहचाने जाते हैं। यह जागरूकता खुद को केवल तार्किक श्रेणियों और नियामक सिद्धांत से असीमित विस्तृत करती है ताकि सब कुछ इसके दायरे में सीमित हो। इसलिए, वस्तुयें केवल चेतना की वस्तुओं के रूप में, ज्ञान की सक्रिय खोज में अपनी बड़ी बेसब्री से कुछ व्यक्तिगत अहंकार को मानते हुए, मौजूद हैं। चूंकि इस तरह से एक व्यक्ति के अहंकार सिर्फ नैतिक एजेंट के रूप में सक्रिय है, नैतिकता अपने स्वभाव के अनुसार चलती है। एक बार फिर, अहंकार सब कुछ करने को असीम फैलता है, तथापि अभी तक नैतिक कानून के

तहत यह सब कुछ सीमित है। चूंकि सभी अहं अधीन हैं ठीक उसी स्थिति में, उनके नैतिक उपदेशों के लिए सार्वभौमिक समझौते का आश्वासन दिया गया है। सामाजिक स्तर पर, यह समान विचारधारा वाले समाज में खुद की एक अलग-अलग सदस्यता की तरह है।

हमें स्वीकार करना चाहिए कि प्रकृति की दुनिया और हमारी जागरूकता की संरचना के बीच एक सही समानांतरता है। बेशक यह, किसी भी व्यक्ति के अहंकार का सच नहीं हो सकता है, हालांकि, दुनिया निरपवाद रूप से सोच के अनुरूप नहीं है। लेकिन इस दृष्टिकोण की स्पष्ट आत्मीयता, एक पूर्ण चेतना है, जो एक साथ हर व्यक्ति के अहंकार के बारे में सोचती है और प्रकृति में हर भौतिक वस्तु के लिए तात्विकता प्रदान करती है। निरपेक्षता पूरी तरह से आत्म-निहित सार में और ऑपरेशन में विशेष रूप से आत्मिक होता है। भौतिकी के अध्ययन के अनुसार, निरपेक्षता एक तरह से, एक खोज के रूप में, पूरी तरह से ज्ञान का विज्ञान है, जोकि स्वयं के प्रति सजग जागरूकता है और निरपेक्षता विचार के लिए आवश्यक संरचना की जांच करता है। एक व्यक्ति के अहंकार के विचारों से, निरपेक्षता के अनंत कारण के लिए, तर्कसंगत वास्तविक पहचान मौलिक है। उदाहरण के लिए, एक बुनियादी अवधारणा है कि किसी भी गंभीर विचारक के लिए, एक स्पष्ट प्रारंभिक बिंदु अपने स्वभाव के गंभीर चिंतन के लिए, पूरी तरह से विशिष्ट सामग्री है जोकि मन में स्वाभाविक रूप से कुछ भी नहीं के बारे में नेतृत्व है, जिससे यह पता चलता है; लेकिन इन दोनों को, बनने के और अधिक परिष्कृत और व्यापक धारणा के तहत एकीकृत किया जा सकता है, वास्तव में विरोधाभासी नहीं हैं। अगर, दूसरी ओर, हमारे शोध के अनुभव के अनुसार तत्काल प्रस्तुति के रूप में होने की अवधारणा है, तो मध्यस्थता के रूप में सार का विचार प्राकृतिक विपरीत ज्ञान वर्गीकरण है; और संश्लेषण वास्तविकता संयुक्त के एक स्वयं मध्यस्थता व्याख्या के रूप में इन अवधारणाओं को एकजुट करती है। कल्पना के पैमाने पर, सभी थीसिस आइडिया, जिसका प्राकृतिक विपरीत एंटी-थीसिस, प्रकृति है, ज्ञाता और आत्मा के संश्लेषण को अपने रिश्ते की स्वतंत्रता के रूप से विचार किया जाता है, वह सब आत्म-अवलोकन समग्रता अर्थात्, निरपेक्ष ही है। निरपेक्षता का धीरे-धीरे पता चलता है और अपने स्वयं के स्वभाव को देखने के लिए व्यक्त करना होता है, जिसका एक ही तरीका है, जिसमें दुनिया की भावना से अलग पहचान बना द्वंद्वात्मक विकसित होना है, जिसके माध्यम से मानव संस्कृति अपनी दिव्य उद्देश्य को निरीक्षण कर प्राप्त कर सके।

सैद्धांतिक और व्यावहारिक
THEORETICAL AND PRACTICAL

जब यह वास्तव में आप के बारे में कहा जाता है, कि आप को कुछ करने के बारे में कैसे पता है, तो यह एक प्रकार का ज्ञान ही है। जब वास्तव में आप के बारे में कहा जाता है कि आप एक व्यक्ति को कैसे जानते हैं, तो यह ज्ञान की तरह ही है। आप का कुछ तथ्य जानना, ज्ञान ही है। यहाँ हम पहली और आखिरी के साथ बात करना चाहेंगे। पहले वाले को आम तौर पर कहा जाता है, ज्ञान-कैसे और बाद वाले को आम तौर पर, ज्ञान-वह या मक ज्ञान कहा जाता है। ज्ञान-कैसे के बारे में बहस दो मुख्य मुद्दों के आसपास घूमती है। सबसे पहले, बहस की डिग्री कि ज्ञान-कैसे, ज्ञान-वह से स्वतंत्र है। ज्ञान-कैसे का मतलब है कि यह कैसे करना है, इस के बारे में तथ्य के कुछ अस्पष्ट या स्पष्ट विचार से पहले से ज्ञात होने चाहिए? ज्ञान-कैसे और ज्ञान-वह, अलग-अलग प्रकार के होते हैं; कुछ करने के लिए कैसे बस, यह कैसे करना है, का मतलब सिर्फ, सही तथ्यों को जानना ही नहीं है बल्कि, कार्य कैसे होगा यह पहला संकेत या स्पष्ट है कि यह कैसे करना है, के बारे में तथ्य पर विचार करना भी जरूरी है। दूसरा, वहाँ वास्तव में पता होना चाहिए कि ज्ञान-कैसे, में क्या हो सकता है। ज्ञान-कैसे की क्षमता में क्या शामिल हैं और यह ज्ञान-कैसे का क्या स्वभाव हैं।

व्यावहारिक और सैद्धांतिक ज्ञान के बीच भेद करने के लिए एक सहज तरीका है वस्तुओं के बीच भेद करने का। कुछ प्रस्ताव, उदाहरण के लिए, व्यावहारिक मामलों सम्बन्धी होते हैं- टुल्सा कौन सी सड़क जायेगा? या एक साइकिल की सवारी करने के लिए सही तरीका क्या है। अन्य प्रस्ताव, विशुद्ध रूप से सैद्धांतिक मामलों सम्बन्धी हैं: 16 का वर्गमूल क्या है, या अगर न्यूनतम मजदूरी को कम कर दिया जाये तो क्या होगा? जाहिर है, कई सैद्धांतिक प्रस्ताव व्यावहारिक प्रस्तावों पर असर डालते हैं: न्यूनतम मजदूरी को कम करने का सबसे अच्छा तरीका क्या है ताकि बेरोजगारी को भी कम किया जा सके? लेकिन वहां अभी भी अंतर है, कि क्या करना है या कैसे कुछ और इन चीजों के बारे में क्या कर रहे हैं या क्या नहीं कर रहे हैं। पहले का ज्ञान व्यावहारिक ज्ञान और दूसरी का ज्ञान सैद्धांतिक ज्ञान है। यहाँ इस अर्थ में व्यावहारिक ज्ञान ज्ञान-वह हो सकता है और ज्ञान-कैसे का समीकरण असफल हो सकता है। वही एक दूसरे सहज तरीके से, हम व्यावहारिक ज्ञान का सैद्धांतिक ज्ञान से अंतर कर सकते है, की ज्ञान क्या है? कैसे एक रेस्तरा को चलाया जा सकता है, कोई भी इसे चला सकता है बिना किसी ट्रेनिंग के यूँही,

और कोई इसे चला सकता है कोई इसे चला सकता है मात्र किताबें पढकर, एक रेस्तरां में काम करके, एक रेस्तरां चलाने के लिए सीखकर, पहले किसी विभिन्न प्रकार का ज्ञान प्राप्त कर के। और शायद ये अंतर ज्ञान की तरह प्रत्येक में दिखाई देता है। बाद वाला, रेस्तरां चलाने के लिए व्यावहारिक ज्ञान है, और पहले रेस्तरां चलाने के लिए केवल सैद्धांतिक ज्ञान है। इन दो अलग अलग तरीकों से सीखना अलग-अलग ढंग से परिणाम देता है। अनुभव के माध्यम से सीखे चैंपियन और केवल पुस्तकों के माध्यम से सीखे चैंपियन एक जैसा ही परिणाम हो, ऐसी संभावना नहीं के बराबर है।

मनुष्य ही विचारक है और मनुष्यों ही कर्ता के रूप में हैं। अलग क्षमताओं के रूप में इन गतिविधियों को देखने की आवश्यकता या प्रलोभन प्राकृतिक ही है। जब हम कुछ प्रतिबिंबित करते हैं, हम दुनिया के बारे में सत्य के हमारे ज्ञान द्वारा निर्देशित हो रहे होते हैं। इसके विपरीत, जब हम कोई काम करते हैं, हम विभिन्न कार्य प्रदर्शन करने के हमारे ज्ञान के द्वारा निर्देशित हो रहे होते हैं। अगर हम अलग-अलग संज्ञानात्मक क्षमता रखते हैं, तो कुछ कैसे करें, मात्र एक तथ्य का ज्ञान नहीं हो सकता है। हम में से अधिकांश तुरंत मन लेते हैं, कि एक कार की मरम्मत, एक साइकिल की सवारी, लम्बी-ऊँची कूद या शॉट मारना, एक बच्चे की देखभाल करना या खाना पकाना आदि व्यावहारिक ज्ञान के, अभ्यास के रूप में, उदाहरण हैं और बीजगणित में एक प्रमेय साबित करना, भौतिक विज्ञान में एक परिकल्पना का परीक्षण, निर्माण की गतिविधियों को वर्गीकृत करने की क्षमता, और दर्शन-शास्त्र में तर्क के साथ सत्य के ज्ञान को संचालित करना, आदि सैद्धांतिक ज्ञान के उदाहरण हैं। सैद्धांतिक ज्ञान सक्रिय प्रतिबिंबत होता है, ज्ञान के नियमों के साथ बंधा होता है। इसके विपरीत, व्यावहारिक ज्ञान स्वचालित रूप से और प्रतिबिंब के बिना प्रयोग किया जाता है।

दो शब्द, ज्ञान और कौशल, किसी व्यक्ति की क्षमता का वर्णन करते हैं। ज्ञान, किसी व्यक्ति से सिद्धांतों और एक विशेष विषय(ओं) द्वारा पुस्तकों, मीडिया, विश्वकोषों, शैक्षणिक संस्थानों और अन्य स्रोतों के माध्यम से संकल्पनायें सीखने के बारे में जानकारी को दर्शाता है। एक कौशल, जानकारी का उपयोग और एक संदर्भ में इसे लागू करने की क्षमता को दर्शाता है। यह एहसास महत्वपूर्ण है कि कार्यस्थल में, व्यावहारिक अनुभव या सैद्धांतिक पृष्ठभूमि कोई मायने नहीं रखती है। क्या मायने रखता है कि एक व्यक्ति कितना उसके आसपास की वास्तविकताओं को प्रभावी ढंग के साथ निभाने में सक्षम है। सिद्धांत और व्यावहारिक अनुभव तो सिर्फ पूरक साधन

हैं, जो परिवर्तन वहां होंगे वे यथार्थ में व पक्के होंगे। सीखने तो एक प्रक्रिया है, बजाय कि यथार्थवादी और तकनीकी ज्ञान के एक संग्रह के। सीखना एक व्यक्ति में परिवर्तन पैदा करता है और उत्पादन में परिवर्तन अपेक्षाकृत स्थायी हैं। हम जो लर्निंग सीखते हैं, किताबें पढ़ने से, कक्षाएं लगाकर, ट्यूशन से, मीडिया से, विश्वकोषों से, शैक्षणिक संस्थानों और अन्य स्रोतों आदि से, वह सैद्धांतिक ज्ञान है, और व्यावहारिक ज्ञान वह है जो हम जीवन के अनुभवों से और वास्तविक स्थितियों से हासिल करते है। एक कक्षा में बैठे और एक निश्चित विषय पर चर्चा कर जो काम हम करते हैं, वह पूरी तरह अलग बात है जो हम काम मैदान पर एक सबक में पढ़ने या स्थितियों का सामना कर लेते हैं। व्यावहारिकता के साथ सीखना या करके सीखने, दोनों व्यावहारिक और सैद्धांतिक पहलुओं का उपयोग करके ज्ञान प्राप्त करने का सबसे अच्छा तरीका है।

सैद्धांतिक ज्ञान का सीखने में अपना महत्व है। सैद्धांतिक ज्ञान व्यावहारिक रूप से कुछ भी करने का आधार है। सैद्धांतिक ज्ञान के बिना व्यावहारिक रूप से कुछ भी किया गया खतरनाक साबित हो सकता है। सैद्धांतिक ज्ञान, किसी भी स्थिति में और काम करने की तकनीक पर क्यों नामक कारकों का जवाब बताते हैं। जहां स्वयं-शिक्षा का संबंध है, सिद्धांत आप को अपने भविष्य की शिक्षा के लिए एक दिशा निर्धारित करने के लिए तैयार करता है। थ्योरी, दूसरों के अनुभव के माध्यम से, आपको सिखाता है। प्रैक्टिकल ज्ञान सटीक तकनीक है जो हमारे काम को सही और सटीक बनाने के लिए हमरी मदद करता है। यह हमारे वास्तविक दैनिक कार्यों के बहुत करीब है। व्यावहारिक ज्ञान और कौशल, आज कि इस प्रतियोगी दुनिया में जीवित रहने के लिए बहुत जरूरी है। यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि कैसे चीजें वास्तव में काम करती हैं। यह व्यक्तिगत अनुभव के अधिनियम के माध्यम से अवधारणाओं की गहरी समझ का उपकरण है। यह हैंडलिंग के रास्ते वास्तविक रूप से कार्य-तरीका प्रदर्शन में सहायक है। सैद्धांतिक ज्ञान के माध्यम से सीखना, विशेष रूप में पेशेवर शिक्षा परिदृश्य व्यावहारिक ज्ञान उत्पत्ति और तथ्यों के महत्व के साथ-साथ अवधारणाओं की गहरी समझ में मदद करता है। कभी कभी, कुछ व्यावहारिक चीजों का प्रदर्शन, कुछ जटिल सबक, जो उस बिंदु पर बातचीत करने के लिए आसान नहीं हैं इसलिए उचित तरीके से समझने में सहायक होते हैं। यही कारण है कि व्यावहारिक प्रशिक्षण, दोनों ट्रेनर और शिक्षार्थी के लिए फायदेमंद है। सैद्धांतिक सीखना, ज्ञान क्या है, के बारे में है और व्यावहारिक शिक्षा, ज्ञान कैसे सीखा जाये, के बारे में है। आज के आधुनिक शिक्षा या प्रशिक्षण कार्यक्रम में, जरूरत जल्दी और

प्रभावी ढंग से सीखने में है। सिद्धांत के साथ-साथ व्यावहारिक शिक्षा की विधा छात्रों को तथ्यों के बारे में ज्यादा स्पष्ट करती है। थ्योरी का कार्य दूसरों के विशेष अनुभवों के बारे में सिखाना है जबकि व्यावहारिक रूप से हम, काम के साथ-साथ अपने स्वयं के अनुभवों के बारे में सीख सकते हैं। दार्शनिक रूप से, ज्ञान अमूर्त है, लेकिन व्यावहारिक अनुभव, उन लोगों के कौशल को दिवसीय अभ्यास, में लागू करने से यह मूर्त बन जाता है। दोनों व्यावहारिक और सैद्धांतिक अनुभव साथ-साथ चलते है और प्रत्येक का एक अपना महत्व है। दोनों सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक कौशल, किसी क्षेत्र में महारत हासिल करने के लिए जरूरी हैं। सैद्धांतिक ज्ञान सीखने के लिए मन को मार्गदर्शन देता है और मन हमारे शरीर को गाइड करता है कि सैद्धांतिक ज्ञान को कैसे सीखने के लिए व्यावहारिक प्रदर्शन में परिवर्तित किया जा सकता है। सैद्धांतिक ज्ञान अच्छा है, लेकिन अगर ज्ञान का उपयोग व्यावहारिक रूप से नहीं कर पाए तो यह किसी काम का नहीं है। इसलिए सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक रूप से उपयोग करना बहुत महत्वपूर्ण है; अन्यथा वहाँ सैद्धांतिक ज्ञान हासिल करने का कोई मतलब ही नहीं है। सही सीखने के अनुभव के लिए दोनों व्यावहारिक और सैद्धांतिक ज्ञान हासिल करने चाहिए।

प्रासंगिक और शाब्दिक
CONTEXTUAL AND TEXTUAL

पाठ और संदर्भ, एक-दूसरे से जुडे हुए हैं। पाठ और संदर्भ पुराने चिकन और अंडे की पहेली की तरह हैं। किसी कहानी के अर्थ, पाठ और संदर्भ के बीच के रिश्ते से ही बाहर आता है। स्थान और समय के पहलु एक पाठ के चारों ओर एक संदर्भ के रूप में प्रसंग पैदा करते हैं। समय और जगह बहुत महत्वपूर्ण होते हैं जब लेखक कुछ लिखता है, और जब पाठक वह सब पढ़ता है तो वहाँ वह सब क्रियात्मक क्षण दोहराये जाते हैं। एक पाठ का स्वागत, एक संदर्भ के भीतर होता है कई अलग-अलग जगह और समय के साथ उस पथ का सम्बन्ध स्थापित होता है। पाठ लिखित सामग्री और संदर्भ किसी शब्द या वाक्यांश निर्धारित करता है कि वास्तव में यह कैसे हुआ था मतलब आसपास के बारे में क्या जानकारी है। संदर्भ आसपास या चरों और कि व्यवस्था को दर्शाता है।

टेक्स्ट: सम्बंधित प्रवचन। इसका कार्य बातचीत या पाठ को आगे बढ़ाना है और यह विश्लेषण और वर्णन का एक उद्देश्य है।

प्रसंग: कनेक्शन या रिश्ते का एक सामान्य प्रकार; विचाराधीन कुछ करने के लिए प्रासंगिक परिस्थितियां; पर्यावरण बताता है इसका अर्थ, स्थापना, पृष्ठभूमि, फ्रेम, (आंकड़ा और) और जमीन जो निर्धारित करती है आसपास।

पाठ और संदर्भ बारीकी से संबंधित अवधारणायें हैं। प्रसंग एक अधिक जटिल संदर्भ है जिसे आगे खोज की जरूरत है।

मानसिक मॉडल, संज्ञानात्मक मनोविज्ञान की घटनाओं और व्यक्तिगत, प्रासंगिक स्मृति में स्थितियों के व्यक्तिपरक अभ्यावेदन का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक उत्कृष्ट सैद्धांतिक अवधारणा है। इसलिए, संदर्भ या प्रसंग, सामाजिक स्थितियां या सामाजिक संरचनायें नहीं हैं, लेकिन प्रतिभागियों के लिए, ध्यान केंद्रित करने या जाते-जाते एक मिलनसार स्थिति में प्रासंगिक भाग लेने के लिए मानसिक मॉडल हैं। हम इन्हें विशेष मॉडल, संदर्भ या प्रसंग मॉडल कह सकते हैं। सीखना तब होता है जब शिक्षक छात्रों को, अपने स्वयं के अनुभवों के आधार पर अर्थ का निर्माण करने में, सक्षम जानकारी पेश करने में सक्षम हो। प्रासंगिक विश्लेषण, उदाहरण के लिए, अपनी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक या सामाजिक संदर्भ में पाठ का आकलन करने में मदद करता है । यह भी अपने पाठ्यानुसार (textuality), पाठ को चिह्नित कर सकता है। आम तौर पर, प्रासंगिक विश्लेषण, पाठ के उद्भव में सभी परिस्थितियों समझता है। जैसे कुछ महत्वपूर्ण सवाल हैं:

पाठ (text), एक पाठ (text) के रूप में खुद के बारे में क्या बताता है?

पाठ हमें इसकी स्पष्ट उद्देश्य दर्शकों (एस) के बारे में क्या बताता है?

लेखक का इरादा क्या लगता है?

इस पाठ के लिए क्या अवसर (occasion) है?

संदर्भ या प्रसंग, पाठ के लिए संबंधित शब्द है। संज्ञा के रूप में, पाठ और संदर्भ के बीच अंतर ऐसे है कि कई ग्लिफ़, वर्ण, प्रतीक या वाक्य मिलकर पथ बनाते हैं जबकि संदर्भ परिवेश, परिस्थितियों, पर्यावरण, पृष्ठभूमि या सेटिंग्स को निर्धारित करते हैं, जो एक घटना या अन्य घटनायों के अर्थ को स्पष्ट करते है। क्रिया के रूप में, पाठ और संदर्भ के बीच अंतर ऐसे है कि पाठ, एक पठनीय संदेश को भेजने के लिए है; लघु संदेश सेवा, या इसी तरह की सेवा, संचार उपकरणों, विशेष रूप से मोबाइल फोन के बीच का उपयोग करते समय संदर्भ बुनना या एक साथ बंधे पाठ संचारित करने के लिए। दोनों में कई मतभेद है, लेकिन एक बुनियादी स्तर पर वे गुंजाइश और विशिष्टता के मामले में ही अलग-अलग कहें जा सकते है। पाठ एक अति विशिष्ट शब्द है और जो लिखा है शब्द उसी को दर्शाता है। प्रसंग, एक शब्द के

भीतर और साहित्य के काम के बाहर, विभिन्न स्तरों पर रूप में, साहित्य के काम के नियोजित किया जा सकता है। पाठ समझा जा सकता है और पाठ व्यक्त भी कर सकते हैं, फिर भी पाठ में हमारे संदर्भ वास्तविक शब्दों को समझने और व्यक्त करने के लिए ही हमेशा होते है। इस स्थिति को समझने के लिए, एक पाठ कि तुलना पेंटिंग के साथ हो सकती है। पेंटिंग एक भौतिक वस्तु है जो दर्शकों के विचारों और भावनाओं से संवाद स्थापित करने के लिए सक्षम है, लेकिन जब हम चित्रकला कि बात करते हैं तो हम हमेशा इसके वस्तु अस्तित्व, इसकी सतह और वास्तविक अस्तित्व के बारे में ही बात करते हैं। हम जानते हैं कि भौतिक वस्तु की व्याख्या और इसका क्या अर्थ विचार हो सकता है। पाठ भी एक किताब का वर्णन करने के सामान्यीकरण में इस्तेमाल किया जा सकता है। संदर्भ एक स्थिति (या आसपास) को दर्शाता है। इस में बनाई स्थिति, एक कथा के भीतर (या एक पाठ के भीतर) बनाया गया, वर्णन कर सकते हैं। एक चरित्र एक रेगिस्तान द्वीप पर असहाय है, क्योंकि उसकी नाव डूब गई है, हम संदर्भ के रूप में मामलों की इस हालत का वर्णन करेंगे। इसके अलावा, संदर्भ स्थिति के भीतर जो भी एक किताब में लिखा गया है, उसका वर्णन कर सकते हैं।

सब विषयों में, संदर्भ दोनों बाह्य (स्थितिजन्य, सांस्कृतिक) और आंतरिक (संज्ञानात्मक, मनोवैज्ञानिक) कारक हैं जो बोलने और सुनने के कृत्यों में एक दूसरे को प्रभावित करने का उल्लेख करने के लिए सोचते है। संदर्भ को अक्सर स्थिर न मान, गतिशील माना जाता है वो पूर्व तय चर जो भाषा पर प्रभाव डालता है। संदर्भ और भाषा को, परस्पर आश्रित के रूप में देखा जाता है, इस तरह की भाषा संदर्भ को आकार देती है और संदर्भ भाषा को आकृति प्रदान करता है। अनुवाद में फिर से पाठ्याकरण शामिल है और एक प्रश्न के लिखित पाठ के बाहर एक प्रवचन की तरह है, अर्थात एक जीवित् कि तरह, लेकिन अनिवार्य रूप से गतिशील नहीं, संज्ञानात्मक सामाजिक इकाई जो प्रासंगिक कनेक्शन के साथ हो। अनुवाद में, संदर्भ बातचीत या आकस्मिक नहीं, बल्कि स्थिर माना जाता है। ये स्थाइत्व, जो लेखक और पाठक के समय और जगह में जुदाई कि वजह से होता है, और अनुवादक की सीमित शक्ति के माध्यम से परिभाषित होता है। एक पाठ के बाहर, इस की सत्यता, केवल काल्पनिक, छुपी हुई, मानसिकता भरी, लेखक और पाठक के बीच अनुवादक के मन में बातचीत कि तरह होती हैं। वक्ता और श्रोता की मौखिक बातचीत में प्राकृतिक एकता, लेखक और पाठक के स्थान और समय में वास्तविक दुनिया में अलगाव की तरह है। लेकिन अनुवादक इस अलगाव को दूर कर सकता है: वह एक

नई एकता जो पाठ कि वैचारिकता (भाषाई तत्वों की अपनी अडिग व्यवस्था के साथ), पाठ के पुराने और नए संस्करण में पाठ के संदर्भ द्वारा सक्रिय हो ताकि कल्पना और चमत्कारिकता उसके मन में एकजुट हो सके।

पाठ और संदर्भ के बीच संबंध, एक व्यापक अंतर-विषियीय समझ है, जो करीब शाब्दिक विश्लेषण और ऐतिहासिक संदर्भ का पूरा ज्ञान का विकल्प हो सकती है, और सवाल उठाने के लिए स्वीकृति पदान कर सकती है। पूर्व कौशल छात्रों को, जो अभी तक महत्वपूर्ण सवाल खड़ा करने में विफल रहते हैं, को छोड़ सकते हैं। तो क्या? सवाल जो पहली जगह में अध्ययन के लायक साहित्य बनाते हैं; जबकि ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के माध्यम से एक दृष्टिकोण, घटनाओं और अवधि की जटिलता को मात्र चित्रण से कम कर सकता है और छात्रों को सोच में छोड़ सकता है कि क्यों उन्हें सिर्फ एक अच्छा ऐतिहासिक खाता (account) नहीं पढ़ना चाहिए।

पाठों को अपने वातावरण के उत्पादों के रूप में देखा जा सकता है और जब आप अपने संदर्भ के भीतर एक पाठ का मूल्यांकन करते हैं तो पाठ कि अपनी समझ के अनुसार उसकी गहराई बदल जाती है। प्रासंगिक विश्लेषण तब है जब आप समाज, राजनीति और संस्कृति, जहाँ सामग्री का उत्पादन किया गया था, के बारे में जागरूक है; समाज निर्माण कैसे हुआ है। एक अमूर्त चित्र केवल शाब्दिक मानी जा सकती है प्रासंगिक नहीं।

स्कूल में और स्कूल से बाहर
SCHOOL AND OUT OF SCHOOL

बच्चों की आवाज और अनुभवों को कक्षा में अभिव्यक्ति नहीं मिलती है। अक्सर ही शिक्षक की ही आवाज सुनी जाती है। जब बच्चों की बात करते हैं, वे आम तौर पर केवल शिक्षक के सवालों का जवाब देते हैं या शिक्षक के शब्दों को ही दोहरा रहे होते हैं। वे शायद ही कभी बातें करते हैं, न ही उन्हें पहल करने के लिए अवसर मिल पाते है। पाठ्यक्रम को बच्चों की आवाज सुनाने के सक्षम करना होगा, उनकी जिज्ञासा का पोषण होना ही चाहिये, सवाल पूछने और जांच को आगे बढ़ाने के लिए, साझा करने और स्कूल ज्ञान के साथ अपने अनुभवों को एकीकृत, बल्कि शाब्दिक ज्ञान को पुनः पेश करने की क्षमता की तुलना में पाठ्यक्रम ही कुछ सटीक रोल निभा सकता है। पाठ्यक्रम की पुनर्दिशा निर्धारण (reorienting) हमारी सर्वोच्च प्राथमिकताओं में होना चाहिए, शिक्षकों की तैयारी, स्कूलों की वार्षिक योजना, पाठ्य

पुस्तकों के डिज़ाइन, शिक्षण सामग्री और शिक्षण योजना, और मूल्यांकन और परीक्षा पैटर्न पर भी ध्यान दिए जाने की जरूरत है।

स्कूल ज्ञान (औपचारिक स्कूल शिक्षा) के लिए छात्रों को शिक्षकों द्वारा पढाया जाता है, जबकि रोजाना ज्ञान (अनौपचारिक शिक्षा) हर दिन के अनुभवों, पर पर एक बच्चे की सहज और स्वयं निर्धारित अनुभव जो स्वयं संचालित होते हैं, के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। बालक एक प्राकृतिक शिक्षार्थी है और ज्ञान बच्चे की अपनी गतिविधियों का नतीजा है। स्कूल के बाहर रोजमर्रा के जीवन में, हमें जिज्ञासा, शोधकता और बच्चों की लगातार प्रश्नोतरी का आनंद लेना चाहिये। वे सक्रिय रूप से चारो ओर दुनिया के साथ संलग्न हैं और खोज, जवाव, खोज करने और चीजों पर काम कर अर्थ खोजते रहते है। बचपन विकास और परिवर्तन के लिये है, जिसमें शारीरिक और मानसिक क्षमताओं का पूर्ण विकास होता है। इसमें शामिल है, खुद को समाज में वयस्क होने का समाजीकरण, दूसरों और खुद व अपनों के समझने, विकसित होने व वदलने के संवंध में दुनिया का ज्ञान। प्रत्येक नई पीढ़ी गतिविधियों और समझ के अनुसार समाज में संस्कृति और ज्ञान का भंडार, एकीकृत, और नए सिरे से बनाने में अपनी 'परिपूर्णता' को साकार करने की कोशिश करती हैं। समाज में अनौपचारिक शिक्षा, शिक्षार्थियों की प्राकृतिक योग्यता बनाने और अपने स्वयं के ज्ञान का निर्माण करने, उनके आसपास के वातावरण से संबंधित उनकी क्षमता विकसित करने, और दोनों भौतिक व सामाजिक और हाथ से काम करने की क्षमता विकसित करती है। इस के लिए, कोशिश करने, गलतियाँ करने और सुधारने के लिये अवसरों की आवश्यकता होती हैं। यह सीखने की भाषा के रूप में उसी तरह से सही है जैसे यह एक शिल्प कौशल या अनुशासन में है।

स्कूल में सीखना, व्यावहारिक बुद्धि, जो स्कूल से बाहर औपचारिक बुधि से अलग है, जीवन में अधिक मायने रखता है। पाठ्यक्रम के विषयों और सामग्री में समानता होती है, फिर भी सूक्ष्म रूप में, नाटकीय पाठ्यक्रम और स्कूलों में पाठ्यक्रम में उपयोग में, और स्कूल के बाहर सीखने में भेद होता है। यहां तक कि एक प्राथमिक स्कूल के संदर्भ में भी, जहां एक काफी मानकीकृत पाठ्यक्रम होता है, ज्ञान की सामाजिक स्तरीकरण संभव है। स्कूल ज्ञान की उपयोगी और गैर-उपयोगी संभावनाएं, पाठ्यक्रम की सैद्धांतिक और व्यावहारिक तरीके में निहितार्थ या शामिल है। संस्थानों के रूप में स्कूल, सभी शिक्षार्थियों को उनकी विरासत का उपयोग और पहुँच, एक परिवार और एक समुदाय में किसी के जन्म की परवाह किए बगैर, खुद को, दूसरों के लिए और समाज के बारे में जानने के लिए के लिए नए

अवसर प्रदान करते हैं। सीखने को स्कूल संभव बनाता है, वे समझ की नई संभावनाओं और दुनिया के लिए संबंधित औपचारिक प्रक्रियाओं को खोल सकते हैं। वर्तमान में, हमारे पाठ्यक्रम विकास और सुधार, चिंता का विषय है, यह सभी बच्चों के लिए एक समावेशी है और सार्थक अनुभव के साथ-साथ एक पाठ्यपुस्तक संस्कृति से दूर स्थानांतरित करने के लिए भी प्रयासरत हैं। हमारे स्कूल में अध्यापन के तरीकों, सीखने वाले कार्यों और पाठ, शिक्षार्थियों के लिए बनाने के लिए, बच्चों के समाजीकरण और शिक्षा के लिए, हमें ग्रहणशील सुविधाओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिये। इसके बजाय, हमें शिक्षार्थियों के पोषण, उनके अभिनय और वास्तविक मायनों में दुनिया के लिए संबंधित बनाने में निहित हित, और अन्य मनुष्यों से संबंधित उनकी सक्रिय और रचनात्मक क्षमताओं पर निर्माण करने की जरूरत है। लर्निंग सक्रिय और सोच में सामाजिक होनी चाहिये। अक्सर, अच्छा विद्यार्थी को शिक्षक, नैतिक चरित्र और आधिकारिक ज्ञान के रूप में, शिक्षक के शब्दों की स्वीकृति के लिए आज्ञाकारिता पर जोर देना चाहिये।

बच्चे केवल एक वातावरण, जहां उन्हें लगता है कि वे मूल्यवान हैं, में सीखते हैं। हमारे स्कूलों में अभी भी, हम सभी बच्चों को यह व्यक्त नहीं कर पाते। भय, अनुशासन और तनाव के साथ सीखना, बजाय आनंद और संतुष्टि के साथ सीखने के, सीखने के लिए हानिकारक है। हमारे बच्चों को मानना चाहिये कि अपने घरों, समुदायों, भाषाओं और संस्कृतियों में से हर एक, अनुभव का विश्लेषण करने और जांचने के संसाधनों के रूप में मूल्यवान हैं, उनकी विविध क्षमताओं को स्वीकार कर, उन सभी को कुछ करने की क्षमता और जानने के लिए, ज्ञान और कौशल का उपयोग करने का अधिकार है; और कि वयस्क समाज को उन्हें, सबसे अच्छा में से सक्षम के रूप में मानना चाहिये। हमें इन जरूरतों के महत्व को और अधिक जागरूक करना चाहिये जैसे-जैसे हमारे स्कूलों का विस्तार हो रहा है और तेजी से समाज के सभी वर्गों से बच्चे किसी भी स्कूल में शामिल हो रहे हैं।

हाल के वर्षों में, वाह्य स्कूल के कार्यक्रमों ने, नए सिरे से रुचि और धन को आकर्षित किया है। लेकिन अतिरिक्त ध्यान के साथ-साथ, इन कार्यक्रमों की गुणवत्ता बढ़ाने और उनकी उपलब्धता के विस्तार की चुनौती का वक्त भी आ गया है। एक बढ़िया दृष्टिकोण इस नजरिए का वर्णन करने के लिए अपनाया जा सकता है; सरकार, स्कूलों और आउट-ऑफ-स्कूल प्रदाता समुदाय के बीच के समन्वय में वृद्धि और कार्यक्रम क्षेत्र में व्यापक गुणवत्ता में सुधार करने के लिए प्रयास। अच्छी तरह से कामकाज, समन्वित की परिभाषा के बाहर की स्कूल प्रणाली और योजना संचालित

करने और इसे बनाए रखने के लिए, बहुत ज्यादा अच्छी नीति के रूप में एक प्रगति तो हो रही है। सोचने की क्षमता, कारण और आत्म व दुनिया की भावना बनाने और भाषा का प्रयोग करना, अच्छी तरह अभिनय और किसी के द्वारा और अन्य लोगों के साथ हो रही बातचीत के माध्यम से जुड़ा हुआ है। कार्रवाई और भाषा के माध्यम से, स्वयं और दुनिया की अनुभूति, भावना बनाने की क्षमता है। सार्थक सीखना, प्रतिनिधित्व और ठोस बातों के जोड़-तोड़ की एक उत्पादक प्रक्रिया और मानसिक अभ्यावेदन है, न कि भंडारण और जानकारी की बहाली है।

दृष्टिकोण, भावनायें और नैतिकता, संज्ञानात्मक विकास का एक अभिन्न हिस्सा हैं और भाषा, मानसिक अभ्यावेदन, अवधारणाओं और तर्क के विकास से जुड़ी हैं। बच्चे विभिन्न तरीकों से जानने की कोशिश करते हैं; दोनों व्यक्तिगत और अन्य लोगों के साथ, अनुभव, बनाने और कुछ करने से, प्रयोग, पढ़ने, चर्चा, पूछने, सुनने, सोचने और दर्शाने, भाषण, आंदोलन या लिखित रूप में अपने आप को व्यक्त करने के माध्यम से वे जानने की कोशिश करते हैं। विकास के पाठ्यक्रम में इन सभी प्रकार के अवसरों की आवश्यकता होती है। लर्निंग दोनों स्कूल के भीतर और स्कूल के बाहर महत्वपूर्ण है। अगर दो एक-दूसरे के साथ बातचीत करते हैं तो सीखना समृद्ध हो सकता है। कला और काम, मौन और सौंदर्य घटकों के रूप में, समग्र सीखने के लिए अवसर प्रदान करते है। इस तरह के अनुभव, विशेष रूप से नैतिक और नैतिक मामलों में, भाषायी ज्ञान चीजों के लिए आवश्यक हैं, जब जीवन में एकीकृत व प्रत्यक्ष अनुभव से सीखा जाना हो। लर्निंग धीरे व साथ-साथ होनी चाहिए ताकि शिक्षार्थी अवधारणाओं के साथ सम्बन्ध स्थापित कर सके और समझ बढ़ सके, और सिर्फ परीक्षायों के लिये याद करने और परीक्षाओं के बाद भूल जाने के लिए लर्निंग न हो। सीखते समय, सीखने में विविधता और चुनौती भी होनी चाहिये ताकि सीखना रोचक और आकर्षक हो सके। बोरियत एक संकेत है कि काम बच्चे के लिए संज्ञानात्मक न रह, यंत्रवत् दोहराव जैसा हो गया है। शिक्षण कार्य की गुणवत्ता, सीखने की योग्यता और शिक्षार्थी के लिए मूल्य को प्रभावित करती है।

Area	School Education	Out of School Education
Scope	Narrow	Wide
Environment	Artificial	Natural and behaviouristic
Aim	Intellectual development of children	All-round and internalized development of powers in children
Programme	Well planned but short of diversification	Indefinite and casual but inclusive of diversification
Agencies	Mapped in a building	Available everywhere, in family, friend circles, neighbours, community, religion, organizations, state, etc.
Teacher	Definitely a professional	All persons like parents, brother-sister, friends, neighbours, society, etc.
Duration	Fixed from 4-5 years to 25 years of age	Unlimited from birth till death
Place	Walled areas	Total Society
Curriculum	According to level and grade, knowledge of certain subjects	Nothing definite, any type, anytime, anywhere
Teaching methods	Lecture, demonstration, practical, etc.	Although not fixed but based on experiences and lessons
Evaluation	Term end written examinations	Never but examination activities continue throughout the life. Can be adjudged by society anytime with unknown patterns
Certification	Definite after certain term	No paper certification but emotional and psychological certification by the society

प्रश्न (Questions)

1. ज्ञान के स्थानीय और सार्वभौमिक दृष्टिकोण में भेद स्पष्ट कीजिये।
2. कंक्रीट और पूर्ण ज्ञान का अंतर स्पष्ट कीजिये।
3. ज्ञान के सैद्धांतिक और व्यावहारिक मोड का तुलनात्मक वर्णन करें।
4. मनुष्य विचारक है और मनुष्य कर्ता भी हैं। वर्णन करें।
5. सैद्धांतिक या व्यावहारिक: कौन अधिक महत्वपूर्ण है? चर्चा करें।
6. पाठ और संदर्भ या प्रसंग एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। चर्चा करें।
7. शाब्दिक और प्रासंगिक अवधारणाओं अंतर स्पष्ट कीजिये।
8. पाठ और संदर्भ या प्रसंग को परिभाषित करें और अंतर स्पष्ट कीजिये।
9. संदर्भ या प्रसंग, पाठ से संबंधित शब्द है। चर्चा करें।
10. ज्ञान स्कूल में और स्कूल से बाहर प्राप्त ज्ञान में अंतर स्पष्ट कीजिये।
11. पाठ्यक्रम कैसे स्कूल में और स्कूल से बाहर, ज्ञान प्राप्त करने में मदद करता है?
12. 'स्कूल में' और 'स्कूल से बाहर' ज्ञान के तरीके पर चर्चा करें।
13. औपचारिक और अनौपचारिक ज्ञान के बीच क्या अंतर है?
14. सीखने की मात्रा स्कूल में और स्कूल से बाहर हैं, जबकि प्रभावित है।

Chapter 3

संस्कृति और ज्ञान
Culture and Knowledge

संस्कृति को केवल सामाजिक वास्तविकता के रूप में ही नहीं देखा जाना चाहिए: दरअसल, यह उस प्रक्रिया का एक अभिन्न हिस्सा है जिसके द्वारा वास्तविकता का निर्माण हुआ है। संस्कृति, सामाजिक विरासत है, या एक परंपरा, जोकि भविष्य की पीढ़ियों के लिए है। संस्कृति, मानव व्यवहार, जीवन जीने का एक अच्छा तरीका को साँझा करना है। संस्कृति आदर्श, मूल्य, या रहने के लिए नियम कि तरह है। संस्कृति एक तरह से मनुष्य कि पर्यावरण के लिए अनुकूल या एक साथ रहने की समस्याओं का समाधान है। संस्कृति विभिन्न विचारों, सीखी आदतों का मिश्रण है, जोकि आवेगों को बाधित और जानवरों से लोगों का अंतर करती है। व्यक्तिगत अनुभवों से उत्पन्न विचार या सीखी आदतें, साझा सामाजिक या संगठनात्मक अनु॰॰वों से उत्पन्न विचारों या सीखी आदतों से भिन्न नहीं होती हैं। संस्कृति विचारों की द्वितीय श्रेणी भी मानी जा सकती है। जब माना जाये कि संस्कृति ज्ञान प्रसंस्करण की विशेषता पैटर्न के लिए लेखांकन की तरह है, यह न केवल व्यवहार, संज्ञानात्मक झुकाव, और अन्य मानसिक घटना को प्रभावित कर रहे ज्ञान प्रसंस्करण व्यवहार दिखाने के लिए आवश्यक है, लेकिन यह भी कि इस तरह की घटनाएं समाज या समुदाय के कुछ साझा अनुभव के परिणाम हो सकती है। संस्कृति में नमूने और परस्पर विचार, प्रतीक या व्यवहार होते हैं। संस्कृति मनमाने ढंग से आवंटित व समाज द्वारा साझा किये गये अर्थो पर आधारित है। संस्कृति वह है, जब कोई कहता है कि सांस्कृतिक बाधाओं के कारण ज्ञान साझा या स्थानांतरित नहीं किया जा सकता है, स्पष्टीकरण के लिए, पूछने के लिए, पता करने के लिए, संस्कृति की क्या भावना मानी जा सकती है। दरअसल, यह भी संभव है कि जब लोग सांस्कृतिक बाधाओं के बारे में बात करें तो वे ये कहें कि वे तो संस्कृति के बारे में बात ही नहीं कर रहे हैं। वास्तव में, दावा कि ज्ञान बांटना और हस्तांतरण, संस्कृति की वजह से नहीं होता है, कभी-कभी सुखद लगता है, ये भी धारणा है कि किसी भी तरह ज्ञान, व्यक्तियों को हस्तांतरण करने के लिए, संस्कृति में एक मौलिक परिवर्तन की आवश्यकता है। लेकिन विचार कि हम ज्ञानी व्यक्तियों को असामान्य रूप से परोपकारी बनाएँ क्योंकि ज्ञान साझा करने और हस्तांतरण के लिए सामाजिक

व्यवस्था में जो सहयोग स्वार्थ सहित सामान्य मंशा है, उस पर ध्यान देने का कोई उदाहरण नहीं है। संरचनात्मक परिवर्तन अलग-अलग प्रेरक / प्रोत्साहन प्रणाली में तालमेल कर सकते हैं, चाहे बिना सांस्कृतिक परिवर्तन के प्रोत्साहन सिस्टम के साथ, किसी व्यक्ति या सांस्कृतिक मूल के व्यवहार में बदलाव को प्रभावित करते हों। वास्तव में, सामाजिक व्यवस्था में, व्यवहार और संरचनात्मक परिवर्तन अक्सर सांस्कृतिक परिवर्तन का कारण बनते हैं। हमें संस्कृति को परिभाषित करने में मदद मिलेगी अगर हम ध्यान दें कि हर समूह के लिए और एक पूरे संगठन के लिए, विश्लेषणात्मक गुण, संरचनात्मक गुण, और वैश्विक गुण में क्या भेद हो सकते हैं। विश्लेषणात्मक गुण विशिष्ट सुविधाओं का वर्णन है और संरचनात्मक गुण समुदाय के प्रत्येक सदस्य के संबंधों का वर्णन, डेटा पर कुछ डेटा मिलाकर प्राप्त करते हैं। इस के बाद, वैश्विक गुण सामूहिक जानकारी पर आधारित है जो किसी जानकारी से प्राप्त नहीं कि गई है। इसके बजाय, इस तरह के गुण, समूह या प्रणाली की विशेषताओं से प्राप्त होते हैं, और उस अर्थ में, उनके कहीं से उभरने कि बात सोची जा सकती है, या बातचीत की श्रृंखला से जिनका गठन किया गया है। संस्कृति सर्वेक्षण के परिणाम या व्यक्तिगत मानव निर्मित विशेषतायें एक अंकगणितीय एकत्रीकरण नहीं है। यह उन लोगों का प्रतिशत नहीं है, जो अपने साथियों पर भरोसा है, सोच प्रणालियों में विश्वास करते हैं, महत्वपूर्ण सोच में विश्वास करते हैं या ज्ञान बांटने की बात करते हैं। संस्कृति कुछ व्यापक और नियामक खातों के लिए संरचना निर्धारित करने को संदर्भित करता है। क्या हम मानते हैं कि संस्कृति, चरित्र और आकस्मिक या विशेषताओं के विभिन्न प्रकार के कुछ संयोजन में वैश्विक हैं? संस्कृति को वैश्विक विशेषता के रूप में परिभाषित करना, बजाय इसके कि वैश्विक और संरचनात्मक विशेषताओं का एक संयोजन, हमारी सामरिक संरचना के एक उपकरण के रूप में, संस्कृति का उपयोग करने की आवश्यकता के साथ, पिछले उपयोग के साथ, सबसे अधिक और भी सुसंगत प्रकट होता है। ऊपरलिखित संस्कृति और इसके व्यवहार से, ज्ञान व संस्कृति के संबंध के बारे में निम्नलिखित निष्कर्ष या सुझाव दिये जा सकते है:

संस्कृति की विशेषतायें
CHARACTERISTICS OF CULTURE

रिवाज, परंपरायें, दृष्टिकोण, मूल्य, मानदंड, विचार और प्रतीक, मानव व्यवहार पैटर्न को नियंत्रित करते हैं। समाज के सदस्य न केवल उन्हें समर्थन देते हैं बल्कि यह भी तदनुसार उनके व्यवहार में ढलते भी हैं। क्योंकि वे परंपराओं और रीति-रिवाजों कि वजह से ही उस समाज के सदस्य हैं जो समाज के सदस्यों के समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से ही पीढ़ी से पीढ़ी पारित हो रहे हैं। ये आम पैटर्न संस्कृति को नामित करते हैं और संस्कृति के अनुसार ही हम अपने सामाजिक संबंधों में मनुष्य के विशिष्ट व्यवहार पैटर्न को समझने में सक्षम हैं। सांस्कृतिक विचार साझा सामाजिक जीवन से ही उभरते हैं। संस्कृति को कई तरीकों से परिभाषित किया गया है। समाजशास्त्रियों और मानव विज्ञानियों के बीच संस्कृति की परिभाषा के बारे में कोई आम सहमति नहीं है। ओतावे (Ottaway) ने, समाज में जीवन में जो कुछ भी होता है को संस्कृति के रूप में परिभाषित किया है। होबेल (Hoebel) ने संस्कृति, विचार के रूप में एकीकृत कुल योग व्यवहार पैटर्न, जो एक समाज और सदस्यों के लक्षण हैं, को माना है। मजुमदार (Mazumadar) ने, मानव उपलब्धियों का कुल योग, सामग्री या गैर-सामग्री, प्रेषण के लिए सक्षम, समाजशास्त्रिय (sociologically) अर्थात पारम्परिक और संचारित, खड़ी या क्षैतिज रूप, को संस्कृति माना है। टाइलर (Tylor) ने जटिलता पूर्ण ज्ञान, विश्वास, कला, नैतिकता, कानून, रिवाज और एक आदमी या समाज के सदस्य द्वारा अधिग्रहीत अन्य क्षमताओं और आदतों को संस्कृति माना है। संस्कृति कि निम्नलिखित विशेषताएं हो सकती है:

1. **सीखा और साझा** (learned and shared): जब हम पैदा होते हैं तो हम स्वचालित रूप से सभी मूल्यों, शब्द, मान्यताओं, रिवाजों, आदि हमारी संस्कृति को नहीं जानते है। हम संस्कृति के वारिस नहीं है। संस्कृति को हमने सीखा है। हम संस्कृति के बारे में जो भी जानते हैं स्कूल, परिवार, साथियों और मीडिया के माध्यम से ही जानते हैं, संस्कृति को हम अवचेतन मन से ही सीखते हैं। यह आसपास के लोगों और दूसरों को देख कर ही सीखी जाती है। संस्कृति कि अवधारणा इसे एक सामाजिक निर्माण में वर्गीकृत करती है। एक भाषा, व्यवहार, या परंपरा जानने के लिए, अक्सर अन्य लोगों के साथ बातचीत करनी पड़ती है। इस प्रकार, संस्कृति काफी हद तक साझा कि जा सकती है। संस्कृति

के साझा प्रकृति के बावजूद, इसका मतलब यह नहीं है कि संस्कृति सभी के लिए एक ही है। एक संस्कृति के भीतर कुछ बातें हो सकती है जोकि कुछ समूहों के बीच साझा कर सकते हैं दूसरों के बीच नहीं।

2. **प्रतीकात्मक, एकीकृत और गतिशील** (Symbolic, Integrated and Dynamic): सभी संस्कृतियाँ प्रतीकों का उपयोग और समाज के अन्य सदस्यों के विचारों और विश्वासों को पारित करने के लिए संवाद का उपयोग करती हैं। इसके अलावा, यह महत्वपूर्ण है है कि एक संस्कृति में हर कोई, प्रतीकों के अर्थ पर सहमत होता हैं तभी, संस्कृति के प्रसार को जारी रख सकते हैं। इसलिए, किसी भी संस्कृति में, प्रतीकों के सेट पर सहमति की अपनी भाषा है। एक संस्कृति की भाषा ही, एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में, संस्कृति संचारण का प्राथमिक मोड है।
3. **संस्कृति सार है** (Culture is Abstract): संस्कृति समाज के सदस्यों की आदतों या दिमाग में मौजूद है। संस्कृति में सोच व कार्य के साझा तरीके है। सांस्कृतिक व्यवहार की दृश्यता की अपनी डिग्री है, ऐसा करने के लिए व्यक्तियों की नियमित गतिविधियों से लेकर आंतरिक या अलग कारण हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में, हम संस्कृति को मानव व्यवहार कि तरह नहीं देख सकते हैं। यह व्यवहार नियमित, नमूनों फैशन में होता है और इसे संस्कृति कहा जाता है।
4. **संस्कृति सीखे व्यवहार की एक पद्वति है** (Culture is a Pattern of Learned Behaviour): संस्कृति की परिभाषा ये संकेत देती है कि लोगों के सीखा व्यवहार नमूनों (patterned) जैसा है। प्रत्येक व्यक्ति का व्यवहार, अक्सर किसी और के कुछ विशेष व्यवहार पर निर्भर करता है। मुद्दा यह है कि, एक सामान्य नियम के रूप में, व्यवहार कुछ हद तक एकीकृत या अन्य व्यक्तियों के संबंधित व्यवहार कि तरह हो सकता है।
5. **संस्कृति व्यवहार का उत्पाद है** (Culture is the Products of Behaviour): संस्कृति और सीखना व्यवहार से सम्बन्धित हैं। जैसा व्यक्ति बर्ताव करता है, उस में वैसे ही परिवर्तन होते रहते हैं। वह तैरने की क्षमता है प्राप्त कर लेता है, किसी की ओर घृणा महसूस कर सकता है, या किसी के साथ सहानुभूति कर सकता है। वे अपने पिछले व्यवहार के कारण कोई व्यक्तित्व प्राप्त कर लेते हैं। दोनों ही तरीकों में, मानव व्यवहार, व्यवहार का ही परिणाम है। जैसे उम्र बदती है, अन्य लोगों के अनुभवों से लोग प्रभावित होने लगते है, और बहुत

सारे उसके लक्षण और क्षमतायें अपने ही अतीत के व्यवहार से प्रभावित होते हैं।

6. **संस्कृति में शामिल नजरिया और मूल्य ज्ञान** (Culture includes Attitudes and Values Knowledge): कई लोगों की सोच में व्यापक त्रुटि होती है जब उन्हें "अपने" विचारों, व्यवहार और नजरिये से अलग कुछ दिखाई ही नहीं देता है। यह कहना या मानना बहुत आसान है कि खुद का ही नजरिया और विचार विशिष्ट (overestimate) हैं। जब अन्य लोगों के साथ सहमति है तो काफी हद तक किसी का ध्यान नहीं जाता है, लेकिन जब वहाँ असहमति या फर्क होता है तभी लोगों का ध्यान इस ओर जाता है। आपके मतभेद हालाँकि, सांस्कृतिक भी हो सकते है। उदाहरण के लिए, आप एक हिन्दू और अन्य व्यक्ति मुसलमान हो सकता है।

7. **संस्कृति में शामिल भौतिक वस्तुयें** (Culture also includes Material Objects): मनुष्य का व्यवहार लक्ष्य निर्धारण भी करता है। जब कभी कुछ बनाया जाता है तो पुरुषों का व्यवहार बहुत मायने रखता है। कुछ बनाने में कई और विभिन्न कौशलों की जरूरत होती है जो मनुष्य धीरे-धीरे, उम्र के साथ हासिल कर लेता है। आदमी कुछ न कुछ नये का आविष्कार करता रहता है। कभी यह राय थी कि आदमी वास्तव में स्टील या एक युद्धपोत नहीं बना सकता है। यह सब कुछ पहले प्रकृति में मौजूद होना चाहिये। मनुष्य केवल उन्हें संशोधित कर सकता है, उन्हें एक स्थिति जहाँ वे थे, से उस स्थिति में जैसे वह अब उन्हें इस्तेमाल करता है, केवल बदला गया है। कुर्सी पहली एक पेड़ थी जिसे निश्चित रूप से आदमी ने पहले नहीं बनाया था। लेकिन कुर्सी पेड़ की तुलना में बहुत अधिक है और जेट हवाई जहाज, लौह अयस्क और इसके आगे की तुलना में बहुत अधिक है।

8. **संस्कृति सोसायटी के सदस्यों द्वारा साझा किया जाता है** (Culture is shared by the Members of Society): सीखे व्यवहार के पैटर्न और व्यवहार के परिणाम एक या कुछ व्यक्तियों के पास ही नहीं होते हैं, लेकिन आमतौर पर ये एक बहुत बड़े हिस्से के पास होते है। इस प्रकार, इस तरह के व्यवहार पैटर्न कई लाखों व्यक्तियों जैसे ईसाई, ऑटोमोबाइल के उपयोग या हिंदी भाषा साँझा करते हैं। लोग एक संस्कृति का कई बार असमान हिस्सा साझा कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, अमेरिका में मूल रूप से ईसाई धर्म है। कुछ लोगों के लिये ईसाई धर्म बहुत महत्वपूर्ण है, उनके लिये ये जीवन का निर्णायक

(predominating) विचार या हिस्सा है। दूसरों के लिए यह कम चर्चा वाला या कम महत्वपूर्ण है और कुछ और दूसरों के लिए इसका सीमांत महत्व ही हो सकता है। कभी-कभी लोग संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का ही हिस्सा बन पाते है। उदाहरण के लिए, ईसाइयों के बीच, कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट, उदार या संरक्षण, पादरी या आम (laymen) तरह के व्यक्ति हो सकता है। चर्चा का मुद्दा यह नहीं है कि संस्कृति या इसका कोई हिस्सा हूबहू साझा किया जाता है, बल्कि यह कि एक किसी हद तक समाज के सदस्यों द्वारा इसे साझा किया जाता है।

9. **संस्कृति सुपर-जैविक है** (Culture is Super-organic): संस्कृति को कभी कभी सुपर-जैविक कहा जाता है। इससे संकेत मिलता है संस्कृति किसी भी तरह प्रकृति से बेहतर है। शब्द सुपर-जैविक उपयोगी है जब यह जानने की कोशिश की जाये की सांस्कृतिक दृष्टि से, क्या काफी अलग घटना हो सकती है। उदाहरण के लिए, एक पेड़ वनस्पतिशास्त्री जो इसका अध्ययन करता है के लिए अलग-अलग मायने रख सकता है, एक बूढ़ी औरत गर्मियों की दोपहर में छाया के लिए इसे इस्तेमाल करती है, एक किसान इसके फल बेचकर पैसा कमाता है, मोटर चालक इसके साथ टकरा सकता है, और कोई युवा प्रेमी अपने नाम के अक्षर इसके तने पर खोद सकते हैं। भौतिक वस्तुयें और भौतिक विशेषताएं, दूसरे शब्दों में, सांस्कृतिक वस्तुओं और सांस्कृतिक विशेषताओं की काफी अलग-अलग किस्मों का गठन कर सकती हैं।

10. **संस्कृति व्यापक है** (Culture is pervasive): संस्कृति व्यापक है, यह जीवन के हर पहलू को छू लेती है। संस्कृति की व्यापकता को दो तरह से बता सकते है। सबसे पहले, संस्कृति एक निर्विवाद संदर्भ प्रदान करती है जिस के भीतर अलग-अलग कार्रवाई और प्रतिक्रिया जगह ले सकती है। न केवल भावुक कार्रवाई लेकिन सम्बन्धिय कार्य सांस्कृतिक मानदंडों से संचालित होते हैं। दूसरा, संस्कृति सामाजिक गतिविधियों और संस्थानों में व्याप्त है। रुथ बेनेडिक्ट के अनुसार, "एक संस्कृति, एक व्यक्ति की तरह विचार और कार्रवाई का एक कम या ज्यादा सुसंगत पैटर्न है। प्रत्येक संस्कृति के साथ समाज के लिये जरूरी विशेषता प्रयोजन अस्तित्व में आते हैं जो अन्य प्रकार के समाज के द्वारा साझा नहीं भी किये जा सकते। इन उद्देश्यों की आज्ञाकारिता में, प्रत्येक व्यक्ति अपने अनुभव इन ड्राइव व्यवहार की विषम मदों की तात्कालिकता के अनुपात में समेकित करता है; अधिक से अधिक मुताबिक़ आकार लेने के लिये"।

11. **संस्कृति जीवन का एक तरीका है (Culture is a way of Life):** संस्कृति साधारणतः लोगों के जीवन जीने का रास्ता या जीवन जीने का एक नक्शा है। Kluckhohn और केली इसे यूँ परिभाषित करते है, "संस्कृति ऐतिहासिक दृष्टि से निकाली गई प्रणाली का एक समूह है जहाँ सभी या विशेष रूप से डिजाइन सदस्यों द्वारा, जीने के लिए स्पष्ट और निहित डिजाइन साझा किया जाता है"। स्पष्ट संस्कृति, शब्दों और कार्रवाई में समानता की बात करती है जो सीधे अवलोकित की जा सकती है। उदाहरण के लिए, किशोर सांस्कृतिक व्यवहार कपड़ों के पहरावे, व्यवहार और बातचीत से जाना जा सकता है। अंतर्निहित संस्कृति सार रूप में मौजूद होती है जो काफी स्पष्ट नहीं हैं।

12. **संस्कृति एक मानव उत्पाद है (Culture is a human Product):** संस्कृति एक शक्ति नहीं है, जो अपने आप सक्रिय है और मानव सम्बन्धों से स्वतंत्र है। संस्कृति को धता बताना, जीवन के साथ प्रदान करना और इसे एक वस्तु के रूप में मानना, एक बेहोश प्रवृति को दर्शाता है। संस्कृति बातचीत से समाज की एक रचना है और इसका अस्तित्व, इसके समाज में बने रहने पर निर्भर करता है। एक सख्त अर्थ में, इसलिए, संस्कृति अपने दम पर कुछ भी नहीं करती है। यह व्यक्ति एक विशेष तरीके से कार्य करने को मजबूर नहीं कर सकती है, न ही यह एक सामान्य व्यक्ति को असमान तरीके से रहने में मदद करती है। संस्कृति, संक्षेप में, एक मानव उत्पाद है; यह स्वतंत्र रूप से जीवन के साथ सम्बंधित नहीं है।

13. **संस्कृति आदर्शवादी है (Culture is Idealistic):** संस्कृति एक समूह के विचारों और मानदंडों का प्रतीक हैं। यह एक समूह के आदर्श पैटर्न और व्यवहार के नियमों का योग-कुल है। संस्कृति में बौद्धिक, कलात्मक और सामाजिक आदर्शों और संस्थाओं आते हैं जैसे समाज के सदस्य दावे करते हैं और जो वे इस की पुष्टि करने के लिए प्रयास करते हैं।

14. **संस्कृति समाज के सदस्यों के बीच फैलती है (Culture is transmitted among members of Society):** सांस्कृतिक तरीके व्यक्तियों से व्यक्तियों द्वारा सीखे जाते हैं। उनमें से कई किसी के बड़ों द्वारा, माता-पिता, शिक्षकों और दूसरों द्वारा लोगों को दिए जाते हैं। अन्य सांस्कृतिक व्यवहार बड़ों द्वारा सिखाये जाते हैं। संस्कृति का संचरण कुछ समकालीनों के बीच भी होता है। उदाहरण के लिए, अलग-अलग पोशाक, राजनीतिक विचार, और हाल ही में श्रम सम्बंधित बचत उपकरणों का उपयोग। किसी को अनायास ही एक व्यवहार पैटर्न प्राप्त

नहीं होता है। लोगों को यह सीखना पड़ता है। इसका मतलब है कि कोई किसी को सिखाता है और वह सीखता है। दोनों शिक्षक और शिक्षार्थी के लिए सीखने की प्रक्रिया की ज्यादातर किस्में अनजाने में, या आकस्मिक ही है।

15. **संस्कृति लगातार बदल रही है (Culture is Continually Changing):** 'संस्कृति की एक मौलिक और अपरिहार्य विशेषता (विशेष गुणवत्ता), अंतहीन परिवर्तन है। कभी-कभी कुछ समाज धीरे धीरे बदलते है इसलिए उनकी तुलना नहीं हो पाती लेकिन ऐसा नहीं है कि वे बदल नहीं रहे होते। लेकिन वे बदल रहे होते हैं, भले ही यह जाहिर नहीं हो।

16. **संस्कृति बदलने योग्य है (Culture is Variable):** संस्कृति समूह से समूह, समाज से समाज तक भिन्न होती है। इसलिए, हम भारत या इंग्लैंड की संस्कृति कहते हैं। इसके अलावा संस्कृति एक ही समाज के भीतर समूह से समूह के लिए भिन्न होती है। एक संस्कृति के भीतर उपसंस्कृतियाँ होती हैं। पैटर्न के क्लस्टर जो समाज के सामान्य संस्कृति से संबंधित है और जिनकी अभी तक अलग पहचान है उन्हें उपसंस्कृतियाँ कहा जाता है।

17. **संस्कृति एक एकीकृत प्रणाली है (Culture is an integrated system):** संस्कृति में एक अनुशासन और प्रणाली होती है। इसके विभिन्न भागों एक दूसरे के साथ एकीकृत होते हैं और कोई भी नए तत्व है जो आते है वे भी एकीकृत होते है।

18. **भाषा संस्कृति का प्रमुख वाहन है (Language is the Chief Vehicle of Culture):** आदमी न केवल वर्तमान में बल्कि अतीत और भविष्य में भी रहता है। ऐसा वह इसलिए कर पाता है, क्योंकि उसके पास भाषा है जो उसे अतीत में क्या सीखा था और उसे अगली पीढ़ी के लिए संचित ज्ञान संचारित करने के लिए सक्षम बनाता है। एक विशेष भाषा पैटर्न एक विशेष समूह या उपसंस्कृति के सदस्यों के लिए एक आम बांड के रूप में कार्य करता है। हालांकि संस्कृति फैलने के कई तरीके है, भाषा सांस्कृतिक पैटर्न को बनाए रखने के लिए सबसे महत्वपूर्ण वाहनों में से एक है।

संस्कृति सब कुछ है जो सामाजिक रूप से सीखी जा सकती है और एक समाज के सभी सदस्यों द्वारा साझा की जा सकती है। दुनिया की व्यापक ध्यान केंद्रित करने में यह संस्कृति ही है, जो व्यक्ति से व्यक्ति, समूह से समूह और समाज से समाज अलग-अलग करती है।

जानने में संस्कृति की भूमिका

ROLE OF CULTURE IN KNOWING

बच्चों की शिक्षा, संज्ञानात्मक विकास की तरह ही, एक सामाजिक और प्रेरक घटना जैसी है। हाल ही के वर्षों में पहले की तुलना में, अलग-अलग उम्र में अलग डोमेन के बारे में बच्चों की मान्यताओं के मानचित्रण में वैचारिक विकास पर शोध का ज्यादा कार्य हुआ है, पर ज्ञान के सामाजिक स्रोतों के बारे में शोधकर्ताओं की समझ में अभी भी एक अंतराल है। लर्निंग एक गवाही या विश्वास बनाता है कि कोई जानकारी में किसी व्यक्ति के सच होने का कितना दावा है। इस ढांचे से प्रेरित हो, विकास के वैज्ञानिकों (developmental scientists) ने बच्चों के अतीत सटीकता, आत्मविश्वास और विशेषज्ञता की तरह, विशेषताओं की एक किस्म के आधार पर उनके विश्वास की विश्वसनीयता का मूल्यांकन, करने की क्षमता पर ध्यान दिया है। एक प्रमुख सवाल यह उठता है कि कैसे अन्य लोगों के मन की, बच्चों की समझ (ज्ञान, अज्ञान, इरादा, और ध्यान के संदर्भ में), ज्ञान के लिये, उनको निर्देशांक करती है। यह कहा जा सकता है कि बच्चों को जितना पता होता है, उसी के संदर्भ में ही अपने ज्ञान स्रोतों का चयन करते हैं। जब एक वयस्क या बड़े कुछ बताते है जो कि विरोधाभासी होता है उस ज्ञान के साथ जो बच्चे जानते है, तो कैसे बच्चे उस विरोधाभासी बयान को स्वीकार करते हैं और बच्चे के पूर्व ज्ञान का उस जानकारी की सच्चाई पर क्या फर्क पड़ता है? पूर्व ज्ञान और विश्वास के बीच के रिश्ते को प्रभावित करने में संस्कृति की भूमिका को समस्या के समाधान के रूप में माना जाता है।

संस्कृति, सामाजिक रूप सीखे व्यवहार पैटर्न, विश्वास, संस्थाओं और विशेष तरह की आबादी, व्यवसाय, संगठन या समुदाय के कामकाज की विशेषताएँ, मानव काम और विचार की अन्य सभी उत्पादों का एक सेट है। संस्कृति के कई रूप और आकार है जो लगातार विकसित हो रहे हैं। संस्कृति के बारे में सोच का एक तरीका, महासागर के बाहर चिपके हुए हिमखंड की तरह है। हिमशैल की नोक पर, जो समुद्र के स्तर से ऊपर दिखाई देती है, संस्कृति के अपेक्षाकृत स्पष्ट जैसे संगीत, नृत्य, भोजन, कपड़े, भाषा, त्वचा का रंग, समारोह और कला, आदि रूप में हैं। ये रूप अधिक आसानी से मान्यता प्राप्त है और संस्कृति के बाहर से किसी को भी समझ आ जाते हैं। ये रूप संस्कृति के अंदर और संस्कृति के बाहर के लोगों के बीच कई बार कुछ गलतफहमी पैदा कर देते हैं। समुद्र के स्तर के ठीक नीचे संस्कृति के कम स्पष्ट

रूप जैसे धर्म, इतिहास, जन्म और मृत्यु के संस्कार, सामाजिक वर्ग, सौंदर्य की अवधारणायें, बेहतर और अधीनस्थ संबंधों के पैटर्न, मार्ग, शरीर की भाषा और खाली समय के उपयोग से संबंधित हैं। ये रूप बाहरी व्यक्ति जो सही सवाल पूछता है, ध्यान से सुनता है और गैर मौखिक बातों पर करीब से ध्यान देता है, को स्पष्ट हो सकते है। अगर कोई गलत समझ जाये, तो संस्कृति में और बाहर के लोगों के बीच, नकारात्मक भावनायें, परिणाम के रोप में पैदा हो सकती है। और भी निचे सागर की गहराई में, संस्कृति के वे रूप हो सकते हैं जब किसी बाहरी व्यक्ति को समझने के लिए अवलोकन और व्यापक जांच जैसे कि, स्थान और समय, तर्क, नेतृत्व के विचार, निर्णय लेने के पैटर्न, स्वास्थ्य के बारे में विश्वास की अवधारणा, मदद व्यवहार की भावना, व्यक्तिवाद बनाम समष्टिवाद के विचार, बुजुर्ग की ओर रुख और समस्या को सुलझाने के लिए दृष्टिकोण आदि की आवश्यकता होती है। संस्कृति की इन अभिव्यक्तियों को, आम तौर पर एक कम उम्र में ही, आसानी से सीखा जा सकता हैं। जब नियमों का उल्लंघन होता हैं, तो वे गंभीरता से संबंधों को नुकसान पहुँचा सकते है और इसमें शामिल लोगों को प्रतिकूल परिणामों का सामना करना पड़ सकता है। संस्कृति और उसके सभी संभव रूपों को समझते हुए, यह मन जा सकता है कि संस्कृति ज्ञान या जानने के हर पहलू को प्रभावित कर सकती है।

दूसरों को समझना, अपने आप को एक बेहतर ज्ञान संभव बनाता है। सुन, देख और पूछने के अलावा, जानकर पता कर सकते हैं कि उनके सहयोगियों और साथियों ने अतीत और इसी तरह के अनुभवों से क्या सीखा है? जानकारों को, हालांकि, स्वीकार नहीं कर लेना चाहिए कि वे जानकारी को जाँच के बिना स्वकर कर सकते हैं, बल्कि उन्हें यकीनि करना चाहिये कि विश्वसनीय सूत्रों से इसकी पुष्टि की जा चुकी है और इसमें सांस्कृतिक समूह के लोग शामिल हैं। भाषा और संदर्भ, जानने में, एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अगर ज्ञाता डेटा इकट्ठा करने से पहले, शब्दों की संभव व्याख्याओं पर विचार नहीं करता तो, निष्कर्ष गलत पाया जा सकता है और आकलन गलत हो सकता है। भाषा संस्कृति, व्याख्या का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और अनुवाद पर भी विचार किया जाना चाहिए। सामाजिक पहचान का गठन होता है जब लोगों के एक समूह द्वारा उनके समूह के अन्य समूहों से अलग दिखने के लिए प्रयास किया जाता है। यह पहचान, व्यवहार पैटर्न, विश्वास, संस्थाओं और किसी विशेष समूह द्वारा आयोजित नजरिए द्वारा सूचित की जाती है। लोग कई तरह की सामाजिक पहचान रखते हैं क्योंकि वे दो या अधिक समूहों से संबंधित होने की कोशिश में होते है। कोई एक ही समय में एशियाई (भारतीय,

पाकिस्तानी) होने के साथ, धार्मिक (हिन्दू, मुस्लिम, सिख), एक औरत (आदमी) और एक पेशेवर (शिक्षक, राजनेता, सैन्य कर्मी, व्यापारी), सभी का व्यवहार पैटर्न प्रदर्शन कर सकता हैं। पैटर्न के प्रत्येक सेट की प्रासंगिकता वर्तमान संदर्भ में, जैसे कोई व्यक्ति काम कर रहा है, पर निर्भर करती है। एशियाई पुरुषों के एक समूह के बीच एक औरत होना और भी अधिक प्रासंगिक हो सकता है। यहां तक कि कई बार एक सांस्कृतिक समूह के भीतर, सामाजिक पहचान, अक्सर कुछ बनाम गतिशील, का आधार भी बन जाते हैं।

ज्ञान और संस्कृति एक दूसरे के अभिन्न अंग हैं; इसलिए, सांस्कृतिक संचार के किसी भी प्रकार के दौरान पूर्ण व्यापकता, प्रतिभागियों की शब्द, भाव की समझ और सामाजिक और सांस्कृतिक जागरूकता के महत्व पर निर्भर करती है। भाषा और ज्ञान को अर्थ को व्यक्त करने के लिए प्रयोग किया जाता है, लेकिन अर्थ संस्कृति से ही निर्धारित होता है। संस्कृति, व्यक्तिगत और समूह के प्रयास द्वारा, ज्ञान, अनुभव, मान्यताओं, मूल्यों, क्रिया, व्यवहार, अर्थ, पदानुक्रम, धर्म, समय के विचार, भूमिका, स्थानिक संबंधों, ब्रह्मांड की अवधारणाओं और पीढ़ियों से लोगों के एक समूह द्वारा अधिग्रहित कलाकृतियों के माध्यम से जमा किया गया खजाना है। संस्कृति अन्य संस्कृतियों में प्रवेश करने के लिए और प्रभावी ढंग से और उचित रूप से संवाद स्थापित करने और संबंधों को बनाए रखने और इन संस्कृतियों के लोगों के साथ कार्यों को पूरा करने की क्षमता व योग्यता है। यह विभिन्न संस्कृतियों के प्रतिनिधियों की उम्मीदों के अनुसार, एक लचीले ढंग से, पर्याप्त रूप से व्यवहार करने के लिए एक व्यक्ति की क्षमता है। सांस्कृतिक ज्ञान इसलिए संस्कृति के बारे में जानकारी जानने का एक मामला नहीं है; यह संस्कृति के साथ संलग्न होने की प्रकिर्या है। यह जानना महत्वपूर्ण है कि संस्कृति का दायरा, जागरूकता, समझ और सहानुभूति से आगे कहीं है। संस्कृति के बिना जानना, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक या आर्थिक प्रणाली में, कुछ भी विशेष मायने नहीं रखता है। दोनों उपयुक्त सामग्री और गतिविधियों ध्यान-केन्द्रित होनी चाहिए ताकि छात्र सामग्री को आत्मसात करने के लिए सक्षम हो सकें। क्रियाएँ, तथ्य से परे जाने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करें ताकि वे संस्कृति और ज्ञान के गहरे स्तर पर देखना और अनुभव करना शुरू कर सकें। यह समूहों में हमारे व्यवहार को नियंत्रित करती है, हमें स्थिति के मामलों के प्रति संवेदनशील बनाती है, और बताती है कि दूसरों की हमसे क्या उम्मीदें है और क्या होगा अगर हम उनकी उम्मीदों पर खरा नहीं उतरते है। इस प्रकार, संस्कृति हमें पता करने के लिए मदद करती है कि हम कितनी दूर

अकेले जा सकते हैं समूह के लिए हमारी क्या जिम्मेदारी बनती है। ये दोनों एक-दूसरे के साथ इस तरह से बंधे हुए हैं कि ज्ञान या जानना और संस्कृति के महत्व, एक या दोनों, को खोये बिना, दोनों को अलग-अलग नहीं कर सकते। नतीजतन, सांस्कृतिक क्षमता जानने का एक अभिन्न हिस्सा है।

संस्कृति का ज्ञान पर निम्नलिखित तरह से प्रभाव हो सकता है:

1. संस्कृति व्यक्तियों को समायोजित करने और प्राकृतिक और भौगोलिक वातावरण में निपुण करने के लिए मदद करती है।
2. संस्कृति व्यक्तियों को, सामाजिक और राजनीतिक माहौल में समायोजित करने के लिए मदद करता है।
3. संस्कृति अलग-अलग व्यक्तित्व के सामंजस्यपूर्ण विकास में मदद करता है।
4. संस्कृति शिक्षा और ज्ञान के उद्देश्यों और लक्ष्यों को प्रभावित करती है।
5. संस्कृति पाठ्यक्रम की रूपरेखा प्रभावित करती है।
6. संस्कृति शिक्षण के तरीके को प्रभावित करती है।
7. संस्कृति किसी भी समुदाय, राज्य या देश के अनुशासन को नियंत्रित करती है। नियम, लोकतांत्रिक निरंकुश, तानाशाही या विनाशकारी सांस्कृतिक अनुशासन के आधार पर हो सकता है।
8. संस्कृति, शिक्षकों और उनकी नैतिकता, दृष्टिकोण और व्यवहार को प्रभावित करती है।
9. संस्थागत संस्कृति परंपराओं और किसी भी समुदाय या राज्य की प्रगति पर आधारित है।
10. संस्कृति बच्चों के विकास और उनके ज्ञान को प्रभावित करती है क्योंकि बच्चे जिस पर्यावरण में हैं, रहते हैं और व्यवहार करते/सहते हैं, वहीं से सीखने की शुरुआत करते हैं।

संस्कृति के कार्य
FUNCTIONS OF CULTURE

सभी समूहों के लोगों के बीच व्यापक रूप से विश्वास, मानदंड, मूल्य और प्राथमिकतायें साझा होते हैं। चूंकि संस्कृति सार्वभौमिक मानवीय घटना प्रतीत होती है, यह स्वाभाविक रूप से आश्चर्य है कि क्या संस्कृति सार्वभौमिक मानवीय जरूरतों से मेल खाती है? यह जिज्ञासा संस्कृति के कार्यों पर सवाल उठाती है। सामाजिक वैज्ञानिकों ने संस्कृति के विभिन्न कार्यों पर चर्चा की है। संस्कृति के पास, व्यक्ति

और समाज दोनों के लिए कुछ कार्य है। संस्कृति के महत्वपूर्ण कार्यों में से कुछ निम्नलिखित हैं:

1. **संस्कृति हालातों को परिभाषित करती है** (Culture Defines Situations): प्रत्येक संस्कृति में कई सूक्ष्म संकेत होते हैं जो प्रत्येक स्थिति को परिभाषित करते है। यह बताते है कि कब किसी को लड़ने, दौड़ने, हंसी या प्यार करने के लिए तैयार रहना चाहिए। उदाहरण के लिए, कोई कमर तक दाहिना हाथ फैलाये आपकी तरफ आता है तो इसका क्या मतलब है? स्पष्ट है - वह दोस्ताना रूप में हाथ मिलाना चाहता है, पूरी तरह से स्पष्ट है अगर कोई हमारी संस्कृति से पूरी तरह से परिचित है। लेकिन एक और जगह या समय में, फैलाया हुआ हाथ दुश्मनी या चेतावनी भरा भी हो सकता है। किस स्थिति में क्या करना चाहिए ये तब तक नहीं पता चलता है जब तक ऐसी किसी स्थिति को परिभाषित न किया जाये? प्रत्येक समाज के पास अपने- अपने अपमानित करने और लड़ने वाले शब्द होते है। संकेत (संकेत), जो स्थितियों को परिभाषित करते हैं, अनंत संख्या या किस्म में दिखाई देते हैं। एक व्यक्ति जो एक समाज से दूसरे में जाता है, वह इन संकेतों की सही व्याख्या कई वर्षों में समझ पाता है। उदाहरण के लिए, गलत स्थानों पर हँसना।
2. **संस्कृति दृष्टिकोण, मूल्यों और लक्ष्य को परिभाषित करती है** (Culture defines Attitudes, Values and Goals): प्रत्येक व्यक्ति अपनी संस्कृति में सीखता है, क्या अच्छा, सच और सुंदर है? दृष्टिकोण, मूल्य और लक्ष्य, संस्कृति से परिभाषित होते हैं। जबकि व्यक्ति सामान्य रूप से उन के बारे में अनजाने में सीखता है जब वह भाषा सीख रहा होता है, रवैया कुछ महसूस करने की और किसी विशेष तरीके से कार्य करने की प्रवृति है। मूल्य, अच्छाई या वांछनीयता को मापने के तरीके हैं, उदाहरण के लिए, हम निजी संपत्ति, (प्रतिनिधित्व) सरकार और कई अन्य चीजें और अनुभव को महत्व देते हैं। लक्ष्य, वो सिद्धियां हैं जिन्हें हमारे मूल्य, योग्यता के रूप में परिभाषित करते हैं जैसे दौड़ जीतना, एक विशेष महिला का प्यार पाना या किसी फर्म का अध्यक्ष बनना। कुछ लक्ष्यों का अनुमोदन कर और दूसरों की खिल्ली उड़ा करके, संस्कृति व्यक्तिगत महत्याकांक्षा को निर्धारित करती है। इन तरीकों से संस्कृति जीवन के लक्ष्यों को निर्धारित करती है।
3. **संस्कृति मिथकों, किंवदंतियों और अलौकिक को परिभाषित करती है** (Culture defines Myths, Legends and the Supernatural): मिथक और

किंवदंतियां, हर संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। वे प्रेरित कर सक्ते हैं, सुदृढ़ प्रयास और बलिदान कर सकते हैं और शोक में आराम कर सकते हैं। क्या वे सही हैं समाजिक रूप से महत्वहीन है। भूत पर जो लोग विश्वास करते हैं और जो इस विश्वास को मानते हैं, उनके लिये वे असली होते हैं। हम मिथक, किंवदंतियां और अलौकिक विश्वासों को जाने बिना, किसी भी समूह के व्यवहार को समझ नहीं सकते हैं। मिथक और किंवदंतियां किसी समूह के व्यवहार में शक्तिशाली कारक होते हैं। संस्कृति किसी को भी ब्रह्मांड का पहले से तैयार किया दृश्य दे देती है। दिव्य शक्ति और महत्वपूर्ण नैतिक मुद्दों की प्रकृति संस्कृति ही परिभाषित करती हैं। किसी व्यक्ति को कुछ चयन नहीं करना है, बल्कि हर कोई एक ईसाई, बौद्ध, हिंदू, सिख, मुस्लिम या कुछ अन्य धार्मिक परंपरा में प्राशिक्षित हो जाता है। ये परंपरायें जीवन की प्रमुख घटनाओं और संकट से निपटने के लिये तैयार कर देती है।

4. **संस्कृति व्यवहार पैटर्न प्रदान करती है** (Culture provides Behaviour Patterns): किसी को अलग-अलग दर्दनाक परीक्षण और त्रुटि शिक्षा के माध्यम से जानने की जरूरत नहीं हैं कि क्या खाद्य पदार्थ खाया जा सकता है (खुद को जहरिला किये बिना), या कैसे लोगों के बीच डर के बिना जीया जा सकता है? उस के लिये तो व्यवहार-पैटर्न के रेडीमेड सेट पहले से ही इंतजार कर रहे है जिन्हें उसे केवल जानने और पालन करने की जरूरत है। विवाह के लिए संस्कृति ने पहले से ही पथ बना रखा है। किसी व्यक्ति की यह जानने की जरूरत नहीं है कि उसका जीवन-साथी उसे कैसे मिलेगा; वह प्रक्रिया उसकी संस्कृति में पहले से ही परिभाषित है। पुरुष अगर संस्कृति का उपयोग अपने विकास या उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिये करते हैं, तो यह भी स्पष्ट है कि संस्कृति मानव और गतिविधियों पर सीमा-विराम लगा सकती है। संस्कृति का कार्य या व्यवहार निर्देशन इतना स्पष्ट है कि कौन सा उच्छृंखल व्यवहार प्रतिबंधित है और किस व्यवहार को बढ़ावा दिया जाना है। नियमों या मानदंडों के बिना एक समाज को सही परिभाषित करना ठीक वैसे ही है जैसे यातायात संकेत या किसी बैठक और वाहनों की पासिंग के लिए नियमों को समझे बिना बहुत ज्यादा एक भारी व भीड़ भरी सड़क पर चलना या वाहन चलाना। अराजकता का परिणाम कुछ भी हो सकता है। यह सामाजिक व्यवस्था या धारणा कहीं भी नहीं है कि कोई अनायास ही या सामाजिक सद्भाव के लिए अनुकूल तरीके से व्यवहार करेंगे।

कार्रवाई करने के लिये ज्ञान के तरीके

WAYS OF KNOWLEDGE RENDERED INTO ACTION

वह ज्ञान किसी काम का नहीं है जिसे अर्जित तो किया गया है, लेकिन उसका कोई उपयोग नहीं कीया गया। ज्ञान एक बहुआयामी अवधारणा है: यह अनुसंधान, सबूत, अनुभव और उम्मीद का एक संयोजन है जोकि दोनों स्पष्ट और मौन हो सकता है; और यह समझ, व्यस्तता और व्यवहार में बदलाव के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। हर जगह हम देखते हैं; ज्ञान के संयोजन और उपयोग में समस्या आ रही है। हम जानते हैं कि नवीनतम अनुसंधान नियमित रूप से और समय पर लागू नहीं किया जा रहे है, और हम नुकसान को रोकने के लिए कोशिश भी नहीं करते हैं। ज्ञान प्रबंधन में हम कठिनाई मान रहे है और विभिन्न चुनौतियां का सामना कर रहे हैं। जब हम इस के बारे में सोचते हैं कि ऐसा क्यों होता है तो यह आमतौर पर यही सामने आता है की व्यक्ति प्रतिरोध करते हैं और वे सब बदलने के लिए तैयार नहीं हैं जब तक कि हमें कोई साझा लाभ प्राप्त नहीं होता। क्योंकि सभी व्यक्तियों को बदलने में प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है इसलिए कानून बनाये जाने, आर्थिक रूप से लाभ देने या जोर- जोर से चिल्लाने की जरूरत है, यहाँ मानव व्यवहार की समझ व्यावहारिक हो सकती है। व्यक्तियों और समूहों के बदलव के बारे में उपयोगी सिद्धांत विद्यमान हैं। अनिवार्य रूप से, हम सामाजिक प्राणी हैं और हमें अनुसंधान और अनुभवात्मक सबूतों के बारे में अपने सहयोगियों, जिन पर हम भरोसा करते हैं, सम्मान के साथ चर्चा करनी चाहिये। इन मामलों में, हमें वास्तविक मूल कारणों को समझने की जरूरत नहीं है बल्कि सबसे अच्छा परिणाम देने वाले विकल्पों का मूल्यांकन करने की जरूरत है। हम भूल जाते हैं कि समस्या को परिभाषित करना जरूरी नहीं है बल्कि जरूरी तो एक साझा समाधान खोजने की हैं। हम ध्यान ही नहीं देते उन लोगों पर जो इस में दिलचस्पी लेते हैं और प्रभावी परिवर्तन ला सकते है। ये लोग मुख्य बाधाओं की पहचान करने में मदद कर सकते हैं और परिवर्तन में जरूरी अलग-अलग जरूरतों को पूरा करने के लिए सबसे उपयुक्त तरीका व डिजाइन तैयार करने में मदद कर सकते है। परिवर्तन की नियमित निगरानी के साथ, छोटे समायोजन किये जा सकते है। नियमित रूप से प्रतिक्रिया और औपचारिक मूल्यांकन, मुद्दों के निर्धारित करने और जानने में कि क्या परिवर्तन निरंतर संभव है, में स्पष्टता जाहिर कर सकता है।

अनुसंधान को कार्रवाई में बदलने के लिए एक मुख्य धारणा है कि हर किसी की भूमिका महत्वपूर्ण है। सभी को बोलने के लिये, भाग लेने और साझा राय के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। नए विचार महत्वपूर्ण हैं, लेकिन वे पर्याप्त नहीं हैं। एक सही सीखने का माहौल, समुदाय के हर सदस्य को, पहले से जो सीखा गया है, पर सूचित तरह से कार्य करने के लिए सक्षम करता है। केवल कुछ ही को पता है कि अभिनव सोच को व्यवहार में कैसे बदला जा सकता है, उपलब्ध वित्तीय और तकनीकी डाटा को समझकर, खोजों और रणनीति को साँझा कैसे किया जाये? संक्षेप में, ज्ञान को नहीं पता है कि सीखना बनाये रखने लायक कार्यवाही कैसे की जाती है। सीखने और कार्रवाई के माहौल से मतलब है, बनाने के कौशल, व्याख्या करना, हस्तांतरण और ज्ञान को बनाए रखना, और उद्देश्यपूर्ण व्यवहार को संशोधित करने के लिए नए ज्ञान और अंतर्दृष्टि को प्रतिबिंबित करने में कुशल होना। दिमागी कार्यवाही और प्रयोगात्मक पूरकता जमा ज्ञान बांटने की प्रक्रिया, हर-एक को पहले से सीखे ज्ञान व सूचित तरीके से कार्य करने में सक्षम बनाता है। ज्ञान को कार्रवाई में ढालने में चार चरणों की आवश्यकता है:

1. जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रयास।
2. जानकारी के प्रकार, जहां से अधिग्रहण किया जाना है, और यह कैसे और किसके द्वारा प्राप्त की जानी है?
3. जानकारी की व्याख्या और जानकारी का क्या मतलब है? किन श्रेणियों पर ये लागू करना चाहिए? काम पर कारण और प्रभाव का क्या रिश्ता है?
4. जानकारी का प्रयोग और इसका कार्रवाई में योगदान।

प्रत्येक कार्य अलग-अलग चुनौतियों भरा है। वर्तमान परिदृश्य आम तौर पर पहला कदम तो मानता है लेकिन अगले कदम चूँकि चुनौती भरे हैं इसलिए उन पर कार्यवाही नहीं हो पा रही हैं। लोगों, संगठनों, समुदाय और सरकार को चुनौतियों का सामना करने और अवसरों का लाभ उठाने की जरूरत पर एक सावधान नज़र रखना चाहिए और फिर यह आंकड़ा हर स्तर पर सीखने के बारे में जानने के लिए प्रयोग करना चाहिये। लगातार एक बड़ी बाधा सीखने की विकलांगता की व्यापकता है, जो हर स्तर पर सीखने की प्रक्रिया में बाधा के रूप में जाना जाती है। ज्ञान प्राप्त करने में समस्याएं और व्याख्या, जानकारी एकत्र करते [illegible] न देखना, चूक और त्रुटियों से उत्पन्न होती हैं। लागु करते समय और उपयं[illegible] जोखिम से बचने से पैदा होती है और लोगों को कठिनाइयां पहच[illegible] वास्तविक व्यवहार उनके समर्थन व्यवहार से किस तरह भि[illegible]

समस्यायें सीखने को कमजोर करने और इसके प्रभाव को कम करने के लिए षड्यंत्र भी लगती हैं। सफल सीखना, बुद्धिमानी से जानकारी जुटाने और व्याख्या, अनुभव और प्रयोग पर ध्यान देना है। लर्निंग नेतृत्व के लिये, हर तरह के सवाल पूछने, प्रतिक्रियाएं सुनने, और अल्पज्ञता, कठोरता या प्रतिकूल संचार से मुक्त उत्पादक चर्चा का नेतृत्व करने की क्षमता सहित अलग कौशल की आवश्यकता है। लर्निंग भविष्य में विश्वास की एक स्वीकारोक्ति है जिससे प्रगति संभव है।

क्या जाना जाता है और क्या किया जाता है, के बीच की खाई, न केवल संसाधनों और बुनियादी ढांचे के कम-उपयोग बल्कि गलत या अधिक उपयोग को इंगित करती है। अहसास कि विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान के निष्कर्षों का उपयोग करने में विफल रहने का राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और संरचना पर एक नकारात्मक प्रभाव पड़ता है, कार्रवाई में ज्ञान के हस्तांतरण पर ज्यादा जोर देने के लिए प्रेरित करना है। यह प्रक्रिया को आमतौर पर ज्ञान हस्तांतरण या ज्ञान अनुवाद के रूप में जाना जाता है, और मोटे तौर पर विनिमय, संश्लेषण और शोध के परिणामों और शैक्षिक और अभ्यास सेटिंग के बीच अन्य सबूत के आवेदन जैसा समझा जाता है। अन्य संबंधित क्षेत्र. के अध्ययन जैसेकि अनुसंधान के उपयोग और व्यवहार में बदलाव भी पर्याप्त रूप से शैक्षिक और अभ्यास सेटिंग के बीच अनुसंधान और अन्य सबूत के हस्तांतरण में शामिल प्रक्रियाओं को समझाने में नाकाम रहे हैं। ज्ञान के लक्षण जैसे कठोरता और विश्वसनीयता, संगठन की विशेषतायें जैसे आकार और नवीनता और हस्तक्षेप की विशेषतायें जैसे समय और तीव्रता, परिणाम लाने के लिए सही औजार नहीं हो सके है। निम्नलिखित तरीके ज्ञान को कार्रवाई में मोड़ने में सक्षम हो सकते हैं:

1. **ज्ञान के दर्शन के महत्व को स्वीकार करना** (Recognizing the importance of philosophy of knowledge): जिन्होंने किसी व्यापार, विभाजन या स्थान में उच्च प्रदर्शन काम के साथ प्रयोग किया है के अलावा, कुछ नया सीखने के हस्तांतरण और काम कर रहे अन्य क्षेत्रों के तरीकों, में केवल कुछ ही लोग, सफल रहे हैं। नए तरीकों के दर्शन की एक स्पष्ट और खुली चर्चा में क्या कमी है, क्यों ये महत्वपूर्ण हैं और क्यों उन्हें दोहराया जाना चाहिए। संस्कृति, ज्ञान को कार्रवाई में मोड़ने में सफल होने के लिए एक या अधिक निम्नलिखित बातों से सफल हो सकती है:

- उन लोगों को, जिन्होंने शैक्षिक और लागू प्रक्रियाओं की एक असली समझ को विकसित किया है क्योंकि वे खुद इन प्रक्रियाओं के साथ काम करते हैं, को बढ़ावा देना।
- वे एक संस्कृति का निर्माण करते है जोकि सादगी (कोई जटिलता नहीं), सरल भाषा, और सामान्य ज्ञान को महत्व देती है।
- क्यों कुछ बातें काम नहीं करती, इस बहाने को स्वीकार करने के बजाय, वे जानकारों को उनकी आपत्तियों का पुनर्निर्माण कर उन्हें चुनौतियों में बदलने और जीतने, न कि कोशिश न करना, के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
- वे कार्रवाई केंद्रित भाषा का उपयोग करें और उस का पालन करें ये सुनिश्चित करने के लिए कि मूल्यों, निर्देशों और फैसलों को लागू किया गया है।

2. **कुछ करना और दूसरों को सिखाना कि कैसे कार्य करें** (Act and teach others how to act): अनमने से तरीके से कार्रवाई के इच्छित परिणाम नहीं आते हैं। अगर परिवर्तन या दिशायें अनुमोदित हैं और फिर भी लागू नहीं की गई क्योंकि वे वैचारिक हैं और वास्तविकता पर आधारित नहीं हैं, तो हम कुछ ठोस परिणाम की आशा नहीं कर सकते हैं। अनुकरणीय कार्य से बेहतर परिणाम की आशा की जा सकती हैं। ये सुधार के लिए ठोस सुझाव पेश कर सकते हैं। मन से की गई भागीदारी असली व अच्छे तरीके से सीखने के लिए आवश्यक है।
3. **योजनायें और अवधारणायें, कार्रवाई की तुलना में कम महत्वपूर्ण हैं** (Plans and concepts count less than action): विश्लेषण पक्षाघात - कि किसी भी कार्रवाई को पूरा करने से पहले बुलेटप्रूफ योजना का बनना आवश्यक है, को संभाला व ज्यादा फलदायक बनाया जा सकता है, यदि कार्रवाई करके सीखने (learning by doing) को प्रोत्साहित किया जाता है। यह एक प्रशंसनीय सोच है कि आज का 80 प्रतिशत समाधान, कुछ महीनों के बाद के 100 प्रतिशत समाधान की तुलना में बेहतर है। यदि आप एक खूबसूरत और जटिल रणनीति तैयार करें और उसके बाद निर्विरोध फैसले की एक श्रृंखला के माध्यम से उन पर अमल करने की कोशिश में बैठे रहें, तो निस्संदेह आप वक्त व ऊर्जा बर्बाद कर रहे होते हैं। सबसे ज्यादा और सबसे बड़ा परिणाम आप तभी हासिल कर सकते हैं, जब आप कार्यवाही करें और वापस मुड़कर कभी नहीं देखें।
4. **त्रुटियां एक संकेत है कि सीखने का काम हो रहा है** (See errors as a sign that learning is taking place): क्या आप गलतियां इतनी गंभीरता से लेते

है कि आप योजनाओं पर लगातार विश्लेषण और चर्चा करते रहते हैं और कार्रवाई करने की कम सोचते हैं? थॉमस एडीसन ने प्रकाश बल्ब तंतु के लिए हजारों तरह की सामग्री से कोशिश की, इससे पहले कि वह टंगस्टन की खोज कर पाता। जब किसी ने उससे पूछा कि वह कैसे इतनि सारे विफलताओं से उबरे हैं, उन्होंने कहा कि वह कभी विफल नहीं रहा था; उसने तो बस सीखा था।

5. **डर को बाहर फेंक दो** (Drive the fear out): कुछ प्रभावी व्यक्तियों के आसपास के लोगों को यदि डर है कि वे उन्हें नीचे धक्का दे देंगे या उनके करियर को नुकसान पहुंचाएंगे यदि कोई नया विचार या प्रस्ताव पहले प्रयास में पूरी तरह से काम नहीं कर पाया, तो लोग कभी भी कुछ भी नया करने की कोशिश कभी नहीं करेंगे। रैपिड प्रोटोटाइपिंग, एक विनिर्माण डिजाइन विधि है जहां नए विचारों को जल्दी और अपेक्षाकृत सस्ते में बहर लेन की कोशिश की जाती है, ताकी परीक्षण के परिणाम के आधार पर अनुमति संशोधन किये जा सकें। नए विचार की विफलता को सीखने की प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए और डर या जोखिम के रूप में नहीं। सफलता जोखिम लेने का समर्थन करती है और लोगों को डर के विना, नए विचारों की कोशिश करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। इसके लिये अक्सर निम्न तरीकों में से कुछ की कोशिश की जा सकती है:

- यदि समस्या ज्ञात नहीं है, तो इसे कौन सुलझायेगा, कैसे और क्यों?
- निष्क्रियता की सजा दी जानी चाहिए न कि असफल कार्यों की। एक असफल कार्रवाई को सीखने के अनुभव के रूप में देखा जाना चाहिए।
- विफलताओं साझा करने की जरूरत है। नेता अगर अपनी नाकामी साझा करते हैं, तो वे असफल होने और पुनः कोशिश करने के लिए, प्रोत्साहित करने के लिए, अनुमति देते हैं।

6. **प्रतियोगिता के लिये लड़ें, एक-दूसरे से नहीं** (Fight the competition, not each other): क्योंकि प्रतिस्पर्धा मुक्त वातावरण से आर्थिक प्रणाली में ठहरा आ जाता है, कइयों ने जीवन के एक मार्ग के रूप में, आंतरिक प्रतिस्पर्धा को अपनाया है। यह कार्यवाही सामान्य-वक्र प्रदर्शन रेटिंग सिस्टम के रूप में स्वीकृत है, अपेक्षाकृत कुछ लोगों के लिये और अलग-अलग माप और इनाम प्रणाली में इस तरह से कि सहयोगी एक दूसरे के साथ प्रतियोगिता करें। ये सभी प्रथायें असली प्रतिद्वंद्वी, बाहरी प्रतियोगिता, से फोकस दूर कर देती हैं। जोर टीम के काम पर होना चाहिए, इस तरह कि जैसे उनके पड़ोसियों या

सहयोगियों को सफलता मिलती हैं, दुसरे लोग भी सफल होने के लिये सोचें। किसी भी शोरूम या डिपार्टमेंटल स्टोर में ग्राहक इस बात की परवाह नहीं करता है कि किसे कमीशन मिलता है; वे बस हर कर्मचारी से सही सेवा (service) चाहते हैं।

7. **कार्रवाई का माप और ज्ञान कार्रवाई में कैसे बदल जाता है** (Measure action and what turns knowledge into action): इतने सारे उपायों के साथ, लोग संख्या पर ध्यान केंद्रित कर बहुत अधिक समय खर्च करते हैं और इस पर कि वे कैसे दिखते हैं बजाय इसके कि पर्यावरण को बेहतर बनाने और उसके समग्र लक्ष्यों को पूरा करने में कैसे मदद कर सकते हैं? ज्ञान को कार्रवाई में बदलने को निम्नलिखित तरह से माप सकते हैं:

- व्यक्तिगत सफलता के बजाय राष्ट्रीय या समूह की सफलता को महत्त्व क्योंकि यह टीम वर्क को प्रोत्साहित करती है।
- अंतिम परिणामों की तुलना में प्रक्रियायें और छोर एक साधन है। यह सीखने की सुविधा के लिए मदद करते है और निर्णय लेने और कार्रवाई के बारे में जानकारी प्रदान कर, बेहतर मार्गदर्शन कर सकते हैं।
- पर्यावरण मॉडल, संस्कृति और प्रगति-दर्शन। इसका मतलब यह है कि माप व्यक्ति से व्यक्ति, समूह से समूह के लिए अलग-अलग होगा और आम तौर पर पारंपरिक लेखा-आधारित संकेतकों से अलग होगा।
- सीखने के हिसाब से एक ध्यान में रखने, अनुभव और प्रयोग की प्रक्रिया। कोई प्रक्रिया कभी पूर्णता के रूप में नहीं देखी जाती है।

8. **नेतृत्व एक कुंजी है** (Leadership is the key): सफल नेतृत्व एक सकारात्मक सीखने का माहौल बनता है जोकि न केवल सीखने के लिये मदद करता है, बल्कि यह उनकी सोच और काम करने के लिए सीखने के परिणामों के लिए एक सकारात्मक फर्क करने के लिए भी मदद करता है। ये उदाहरण के द्वारा सीखने और दूसरों को सिखाने कैसे कार्य करने के लिए नेतृत्व करते हैं।

ज्ञान से संबंधित उभरती समस्यायें

EMERGING PROBLEMS RELATING TO KNOWLEDGE

उभरती प्रणालियां एक संगठन के ज्ञान के नया बनते, इकट्ठा होते, आयोजन और फैलावट के समय, जानकारी या डेटा की बजाय, पेशेवर और प्रबंधकीय गतिविधियों को निशाना बनाती है। ज्ञान में आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी

जैसे इंटरनेट, इंट्रानेट, ब्राऊज़र, डेटा गोदाम, फिल्टर और सॉफ्टवेयर एजेंट, आदि का उपयोग करने में क्या नया और रोमांचक है, जोकि व्यापक ज्ञान को व्यवस्थित, सुविधाजनक कर उसमें तेजी ला सके। ज्ञान एक जायज़ व्यक्तिगत विश्वास है जोकि एक व्यक्ति की प्रभावी कार्रवाई करने की क्षमता बढाता है। प्रत्येक अवधारणा तीन शब्दों में मतभेद समझने में पैठ बनाती है, जब सूचना ज्ञान होने लगती है तो वे साधन निर्धारित करने के लिए प्रदान करने में सक्षम नहीं हो पाते। समस्या प्रत्येक संदर्भ, उपयोगिता या व्याख्यात्मकता के रूप में डेटा से जानकारी से ज्ञान के लिए एक पदानुक्रम के अनुमान के साथ हर आयाम में बदलती है। सूचना और ज्ञान के बीच प्रभावी ढंग से भेद करने के लिए सामग्री, संरचना, सटीकता, या जानकारी या ज्ञान, उपयोगिता में नहीं पाया जाता है। बल्कि, ज्ञान एक व्यक्ति के मन में पडी जानकारी है: यह तथ्यों, प्रक्रियाओं, अवधारणाओं, व्याख्याओं, विचारों, टिप्पणियों और निर्णयों (जो अद्वितीय, उपयोगी है, सही या आकारिक हो सकते हैं और नहीं भी) से संबंधित व्यक्तिपरक या विषयात्मक जानकारी से सम्बंधित हो सकती है। हम मूल रूप से कह रहे है कि जानकारी की तुलना में ज्ञान बिल्कुल भिन्न अवधारणा नहीं है, बल्कि एक बार किसी व्यक्ति के मन में कार्रवाई की गई जानकारी ज्ञान ही होती है। ज्ञान जानकारी का एक समझ वाला संस्करण है जोकि जरूरत के वक्त कभी भी याद या पुनर्जीवित किया जा सकता है। निम्नलिखित मौलिक कदम ज्ञान से निपटने के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो सकते हैं:

ज्ञान अर्जन (Knowledge Acquisition): ज्ञान अर्जन को जानकारी अर्जन के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिये। ज्ञान अर्जन विकास और अंतर्दृष्टि, कौशल, और रिश्तों के सृजन की प्रक्रिया है। उदाहरण के लिए, जब एक अनुभवी शेयर दलाल एक कंप्यूटर मॉनीटर पर प्रवृत्ति लाइन देखकर बता दे की कौन सी कम्पनी आगे है – तो यह अर्जित ज्ञान का एक उदाहरण है।

ज्ञान बांटना या साँझा करना (Knowledge Sharing): ज्ञान बांटना एक अगला घटक है। ज्ञान बांटना अनिवार्य नहीं किया जा सकता। एक कर्मचारी जो भी जानता है को साझा करना बिलकुल वैसा ही तरीका है जैसे अधिकांश संगठनों में इनाम संरचनायें काम करती है। कोई क्यों अपने इनाम को दुसरे को बॉटना या साझा करना चाहेगा? कोई क्यों अपने ज्ञान को साझा करना चाहेगा? कर्मचारी यह तभी करेगा जब संगठन या कंपनी नौकरी की सुरक्षा प्रदान करने में सक्षम होगी। एक उदाहरण है विशेषज्ञ प्रणाली।

ज्ञान का उपयोग (Knowledge utilization): ज्ञान का उपयोग तस्वीर में तब आता है जब लर्निंग या सीखना संस्थाओं में शामिल होता है। पूरे संगठन में जो ज्ञान मोटे तौर पर उपलब्ध है यह सामान्यीकरण और कम से कम नई स्थितियों के समय में लागू किया जा सकता है।

इन दो अवधारणाओं के बीच भेद करना बहुत मुश्किल है; ज्ञान बांटना और ज्ञान का उपयोग। कभी-कभी ये दो कदम एक साथ ही चल दिए जाते हैं। अवधारणा ज्ञान प्रबंधन सफल कार्यान्वयन से पहले, किसी भी कंप्यूटर समर्थित सुविधा को, स्पष्ट ध्यान में रखते हुए इन कार्यों को बढ़ाने के लिए इन तीन बुनियादी कदम का ध्यान रखना होगा।

वैश्वीकरण और उदारीकरण की चल रही प्रक्रियाओं ने जीवन के हर क्षेत्र में तीव्र प्रतिस्पर्धा उत्पन्न की है और विचारों, दूसरों से बेहतर प्रदर्शन, लागत में कटौती और समस्याओं के लिए, ज्ञान आधारित समाधान खोजने के लिए अपार खोज की जरूरत है। पर्याप्त और कुशल ज्ञान समर्थित प्रणाली वाली ज्ञान संस्थायें और संगठन, इस युग में गहन काम के प्रदर्शन और ज्ञान और विशेषज्ञता से सफलता का लाभ के लिए संपन्न हैं। अनुसंधान और विकास के माध्यम से नए ज्ञान के सृजन, निरंतर खोज और इस ज्ञान के सामरिक उपयोग के माध्यम से मौजूदा ज्ञान का संचय धन के सृजन का निर्धारण करता है। विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार, आज दुनिया की दौलत का लगभग दो तिहाई ज्ञान से आता है। ज्ञान किसी संगठन की सफलता के लिए एक महत्वपूर्ण इनपुट है और नई सहस्राब्दी की मुद्रा है और ज्ञान विभिन्न गतिविधियों में अधिक से अधिक तीव्रता से मौजूद है, यह समाज को ज्ञान आधारित समाज में बदलने के लिए संभावित है। चर्चमन (Churchman) ने ज्ञान की अवधारणा के बारे में कहा है कि ज्ञान उपयोगकर्ता में होता है और संग्रह में नहीं रहता। यह कहा जा सकता है:

1. क्योंकि ज्ञान व्यक्तिगत है, एक व्यक्ति के ज्ञान की उपयोगिता एक और व्यक्ति के लिए उपयोगी होने के लिए, यह व्याख्या और अन्य व्यक्ति के लिए सुलभ होना चाहिए।
2. जानकारी के भण्डार का कोई मूल्य नहीं है, केवल वही ज्ञान, जो एक व्यक्ति के मन में सक्रिय रूप से प्रतिबिंबित, ज्ञान और सीखने की एक प्रक्रिया का माध्यम हो, उपयोगी हो सकता है।

परंपरागत रूप से, ज्ञान की रचना और हस्तांतरण, आमने-सामने चेहरा वाली बातचीत, सलाह, साहित्य, नौकरी शैली और काम करने और सशक्त विकास

जैसे विभिन्न साधनों के माध्यम से होता है। वैश्वीकरण के साथ ये पारंपरिक साधन भी धीमे और कम प्रभावी साबित हो सकते है। ज्ञान प्रबंधन, सूचना प्रबंधन और संगठित सीखने के, सशक्त अभ्यास के माध्यम से ज्ञान के उपयोग को बढ़ाने के बारे में है। ज्ञान सिर्फ परामर्श और पेशेवर सेवाओं के लिए नहीं है। इसमें और अधिक जानकारी निम्न के कारण प्रवाहित होती है:

1. ज्ञान का उपयोग और ज्ञान की खोज;
2. लोगों की दक्षताओं, कौशल, प्रतिभा, विचारों, नवीन विचारों और कल्पना शक्ति का अनुप्रयोग।

जैसे हम ज्ञान अर्थव्यवस्था की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं इसलिए हमें असली ताकत – ज्ञान, के बारे में सोचना है। यह प्रतिस्पर्धा लाभ में एक महत्वपूर्ण कारक है। ज्ञान हर राष्ट्र में अधिक और अधिक उत्पाद कि तरह होता जा रहा है यह एक तथ्य है कि संगठन में उपलब्ध ज्ञान का केवल 20% का ही ठीक से उपयोग हो पाता है और शेष 80% इस्तेमाल नहीं हो पाता है; तथ्य यह है कि इस तरह का ज्ञान कहाँ उपलब्ध हैं ढूंढना बहुत मुश्किल है जिसका उपयोग किया जा सके। ज्ञान का मुख्य उद्देश्य, मूल्यों को व्यवस्थित करने का है। ज्ञान का अंतिम लक्ष्य, ज्ञान संसाधनों और संगठनों के ज्ञान क्षमताओं का दोहन करने, क्रम में जानने और उसके बदलते पर्यावरण को अनुकूल करने, लोगों को सक्षम करने में है। ज्ञान प्रबंध, डेटा हासिल करने और जानकारी प्राप्त करने के लिए जोड़ तोड़ की तुलना में अधिक मुश्किल है।

1. ज्ञान बहुआयामी है। यही कारण है कि प्रभावी ज्ञान रणनीतियां, सिर्फ तकनीक, व्यापक सांस्कृतिक और संगठनात्मक मुद्दों की तुलना में कहीं अधिक व्यापक है। लोगों के नजरिए और व्यवहार को बदलने के लिए एक प्रमुख सांस्कृतिक बदलाव की आवश्यकता है ताकि लोग स्वेच्छा और लगातार, अपने ज्ञान और अंतर्दृष्टि को साझा कर सकें। ज्ञान बांटने से संबंधित गतिविधियों को बढ़ाने के लिए लोगों को सम्मानित किया जाना चाहिए।
2. यह महत्वपूर्ण है, ज्ञान के लाभ का आकलन करने के लिए मेट्रिक्स विकसित करने की कोशिश करना। मूल्य, गुणवत्ता और ज्ञान की मात्रा को मापने के लिए सार्थक मेट्रिक्स का विकास दीर्घकालिक सफलता और ज्ञान के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है। ज्ञान प्रबंधन को स्पष्ट और महत्वपूर्ण पहलुओं से जोड़ा जाना चाहिए जैसेकि संतोष, नवाचार, समय, लागत बचत,

प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति, आदि। ज्ञान मूल्य जोड़ने और फिर आवश्यक ज्ञान देने के लिए प्रणाली और संसाधनों का विकास करने की खोज की जानी चाहिए।

3. समन्वित और एकीकृत प्रौद्योगिकी वास्तुकला, ज्ञान बढ़ाने के लिए एक प्रमुख कारक है। विभिन्न उपकरणों के सहज एकीकरण, और ब्राउज़िंग और पुनः प्राप्ति के लिए क्षेत्रों, डेटाबेस और डेटाबेस प्रबंधन, संचार और संदेश की जरूरत है, जो इंटरनेट और इंटरनेट आधारित आर्किटेक्चर के प्रमुत्व को जन्म दे सकता है। इस प्रकार, इंटरनेट, इंटरनेट आधारित प्रौद्योगिकी और सेवा प्रदाता, बाहरी ज्ञान डोमेन के लिए लागत प्रभावी पहुँच प्रदान करके ज्ञान के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
4. ज्ञान, जानकारी के एक नये रूप का गठन, जो पहले से अन्य प्रणालियों में संबोधित नहीं है, कर सकता है। यह, जानकारी की अधिक आपूर्ति, और ज्ञान की, न की जानकारी, लोगों के लिए अधिक पहुँच प्रदान करने की वांछनीयता के कारण, संज्ञानात्मक अधिभार बना सकते हैं। यह लोगों के सीखने की प्रक्रिया के लिए ज्ञान लिंक द्वारा आयोजित विचार के अनुरूप है। अगर हम मोटे तौर पर सीखने को आन्त्रिकरण (internalizing) और जानकारी को ज्ञान के लिए परिवर्तित करने की प्रक्रिया के रूप में देखते हैं, तो इन दो दृष्टिकोणों का मानना है कि जानकारी, ज्ञान के लिए कच्चा माल है, और समर्थन करते हैं कि अधिक जानकारी, ज्यादा ज्ञान की रचना और साझा नहीं करती है। सीधे शब्दों में पहुंचाने या "धक्का" जानकारी (यहां तक कि पूर्व फ़िल्टर सूचना) उन उपयोगकर्तायों के लिए एक प्रभावी ज्ञान प्रबंधन रणनीति नहीं हो सकती है, क्योंकि ध्यान की कमी इस सूचना संसाधन और ज्ञान को परिवर्तित करने के लिए आवश्यक होने के कारण एक प्रभावी ज्ञान प्रबंधन रणनीति नहीं हो सकती है। यही कारण है, आवश्यक जानकारी (ज्ञान की रचना के लिए कच्चा माल) के प्रावधान के अलावा, व्यक्तियों को भी यह ज्ञान परिवर्तन के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

ज्ञान जटिलतायें और मानव बौद्धिक और नवीकरण (innovating) प्रक्रिया, संचार संस्कृतियों, मूल्यों और अमूर्त संपति की बारीकियों को संलग्न करती है। उसी समय, यह सूचना प्रौद्योगिकी को प्रभावी ढंग में लाने के लिए नाटकीय विकास करती है। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि क्या और कैसे ज्ञान उपलब्ध कराया जाना चाहिए:

- ज्ञान को द्रिशव्य (दिखने वाला) बनाना
- ज्ञान को तीव्र (intensity) बनाना

- ज्ञान संस्कृति का विकास
- ज्ञान के बुनियादी ढांचे का निर्माण

ये कदम स्वतंत्र हैं और आपस में एक-दूसरे के साथ जुड़े हुए भी हैं। पहला कदम कि ज्ञान दिखाई दे, यह आप कर सकते हैं ये जानकर कि कौन जानता है या कौन जानने वाला है? या विशेषज्ञता ज्ञान के वर्गीकरण को लागू करने से; या पीले पन्नों (Yellow Pages – information newspaper) का उपयोग कर और दक्षताओं का विकास कर। दूसरा कदम कि ज्ञान तीव्रता के निर्माण के लिए; यह प्रशिक्षण, आमने-सामने चेहरा अनुबंध, नेटवर्क वातावरण बना, आदि। तीसरा कदम कि ज्ञान साझा संस्कृति या ज्ञान का आदान प्रदान; प्रत्येक में विश्वास कर अनुकूल स्थिति के द्वारा विकास, लोगों को प्रेरित कर या अपने श्रेष्ठ गुणों के लिए लोगों को पुरस्कार देकर। चौथा चरण है कि ज्ञान बुनियादी ढांचे का निर्माण; मुख्य रूप से आम संचार के बुनियादी ढांचे, बाहरी या आंतरिक स्रोतों के उपयोग और आधुनिक प्रौद्योगिकी के उपयोग को विकसित करने की आवश्यकता है। ज्ञान के साथ काम करते हुए निम्न समस्याओं से सामना हो सकता है:

1. ज्ञान जहाँ से सम्बन्धित है की पहचान करना बहुत मुश्किल है।
2. आम तौर पर, लोगों के व्यवहार में वे क्या जानते हैं, का खुलासा शून्य है। यह एक मनोवैज्ञानिक घटना है।
3. ज्ञान के दो प्रकार के होते हैं - स्पष्ट ज्ञान; संहिताबद्ध किया जा सकता, इलेक्ट्रॉनिक संग्रहीत और प्रेषित। लेकिन, मौन ज्ञान (कार्मिक, संदर्भ विशिष्ट) को कूटबद्ध करना बहुत मुश्किल है और व्यक्तिगत अनुभव की एक विविध रेंज का परिणाम है।
4. ज्ञान बांटना एक महान विचार है, लेकिन यह एक मुक्त बाजार दृष्टिकोण (ज्ञान का निर्माण, मांग और आपूर्ति) की मांग करता है। समस्या मुक्त बाजार की, कमी की है।
5. अक्सर कठिनाइयाँ ज्ञान प्रबंधन के लिए संस्कृति के विकास को लेकर पैदा होती है;
6. ज्ञान आकलन में दोष।
7. उपयोगकर्ताओं की जरूरत और व्यवहार का निरंतर बदलता स्वभाव।
8. जलवायु में अक्सर बदलाव।
9. ज्ञान के विकास एक बार नहीं बल्कि यह सतत प्रक्रिया है।

प्रश्न (Questions)

1. संस्कृति की विशेषताओं का वर्णन करें।
2. जानने में संस्कृति की भूमिका पर चर्चा करें।
3. ज्ञान और संस्कृति अभिन्न हैं। वर्णन करें।
4. संस्कृति का ज्ञान पर क्या प्रभाव हो सकता है?
5. संस्कृति का कार्यों का विस्तार से वर्णन करें।
6. अर्जित ज्ञान का अगर कोई उपयोग नहीं है, तो यह किसी काम का नहीं है। चर्चा करें।
7. ज्ञान को कार्रवाई में बदलने में क्या कदम लिए जा सकते हैं? वर्णन करें।
8. किन तरीकों से आप ज्ञान को कार्रवाई में बदलने में मदद कर सकते हैं?
9. ज्ञान से निपटने के लिए क्या आवश्यक व महत्वपूर्ण कदम लेने चाहिए।
10. ज्ञान प्रबंध, डेटा हासिल करने की तुलना में अधिक मुश्किल है। चर्चा करें।
11. ज्ञान के साथ काम करते हुए किन समस्यायों का सामना कर सकते हैं?

Chapter 4

भारतीय दर्शन की ज्ञान-मीमांसा

EPISTEMOLOGY OF INDIAN PHILOSOPHIES

कई आम ज्ञान-मीमांसा मान्यतायें या व्यवहार हैं, जिनमें से सबसे मुख्य है - औचित्य के सवाल पर विश्वास के स्रोत पर ध्यान केंद्रित होना। मुख्यधारा की भारतीय शास्त्रीय ज्ञान मीमांसा ज्ञान में सिद्धांत का बोलबाला है, अर्थात सृजन प्रक्रियाओं के बारे में वंशावली विचार, *प्रमाण शास्त्र*, ज्ञान का एक स्रोत है। विश्वास, जो संज्ञान में अंतःस्थापित है, कार्रवाई से जुड़ा हुआ है और कार्रवाई संदेह के बल को दूर करती है, ऐसा इशारा कई शास्त्रीय स्कूलों में किया गया है। बौद्ध योगकारा के साथ ही मीमांसा और वेदांत दर्शन, ज्ञान के रूप में स्वाभाविक सच के लिए जाना जाता है। ज्ञान एक अनुभूति है कि सही तरीके से उत्पादन किया गया है। ज्ञान चेतना के क्षण हैं, विश्वास की प्रजातियां नहीं, लेकिन हम कह सकते हैं कि ज्ञान, सत्यप्रिय संज्ञानों सच-विश्वासों के रूप में विश्वास का गठन करता है। वहाँ सत्य के अलग अलग सिद्धांत हैं, लेकिन हर कोई ज्ञान को केवल सत्य ही नहीं बल्कि सत्य से उत्पन्न होने के रूप में देखता है। गैर-अस्तित्व (non-occurrent) ज्ञान से ज्ञान होता है (यह माना जाता है, हम कह सकते हैं), तो एक ज्ञान प्रकरण के उत्पन्न होने के लिए जो महत्वपूर्ण है, ज्ञान मीमांसा का मूल्यांकन करने के लिए भी महत्वपूर्ण है। ज्ञान अचानक ही किसी घटनावश नहीं पैदा होता हैं। एक भाग्यमयी अनुमान, हालांकि सच हो या सत्यप्रिय, ज्ञान के रूप में नहीं माना जाता क्योंकि यह सही अनुरूप में उत्पन्न नहीं होता, सही वंशावलीक (pedigree) या व्युत्पतिक (etiology) नहीं होता। अब शब्द प्रमाण (ज्ञान स्रोत) व्यक्तिगत ज्ञान स्रोतों के लिए इस्तेमाल किये शब्दों सहित, अनुभूति के लिए और इसी के साथ-साथ, आमतौर पर इस तरह इस्तेमाल किया जाता है कि उसके एवज में संज्ञान की सच्चाई निहित हो।

वैदिक स्कूल, मीमांसा (Mimamsa), वेदांत, न्याय, वैसिस्का (Vaiseiska), (संख्या) Samkhya, योग, सभी ज्ञान एक परिणाम और ज्ञान के उत्पादन की प्रक्रिया के रूप में मानते हैं, लेकिन यह भी कि कोई वास्तविक ज्ञान स्रोत, कभी एक गलत धारणा पैदा नहीं करता हैं। केवल छद्म स्रोत ऐसा करते हैं। यह कह सकते है, कि कोई गैर सत्यप्रिय अनुभूति ज्ञान-स्रोत नहीं है। तो एक ज्ञान स्रोत, महज एक विश्वसनीय इश्वरीय (doxastic) प्रथा नहीं है। हर रोज़ भाष्य पैटर्न (व्यवहार) को दर्शन के अन्य क्षेत्रों में ज्ञान मीमांसा में कथानक (theorizing) के

लिए एक प्रारंभिक बिंदु के रूप में लिया जाता है। यहाँ कई स्कूलों के बीच जीवन के धार्मिक लक्ष्यों पर काफी विवाद है, दोनों स्कूलों (निरपेक्ष ब्रह्म में मुक्ति बनाम स्वर्ग, व्यक्तिगत विघटन, आनंदित योग अलगाव, कैवल्य, भगवान की उपस्थिति का आनंद), और बाहरी स्कूलों (बौद्ध निर्वाण या बोधि-सत्व होना या जैन अरहत, या चार्वाक दर्शन की Soteriology की पूर्ण अस्वीकृति), के बीच वैदिक संस्कृति को स्वीकार करते हैं। लेकिन दूरी से, हम भारतीय विचारों को जोड़ती कम से कम कई आम धारणाएं देख सकते हैं। रोजाना और आध्यात्मिक ज्ञान के बीच और उनके रिश्ते के बारे में किसी को भेद करना है। एक तो यह है कि दुनिया में खो जाना, आध्यात्मिक ज्ञान के लिए एक बाधा है। दूसरा यह है कि दुनिया की उचित समझ, किसी को उससे छुड़ाने और भौतिक चीज़ों अपने आप से अलग रूप में होने में मदद करती है, और इसलिए अतिक्रमण में एक सहायता जैसी है। भारतीय शास्त्रीय सोच में संशय का सबसे विशिष्ट रूप है कि तथाकथित सांसारिक ज्ञान, एक ज्ञान ही नहीं है, बल्कि एक विकृति या चेतना की विकृति है। जो एक दार्शनिक संदेहवादी की तरह लगती है वास्तव में एक संत की तरह है जो हमें विरोधाभास और सिद्वात की अन्य विफलताओं से हमारी दुनिया अतिक्रमण की सही मायने में हमारी मदद करता है। एक दार्शनिक समस्या जो नागार्जुन ने ज्ञान-मीमांसा के लिए उठाया, कि एक धारणा पर औचित्य की एक कथित निकासी के साथ, एक प्रमाण, पता करने के लिए और पहचान करने के लिए है कि ज्ञान के स्रोत को प्रमाणित करने की आवश्यकता है । नागार्जुन का दावा है कि ये बेतुका है कि प्रमाण की एक अनंत श्रृंखला की आवश्यकता होगी, एक और अधिक मौलिक प्रमाण की पहचान के लिए, उसपर भरोसा करने के लिए।

सभी शास्त्रीय स्कूल जो ज्ञान-मीमांसा को मानते हैं, अनुभूति को एक स्रोत के रूप में स्वीकार करते हैं, हालांकि इसकी प्रकृति, उद्देश्यों, और सीमाओं के बारे में ज्यादा असहमति है। वहाँ अनुभूति माध्यम जैसे कि प्रकाश और इथर, आकाश, ध्वनि की कथित माध्यम, और क्या yogically प्रत्याक्ष है, के बारे में अवधारणात्मक मुद्दे हैं। पर्यावरण की कौन सी स्थिति है जो अनुभूतियों को नियंत्रित करती हैं, और विभिन्न संवेदी तौर तरीकों के साथ ये कैसे सम्बंधित हैं? भ्रम कैसे समझाया जा सकता है? आम तौर पर, अगर अवधारणा मुक्त बात कि जाये तो मनुष्य का शिशुओं और जानवरों के साथ बहुत कुछ साँझा प्रतीत होता है। लेकिन महान मिमाम्सका (Mimamsaka) के अनुसार, अनुभूति पहले चरण में, एक प्रक्रिया के रूप में, अवधारणा से मुक्त, प्रकारों में इतना नहीं बाँटती है। उद्देश्यों के

अर्ध-मक (quasi-propositional) है, और दूसरा, बारे में जागरूकता, पहले पल में ही भरपूर सामग्री, जिसके द्वारा एक व्यक्ति को एक निश्चित चरित्र वाला बनया जा सकता है, कोई खास तरह का पदार्थ या एक सार्वभौमिक अधिकारी या कोई कार्य, आदि। योगकारा का मानना है कि संवेदी सहित सभी पूर्वकथन, असत्य व्यापकता के विचारों पर निर्भर करते है। सभी पूर्वकथनों में दोहराने वाले सामान्य शब्द शामिल है। भारतीय शास्त्रीय यथार्थवादियों मानते है कि अनुभूतियाँ कुछ नहीं बल्कि बेकार अवधारणायें हैं कि संकल्पनाएँ मन या आत्म पर प्रभावित दुनिया की सुविधायें ही है। अनुभूतियाँ सच्ची मान्यताओं की तरह हैं, दोहराये पूर्वानुमान (repeatable predicates) और अपने-आप (perceptually) ली संकल्पनाएँ है जो फिर से प्रस्तुत है और किर्यात्मकता (verbalizations) कार्यरत असली वस्तुओं जैसे हैं। एक ज्ञान के स्रोत के रूप में अनुभूतियाँ एक इश्वरीय (doxastic), विश्वास पैदा करने की प्रक्रिया है। विश्वास (या किसी भी तरह के अनुभूतिक संज्ञान और उनकी किर्यात्मकता verbalizations), संकल्पनाओं पर निर्भर हैं।

भ्रम से साबित होता है कि अनुभूति का उद्देश्य दुनिया की सुविधा नहीं है लेकिन इस विषय की ओर से किसी भी तरह का योगदान है। एक रस्सी को एक सांप के रूप में समझा जा सकता है, कोई अंतर नहीं के साथ अनुभुतिज्ञ (perceiver) के नजरिए से, भ्रम और एक सत्यप्रिय साँप धारणा के बीच का अंतर ही इसे स्पष्ट कर सकता है। इसी तरह, सपने भी एक सपने देखने वाले की अनुभूतियां हैं, लेकिन वास्तविकता के सामने वे कहीं नहीं टिकते। कभी-कभी एक तत्व, जैसा स्मृति में संरक्षित है, के विलय से पार-संवेदी हो जाता है, खट्टापन स्वाद में आना, उदाहरण के लिए, जब दूर से एक नींबू को देख लें या महक जाना, अगर चंदन का एक टुकड़ा जो दूर से ही वास्तविक घ्राण उत्तेजना भर जाता है। एक स्पष्ट मिश्रण या स्मृति के रंग के साथ सत्यप्रिय धारणा के बहुत मामले देखे गये हैं। स्मृति अनुभूतियाँ, अनुभूतियों का रूप ले लेती हैं यदि जो देखा-समझा गया है उसे पाने में देर हो जाये, वहां न सिर्फ इंद्रियां बल्कि मन-मस्तिष्क भी उसके पूर्ती करने के लिए सक्रिय हो जाते हैं। अब मन (या स्वयं) की वर्गीकरण (classificational) शक्ति सहज नहीं है, लेकिन प्रस्तुतिकरण, किसी जीवन-विषय के अनुभव (anubhava) के पाठ्यक्रम पर आधारित है। वास्तविकता का दोहराव व सुविधायें, मन (या आत्म) स्मृति स्वभाव के रूप में रह जाती है। लेकिन कभी-कभी न तो एक पूर्व नियत अनुभूति और न ही एक स्मृति स्वभाव, किसी सामग्री अनुमान के लिए ज़िम्मेदार होता है, उदाहरण के लिए, एक बच्चे का पहली बार एक गाय को

देखना। फिर भी, सभी अभिलाषाएं (intents) और प्रयोजन, यथार्थवादियों के अनुसार, अनुभूतियाँ आधारित विश्वास हैं। ज्यादा सही, एक अनुभूतिक विश्वास, एक ज्ञान के स्रोत के रूप में अनुभूतियों के किर्यान्यन (ऑपरेशन) का परिणाम है। तर्क, प्राचीन भारत में ज्ञान मीमांसा की परंपराओं के अनुसार ही विकसित हुआ है। निष्कर्ष ज्ञान का दूसरा स्रोत है, एक साधन है जिससे हम चीजों को तुरंत अनुभूतियों के माध्यम से स्पष्ट पता नहीं कर सकते हैं। शास्त्रीय भारतीय दार्शनिक, तर्क पर ध्यान केंद्रित नहीं रहे हैं, बल्कि एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया पर, जिसके तहत हम परोक्ष रूप से बातें पता करते हैं, एक संकेत के माध्यम से जो है, हेतू (hetu) या लिंगा (linga); इंद्रियों की सीमा से परे, चाहे दूरी स्थानिक हो या अस्थायी या एक तरह से (परमाणु या भगवान या बुद्ध के मन के रूप में) कि प्रकृति द्वारा सीधे नहीं माना जा सकता है। प्रशंसित ज्ञान, एक बयान, एक संचारण को समझने की बात है, और संचारण शर्तो को अवश्य पूरा किया जाना चाहिए।

भारतीय ज्ञान मीमांसा या ज्ञान की परिकल्पनाएं (theory), हर रोज अनुभव के मामलों पर और अनुभूति के विषय पर ध्यान केंद्रित करने में एक सुगम बहस के लिए एक तर्कसंगत आधार प्रदान करने के लिए प्रयास करती है, जो वास्तव में अंतर्दृष्टिक आवश्यक है, यह कि, इस विषय की प्रकृति का प्रयास है, जो संज्ञायिक (cognizes) है। हालांकि, भारत में सोच की कुछ परंपरायें, कई आम पूर्व-कल्पनाएँ (suppositions) जैसे कर्म की प्रभावकारिता, पुनर्जन्म के सिद्धांत की स्वीकृति, परम वास्तविकता का ज्ञान जैसेकि मुक्ति प्रभाव, आदि) साँझा करती हैं, जब विशिष्ट विवरण की बात आती है तो प्रत्येक स्कूल की विशिष्टता सामने आती है। जब संज्ञात्मक (बोधात्मक) विषय की आवश्यक प्रकृति और उद्देश्यों की बात आती है, इन सवालों को, एक विशेष स्कूल के विशिष्ट दृष्टिकोण के साथ, उसकी सात्यिक और आध्यात्मिक पूर्वधारणाओं के आधार पर ही निपटा जाना चाहिए।

सांख्य (SAMKHYA)

सांख्य सबसे प्रमुख में से एक और भारतीय दर्शन के सबसे पुराने में से एक है। एक प्रख्यात, महान ऋषि कपिल सांख्य स्कूल के संस्थापक थे। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व की किस सदी में ऋषि कपिल हुए। कपिल का संकेत ऋग्वेद में मिलता है, लेकिन संदर्भ मिलता है कि इस शब्द का अर्थ है लाल भूरा रंग। दोनों ऋषि कपिल व सांख्य का उल्लेख श्वेताश्वतारा उपनिषद (~ 300 ईसा पूर्व) में धारा 5.2 के भजन में मिलता हैं, जिसके अनुसार यह कहा जा सकता

है कि ऋषि कपिल और सांख्य दर्शन का उद्भव उससे पहले का हो सकता है। 6वीं शताब्दी के चीनी अनुवाद और अन्य ग्रंथों में लगातार एक तपस्वी और स्कूल के संस्थापक के रूप में कपिल का वर्णन मिलता है, आसुरी (Asuri) का विवरण शिक्षण के उत्तराधिकारी के रूप में और एक बहुत बाद के विद्वान, पंकासिखा (Pancasikha) जिसने इसे व्यवस्थित किया और उसके बाद व्यापक रूप से विचारों के प्रसार में मदद की, का भी उल्लेख है । लगभग 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व, से सांख्य के विभिन्न स्रोत व सोच के बारे में एक अलग, पूरा दर्शन प्राप्त होता है। दार्शनिक ग्रंथ जैसे कथा उपनिषद में छंद 3.10-13 और 6.7-11 में पुरुष और सांख्य की अन्य अवधारणाओं की एक अच्छी तरह से परिभाषित अवधारणा का वर्णन है। विचार जो विकसित हुए और शास्त्रीय सांख्य पाठ, सम्ख्याकारिका (Sankhyakarika) में आत्मसात हुए थे, पहले हिंदू शास्त्रों जैसे वेद, उपनिषद और गीता में दिखाई देते हैं। उपनिषद के आधार पर, भारत में दर्शन के दो स्कूल विकसित हुए हैं:

1. यथार्थवादी (उदाहरण के लिए सांख्य),
2. आदर्शवादी (उदाहरण के लिए वेदान्त)।

सांख्य दर्शन, सांख्य और योग के बुनियादी सिद्धांतों को जोड़ता है। लेकिन यह याद रखना चाहिए कि सांख्य परिकल्पना (theory) का प्रतिनिधित्व करता है और योग लागू करना या व्यावहारिक (practical) पहलुओं का प्रतिनिधित्व करता है। योग और सांख्य के बीच बुनियादी मतभेद इस प्रकार है:

- सांख्य नास्तिक है; योग अर्ध-आस्तिक है। ईश्वर बस एक पुरुष है जो प्रकृति में सम्बंधित नहीं है।
- सांख्य एक ज्ञान योग है - केवल ज्ञान के माध्यम से मुक्ति के लिए मार्ग।

योग ध्यान योग है - ध्यान और तप।

शब्द सांख्य संस्कृत शब्द सख्या पर आधारित है जिसका अर्थ 'अंक' है। स्कूल, अंक और ब्रह्मांड के अंतिम घटकों की प्रकृति निर्दिष्ट करता है और इस तरह से वास्तविकता का ज्ञान प्रदान करता है। वास्तव में, शब्द सांख्य का मतलब भी सही (पूर्ण - perfect) ज्ञान है। इसलिए यह सही ज्ञान की एक प्रणाली है। सांख्य द्वैतवादी यथार्थवाद है। यह द्वैतवादी है क्योंकि यह दो परम वास्तविकताओं से मिलकर बना है:

- प्रकृति (वस्तु),
- पुरुष (स्व, आत्मा)।

सांख्य का शाब्दिक अर्थ पुरुष और प्रकृति के बीच भेद है जिसका मतलब पुरुष की मुक्ति की ओर है। सांख्य यथार्थवाद के रूप में यह मानता है कि दोनों प्रकृति और आत्मा भी उतने ही असली हैं। प्रकृति एक पूरी तरह से वास्तविक भौतिक पदार्थ है और न की ब्रह्म की अलौकिक शक्ति का सृजन है। आध्यात्मिक यथार्थवाद अर्थात बाहरी दुनिया वास्तविक है। आध्यात्मिक बहुलवाद अर्थात वहाँ कई अलग-अलग आत्माओं कि प्रकृति से उनकी मुक्ति के बाद भी वे अलग-अलग है और अलग ही रहेंगे। प्रकृति दुनिया (परिवर्तन और गति) के बनने और संवेदना (sensation) का स्रोत है। पुरुष निष्क्रिय, अपरिवर्तनीय और शुद्ध का प्रतिनिधित्व करता है। सांख्य बहुलवादी है इस शिक्षण की वजह से भी कि पुरुष एक नहीं है, लेकिन कई है। सांख्य, कुछ हद तक न्याय–वैशेषिक (nyaya-vaisheshika) और जैन धर्म (jainism) से अलग है। न्याय-वैशेषिक और जैन धर्म का तर्क है कि परमाणु (atom) भौतिक दुनिया के परम घटक हैं, सांख्य इस मुद्दे पर अलग है। सांख्य के अनुसार, कारण हमेशा प्रभाव से सूक्ष्म है। सांख्य परिकल्पना का तर्क है कि कैसे वस्तु के सकल परमाणु, मन और बुद्धि जैसे अति सूक्ष्म और महीन वस्तुओं के कारक हो सकते है? सांख्य का प्रस्ताव है कि सभी तरह के भौतिक अस्तित्व के पीछे कुछ बेहतरीन और सूक्ष्मतम सामान या सिद्धांत हैं। सांख्य ने इसका नाम प्रकृति दिया है। प्रकृति दुनिया के अस्तित्व के पीछे मौलिक पदार्थ है। यह दुनिया का सामग्रीकरण है। प्रकृति सभी सकल और सूक्ष्म वस्तुओं की पहली और अंतिम कारक है। प्रकृति गैर आत्म है। यह चेतना से रहित है। प्रकृति दुर्बोध (unintelligible) है और पुरुष यानि आत्म से बहुत प्रभावित है। यह केवल पुरुष के अनुभव के अनुसार विभिन्न वस्तुओं के रूप में प्रकट हो सकती हैं। प्रकृति तीन गुणों, अर्थात् सत्व, रजस और तमस से गठित हुई है। शब्द गुण का मतलब, साधारण अर्थ में गुणवत्ता या प्रकृति है। लेकिन सांख्य में यह घटक (constituent, component) के अर्थ में समझा गया है। सत्व का खुशी के साथ संबंध है। रजस का कार्रवाई (action) के साथ संबंध है, वहीं तमस अज्ञानता और निष्क्रियता के साथ जुड़ा हुआ है। सत्व गुण का सार पवित्रता, सुंदरता और सूक्ष्मता है। सत्व घटक रौशनी, चमक और खुशी के साथ संबंध है। सत्व अहंकार, मन और बुद्धि के साथ जुड़ा हुआ है। चेतना के साथ इसका सबसे मजबूत सम्बन्ध है। हालांकि सत्व चेतना के लिए एक अनिवार्य शर्त है, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। यह याद किया जाना चाहिए कि चेतना विशेष रूप से पुरुष ही है। रजस घटक का उद्देश्यों की कार्रवाई के साथ संबंध है। यह गतिविधि और गति के साथ जुड़ा हुआ है। भौतिक वस्तुओं में, गति और कार्रवाई रजस का ही परिणाम हैं। जीवित

प्राणियों में न केवल गतिविधि और बेचैनी, लेकिन दर्द भी रजस की वजह से है। तमस घटक का जड़ता और निष्क्रियता के साथ संबंध है। भौतिक वस्तुओं में, यह गति और गतिविधि को रोकता है। जीवित प्राणियों में, यह बेअदबी, लापरवाही, उदासीनता और निष्क्रियता के साथ जुड़ा हुआ है। आदमी में, यह अज्ञान, असंवेदनशीलता और निष्क्रियता के रूप में प्रकट होता है। भारतीय दर्शन में करणीय की परिकल्पना पर दो विचार रहे हैं:

1. सत्कार्यवाद Satkaryavada (कारण में प्रभाव का पूर्व अस्तित्व): यह मानता है कि कार्य (प्रभाव) सत्य या वास्तविक है। यह अपनी अभिव्यक्ति से पहले से ही, एक संभावित रूप में कारक (कारण) में मौजूद है।
2. असत्कार्यवाद Asatkaryavada (कारण में प्रभाव की गैर मौजूदगी): यह मानता है कि कार्य (प्रभाव) असत या असत्य होता है जब तक कि यह अस्तित्व में नहीं आता है। हर प्रभाव एक नई शुरुआत है और कारण से बाहर पैदा नहीं हुआ है। चर्वाकिस्म (Charvakism) और न्याय-वैशेपिक सिस्टम असत्कार्यवाद (asatkaryavada) के पक्ष में हैं।

सांख्य के साथ ही वेदांत भी सत्कार्यवाद satkaryavada को मानते हैं, लेकिन उनकी व्याख्यायें अलग-अलग हैं। प्रकृति-परिणामवाद और ब्रह्म-विवर्तवाद - ये सत्कार्यवाद की दो अलग अलग व्याख्यायें हैं।

प्रकृति-परिणामवाद बताता है कि कारण का असली परिणाम (या परिवर्तन) प्रभाव है। दूसरी और, ब्रह्म-विवर्तवाद बताता है कि प्रभाव कारण की एक स्पष्ट या विकृत उपस्थिति है। अद्वैत वेदांत, ब्रह्म-विवर्तवाद का समर्थन करता है। यह ब्रह्म-विवर्तवाद का बचाव करते हुए मानता है कि परिवर्तन, केवल स्पष्ट और ब्रह्म ही इसका सही कारण है और दुनिया कारण की एक विकृत उपस्थिति है। सांख्य प्रकृति-परिणामवाद के पक्ष में है।

सत्कार्यवाद के अनुसार, सांख्य मानता है कि प्रकृति के तीनों गुण संसारिक-वस्तुओं के साथ भी जुड़े हुए हैं। प्रकृति सभी प्रकार के भौतिक अस्तित्व का मौलिक और परम कारण है। स्वाभाविक रूप से तीनों गुण जिनसे प्रकृति का गठन हुआ, भौतिक दुनिया की हर वस्तु का गठन भी उनसे ही हुआ है। प्रकृति कभी नहीं स्थिर होता है। विकास (evolution) से भी पहले, गुण लगातार बदल रहें है और एक दूसरे को संतुलित कर रहे हैं। नतीजतन, प्रकृति और सभी भौतिक वस्तुयें जोकि प्रकृति द्वारा प्रभावित या उत्पादित हैं, भी निरंतर परिवर्तन और बदलाव की एक स्थिति में हैं। इसकी आज के वैज्ञानिकों ने भी पुष्टि की है। अब यह संदेह से परे

साबित कर दिया है कि अल्ट्रा-कणों जैसे इलेक्ट्रॉनों की तरह, वस्तुयें भी, लगातार गति और परिवर्तन की स्थिति में हैं।

सांख्य के अनुसार, पुरुष दुनिया का कुशल कारक है और भौतिक कारक प्रकृति है। यहाँ पुरुष का मतलब है - सुप्रीम आत्मा और प्रकृति का मतलब है – वस्तु (matter)। पुरुष (आत्मा) सांख्य का पहला सिद्धांत है। प्रकृति दूसरा, सांख्य का सामग्री सिद्धांत। पुरुष का उत्पादन नहीं होता है और न ही यह उत्पादन करता है। प्रकृति का उत्पादन भी नहीं किया है, लेकिन यह पैदा करती है। प्रकृति बेसबब (uncaused) है। यह शाश्वत है। यह अपने आप पैदा नहीं होती है, लेकिन इसमें उत्पादन करने की निहित क्षमता या प्रवृति है। पुरुष (वेदांत के ब्रह्म की तरह) अनुभवातीत (transcendental) स्व है। यह पूर्ण स्वतंत्र, मुक्त, अगोचर, अज्ञात है, किसी भी अनुभव से ऊपर है और किसी भी शब्द या स्पष्टीकरण से परे है। यह सदा शुद्ध, गैर-गुणवाचक व चेतनामयी है। प्रकृति दुनिया की सामग्री-कारक है। प्रकृति गतिशील है। उसकी गतिशीलता के लिए उसके घटक गुण जिम्मेदार है। गुण केवल घटक नहीं हैं, और न ही वे साधारण गुण हैं। गुण प्रकृति का सार हैं। गुण न केवल प्रकृति के घटक हैं बल्कि दुनिया-वस्तुओं के भी क्योंकि वे भी प्रकृति द्वारा ही उत्पादित हो रहे हैं। प्रकृति को सजातीय माना जाता है और उसके घटक गुणों को अलग नहीं किया जा सकता है। गुण हमेशा बदलते रहते हैं, जिससे प्रकृति को एक गतिशील चरित्र प्रतिपादित होता है। फिर भी तीनों गुणों के बीच एक संतुलन प्रकृति ने बनाए रखा है। प्रकृति और गुणों में परिवर्तन दो रूप ले सकता है: सजातीय और विषम।

सजातीय परिवर्तन प्रकृति में संतुलन की स्थिति को प्राभावित नहीं करते। नतीजतन, सांसारिक वस्तुओं का उत्पादन नहीं करते हैं। विषम परिवर्तन तीन गुणों के बीच कट्टरपंथी परिवर्तन है। वे संतुलन की स्थिति को अव्यवस्थित करते हैं। यही विकास के प्रारंभिक चरण है। विकासवादी प्रक्रिया रजस तत्व द्वारा शुरु होती है, जो सत्व तत्व को सक्रिय करता है और फिर ये दो गुण, तमस की जड़ता संभाल लेते है। अशांति के पीछे एक महत्वपूर्ण कारक पुरुष है। पुरुष और प्रकृति के बीच के संबंध कि तुलना एक चुंबक और लोहे के एक टुकडे के बीच की जा सकती है। पुरुष खुद प्रकृति के साथ संपर्क में नहीं आता है। लेकिन यह प्रकृति को प्रभावित करता है। इस प्रकार, प्रकृति को उत्पादन करने के लिए प्रेरित किया जाता है। इस प्रकार गुणों को अधिक से अधिक परिवर्तन से गुजरना पड़ता है, प्रकृति कि दुनिया में विभिन्न वस्तुओं में फर्क पर फर्क आता चला जाता है। इस प्रकार यह अधिक से अधिक

पक्का होता चला जाता है। यह वही है जो विकास के रूप में जाना जाता है। विकास में, प्रकृति में बदलाव आता है और वस्तुओं की बहुलता में भी भेदभाव और बदलाव आता चला जाता है। विकास विघटन के बाद का रूप है। विघटन में, भौतिक अस्तित्व, सभी सांसारिक वस्तुओं प्रकृति में वापस मिल जाती है, जो अब अविभेदित (undifferentiated), मौलिक पदार्थ के रूप में बनी हुई है। यह है, कैसे विकास और विघटन का चक्र एक दूसरे का पालन करते है। सांख्य के अनुसार, तीन गुणों के बीच कट्टरपंथी बातचीत प्रकृति में संतुलन की स्थिति को उद्वेलित करती है। तो फिर वहाँ एक या अधिक गुणों का प्रभुत्व हो सकता है। ये असंतुलन, कुछ अन्य को प्रभावित करने वाले कारकों के साथ, विश्व वस्तुओं में अंतर करने के लिए प्रकृति को संकेत देता है। इस विकास के परिणाम-स्वरुप वस्तुओं कि 23 विभिन्न श्रेणियों बनती है। इसमें अंत:कर्ण (Antahkaranas) के तीन तत्व या आंतरिक अंगों के साथ ही दस बाह्य-कर्ण (Bahyakaranas) या बाहरी अंगों के शामिल है। इन सब के बीच, सबसे पहले महत (एक महान) का विकास होता है। महत सत्व की प्रधानता के एक प रेणाम के रूप में विकसित होता है। चूंकि यह प्रकृति का एक केन्द्रज है, यह वस्तु (matter) से बना है। लेकिन इसका मनोवैज्ञानिक, बौद्धिक पहलू है buddhi या बुद्धि के रूप में जाना जाता है। महत या बुद्धि मनुष्य का एक अनूठा संकाय है। यह निर्णय और भेदभाव में आदमी की मदद करता है। महत विषय और वस्तु के बीच भेद करने में मदद करता है। मनुष्य स्वयं और गैर आत्म, अनुभवजयी व अनुभवी, महत के साथ अलग-अलग रूप में समझ पाता है। महत, सत्व के साथ अपने निहित एसोसिएशन द्वारा, चमक और परावर्तन जैसे गुणों की समझ विकसित करता है। बुद्धि द्वारा पुरुष इन गुणों को प्रतिबिंबित कर सकते हैं। दूसरी केन्द्रज अहंकार ahamkara (अहंकार) है। यह महत की वैश्विक प्रकृति से बनता है। अहंकार आत्म ज्ञान है। इसका आत्म-पहचान के साथ संबंध है और यह मैं और मेरा के बारे में जागरूकता लाता है। सांख्य के अनुसार, वहाँ अहंकार से वस्तुओं के दो सेट उत्पन्न होते हैं। पहला सेट में मानस (मन), पाँच इन्द्रिय-अंग और पांच मोटर अंग शामिल हैं। दूसरे सेट में पांच तत्व है जो दो रूपों, सूक्ष्म और सकल में मौजूद होते हैं। पांच सूक्ष्म तत्वों को इंद्रियां या तन्मात्रास (Tanmatras) कहा जाता है। ये पांच सूक्ष्म तत्व या Tanmatras हैं: मौलिक ध्वनि, मौलिक स्पर्श, मौलिक रंग, स्वाद और मौलिक गंध। वे शब्द (Shabda), स्पर्श (sparsha), रूप, रस और गन्ध (Gandha) क्रमशः बताते हैं। सकल तत्व, सूक्ष्म तत्वों के संयोजन के

एक परिणाम के रूप में उत्पन्न होता हैं। पांच सकल तत्व, अंतरिक्ष या आकाश (space or aakas), जल (water), वायु (air), अग्नि (fire) और पृथ्वी (earth) हैं।

अहंकार के तीन पहलु है तीन गुण जो प्रधानता के अनुसार अलग है - सत्व, रजस और तमस। प्रमुख सत्व-गुण के साथ, सात्विक- अहंकार मानस (मन), पांच इंद्रियां और पांच मोटर अंग पैदा करता है। पांच इंद्रियां, चक्षु (देखने के लिए), कान-स्रोतों (सुनने के लिए), रसना (स्वाद), (गंध के लिए) घ्राण और त्वक (महसूस करने के लिए) हैं। पांच मोटर अंग भाषण, संभलना, चलना-फिरना, उत्सर्जन और प्रसव की शक्तियों के साथ संबंधित हैं। इन अंगों का, संस्कृत में, वाक (VAK), पानी (pani), पाडा (pada), पाया (Paya) और उपस्थ (upastha) क्रमशः साथ सम्बन्ध है। इन सभी दस अंगों को एक साथ बाहरी अंगों (bahyakaranas) के रूप में जाना जाता है। महत, अहंकार और मानस, आंतरिक अंग (antahkaranas) के रूप में जाने जाते हैं। यहां यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि मानस या मन, महत या buddhi से अलग है। मानस या मन अंगों के समन्वय में, बाहरी दुनिया से इशारों को प्राप्त करता है, उन्हें पक्का धारणाओं या अनुभुतीओं में बदल देता है और उन्हें भोक्ता या अहंकार को बता देता हैं। इस प्रकार मानस का उत्पादन होता है और यह निर्माण करने में भी सक्षम होता है। लेकिन हालांकि महत का उत्पादन किया जाता है, यह उत्पादन नहीं कर सकते। अहंकार दोनों सूक्ष्म और सकल तत्वों को पैदा करता है। ये सकल तत्व, सूक्ष्म तत्वों के विभिन्न संयोजनों द्वारा उत्पादित होते हैं। उदाहरण के लिए शब्द (Shabda) आकाश (Akasha) (अंतरिक्ष) पैदा करता है, जबकि Shabda और स्पर्श (sparsha) एक साथ मारुत (air) का उत्पादन करते हैं। रूप तेज (आग) पैदा करता है। शब्द, स्पर्श, रूप और रस एक साथ अप (पानी) पैदा करते हैं। सभी पांच तत्व क्षिति (पृथ्वी) का उत्पादन करते हैं। पांच सकल तत्व, सभी सकल वस्तुओं के लिए अलग-अलग तरीकों से गठबंधन करते हैं। सभी सकल तत्व और दुनिया में सकल वस्तुयें इन्द्रियोगाचर (perceivable) हैं।

सांख्य और भगवान (Samkhya and God)

कपिल, सांख्य स्कूल के प्रस्तावक, ईश्वर के अस्तित्व से इनकार करते हैं। उनका दावा है कि भगवान के अस्तित्व को साबित नहीं किया जा सकता है और कहा कि भगवान मौजूद नहीं है। सांख्य का तर्क है कि अगर भगवान मौजूद है और अगर भगवान अनन्त और अपरिवर्तनीय है जैसा कि व्यापक रूप से दावा किया जाता है, तो वह दुनिया का कारक नहीं हो सकता है। एक कारक को सक्रिय और बदलते रहना

आवश्यक है। हालांकि सांख्य के बाद के टिप्पणीकार, कुछ आस्तिक व्याख्या की ओर मुड़ते नजर आ रहे हैं।

बंधन और मुक्ति (Bondage and Salvation)

भारतीय दर्शन के अन्य प्रमुख प्रणालियों की तरह, सांख्य भी बंधन और दुख का मूल कारण अज्ञानता को ही मानता है। सांख्य के अनुसार, आत्म अनन्त है, शुद्ध चेतना है। अज्ञानता के कारण, स्वयं को कोई भौतिक शरीर और उसके घटकों के रूप में पहचानता है, जो प्रकृति के उत्पाद हैं -मानस, अहंकार और महत्। एक बार जब स्वयं इस झूठी पहचान और सामग्री बांड से मुक्त हो जाता है, उद्धार संभव है।

सांख्य अनुभुतीओं के दो प्रकार का हवाला देते हैं

Samkhya cites out two types of perceptions

अनिश्चित (निर्विकल्प) अनुभुतियां और नियत (सविकल्प) अनुभुतियां।

अनिश्चित अनुभुतियां एक तरह से शुद्ध उत्तेजना या कच्चे तेल की छाप कि तरह हैं। वे किसी प्रकार के कोई ज्ञान या वस्तु के नाम का खुलासा नहीं करती। वहाँ वस्तु के बारे में अस्पष्ट जागरूकता है। वहाँ संग्यानात्मकता है, लेकिन कोई मान्यता नहीं है। एक शिशु के प्रारंभिक अनुभव, भ्रम की स्थिति से भरे हुए हैं। वहाँ भावना-डेटा तो बहुत है, लेकिन वहाँ प्रक्रिया के लिए अनुचित या अपर्याप्त साधन हैं। इसलिए न तो वहां कोई भेद किया जा सकता है और न ही अंकित किया जा सकता है। उनमें से अधिकांश अनिश्चित अनुभूतियाँ हैं।

नियत अनुभूतियाँ अनुभूतियों की परिपक्व अवस्था है जो संसाधित की गई है और भेद उचित रूप से किया गया हैं। यदि एक बार उत्तेजना, संसाधन, वर्गीकरण और ठीक से व्याख्या की जाये तो, वे नियत अनुभूतियाँ बन जाते हैं। वे पहचान करने के लिए नेतृत्व कर सकते हैं और यह भी ज्ञान उत्पन्न करते हैं।

सांख्य और ज्ञान की परिकल्पना

Samkhya and the Theory of Knowledge

सांख्य वैध ज्ञान के तीन स्रोत स्वीकार करता है: बोध , निष्कर्ष और गवाही।

सांख्य के अनुसार, मानस (मन), महत् (बुद्धि, buddhi) और पुरुष (purusha) ज्ञान के उत्पादन में एक भूमिका निभाते हैं। जब भावना-अंग एक वस्तु के संपर्क में आते हैं, उत्तेजना और छाप मानस तक पहुँचते हैं। मानस उचित रूपों में इन छापों को संसाधित करता है और उन्हें नियत विचारों में बदल देता है। ये विचार महत् तक ले जाये जाते है। अपने स्वयं के अनुप्रयोगों के द्वारा, महत् संशोधित हो जाता है। महत् एक विशेष वस्तु का रूप ले लेता है। महत् के इस बदलाव को वृति या

buddhi के संशोधन के रूप में जाना जाता है। लेकिन फिर भी ज्ञान की प्रक्रिया पूर्ण नहीं होती है। महत् एक भौतिक इकाई है। इसमें चेतना का अभाव है तो यह अपने आप ही ज्ञान उत्पन्न नहीं कर सकता है। हालांकि, यह पुरुष (स्वयं) की चेतना को प्रतिबिंबित कर सकता है। परिलक्षित स्वयं की चेतना द्वारा प्रकाशित, अचेतन महत् जब भी संशोधित (अर्थात् वस्तु के रूप में) किया जाता है तो वह उसी रूप में जागरूक हो जाता है। इसे बेहतर तरीके से एक उदाहरण से समझाया जा सकता है। आईने अपने दम पर एक छवि का उत्पादन नहीं कर सकते। दर्पण को प्रतिबिंबित होने और छवि निर्माण करने के लिए प्रकाश की जरूरत होती है और इस तरह वह वस्तु पहचान बता पाता है। इसी तरह, महत् को पुरुष की चेतना नामक 'प्रकाश' की जरूरत होती है जिससे वह ज्ञान का उत्पादन करता है।

ज्ञान चीजों के सम्बन्ध के बारे में ढूंढता है। जब कोई एक नई चीज पता चलती है और उसके बारे में आपके मन में अगर पहले से ही कुछ है, तो आप संतुष्ट हो जाते हैं; और इसे संबंधिय या संगठनात्मक ज्ञान कहा जाता है। ज्ञान, इसलिए अनुभव के पहले से ही विद्यमान निधि के साथ एक कबूतर-खाना कहा जा सकता है और तथ्य यह है कि आप कभी भी ज्ञानवान नहीं हो सकते जब तक कि आप पहले से ही ज्ञान की कोई निधि से थोडा-बहुत सम्बंधित नहीं हैं। यदि आप अनुभवहीन हैं और आपके मन में, उससे सम्बंधित कुछ नहीं है या आप आनंदित नहीं हैं तो, आप को ज्ञान नहीं मिल सकता है क्योंकि ज्ञान का बहुत सरे नये तथ्य, पहले से ही मन में मौजूद पूर्व-ज्ञान की ही मान्यता की तरह होते हैं। अगर कुछ नया लेना है तो सम्बंधित के प्रति कुछ सजगता होनी ही चाहिये, नहीं तो आप दुकानदार के पास जाकर क्या मांगेंगे। मान लीजिए कि एक बच्चा इस तरह के एक कोष के बिना इस दुनिया में पैदा होता है, तो यह लगभग असंभव ही है कि उसे कभी भी कोई भी ज्ञान (मानवीय) प्राप्त होगा। इसलिए, बच्चे को पहले उस एक स्थिति में जाना होगा जब उसके पास ज्ञान का एक कोष हो और इसलिए ज्ञान सदा बढ़ता चला जाता है। यह एक गणितीय तथ्य है। दर्शन के स्कूल भी मानते हैं कि पिछले ज्ञान के एक कोष के बिना, किसी को भी ज्ञान नहीं हो सकता। उन्होंने ये विचार तय किए है कि बच्चे ज्ञान के साथ ही पैदा होते हैं। इन दार्शनिकों का कहना है कि जिस छाप के साथ बच्चे दुनिया में आते है, उनका बच्चे के अतीत या पूर्व-जन्म से कोई वास्ता नहीं हैं, बल्कि अपने पूर्वजों के अनुभवों के कारण से ऐसा होता है: यह केवल वंशानुगत संचरण है। आनुवंशिकता बहुत अच्छा है, लेकिन अपूरा है; यह केवल भौतिक पक्ष का वर्णन करता हैं। वातावरण हमें कैसे प्रभावित

बन रहा है. इसे कैसे समझाया जाये? कई कारणों से एक प्रमाद पैदा होता है, पर्यावरण, समायोजित करने के प्रभावों में से एक है। हम अपने वातावरण को स्वयं बनाते हैं. जैसा हमारा अतीत है, वैसा ही हम वर्तमान माहौल पाते हैं। एक शराबी आदमी स्वाभाविक रूप से शहर की सबसे मलिन बस्तियों की ओर आकर्षित होता है। लेकिन एक पूरे ब्रह्मांड के बारे में हमारी अनुभूतियों के साथ, हम ऐसा नहीं कर पाते, क्योंकि हमारे कबूतर-खाने जैसे ज्ञान के साथ केवल, हम एक ही प्रकृति या वर्ग का कोई अन्य धारणा रखते है. हम इसकी तुलना किसी अन्य ब्रह्मांड के साथ नहीं कर सकते क्योंकि इस तरह का कोई ज्ञान हमारे चेतन मन या मस्तिष्क में है ही नहीं। हम इस तरह के ज्ञान को सम्बंधित ज्ञान नहीं रख सकते हैं क्योंकि इस तरह के ज्ञान का हमारे पास कोई उल्लेख ही नहीं है। ऐसा ब्रह्मांड, जो हमारी चेतना का हिस्सा नहीं है, एक चौंकाने वाली नई बात नहीं है, क्योंकि हम ऐसी खोज के लिए सक्षम नहीं है। इसलिए, हम इसके साथ संघर्षरत हैं, और इसे भयानक, दुष्ट, और बुरा सोच रहे हैं; हम कभी-कभी लगता है कि हो सकता है यह अच्छा हो, लेकिन हमें हमेशा ये लगता है कि यह अपूर्ण है। यह केवल सम्बन्धात्मक ज्ञान है जिससे ब्रह्मांड जाना जा सकता है। जब हम ब्रह्मांड और चेतना से परे जाकर सोचते हैं, तो फिर ब्रह्मांड की व्याख्या की जा सकती है। जब तक हम ऐसा न कर सकें, तो एक दीवार के साथ हमारे सिर की टक्कर मारते रहने से ब्रह्मांड कभी समझाया नहीं जा सकता, क्योंकि ज्ञान का मतलब है समानता को ढूँढना, और इस तरह की जागरूकता केवल हमें इसके बारे में एक ही अनुभूति देता है।

यह एक सामान्य नियम है कि हमारे कष्ट हमारी अज्ञानता के कारण होते है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हम देखते हैं कि अज्ञानी और अशिक्षित आदमी के जीवन में कई मौकों पर दुःख की बात आती है, क्योंकि वह जीवन और प्रकृति के नियमों को नहीं जानता है। जिस दुनिया में हम रहते हैं के बारे में अधिक ज्ञान हमें खुद को और, हमारे अस्तित्व के लिए हमारे संघर्ष को बेहतर फिट और जीवन को आनंदित कर सकता हैं। लेकिन तथ्य यह है कि हम पूरी तरह से खुश नहीं है, न ही हम पूरी तरह से दर्द और दुख से मुक्त हैं। इस का कारण यह है कि हमें वास्तविकता के बारे में सही ज्ञान नहीं है। जब हम ज्ञान मिल जायेगा, हमें सब दुखों से मुक्ति भी मिल जाएगी। हकीकत, सांख्य के अनुसार, खुद की बहुलता और दुनिया में प्रस्तुत वस्तुओं के हिसाब से है। स्व एक बुद्धिमान सिद्धांत है जिसमें कोई भी गुणवता या गतिविधि नहीं है, लेकिन स्थान, समय और करणीय की सीमाओं से मुक्त एक शुद्ध चेतना है। यह शुद्ध विषय है जो भौतिक चीजों और जैविक निकायों, मन और इंद्रियों,

आकार और बुद्धि सहित वस्तुओं की पूरी दुनिया का अतिक्रमण है। सभी परिवर्तन और गतिविधियाँ, सभी विचार और भावनाएँ, सभी सुख और दर्द, सभी सुख और दुख, सब मन-शरीर प्रणाली से सम्बंधित हैं। खुशी और दर्द, खुशी और गम सभी वास्तव में बुद्धि और मन के सम्बन्ध से हैं। यह आत्म और मन-शरीर के बीच भेदभाव या पहचान (अविवेक) की भावना ही हमारी सभी मुसीबतों का कारण है। हमें दर्द महसूस होता है और हम खुशी का आनंद लेते हैं, क्योंकि हमारा (द्रष्टा) अनुभव हमें गलत विषय को गलत तरीके से अनुभवी वस्तुओं (दृष्टा) खुशी और दर्द सहित के साथ खुद को पहचानता है।

वेदान्त VEDANTA

वेदांत या उत्तरा मीमांसा, भारतीय दर्शन के छह रूढ़िवादी स्कूलों में से एक है। वेदांत एक व्यापक सिद्धांत के लिए नहीं है। यह आम शाब्दिक कनेक्शन, जो प्रस्थानत्रयी (Prasthanatrayi) - मुख्यतः उपनिषद, ब्रह्म-सूत्र और भगवद्गीता के लिए सामूहिक शब्द है, के आधार पर अलग-अलग दार्शनिक विचार को विकसित करने के लिए है। यहाँ वेदांत के कम से कम दस स्कूल हैं जिनमें से अद्वैत (non-dualist), विशिष्टाद्वैत (योग्यताधारी का गैर-द्वैतवाद) और द्वैत (dualist) सबसे अच्छा जाना जाता है। अधिकांश अन्य वेदांत परंपरायें भेद्भेदा Bhedabheda (अंतर और गैर अंतर) परंपरा से संबंधित मानी जाती है। सभी वेदांत स्कूल, उनके विचार-विमर्श में, निम्न तीन श्रेणियों के साथ सम्बंधित है, लेकिन तीनों के बीच संबंध के बारे में उनके विचारों में मतभेद है:

- ब्रह्म - अपरिवर्तनीय परम आध्यात्मिक वास्तविकता
- आत्मा / जीवात्मा - व्यक्ति की आत्मा या आत्म (स्व)
- प्रकृति - अनुभवजन्य दुनिया, बदलता भौतिक जगत, शरीर और वस्तुएं

प्रस्थानत्रयी के अलावा, वेदांत ने हिंदू धर्म के अन्य स्कूलों से विचार, अपनाये जेसे योग और न्याय, और समय के साथ ये हिंदू धर्म का सबसे प्रमुख स्कूल बन गया, जैसे वैष्णव, शैव और शक्तिस्म। वेदांत का मतलब है वेदों का अंत। वेदांत के सभी स्कूल उपनिषदों के शिक्षण प्रतिपादन का दावा करते हैं। शास्त्रीय उपनिषदों को वास्तव में वेदों के अंत के रूप में माना जा सकता है। वेदांत भी उत्तरा मीमांसा भी कहा जाता है, बाद की जांच या उच्चतर जांच? और अक्सर पुरव मीमांसा या साधारणतः मीमांसा का सम्बन्ध पूर्व जांच या प्राथमिक जांच से है

जोकि, कर्म-कांड या वैदिक ग्रंथों (संहिता और वेदों में ब्राह्मण), ज्ञान-कांड या उपनिषदों के ज्ञान भाग के साथ संबंधित है। अनिश्चय और उपनिषदों के शिक्षण में मतभेद, इन शिक्षाओं, जिन्हें वेदांत कहा जाने लगा, के प्रनालिकरण (systematization) के लिए आवश्यक है। प्रनालिकरण की संभावना कई मायनों में प्रभावित है, लेकिन केवल संस्करण जोकि आधुनिक युग में बच गया है, बादरायण के सूत्र, जो लोकप्रिय वेदांत सूत्र या ब्रह्मा सूत्र के रूप में जाना जाता है, का प्रतिनिधित्व करती है। उपनिषदों की सामग्री की भाषा अक्सर रहस्यपूर्ण है, जो विभिन्न व्याख्याओं के लिए उपलब्ध है। समय के दौरान, वेदांत के विभिन्न स्कूल, उपनिषद और ब्रह्म सूत्र के विभिन्न व्याख्याओं के साथ पैदा हुये हैं।

- अद्वैत वेदांत, जिसके सबसे प्रमुख विद्वान गौड़पाद (~ 500 सीई) और श्री आदि शंकराचार्य (8वीं सदी) रहे हैं।
- विशिष्टाद्वैत, भेद्भेदा bhedabheda का एक छोटा स्कूल (subschool) जो श्री रामानुज द्वारा स्थापित किया गया (1017-1137 सीई)
- द्वैत श्री माधवाचार्य द्वारा स्थापित किया गया (1199-1278 सीई)
- भेद्भेदा Bhedabheda, लगभग 7वीं शताब्दी, या 4थी शताब्दी के में। कुछ विद्वानों इसे उपयुक्त वेदांत के एक स्कूल कि बजाय एक परंपरा के रूप में विचारते हैं।
- उपाधिका (Upadhika), 9वीं शताब्दी में भास्कर द्वारा स्थापित किया गया
- स्वाभाविक भेद्भेदा (Svabhavikabhedabheda) या द्वैताद्वैत, 13वीं सदी में निम्बार्क द्वारा स्थापित किया गया
- शुधद्वैता (Suddhadvaita), वल्लभ द्वारा स्थापित किया गया (1479-1531 सीई)
- अचिंता Achintya भेडा अभेदा, चैतन्य महाप्रभु द्वारा स्थापित किया गया (1486-1534)

हालांकि व्यापक रूप से भारत में अनुयायियों ने ओर भी स्कूल, अपने विचारों के हिसाब से वर्णित किये हैं जिनका प्रसार सिमित अवधि, या सिमित क्षेत्र तक ही रहा।

अद्वैत वेदांत Advaita Vedanta

अद्वैत वेदांत, गैर द्वैतवाद और अद्वैतवाद का ही स्वरुप है। ब्रह्म एकमात्र अपरिवर्तनीय वास्तविकता और आत्मा के लिए समान रूप से कल्पना दृश्य है। निरपेक्ष और अनंत, आत्मा-ब्रह्म सब का, अनुभवजन्य नकार और बदलने की प्रक्रिया

से पता चलता है। हालांकि यह यह नहीं है कि नकारात्मक विधि का उपयोग करता है, यह ब्रह्म की अनिश्चितता पर विचार नहीं करता। स्कूल नहीं द्वैत, नहीं सीमित आत्मा और न ही एक अलग असीमित ब्रह्मांडीय आत्मा को स्वीकार करता है। सभी आत्मायें, सभी अस्तित्व, सभी अंतरिक्ष और समय के पार, एक और एक ही एकता के रूप में माने जाते है। आदि शंकर का कहना है कि ब्रह्म, कभी नहीं बदलती आध्यात्मिक वास्तविकता है, जबकि भौतिक दुनिया हमेशा बदलती अनुभवजन्य माया है। अद्वैत में आध्यात्मिक मुक्ति कि पूरी समझ है और अपरिवर्तनीय आत्मा (आत्मा) की एकता का अहसास हर किसी में आत्मा के रूप में ही बाकी के साथ ही निर्गुण ब्रह्म के समान होने के रूप में है।

विशिष्टाद्वैत Vishishtadvaita

विशिष्टाद्वैत परंपरा में सबसे प्रभावशाली दार्शनिक रामानुज (1017-1137CE) था। विशिष्टाद्वैत के दार्शनिक वास्तुकार के रूप में, वह योग्य अद्वैतवाद पढ़ाता था। विशिष्टाद्वैत का दावा है कि जीवात्मा (मानव आत्मा) और ब्रह्म (विष्णु) अलग अलग हैं और उनमें एक अंतर यह है कि वे कभी परिवर्तित नहीं होते। इस योग्यता के साथ, रामानुज भी कहते हैं कि सभी आत्माओं में एकता होती है और व्यक्ति की आत्मा को संभावित ब्रह्म-आत्मा के साथ पहचान का एहसास है। विशिष्टाद्वैत वेदांत, अद्वैत वेदांत की तरह, एक गैर द्वैतवाद वेदांत स्कूल है लेकिन एक योग्यता भरा और दोनों धारणायों कि सभी आत्माओं आशा और आनंदित मुक्ति की अवस्था को प्राप्त कर सकती हैं, पर आधारित हैं। ब्रह्म और वस्तु की दुनिया (प्रकृति) के बीच संबंध पर, विशिष्टाद्वैत कहता है कि दोनों दो अलग-अलग पूर्ण हैं, दोनों आध्यात्मिक सच्चे और वास्तविक हैं, कोई भी तो झूठा या बाजीगर नहीं है, और विशेषताओं के साथ सगुण ब्रह्म भी वास्तविक है। भगवान, आदमी की तरह, रामानुज कहता है, दोनों आत्मा और शरीर है, और दुनिया की सभी महिमा भगवान के शरीर की वजह से ही है। ब्रह्म (विष्णु) के लिए पथ, रामानुज के अनुसार, भगवान कि भक्ति, भगवान के प्रति समर्पण और सुंदरता का निरंतर स्मरण और प्रेम (सगुण ब्रह्म की भक्ति) है और जो अंततः निर्गुण ब्रह्म की ओर ले जाता है।

द्वैत Dvaita

द्वैत माधवाचार्य (1238-1317 सीई) द्वारा प्रतिपादित किया गया था। वेदांत स्कूल की उस द्वारा स्थापना द्वैतवाद पर आधारित है, जिसमें कहा गया है कि आत्मा और ब्रह्म (विष्णु) दो पूरी तरह से, सदा अलग अलग रूप हैं। उन्होंने अपने स्कूल को तत्ववाद (वास्तविकता दर्शन) कहा है। द्वैत स्कूल के अनुसार, ब्रह्म ब्रह्मांड के निर्माता

है, जानने में पूर्ण, ज्ञान में सही, शक्ति से परिपूर्ण, आत्मा से अलग, और हर मामले से अलग है। द्वैत वेदांत में, मुक्ति के लिए एक व्यक्ति की आत्मा को विष्णु के प्रति आकर्षण, प्रेम, लगाव और पूर्ण भक्ति, आत्मसमर्पण महसूस करना चाहिए, क्योंकि केवल उनकी कृपा मोचन से ही मोक्ष कि प्राप्ति होती है। माधवाचार्य का मानना था कि कुछ आत्मायें सदा बर्बाद और शापित रहती हैं, जिसे अद्वैत वेदांत और विशिष्टाद्वैत द्वारा अस्वीकार कर दिया गया। जबकि विशिष्टाद्वैत वेदांत, गुणात्मक अद्वैतवाद और आत्माओं की मात्रात्मक बहुलवाद पर जोर देता है, वहीं माधवाचार्य आत्माओं के दोनों गुणात्मक और मात्रात्मक बहुलवाद पर जोर देता है।

भेद-अभेद Bhedabheda

भेद-अभेद, जिसका का मतलब है अंतर और गैर अंतर, का अस्तित्व लगभग 7वीं शताब्दी का है, लेकिन बद्रायण का ब्रह्म-सूत्र भी भेद-अभेद वेदांतिक दृष्टिकोण से लिखा गया है। भेद-अभेद वेदांत स्कूल के अनुसार व्यक्ति स्वयं (jivatman) और ब्रह्म, दोनों से अलग है और अलग नहीं भी है। भक्ति को इस स्कूल में बाद में जगह मिली है। इस स्कूल के प्रमुख नामों में शामिल हैं; भास्कर (8-9वीं शताब्दी), रामानुज के शिक्षक यादवाप्रकाश Yadavaprakasa, निम्बार्क (13वीं सदी) द्वैताद्वैत स्कूल के संस्थापक, वल्लभ (1479-1531) शुद्धाद्वैता Shuddhadvaita के संस्थापक, चैतन्य (1486-1534) अचिन्त्य भेद-अभेद स्कूल के संस्थापक, और विज्ञानाभिक्सू (16वीं सदी)। ब्रह्म-सूत्र भेद-अभेद, शंकर से पहले वेदांत के सबसे प्रभावशाली स्कूल के दृष्टिकोण को दर्शाता हैं।

वेदांत दर्शन Vedanta Philosophy

हिरियन्ना Hiriyanna के अनुसार, उपनिषदों में व्यक्ति की आत्मा के ब्रह्म के साथ संबंध के बारे में कही शिक्षायें अस्पष्ट और विविध हैं, जैसे कि ब्रह्म और प्रकृति (भौतिक जगत) के बीच संबंध है। विभिन्न मुख्य उपनिषद कई प्रमुखता से कहते है कि ये समान हैं, लेकिन कुछ छंद है कि जो उन्हें अलग-अलग साबित करते हैं। इन उपनिषदों के शिक्षण को व्यवस्थित करने व इनके विचारों में तालमेल करने का प्रयास एक चुनौती से कम नहीं है। एक दृष्टिकोण है इन दोनों ही विचारों को बराबर महत्व देने का और ये परिकल्पना मानने का कि आत्मा (Jivatma) और भौतिक जगत, ब्रह्म के समान हैं और अलग=अलग भी, जैसाकि भार्त्रिप्रपांचा Bhartriprapancha, (एक प्रख्यात पूर्व-शंकर वेदांती) द्वारा दशाया गया है। एक अन्य दृष्टिकोण, जो आदि-शंकराचार्य द्वारा दिया गया, के अनुसार, द्वैतवाद अंतरिम रूप से विचारों की व्याख्या करता है और गैर-द्वैतवाद विचारों कि व्ताख्या

के लिए मुख्य तौर विचारित किया गया है। एक और दृष्टिकोण जो माधवाचार्य के द्वारा दिया गया, गैर-द्वैतवादी विचारों को नहीं मानता है और द्वैतवाद पर जोर देता है। वेदांत-सूत्र का मीमांसा-सूत्र के साथ संबंध बता पाना मुश्किल है। जैमिनी की जांच अवधारणा धर्म पर आधारित है अर्थात क्या किया जाना चाहिए है; बादरायण की जांच का केंद्रीय विषय ब्रह्म अर्थात निरपेक्ष वास्तविकता है।

अध्यात्मविज्ञान (Metaphysics): वेदांत दर्शन आध्यात्मिक तीन श्रेणियों ब्रह्म (परम वास्तविकता), जीव / आत्मा (आत्मा, स्व) और प्रकृति (भौतिक जगत) के बीच संबंध पर चर्चा करता है।

ब्रह्म / ईश्वर (Brahman/ Ishvara): शंकर, प्रश्न Prasna उपनिषद के सबूत पर, ब्रह्म से सम्बंधित दो धारणाएं की बात करता है: अविभाजित या उच्चतर ब्रह्म और कमतर ब्रह्म या ब्रह्मांड निर्माता।

पार या उच्चतर ब्रह्म – अविभाजित undifferentiated, निरपेक्ष, अनंत, दिव्य, और सभी सोच, वार्तों व संबंधों से परे ब्रह्म भाषण को एक पार-ब्रह्म, निर्विशेष-ब्रह्म या निर्गुण-ब्रह्म के रूप में परिभाषित किया गया है, और जो एक आध्यात्मिक अनन्त है।

अपरा या निचले ब्रह्म - गुणों के साथ ब्रह्म को अपरा ब्रह्म या सगुण ब्रह्म के रूप में परिभाषित किया गया है। सगुण ब्रह्म विशेषताओं के साथ संपन्न होता है और धर्म के निजी भगवान का प्रतिनिधित्व करता है।

शंकर का अद्वैत, अविभाजित अनन्त को अंतिम सत्य स्वीकार करता है। वह अपने दर्शन में भगवान को शामिल करता है जो सगुण ब्रह्म के रूप में है एक ब्रह्म जो माया Maya का एक रूप है। रामानुज, विशिष्टाद्वैत वेदांत के अपने निर्माण में, अविभाजित undifferentiated को समझ से बाहर मानते हुए खारिज कर देता है और उपनिषदों की व्याख्यानुसार, ईश्वर, एक सगुण ब्रह्म को एक वास्तविकता के रूप में स्वीकार करता है। माधव, द्वैत दर्शन को मानते हुए, का कहना है कि विष्णु सुप्रीम भगवान है, उपनिषदों के अनुसार एक निजी भगवान के साथ ब्रह्म, या निरपेक्ष वास्तविकता की एक नई पहचान, जैसाकि रामानुज ने कहा था। निम्बार्क ने, उसकी द्वैत-अद्वैत dvaitadvata दर्शन में, ब्रह्म को दोनों निर्गुण और सगुण के रूप में स्वीकार किया है। वल्लभ ने, उसकी शुद्धाद्वैत shuddhadvaita दर्शन में, न केवल ब्रह्म के तिगुन (ट्रिपल) सात्विक सार को स्वीकार किया है, लेकिन यह भी कि उसको अभिव्यक्ति के रूप में (व्यक्तिगत) भगवान (ईश्वर), वस्तु के रूप में और व्यक्तिगत आत्माओं के रूप में भी माना है।

ब्रह्म और जीव / आत्मा के बीच संबंध: वेदांत के स्कूल, आत्मा और ब्रह्म / ईश्वर के बीच के संबंध को देखने की, उनकी अवधारणा में अलग-अलग हैं:

- अद्वैत वेदांत के अनुसार, दोनों समान हैं और वहाँ कोई अंतर नहीं है।
- विशिष्टाद्वैत के अनुसार, जीवात्मा jivatman और ब्रह्म के बीच पूर्णतया स्पष्ट अंतर है। हालांकि, हकीकत में मौलिकता या एकान्किता (oneness) को एक जैविक एकता (विशिष्ट्कीय vishistaikya) के अर्थ में समझा जा सकता है। ब्रह्म अकेला ही सभी जीवात्माओं से संबंधित है और ब्रह्मांड एक परम वास्तविकता है।
- द्वैत के अनुसार, जीवात्मा पूरी तरह से और हमेशा ही ब्रह्म से अलग है।
- Shuddhadvaita (शुद्ध अद्वैतवाद) के अनुसार, जीवात्मा और ब्रह्म समान हैं, लेकिन दोनों, बदलने के अनुभव से ब्रह्मांड के साथ-साथ, कृष्ण ही हैं।
- माधव ने कहा, "मनुष्य भगवान का दास है," और उसी अनुसार उसने उसके द्वैत दर्शन की स्थापना की।
- रामानुज ने कहा: "मनुष्य एक किरण या भगवान की चिंगारी है," और उसी अनुसार उसने उसके विशिष्टाद्वैत दर्शन की स्थापना की।
- शंकर ने कहा, "मनुष्य ब्रह्म या शाश्वत आत्मा के समान है," और उसी अनुसार उसने उसके केवल Kevala अद्वैत दर्शन की स्थापना की।

Pramana: प्रमाण भारतीय दर्शन में ज्ञान मीमांसा को संदर्भित करता है और विश्वसनीय और वैध साधन है जिसके द्वारा मनुष्य सही, सच्चा ज्ञान हासिल कर सकता है। कैसे सही ज्ञान हासिल किया जा सकता है, और किस हद तक किसी के या कुछ के बारे में उचित ज्ञान हासिल किया जा सकता है, प्रमाण इस तरफ ध्यान आकर्षित कर सकता है। प्राचीन और मध्ययुगीन भारतीय ग्रंथ, सही ज्ञान, सही साधन के रूप में और सत्य के लिए छह प्रमाण की पहचान करते हैं: प्रत्यक्ष (अनुभूति), अनुमान (निष्कर्ष), उपमान (तुलना और सादृश्य), अर्थपति Arthapatti (परिस्थितियों से अभिधारणा, व्युत्पति), अनुपलब्दी Anupalabdi (गैर-अनुभूति, नकारात्मक / संज्ञानात्मक सबूत) और शब्द (अतीत या वर्तमान विश्वसनीय विशेषज्ञों की मौखिक गवाही)। वेदांत के विभिन्न स्कूल ऐतिहासिक दृष्टि से असहमत हैं, कि छह में से कौन epistemically मान्य हैं:

- अद्वैत वेदांत विकसित है और सभी छह प्रमाणों को स्वीकार करता है।
- अनुभूति, निष्कर्ष और गवाही - विशिष्टाद्वैत और द्वैत केवल इन तीन प्रमाणों को स्वीकार करते हैं।

- अद्वैत और विशिष्टाद्वैत स्कूल, ज्ञान के सबसे विश्वसनीय स्रोत के रूप में प्रत्यक्ष (अनुभूति) पर विचार करते हुए लिखित सबूत को माध्यमिक मानते है। द्वैत में, शब्द (मौखिक) ज्ञान का सबसे प्रामाणिक साधन माना जाता है।

कारण और प्रभाव की परिकल्पना: वेदांत के सभी स्कूल सत्कार्यवाद Satkaryavada कि परिकल्पना मानते है, जिसका अर्थ है कि कारण में प्रभाव पूर्व में ही विद्यमान होता है। लेकिन वहाँ प्रभाव की स्थिति यानि संसार, पर दो अलग-अलग विचार हैं। वेदांत के अधिकांश स्कूल, सांख्य भी, परिणामवाद Parinamavada का समर्थन करते हैं, कि दुनिया ब्रह्म का एक वास्तविक परिवर्तन (parinama) है। बादरायण, आदि शंकर और अद्वैत के विपरीत, वेदान्तियों Vedantists का एक अलग दृष्टिकोण है। विवर्तवाद Vivartavada का कहना है कि प्रभाव, ये दुनिया, केवल इसके कारण, ब्रह्म का एक अवास्तविक (vivarta) परिवर्तन है।

आम विशेषताएं: वेदांत के सभी स्कूल, निम्नलिखित कुछ सामान्य सुविधाओं को साझा करते हैं:

- ब्रह्म, मौजूद है अपरिवर्तनीय सुप्रीम कारण है।
- स्व (आत्मा) मौजूद है।
- उपनिषद ज्ञान का एक विश्वसनीय स्रोत (प्रमाण में श्रुति शब्द) हैं; वेदांत ब्रह्म, आत्मा और उसके ज्ञान की खोज ही है।
- बंधन संस्कार, मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र परिणाम है। मोक्ष (लिबरेशन) इस चक्र से मुक्ति है।

वेदांत अनुष्ठान को त्याग के पक्ष में खारिज करते है, जो वेदांत को मीमांसा के साथ असंगत बनाता है।

प्रभाव: वेदांत कई हिन्दू धर्म परंपराओं की नींव है। उदाहरण के लिए, दक्षिण और दक्षिण-पूर्वी भारत का श्री वैष्णविस्म, रामानुज के विशिष्टाद्वैत वेदांत पर आधारित है। रामानंद ने उत्तर, पूर्व, मध्य और पश्चिम भारत में वैष्णव भक्ति आंदोलन का नेतृत्व किया जोकि अपने दार्शनिक और आस्तिक आधार विशिष्टाद्वैत से लेता है। पूर्वी भारत, उत्तर भारत (विशेष रूप से ब्रज क्षेत्र), पश्चिम और मध्य भारत के भक्ति वैष्णविस्म, बड़ी संख्या में भेद-अभेद वेदांत के विभिन्न उप स्कूलों पर आधारित हैं. अद्वैत वेदांत ने असम के पूर्वोत्तर राज्य में कृष्णा वैष्णव को प्रभावित किया। माधव स्कूल का वैष्णविस्म जो तटीय कर्नाटक में पाया जाता है, द्वैत वेदांत पर आधारित है। शक्तिस्म Shaktism, या परंपरायें जहां एक देवी को ब्रह्म के समान माना जाता है,

वैसे ही अद्वैत वेदांत के अद्वैतवाद परिसर और हिंदू दर्शन के सांख्य-योग स्कूल की द्वैतवाद परिसर के एक समन्वयता से फैला है, कभी कभी इसे शक्तिद्वैतवाद Shaktadavaitavada (शाब्दिक, गैर-द्वैतवाद nondualistic पथ) के रूप में भी देखते हैं। अगमास Agamas, शैव का शास्त्रीय साहित्य, जोकि स्वंतत्र निर्मित है, भी वेदांत और परिस्थितियों से सम्बंधित है। 92 अग्मास Agamas में से दस द्वैतवादी (द्वैत) अगम ग्रंथों हैं, अठारह योग्य अद्वैतवाद-सह-द्वैतवाद (bhedabheda), और चौंसठ वेदांत (अद्वैत) ग्रंथ हैं। जबकि शिव शास्त्र द्वैतवादी हैं, भैरव शास्त्र, वेदांतिक हैं।

नव-वेदांत जिसे हिंदू आधुनिकवाद, नव-हिंदूवाद, और नव-अद्वैत कहा जाता है, 19वीं सदी में विकसित हिंदू धर्म की कुछ व्याख्याओं को चिह्नित करता है। इन आधुनिक व्याख्याओं, पारंपरिक भारतीय धर्म, विशेष रूप से अद्वैत वेदांत, जो कैंद्रीय या हिंदू संस्कृति के लिए मौलिक रूप कहा जाता है, में पश्चिमी विचारों को शामिल किया गया है। यह अद्वैत वेदांत का आधुनिक रूप है और यह भारतीय बौद्धिक सोच में एक प्रमुख शक्ति बन गया है। यह 19वीं सदी में औपनिवेशिक ब्रिटिश शासन के साथ, हिंदुओं को स्वतंत्रता के लिए उनके संघर्ष में एकजुट करते हुए विकसित हुआ। नव-वेदान्तियों ने तर्क दिया है कि ये छह ऐतिहासिक सिस्टम एक ही सच्चाई पर हिन्दू दृष्टिकोण कि तरह हैं, एक कम्पास पर अंकों की तरह, सभी वैध हैं, सभी पूरक हैं, और सभी एक ही सत्य का आवाह्नं करते हैं। ये घटनायें विशेष रूप से 1784 में पश्चिमी बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना के बाद, ब्रिटिश राज के दौरान उभरे हिंदू पुनर्जागरण का हिस्सा थी। पश्चिमी ओरिएन्त्लिस्त्स ने हिंदू धर्म के सार की खोज कर, एक रूप में वेदांत की एक भी व्याख्या होने की हिंदू धर्म की धारणा से तैयार धार्मिक अमल के एकीकृत शरीर, वास्तविकता में वेदांत और हिंदू धर्म के भीतर इसे, परंपराओं की विविधता के रूप में स्वीकार कर लिया। विश्ववाद और स्थायित्ववाद के विचारों के साथ हिंदू सुधारकों द्वारा, व्यापक सहिष्णुता और स्वीकार्यता का नव-वेदांत के इस एक वेदांत के इस विचार को एक साथ Judaeo-ईसाई-इस्लामी मिशनरियों के विवादात्मक स्वमताभिमान के खिलाफ एक चुनौती की तरह इस्तेमाल किया गया था। औपनिवेशिक युग नव-वेदान्तियों ने, वेदांत परंपरा के हिस्से के रूप में सम्मिलित बौद्ध दर्शन को, वेदांत परंपरा के एक सदस्य के रूप में माना, और फिर तर्क दिया है कि दुनिया के सभी धर्म दर्शनात्मक निश्चितता philosophia perennis के रूप में, हिन्दू और गैर-हिन्दू मतभेद की अनदेखी करते हुए, गैर-द्वैतवादी ही हैं। अद्वैत वेदांत हिन्दू धर्म की रहस्यमय प्रकृति

के उदाहरणस्वरूप उदाहरण के रूप में माना जाने लगा, तो नव-वेदांत को एक सार्वभौमिक धर्म के रूप में प्रस्तुत किया गया।

अद्वैत वेदांत के इस सार्वभौमिकता और स्थायित्ववादी व्याख्या को लोकप्रिय बनाने में एक प्रमुख प्रस्तावक स्वामी विवेकानंद थे, जिन्होंने हिंदू धर्म के पुनरुद्धार में एक प्रमुख भूमिका निभाई है, और वेदांत सोसायटी (रामकृष्ण आदेश के अंतरराष्ट्रीय हाथ) के माध्यम से पश्चिम में अद्वैत वेदांत का प्रसार किया। अद्वैत वेदांत की उसकी व्याख्या को ही नव-वेदांत कहा गया है। औपनिवेशिक युग में हिंदू धर्म की लोकप्रियता और समझ, इस नव-वेदांत का ही वर्चस्व था। इन विचारों ने हिंदू राष्ट्रवादिता की अच्छी तरह से सेवा की। औपनिवेशिक दमन के खिलाफ, नव-वेदांत ने एक राष्ट्रवादी विचारधारा निर्मित कर उनके संघर्ष में हिंदुओं को एकजुट करने का एक अवसर प्रदान किया। रामकृष्ण, विवेकानंद और अरविंद नव-वेदांती (उत्तरार्द्ध यह यथार्थवादी अद्वैत कहा गया) माने गये, वेदांत ने अद्वैतिन के विचार कि दुनिया भ्रामक है, को खारिज कर दिया। जैसा कि अरबिंदो ने यह कहा कि दुनिया संभालने के लिए, पूरी तरह वास्तविक होने को, दार्शनिकों को, सार्वभौमिक भ्रामिकता से सार्वभौमिक यथार्थवाद की और स्थानांतरित करने की दार्शनिक अर्थों में सख्त जरूरत है।

20वीं सदी में तुलना

COMPARISONS IN THE 20TH CENTURY

भारतीय सभ्यता पांच हजार साल से भी अधिक पुरानी है। इस लंबी अवधि के दौरान यह काफी उन्नत और तरह-तरह की संस्कृति का एक अनूठा संगम हुई है। देश के असंख्य, क्षेत्रीय, सामाजिक और भाषाई विविधता के बावजूद, हमेशा भारतीय संस्कृति में एक बुनियादी एकता रही है। इसके अलावा, इस संस्कृति ने देश के भीतर अनगिनत युद्धों, बाहर से हमलों और अंग्रेजों द्वारा अधीनता के दो शताब्दियों के बावजूद, वैदिक काल से वर्तमान दिन तक अटूट निरंतरता को बनाए रखा है। ये अविनाशी एकता और भारतीय संस्कृति की अटूट निरंतरता, इसकी गहरी आध्यात्मिक नींव से निकली है। संतों ने पाया है कि मनुष्य की वास्तविक प्रकृति, शरीर या मन नहीं है, जो कभी भी बदल जाता है और नाशवान है, बल्कि भावना (spirit) है जो अपरिवर्तनीय, अमर, शुद्ध चेतना है। इसे आत्मा कहा जाता है। आत्मा मनुष्य की सच्ची स्व, सच्ची ज्ञाता, आदमी का ज्ञान, खुशी और सता का असली स्रोत है। दर्शन ने, वास्तविकता का एक सही दृष्टिकोण प्रदान किया है, जबकि धर्म ने

जीवन का सही रास्ता दिखाया है; दर्शन ने दृष्टियाकन प्रदान किया है, जबकि धर्म ने पूर्ति के बारे में बताया; दर्शन परिकल्पना थी, और धर्म का अर्थ पालना या प्रयोग करना था। प्राचीन भारत में दर्शन और धर्म एक दूसरे के अनुपूरक थे। वास्तव में, उन्होंने एक साथ एक एकल प्रयास, एक अभिन्न अनुशासन का गठन किया। 20वीं सदी में, अद्वैत, पश्चिमी दर्शन और विज्ञान के बीच तुलना ने एक उच्च उड़ान भरी। ब्रायन डेविड जोसेफसन, वेल्श भौतिक विज्ञानी, और नोबेल पुरस्कार विजेता का कहना है:

"वेदांत और सांख्य, मन और विचार प्रक्रिया के नियम, जो क्वांटम फील्ड अर्थात परमाणु और आणविक स्तर पर संचालन और कणों के वितरण के लिए सह संबंधित हैं, की कुंजी है"।

प्रश्न (Questions)

1. भारतीय दर्शन – सांख्य की विस्तार से चर्चा करें।
2. भारतीय दर्शन – सांख्य के आधार पर पुरुष और प्रकृति के बीच अंतर करें।
3. भारतीय दर्शन – सांख्य में अनुभूति कैसे वर्णित है?
4. भारतीय दर्शन – सांख्य के आधार पर, ज्ञान की परिकल्पना की व्याख्या करें।
5. भारतीय दर्शन - वेदांत की विस्तार से चर्चा करें।
6. स्कूल, जिन्होंने भारतीय दर्शन - वेदांत को अपनाया, की चर्चा करें।
7. भारतीय दर्शन, सांख्य और वेदांत में अंतर स्पष्ट करें।

Chapter 5 पश्चिमी दर्शन की ज्ञान-मीमांसा

EPISTEMOLOGY OF WESTERN PHILOSOPHIES

बुद्धि-चातुर्य ही ज्ञान नहीं है। कोई ज्ञानी हो सकता है, लेकिन वह बुद्धिमान भी हो, ऐसा जरूरी नहीं है। बुद्धि ज्ञान के साथ साथ सभी परिस्थितियों में इसके निहितार्थ का प्रयास भी करती है। इस प्रकार दर्शन आदमी को वो बुद्धि-चातुर्य देता है जिसकी सहायता से वे पूरे ब्रह्मांड और खुद को और आसपास के लोगों के संबंध में इसके निहितार्थ को समझ सके। अपने 'रिपब्लिक' में प्लेटो ने कहा कि "वह जिसे हर प्रकार के ज्ञान के लिए एक भूख है और जो जानने के लिए उत्सुक है और कभी नहीं संतुष्ट होता है, उसे ही दार्शनिक कहा जा सकता है"। दार्शनिक विचारशील है, एक विचारशील मूड में रहता है, अपने बढ़ते बुद्धि-चातुर्य की मदद से नए विचार, नए ज्ञान की खोज में रहता है। दार्शनिकों को उनके दृष्टिकोण दार्शनिक पूछताछ का जवाब देने के अनुसार आदर्शवादी, प्रकृतिवादी, दंभी, अस्तित्ववादी, स्थायित्ववादी, यथार्थवादी, जरूरीवाद, प्रगतिवाद आदि विभिन्न दार्शनिक स्कूल के तहत वर्गीकृत किया जा सकता हैं। दर्शन, संस्कृति से संस्कृति, जगह से जगह और समय-समय पर बदलता रहता हैं। इस प्रकार विभिन्न विचारधाराओं वाले विभिन्न व्यक्ति, जीवन के तरीके से, दर्शन के विभिन्न प्रकार हो जाते हैं। इधर, दार्शनिक की तलाश व्यक्ति को समझने, प्रकृति और ब्रह्मांड के लिए है। इसमें मानव जाति के अस्तित्व की प्रकृति और दुनिया में उसकी भूमिका की समझ भी शामिल है। कैसे ब्रह्मांड आरंभ हुआ और कैसे विकासित हुआ? यह किस दुर्घटना या डिजाइन के द्वारा आया? इसके अस्तित्व का क्या प्रयोजन है? क्या वहाँ कोई भगवान है? यदि कोई भगवान है, तो वहाँ एक या एक से अधिक है? भगवान की विशेषतायें क्या हैं? अगर भगवान दोनों सब से अच्छा और सब से शक्तिशाली है, तो बुराई क्यों मौजूद है? अगर भगवान मौजूद है, तो उसका मनुष्य और उसकी रोजमर्रा की जिंदगी, असली दुनिया से क्या संबंध है? मन और शरीर के बीच क्या संबंध है? किस हद तक व्यक्ति स्वतंत्र हैं? क्या उनके विचारों और कार्यों को उनके पर्यावरण, विरासत या किसी दिव्य शक्ति द्वारा निर्धारित किया जाता है, या उनकी कोई स्वतंत्र इच्छा है, या नहीं? लोगों ने स्पष्ट रूप से इन सवालों पर विभिन्न परिस्थितियों को अपनाया है और ये परिस्थितियां उनके राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और शैक्षिक आदर्शों और प्रथाओं को प्रभावित करती है। आध्यात्मिकता या परम वास्तविकता का मुद्दा, शिक्षा के किसी भी कार्यक्रम के

लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि स्कूल के शैक्षिक कार्यक्रम बजाय कल्पना, भ्रम, त्रुटि, या कल्पना के, तथ्य और वास्तविकता पर आधारित होने चाहिए। परिवर्तनीय आध्यात्मिक विश्वास, विभिन्न शैक्षिक दृष्टिकोण और शिक्षा के लिए अलग सिस्टम के लिए इशारा करते हैं। विभिन्न मानवविज्ञान परिस्थितियां, शैक्षिक प्रक्रिया के लिए काफी अलग अलग दृष्टिकोण उत्पादित करती हैं। आध्यात्मिकता सट्टा आधारित है और कारण-प्रभाव संबंधों की प्रकृति जैसे मुद्दों पर केंद्रित है। यह शैक्षिक लक्ष्यों, उपयुक्त सामग्री और शैक्षिक उद्देश्यों के चयन, और शिक्षार्थियों की सामान्य प्रकृति के प्रति नजरिए के बारे में विचार करने के मामले में शिक्षण से संबंधित है। ज्ञानमीमांसा प्रकृति और ज्ञान के दायरे के साथ संबंध दर्शन की शाखा है और इसे ज्ञान की परिकल्पना के रूप में भी जाना जाता है। ज्ञानमीमांसा कई बुनियादी मुद्दों के जवाब चाहता है। एक यह कि क्या वास्तविकता को जाना जा सकता है? अधिकांश लोगों का दावा है कि वास्तविकता को जाना जा सकता है। हालांकि, एक बार वे उस स्थिति में आ जाएँ तो, वे जान सकते हैं कि किन माध्यमों से वास्तविकता को जाना जा सकता है और ये भी कि कैसे वे ज्ञान की वैधता तय कर पायें। पूर्ण सत्य ब्रह्मांड में मौजूद है, तो निश्चित रूप से शिक्षक इसे जानना और खोजना चाहेंगे और इसे स्कूल के पाठ्यक्रम का कोर बनाना चाहिये। सापेक्षता और पूर्ण सच्चाई के मुद्दे से संबंधित है कि क्या ज्ञान व्यक्तिपरक है या उद्देश्यपूर्ण, और क्या वहाँ कोई सच्चाई है जो मानवीय अनुभव से स्वतंत्र है। संवेदी डेटा के अस्तित्व से इनकार नहीं किया जा सकता है। अधिकांश लोग इसे वास्तविकता के प्रतिनिधित्व के रूप में स्वीकार करते हैं। मनुष्य ने वैज्ञानिक उपकरणों का उनके होश की रैंज का विस्तार करने के लिए आविष्कार किया है, लेकिन इन उपकरणों की सही निर्भरता का पता लगाना असंभव है क्योंकि कोई भी रिकॉर्डिंग मानव मन के कुल प्रभाव, व्याख्या करना और विकृत कामुक धारणा को नहीं जान सकती है।

आदर्शवाद (Idealism)

दार्शनिक सिद्धांत (doctrine) जो सोच की श्रेणी विचारों के साथ जुड़े वजह से उपजे, आदर्शवाद है। आदर्शवाद (idealism), ग्रीक शब्द, 'idein' जिसका अर्थ 'देखने के लिए' है, से निकला है। आदर्शवाद कल्पना की पुष्टि करता है और सुंदरता के एक मानसिक रूप, पूर्णता का एक मानक, सौंदर्य प्रकृतिवाद और यथार्थवाद को साकार करने के लिए प्रयास करता है। आदर्शवाद प्लेटो, तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व विचारक, से सम्बंधित है, जिनका मानना था कि ये एक उद्देश्यपूर्ण सच्चाई है, जिसे

अपरिवर्तनीय दुनिया के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। शिक्षा और ज्ञान के बारे में, प्लेटो की सोच, महत्वपूर्ण है। प्लेटो के अनुसार, नैतिक रूप से अच्छा होना ही सच्चा ज्ञान है। लेकिन सच्चा ज्ञान प्राप्त करने की प्रक्रिया दर्दनाक है, क्योंकि हम में से ज्यादातर इंद्रियों की दुनिया में जकड़े हुए हैं और परे देखने में असमर्थ है। साफ दृष्टि और ज्ञान, कठोर मानसिक और वैचारिक प्रशिक्षण के बाद, पूर्वाग्रह और अज्ञानता पर काबू पाने में सक्षम है। उस समय से अब तक, आदर्शवाद का हमारे समाज पर एक प्रमुख दार्शनिक प्रभाव रहा है। हालांकि आदर्शवाद अब उतना मजबूत नहीं है जैसा पहले था, यह अभी भी समकालीन धार्मिक अध्ययन और नैतिक दर्शन के कुछ पहलुओं के रूप में कुछ क्षेत्रों में जीवित है। आदर्शवाद एक दार्शनिक परिकल्पना है जिसका कहना है कि परम वास्तविकता की प्रकृति, मन या विचारों पर आधारित है। यह मानता है कि तथाकथित बाहरी या असली दुनिया, मन, चेतना, या अनुभूति से अलग नहीं है। आदर्शवाद कोई भी दर्शन है, जिसका तर्क है कि ज्ञेय केवल चेतना या चेतना की सामग्री है; बाहर की दुनिया में कुछ भी नहीं है, अगर ऐसी जगह वास्तव में मौजूद है। दरअसल, आदर्शवाद अक्सर बहस का रूप ले लेता है कि असली चीजे मानसिक संस्थायें हैं, न की शारीरिक बातें और ये तर्क का विषय बन जाता है कि वास्तविकता मन पर निर्भर है बजाय इसके कि ये स्वतंत्र है। आदर्शवाद के कुछ संकीर्ण संस्करणों का तर्क है, कि वास्तविकता के बारे में हमारी समझ हमारे मन के कामकाज को दर्शाती है और पहली और सबसे बड़ी बात यही है कि वस्तुओं के गुण, जैसा मन उन्हें मानता है, से अलग स्वतंत्र बिलकुल नहीं है। इसके अलावा, आदर्शवाद में प्रकृति और मन की पहचान जिस पर वास्तविकता निर्भर है, को विभिन्न प्रकार के आदर्शवादी समूहों में बांटा गया है। कुछ लोगों का तर्क है कि प्रकृति से बाहर कुछ विषयपरक मन है; कुछ लोगों का तर्क है कि यह बस कारण या समझदारी की आम शक्ति है; कुछ लोगों का तर्क है कि यह समाज के सामूहिक मानसिक संकाये है; और कुछ मनुष्य के व्यक्तिगत मन पर ध्यान केंद्रित करते हैं। संक्षेप में, आदर्शवाद की मुख्य बात है कि विचार और ज्ञान, वास्तविक वास्तविकता हैं। दुनिया में बदलने वाली बहुत सी बातें है, लेकिन विचार और ज्ञान स्थायी हैं। आदर्शवाद को अक्सर विचार-वाद के रूप में समझा जाता है। आदर्शवादियों का मानना है कि विचार जीवन को बदल सकते हैं। एक व्यक्ति का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा मन है। इसे पोषित और विकसित किया जाने की जरूरत है। आदर्शवाद की पर्याप्त समझ प्राप्त करने के लिए, यह आवश्यक है कि आम तौर पर इस दर्शन के साथ जुड़े चुने गए दार्शनिकों के काम को समझा जाये। कोई दो

दार्शनिकों कभी हर बात पर सहमत नहीं होते हैं, तो आदर्शवाद या किसी भी अन्य स्कूल को ठीक से समझने के लिए, व्यक्तिगत दार्शनिकों के विभिन्न तरीकों की जांच करना बुद्धिमानी होगी। यह निम्नलिखित तीन क्षेत्रों की खोज के द्वारा पूरा किया जा सकता है:

- प्लेटो का आदर्शवाद - वहाँ रूप और विचार, एक आदर्श दायरे में मौजूद है और हमारी दुनिया तो उस दायरे का केवल साया ही है; केवल विचार ही जाने जाते है या वास्तविकता हो सकते है।
- धार्मिक आदर्शवाद - इस परिकल्पना का तर्क है कि सभी ज्ञान कथित घटनायें है जो श्रेणियों में विभाजित है।
- आधुनिक आदर्शवाद - सभी वस्तुयें कुछ विचारों के समान हैं और आदर्श ज्ञान ही विचारों की प्रणाली है।

प्लेटो का आदर्शवाद

प्लाटोवाद दर्शन का एक प्राचीन स्कूल है जो प्लेटो द्वारा स्थापित किया गया है। शुरुआत में, ये स्कूल एथेंस की दीवारों के बाहर अकादमी नामक स्थान पर भौतिक रूप में अस्तित्व में आया था, साथ ही इसे एक साझा दृष्टिकोण के जरिये बौद्धिक एकता को दर्शनात्म्कीय करना था। प्लेटो आदर्शवाद आमतौर पर प्लेटो के रूप या विचारों की परिकल्पना है, जो शायद उच्च शैक्षिक दर्शन में सबसे विवादित प्रश्नों में से एक सटीक दार्शनिक अर्थ को दर्शाता है। प्लेटो का तर्क कि असली दुनिया विचारों की दुनिया ही है, ने पश्चिमी धर्म के विकास में एक बड़ी भूमिका निभाई है। कुछ आलोचक प्लेटो के तर्क कि सत्य एक अमूर्त है, कि आलोचना करते हैं। प्लेटो के आदर्शवाद के मुताबिक, फार्म और विचारों के रूप में का एक आदर्श दायरा मौजूद है और हमारी दुनिया तो उस दायरे का केवल साया भर है। प्लेटो ने दो कार्यों में उनके विचारों को प्रस्तुत किया: प्रजातांत्रिक और कानूनी। ये सच्चाई के लिए खोज के महत्व में विश्वास करते थे, क्योंकि सच्चाई सही अनन्त है। उन्होंने वस्तु की दुनिया से विचारों की दुनिया को अलग करने के बारे में लिखा था। विचारों (ideas) को स्थिर होना चाहिए, लेकिन वस्तुओं की इस दुनिया में सूचना और विचार लगातार अपनी संवेदी प्रकृति की वजह से बदलते रहते हैं। इसलिए प्लेटो का आदर्शवाद महत्वपूर्ण चर्चा, या द्वंद्वात्मक के रूप में सच्चा ज्ञान को राय से अलग रखने का सुझाव देता है। चूंकि चर्चा के अंत में, विचार या राय संश्लेषित होना शुरू हो जाते हैं, ये सच के करीब हो जाते हैं। ज्ञान कुशल पूछताछ के माध्यम से प्राप्त किया जा सकने वाली खोज की एक प्रक्रिया है। उदाहरण के लिए, एक शाखा या दो के साथ

एक विशेष पेड़ जो संभवतः जीवित है या शायद मर चुका है, और इसकी छाल में दो प्रेमियों के पहले अक्षर खुदा होना, पेड़ सत्ता सार रूप से अलग है। एक पेड़ आदर्श है जो हम में से प्रत्येक को हमें, हमारे चारों तरफ पेड़ों की अपूर्ण प्रतिबिंब की पहचान करने की अनुमति देता है। इस दर्शन में एक बयान ये है कि गणित को बनाया नहीं गया है लेकिन खोजा गया है। इस शोध में गणितीय और गैर गणितीय के बीच स्पष्ट अंतर है कि अनुमान है कि यह कला, संगीत और साहित्य में रचनात्मक प्रयासों के लिए लागू होता है। प्लेटो ने पाइथागोरस व पाइथागोरस थ्योरम को एक साथ रखा है जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि उनके अनुयायियों का दावा था कि दुनिया को सचमुच नंबरों से बनाया गया था; सार और पूर्ण रूप। प्लेटो शिक्षा के क्षेत्र में भागीदारी के महत्व और अमूर्त सोच को कंक्रीट से पूर्ण करने में विश्वास करते थे। उनका मानना था कि व्यक्तिगत मतभेद मौजूद होते हैं और विशेष लोगों को उनके ज्ञान के लिए पुरस्कृत किया जाना चाहिए। इस सोच के साथ विचार यह है कि लड़कियों और लड़कों को शिक्षा के लिए समान अवसर देना चाहिए। कार्यकर्ता, सैन्य कर्मि, और शासक, प्लेटो की काल्पनिक समाज में शिक्षा के तीन सामाजिक वर्गों थे। उनका मानना था कि शासक या राजा बहुत ज्ञान के साथ एक अच्छा व्यक्ति है क्योंकि यह केवल अज्ञान ही है जो बुराई को प्रोत्साहित करता है।

धार्मिक आदर्शवाद

धर्म और आदर्शवाद बारीकी से जुड़े हुए हैं। हिप्पो के सैंट अगस्टीन, एक बिशप, एक कंफ़ेसर, चर्च के एक डॉक्टर, और कैथोलिक चर्च के महान विचारकों में से एक, चर्चा करते हैं कि ब्रह्मांड को भगवान के शहर और मनुष्य के शहर में बांटा जा रहा है। भगवान के शहर को सच्चाई और अच्छाई से नियंत्रित किया जाता है, जबकि मनुष्य के शहर को इंद्रियों के द्वारा नियंत्रित किया जाता है। यह प्लेटो की विचारों की दुनिया और वस्तु की दुनिया के समान है। धार्मिक विचारकों का मानना था कि मनुष्य ने ज्ञान का निर्माण नहीं किया है, लेकिन खोज की है। ऑगस्टाइन को, प्लेटो की तरह विश्वास नहीं था कि एक व्यक्ति दूसरे को सिखा सकते हैं। इसके बजाय, वे कुशल पूछताछ के माध्यम से समझ सकते हैं। धार्मिक आदर्शवादी व्यक्तियों को भगवान की कृतियों के रूप में देखते हैं, जो आत्मा है और जिनमें भक्ति के तत्वों को विकसित करने की आवश्यकता है। ऑगस्टाइन ने अच्छे को भगवान के रूप में और वस्तु को आदमी: बुराई के रूप में बता बुतपरस्त विचार व्याख्या की है। प्लेटो विज्ञान और कारण के आधार पर पूर्ण सत्य में विश्वास करते थे, जबकि अगस्टीन भगवान में तर्कहीन विश्वास में विश्वास करते थे। अगस्टीन भी ज्ञान की, पुनराविष्कार

के विचारों के साथ समानताएं देखते थे – एडम (आदमी) का पतन, ज्ञान की उत्पत्ति - भगवान द्वारा इसे बनाया जाना, और शैक्षिक दर्शन: सांसारिक ज्ञान गलत था, कारण अधिक विश्वास। उनका मानना था कि विश्वास आधारित ज्ञान चर्च द्वारा निर्धारित किया जाता है और सभी सच्चा ज्ञान परमेश्वर की ओर से आया था। सदियों तक, ईसाई चर्च ने आदर्शवादी दर्शन के साथ पीढ़ियों को शिक्षित किया। इसके अलावा, आदर्शवाद और जूदेव-ईसाई धर्म ko मध्य युग और उसके बाद से यूरोपीय संस्कृति में एकीकृत किया गया। अगस्टीन भी शिक्षा के इतिहास में बहुत प्रभावशाली था, जहां उसने तीन अलग अलग प्रकार के छात्रों कि परिकल्पना को पेश किया और शिक्षकों को निर्देश दिए कि वे उनके शिक्षण शैली को प्रत्येक छात्र के व्यक्तिगत शैली सीखने के लिए अनुकूलित करें। छात्रों के तीन अलग अलग प्रकार हैं:

(क) छात्र जो जानकार शिक्षकों द्वारा अच्छी तरह से शिक्षित किये गये है;

(ख) छात्र जो शिक्षित नहीं है; तथा

(ग) छात्र है जो कम शिक्षित है, लेकिन वे अपने आपको अच्छी तरह से शिक्षित मानते है।

अगर एक छात्र अच्छी तरह से विषयों की एक विस्तृत विविधता में शिक्षित किया गया है, तो शिक्षक को दोहराना नहीं पड़ता कि क्या उन्होंने पहले से ही सीखा है, लेकिन उस सामग्री के साथ छात्र को चुनौती देने के लिए सावधान रहना चाहिए, अभी तक जिसका उन्हें अच्छी तरह से पता नहीं है। शायद सबसे मुश्किल छात्र वह है, जो कम शिक्षित है लेकिन मानता है कि वह कुछ समझता है, जबकि उसे कुछ भुई नहीं पता होता है। अगस्टीन ने इस तरह के छात्र के साथ विनम्र रहते हुए उसे समझ और ज्ञान के मध्य अंतर दिखाने के महत्त्व पर बल दिया। एक अतिरिक्त मौलिक विचार जो अगस्टीन ने शुरु किया कि वे अपने छात्रों के सवाल पूछने पर सकारात्मक जवाब दे, बजाय ये महत्त्व देते हुए कि छात्र अपने शिक्षक को सवाल पूछकर बाधित कर रहा है। अगस्टीन ने अपने शिक्षण दर्शन की, सख्त अनुशासन के पारंपरिक बाइबिल आधारित अभ्यास, जहां वह बच्चों को जानने के लिए एक प्रोत्साहन के रूप में सजा का उपयोग करते थे, के साथ सहमति के साथ संतुलित बनाने की कोशिश की। अगस्टीन ने माना कि सभी लोग बुराई की ओर जाते हैं, और इसलिए छात्रों को शारीरिक रूप से दंडित किया जाना चाहिए जब वे अपनी बुराई से अपने कार्यों को निर्देशित करते है।

आधुनिक आदर्शवाद

पंद्रहवीं और सोलहवीं सदी में आधुनिक काल की शुरुआत से, आदर्शवाद काफी हद तक प्रनालिकृत systematization और आत्मवाद subjectivism के साथ पहचान बन गया। आधुनिक आदर्शवाद की कुछ प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

(क) विश्वास कि वास्तविकता में शामिल हैं, भौतिक जगत के अलावा, जो इसका अतिक्रमण करे, इससे बेहतर हो, और जो शाश्वत है। यह परम वास्तविकता गैर-भौतिक है और सबसे अच्छा मन के द्वारा विशेषित होती है;

(ख) शारीरिक वास्तविकतायें, उत्कृष्ट वास्तविकताओं जो उनसे संबंधित हैं, से उनके अर्थ आकर्षित करती हैं;

(ग) कि मानव प्रकृति से जो विशिष्ट है, वह मन है। मन भौतिक इकाई, मस्तिष्क से कहीं ज्यादा है,

(घ) मानव जीवन का एक पूर्व निर्धारित उद्देश्य है। इसे उत्कृष्ट मन की तरह ही ऊपर होना है;

(ई) मनुष्य का उद्देश्य बुद्धि के विकास से पूरी हो जाता है और आत्मज्ञान के रूप में जाना जाता है;

(च) अंतिम वास्तविकता में पूर्ण मूल्य शामिल हैं;

(छ) ज्ञान, इंद्रिय अनुभव में कारण जोड़ने के माध्यम से आता है। अब जब तक भौतिक दुनिया, उत्कृष्ट दुनिया को दर्शाता हो, हम उत्कृष्ट की प्रकृति का निर्धारण कर सकते हैं; तथा

(ज) लर्निंग (सीखना) अपने भीतर क्षमता विकसित करने की एक व्यक्तिगत प्रक्रिया है। यह कंडीशनिंग या तथ्यों को अपने मस्तिष्क के अन्दर सूचना डालने का कार्य नहीं है, बल्कि यह आत्म बोध है। लर्निंग खोज की एक प्रक्रिया है।

आधुनिक आदर्शवाद की पहचान रेने देकार्त (Rene Descartes), इम्मानुअल कांत (Immanuel Kant) और जार्ज विल्हेम फ्रेडरिक हेगेल (Georg Wilhelm Friedrich Hegel) के लेखन और विचारों से प्रोत्साहित हुई।

देकार्त, एक फ्रांसीसी दार्शनिक, फ्रांस के दक्षिण में La Haye शहर में पैदा हुआ था। 1606 में, 8 साल की उम्र में, देकार्त ने La Fleche में हेनरी-चतुर्थ के जेसुइट कॉलेज में प्रवेश लिया, जहां उसने साहित्य, व्याकरण, विज्ञान और गणित का अध्ययन किया। अपने कानून की डिग्री के अलावा, देकार्त ने दर्शन, धर्मशास्त्र और दवा का अध्ययन भी किया। सबसे महत्वपूर्ण योगदान देकार्त का अपने दार्शनिक लेखन का था। देकार्त आश्वस्त था कि विज्ञान और गणित को प्रकृति में

सब कुछ समझाने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है, तो वह पहला था जिसने भौतिक जगत को वस्तु और गति के मामले में सोचा, एक विशाल गणितीय रूप से डिजाइन इंजन के रूप में ब्रह्मांड को देखा। देकार्त ने सोचा कि वह मौजूद है क्योंकि वह सोचता है कि वह है क्योंकि वह इंद्रियों के उपयोग के माध्यम से अपने शरीर को महसूस कर सकता है, हालांकि, ये पहले से ही अविश्वसनीय सिद्ध किया जा चुका था। इसलिए, देकार्त मानता है कि ज़ाहिर ज्ञान केवल यह है कि वह कुछ सोच रहा है। सोचना ही उसकी मुख्य बात है, क्योंकि इसमें उस पर शक नहीं किया जा सकता है। सोचना, इस प्रकार हर उस व्यक्ति की गतिविधि है, जिससे पता चलता है कि वह तुरंत होश में है।

इम्मानुअल कांत, दुनिया के महान दार्शनिकों में से एक, जर्मनी में, Königsberg के पूर्वी प्रशिया शहर में पैदा हुआ था, स्कूल और विश्वविद्यालय में अध्ययन किया, और एक ट्यूटर और प्रोफेसर के रूप में चालीस से अधिक वर्षों के लिए काम किया। वह घर से पचास से अधिक मील की दूरी पर कभी नहीं गया। हालांकि, उसका जावक जीवन, दिग्गज रूप से शांत और नियमितता से एक था, कांत के बौद्धिक कार्य आसानी से जायज हो गये उसके दावे के साथ कि उसके दर्शन ने एक कोपर्निकस क्रांति को प्रभावित किया है। उसकी केंद्रीय थीसिस - कि संभावित् मानव ज्ञान संभवतः मानव मन की सक्रिय भागीदारी है - सरल है, लेकिन उसका आवेदन ब्यौरा बेहद जटिल हैं। उसकी प्रणाली में, व्यक्तियों को मानवीय अनुभव से मान्य ज्ञान हो सकता है जोकि प्रकृति के वैज्ञानिक कानूनों द्वारा स्थापित किया गया हो। कांत ने कहा कि मानव ज्ञान की सबसे रोचक और उपयोगी किस्में लगभग कृत्रिम निर्णय होते हैं, जो, संभव है जब मन कूद ही अपने खुद के अनुभव की शर्तों को निर्धारित करता है। इस प्रकार, यह हम ही हैं जो गणित में हर संभव सनसनी पर जगह और समय के रूपों को लागू करते है, और यह भी हमी हैं जो सब अनुभव को वैज्ञानिक ज्ञान मानते हैं, जो सभी को समझने की शुद्ध अवधारणाओं को लागू करने से, पदार्थ और करणीय के परंपरागत धारणाओं द्वारा प्रस्तुत करता है। कांत का शिक्षा दर्शन, चरित्र शिक्षा के कुछ पहलुओं को भी शामिल करता है। उन्होंने कहा कि व्यक्ति को एक अंत के रूप में, न की एक साधन के रूप में, समझा जाना चाहिए। उसने कहा कि शिक्षा में, अनुशासन में प्रशिक्षण, संस्कृति, विवेक, और नैतिक प्रशिक्षण को शामिल करना चाहिए। बच्चों को पढ़ने में, सोचने और स्वयं और दूसरों के प्रति कर्तव्य पर जोर देने के लिए भी, उसके दर्शन में महत्वपूर्ण स्थान था।

कांत का आदर्शवाद, विचार प्रक्रिया पर अपनी एकाग्रता और वस्तुओं और मन के बीच सम्बन्ध तथा सार्वभौमिक नैतिक विचारों की प्रकृति पर आधारित है।

जॉर्ज विल्हेम फ्रेडरिक हेगेल, जर्मन दार्शनिक, जर्मन आदर्शवाद के रचनाकारों में से एक है। हेगेल ने मन और स्वभाव, ज्ञान के विषय और उद्देश्य, और मनोविज्ञान, परिस्थति, इतिहास, कला, धर्म, और दर्शन के संबंध में एकीकृत और विकास में, व्यापक दार्शनिक ढांचे, या प्रणाली विकसित की है। विशेष रूप से, उसने मन या आत्मा की एक अवधारणा विकसित की, जो विरोधाभासों और विपक्षों में जोकि अंततः एकीकृत और संयुक्त होती है जैसेकि प्रकृति और स्वतंत्रता में, स्थिरता और अतिक्रमण के बीच, या तो ध्रुव को नष्ट न करने या इसे कम करने के लिए, खुद प्रकट होती है। हेग्लिअनिस्म (Hegelianism) हेगेल का दर्शन सम्बन्धी स्कूलों के लिए एक सामूहिक शब्द है जिनको अभिव्यक्त किया जा सकता है कि तर्कसंगत अकेला असली है, जिसका मतलब है कि सभी वास्तविकतायें, तर्कसंगत श्रेणियों में व्यक्त की जाने में सक्षम है। उसका लक्ष्य था कि दिव्य आदर्शवाद की प्रणाली में वास्तविकता को कृत्रिम एकता के लिए कम कर दिया जाये। हेगेल का कहना है कि अगर उसकी तार्किक प्रणाली को सही लागू किया गया, तो कोई पूर्ण विचारों, जो प्लेटो के अपरिवर्तनीय विचारों के समान है, पर आ जाएगा। प्रकृति को पूर्ण विचारों के विपरीत माना जाता था। विचार और प्रकृति के साथ मिलकर पूर्ण आत्मा, जोकि इतिहास, कला, धर्म, और दर्शन से लिपटी है, के रूप में प्रकट होती है। हेगेल के आदर्शवाद अंतिम पूर्ण आत्मा की खोज में है। उसका तर्क है कि यह संभव है कि मानवता के इतिहास में कुछ व्यक्तियों को सब कुछ आवश्यक पता हो। धर्मशास्त्र में, हेगेल ने जांच के तरीकों में क्रांति ला दी। उनका मानना था कि सार्वभौमिक भावना में भागीदारी के माध्यम से केवल मन और मानव सोच असली है, जो संश्लेषण के माध्यम से, एक द्वंद्वात्मक प्रक्रिया द्वारा, विपक्षता हल करने और आदर्श की ओर प्रगति में प्रतिभागित है।

तार्किक सोच

तार्किक सोच आदर्शवाद की शैक्षिक विरासत है। अरस्तू के (प्लेटो का उत्तराधिकारी) सबसे महत्वपूर्ण नियम चिंता अवधारणा गठन और निगमनात्मक तर्क सम्बन्धी हैं। निगमनात्मक तर्क, तार्किक निष्कर्ष द्वारा सामान्य स्थिति से विशेष स्थिति की ओर प्रगति करता है। ये विचार गणितीय और ज्यामितीय प्रमेय निर्माण का आधार हैं। वे हमें समझाने की अनुमति देते हैं कि क्यों कुछ तर्क परिस्थितियों और उनके निष्कर्ष के बीच गलत रिश्तों के परिणाम के रूप में

दोषपूर्ण हैं। अरस्तू ने झूठे कारण और भ्रम को विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत किया है। इनमें शामिल हैं कारण, जिनमें तर्क भावना या खतरों से अपील में बह जाता है। तर्क के नियमों का सार्वजनिक प्रदर्शन अभी भी मौखिक या डॉक्टरेट थीसिस, जो मध्य युग में विकसित हुई, में अस्तित्व में है। तार्किक और विश्लेषणात्मक सोच, बीसवीं सदी शिक्षा के क्षेत्र में महत्व हासिल कर रही है। प्रनालिवृत संदेह, अनुभववाद और पश्चिमी वैज्ञानिक पद्धति का अग्रदूत बन गया, और उच्च शिक्षा के बचाव में महत्वपूर्ण है जिसकी भूमिका, शक्किमिजाज, संकटकालीन और स्वतंत्र विचारकों को विकसित करने की है। यह शैक्षिक निहितार्थ निम्न हो सकता है:

- महत्वपूर्ण सोच को स्कूलों में प्रोत्साहित किया जाता है।
- संदेह एक महत्वपूर्ण शैक्षिक रुख है।
- शिक्षक विश्लेषणात्मक उपकरणों की एक श्रृंखला के लिए खोज करते हैं।
- अभिसरण और अलग सोच, शिक्षा के हिस्से के रूप में विकसित होती हैं।
- बौद्धिक स्वतंत्रता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, शैक्षणिक संस्थानों के लिए बेशकीमती हैं।
- सोच एक सामान्य हस्तांतरणीय कौशल के रूप में पदोन्नत होती है।

सिद्धांत

1. आध्यात्मिक और भौतिक: आदर्शवाद दुनिया के दो रूपों में विश्वास रखता है। आदर्शवाद, वस्तु दुनिया की तुलना में आध्यात्मिक दुनिया को अधिक महत्व देता है। वे मानते हैं कि आध्यात्मिक दुनिया असली और परम सत्य है जबकि भौतिक संसार क्षणभंगुर और नैतिक है।
2. मन और आत्मा का ज्ञान केवल विचारों के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।
3. क्योंकि आदमी भौतिक वस्तुओं और सामग्री की घटनाओं के बारे में सोच व अनुभव कर सकते हैं, तो आदमी वस्तु प्रकृति से ज्यादा महत्वपूर्ण है।
4. जीवन का मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिक मूल्यों, सत्य, सौंदर्य और अच्छाई को प्राप्त करना है।
5. आदर्शवादी व्यक्ति, व्यक्ति के 'स्व' को ज्यादा महत्व देते हैं। इसलिए, वे एक व्यक्ति के व्यक्तित्व के पूर्ण विकास पर जोर देते हैं।
6. ये मानते हैं कि सभी विविधताओं में एक अनिवार्य एकता निहित है। यह अंतर्निहित एकीकृत कारक आध्यात्मिक प्रकृति का है। इसे सार्वभौमिक चेतना या देवत्व कहकर भी बुलाया जा सकता है।

आदर्शवाद के गुण

1. आदर्शवाद ने संकेतिक योगदान दिया है।
2. आदर्शवादी शिक्षा सार्वभौमिक शिक्षा को बढ़ावा देती है।
3. आदर्शवादी शिक्षा उच्चतम मूल्यों अर्थात सत्य, सौंदर्य और अच्छाई पर जोर देती है। इससे बच्चे में एक नैतिक चरित्र के विकास को बढ़ावा मिलेगा।
4. शिक्षक को एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका सौंपि गई है।
5. आदर्शवाद में एक व्यक्ति की 'स्व' का विकास होता है।
6. आदर्शवाद बच्चे के व्यक्तित्व का सम्मान करता है और उसके रचनात्मक ऊर्जा को प्रोत्साहित करने की कोशिश करता है।
7. आदर्शवादी दर्शन और शिक्षा की वजह से स्कूल एक महत्वपूर्ण सामाजिक संगठन की तरह विकसित हो गये है।

आदर्शवाद के अवगुण

1. आदर्शवाद के बारे में आम आलोचना यह है कि यह एक अमूर्त और अस्पष्ट सिद्धांत है। इसमें वास्तविकताओं से बचा जाता है।
2. आदर्शवाद का जीवन के परम अंत के साथ संबंध है। इसमें रोजाना की वास्तविक समस्याओं से बचा जाता है।
3. आदर्शवाद में सोच और मानसिक गतिविधियों पर अधिक जोर दिया जाता है। इससे बौद्धिकता का महत्व अनावश्यक रूप से बढ जाता है।
4. आदर्शवाद अमर मूल्यों अर्थात्, सत्य, सौंदर्य और अच्छाई की उपलब्धि पर जोर देता है। ये मूल्य पूर्ण नहीं हैं।
5. आदर्शवादी शिक्षा, बच्चे के बजाय शिक्षक को अधिक महत्व देती है।
6. शिक्षण की एक आदर्शवादी विधि तोता-रटन्त और स्मृति में जमा करने पर जोर दिया जाता है।
7. आदर्शवादी शिक्षा में बच्चे के आध्यात्मिक विकास के लिए मानविकी को अधिक से अधिक महत्व दिया जाता है, जबकि विज्ञान के इस वर्तमान युग के पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक विषयों पर काफी जोर देना चाहिए।

प्रकृतिवाद NATURALISM

प्रकृतिवाद एक सिद्धांत (doctrine) है जो परमेश्वर से प्रकृति को अलग करता है, आत्मा को वस्तु से जोड़ता है और अपरिवर्तनीय कानूनों को सर्वोच्च सत्ता स्वीकार करता है। प्रकृतिवाद को भौतिकवाद के रूप में भी माना जाता है। इस

दर्शन के अनुसार दुनिया का आधार वस्तु है। मन भी वस्तु का एक रूप या एक तत्व या दोनों का संश्लेषण है। प्राकृतिक दर्शन जीवन को वस्तु और रासायनिक कानूनों के संदर्भ में परिभाषित करता है और कारण रिश्ते की प्रकृति के रूप में शक्ति, गति और वस्तु के बीच संबंध पर जोर देता है। प्रकृतिवाद के अनुसार केवल प्रकृति ही सब कुछ है, उससे पहले या उससे परे कुछ भी नहीं है। प्रकृतिवाद एक कलात्मक आंदोलन यथार्थवादी विवरण की वकालत करता है: कला या साहित्य में, एक आंदोलन या स्कूल में कम सुखद पहलुओं सहित जीवन के तथ्यात्मक या यथार्थवादी विवरण। साहित्य में, सिद्धांत (doctrine) दुनिया के आध्यात्मिक स्पष्टीकरण खारिज करता है: सोच की एक प्रणाली जो दुनिया के सभी आध्यात्मिक और अलौकिक स्पष्टीकरण को खारिज करनी है और मानती है कि विज्ञान ही जानने और मानने का एकमात्र आधार है। एक विश्वास है कि सभी धार्मिक सत्य, प्रकृति और प्राकृतिक कारणों से है, और कोई रहस्योद्घाटन नहीं हुआ है। पूरा ब्रह्मांड प्रकृति के नियमों से संचालित है और वे परिवर्तनीय हैं। यह हमारी समझ है कि हम वास्तविक ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम हैं। इंद्रियां ही ज्ञान का असली प्रवेश द्वार है और अन्वेषण एक तरीका है जो प्रकृति का अध्ययन करने में मदद करता है। प्रकृतिवाद का मानना है कि प्रकृति बहुमुखी है। सहज ज्ञान, ड्राइव और आवेगों (instincts, drives and impulses) को बजाय दमन के, व्यक्त किया जाना चाहिए। उनके मुताबिक, दुनिया में कोई पूर्ण अच्छाई या बुराई नहीं है। जीवन के मूल्य, मानव की जरूरतों द्वारा निर्धारित होते हैं।

नैतिक मूल्य Ethical Value

प्रकृतिवाद के आचार सुखवादी हैं, जब तक यह कारणमयी है, कारकों के साथ है कि उच्चतम अच्छा सबसे अत्यधिक परिष्कृत और स्थायी खुशी वाला है।

सौंदर्य मूल्य Aesthetic Value

प्रकृतिवाद के नैतिक मूल्यों के बारे में ऊपर-निरूपित सिद्धांत, सौंदर्य मूल्यों के लिए भी वैसे ही हैं। वे भी, प्रकृति में निहित हैं और वे उनके सत्यापन के लिए प्रकृति के बाहर किसी भी स्रोत पर निर्भर नहीं है। सौंदर्य के लिए प्रकृति खुद ही एक कसौटी है।

धार्मिक मूल्य Religious Value

प्राकृतिक धर्म में मुख्यतः जरूरी है कि इसके अनुयायी प्रकृति में मूल्य-साकार बल के साथ खुद को सहयोगी मानें और अस्तित्व मूल्य जो वर्तमान में वास्तविक नहीं हैं, को लाने के लिए मदद करें।

सामाजिक आदर्श Social Value

रूसो का प्रकृतिवाद आदमी को प्रकृति में बजाय समाज के निहित मानता है। इतना कि वह आदमी को प्रकृति के एक बच्चे के रूप में समझता है, समाज के खिलाफ, कि वह अपने एमिल में, समाज से एमिल को किशोरता तक दूर रखने के लिए प्रस्तावित करता है? व्यक्तिगत आदमी, वह दलील देता है, एक आदमी ही नहीं है जब तक कि वह मुक्त नहीं है; अगर वह बंधन में है, तो वह एक आदमी की तुलना में कम है।

प्रकृतिवाद के प्रकार

1. **शारीरिक प्रकृतिवाद:** यह मानव गतिविधियों और अनुभवों को भौतिक वस्तुओं और प्राकृतिक नियमों के सम्बन्ध में बताते हैं। दूसरे शब्दों में, शारीरिक प्रकृतिवाद जागरूक इंसान की तुलना में बाहरी वस्तु की घटनाओं पर अधिक जोर देता है।
2. **यांत्रिक प्रकृतिवाद:** इस के अनुसार, प्रकृतिवाद एक बेजान बड़ी मशीन है जो वस्तु और गति के माध्यम से अपने रूप में आती है। इस मशीन में, कोई मन या मानसिक गतिविधि की आवश्यकता नहीं है और न ही किसी आध्यात्मिक शक्ति की जरूरत है।
3. **जैविक तंत्र:** जैविक प्रकृतिवाद विकास के डार्विन सिद्धांत पर आधारित है। मनुष्य का विकास, एक क्रमिक प्रक्रिया से, छोटे जानवरों से हुआ है। मनुष्य, विकास की इस प्रक्रिया में एक सर्वोच्च उत्पाद है। इस स्कूल को मानने वाले कहते हैं कि आनुवंशिकता का प्रकृति और व्यक्ति के स्वभाव पर एक शक्तिशाली प्रभाव है।

प्रकृतिवाद के सिद्धांत

1. ब्रह्मांड एक बड़ी मशीन है। मनुष्य भी इस मशीन का एक हिस्सा है और अपने आप में एक पूर्ण मशीन भी है।
2. जीवन मृत वस्तु से बाहर आता है और भौतिक और रासायनिक प्रतिक्रियाओं का कुल योग है।
3. व्यक्ति, अपने ही प्रकृति की वजह से प्रकृति की सर्वोच्च रचना है।
4. वर्तमान जीवन ही वास्तविक जीवन है।
5. हकीकत केवल बाहरी प्रकृति की है।
6. प्रकृति के अपरिवर्तनीय कानून सभी घटनाओं और दुनिया की घटनाओं को समझाते हैं।

आध्यात्मिक श्रेणी

- **भगवान की अवधारणा:** प्रकृतिवादी भगवान प्रकृति के भीतर है। वह न तो सभी प्रकृति है और न ही प्रकृति से अधिक है। वह प्रकृति मे विशेष सरंचना है जो पर्याप्त रूप से सीमित है और जो मूल्य की प्राप्ति संभव बनाने के रूप मे और सभी मूल्यों की नींव के रूप मे वर्णित किया जाने के लिए है।
- **स्वयं की अवधारणा:** स्वयं प्रत्येक व्यक्ति का एक संगठित अनुभव है जो लगातार विकसित हो रहा है और बदल रहा है। मानव स्वयं प्रकृति की एक शाखा के रूप में प्रकृतिवाद द्वारा देखा जाता है, और प्रकृति से परे से फलते-फूलते के रूप में नहीं। प्रकृतिवादी आदमी की आत्मा की अवधारणा में कोई दिलचस्पी नहीं लेते हैं। उनके मुताबिक, आदमी प्रकृति का बच्चा है, विकासवादी प्रक्रियाओं में जो अब तक ब्रह्मांड में हुई है, वह सर्वोच्च या शिखर पर है।

प्रकृतिवाद का ज्ञान-मीमांसा में स्थान

ज्ञान की परिकल्पना के संदर्भ में, प्रकृतिवाद विशिष्ट अवलोकन, संचय और सामान्यीकरण के माध्यम से वैज्ञानिक ज्ञान के मूल्यों पर प्रकाश डालता है। इसमें भी अनुभवजन्य और प्रयोगात्मक ज्ञान पर जोर दिया जाता है। प्रकृतिवाद भी संवेदी प्रशिक्षण पर जोर देता हैं और इंद्रियों को सीखने के लिए प्रवेश द्वार मानता हैं।

प्रकृतिवाद के तर्क

सरल प्रेरण प्रकृतिवाद का तर्क है। सरल प्रेरण में प्रकृति का सावधान अवलोकन, क्या देखा जाना है का सटीक वर्णन, और सामान्यीकरण तैयार करने की सावधानी शामिल है।

शिक्षा के क्षेत्र में प्रकृतिवाद

शिक्षा के क्षेत्र में, प्रकृतिवाद का मतलब अपने निहित प्रकृति के अनुसार बच्चे का विकास है। शारीरिक प्रकृति बाहरी है और बच्चे का स्वभाव आंतरिक है जिसका मतलब है मूल प्रवृति, आवेग, प्रवृत्तियां, क्षमता और अन्य जो बच्चे की जन्म योग्यता में होते है। प्रकृतिवाद के अनुसार, प्रकृति के बाहरी कानूनों को बच्चे की आंतरिक प्रकृति के अनुरूप होना चाहिए ताकि उसका पूरा प्राकृतिक विकास हो सके। इसके निम्न लक्षण हो सकते हैं:

1. शिक्षा के तीन आवश्यक कारकों प्रकृति, मनुष्य और वस्तुओं में से, प्रकृतिवाद प्रकृति को आवश्यक महत्व देता है। इसलिए बच्चे को उसकी

प्रकृति के अनुसार विकसित करने के लिए, शिक्षा को प्राकृतिक पर्यावरण प्रदान करना चाहिए।

2 प्रकृतिवादी एक प्राकृतिक आवश्यकता के रूप में शिक्षा का समर्थन देखते है। उनके लिए, शैक्षिक संस्थान, प्रकृति पर आरोपित मनुष्य का अवांछित निर्माण कर रहे हैं।

3 प्राकृतिक सोच के अनुसार, शिक्षा प्राकृतिक जीवन के विकास की एक प्रक्रिया है।

4 यह बच्चे की शिक्षा के क्षेत्र मे स्वतंत्रता की अवधारणा को प्रमुख स्थान देता है।

5 प्रकृतिवाद सेट-अप में बच्चे केंद्रीय और निर्णायक भूमिका में है। बच्चे की प्रकृति सामने मोर्चे कि है और शिक्षा, किताबें, पाठ्यक्रम, स्कूल के रूप में अन्य सभी बातें, पृष्ठभूमि में है।

प्रकृतिवाद का मूल्यांकन

1 **शिक्षा के एक तरफा और नाकाफी उद्देश्य:** समाज सेवा या सामाजिक अच्छाई की कोई भावना के बिना बच्चे असामाजिक हो जाते है। उसमें शुद्ध पशु प्रवृत्तियां उभर सकती है जो शिक्षा के सामाजिक माध्यम से दूर हो सकती हैं, और उसके लिए सामाजिक वातावरण बहुत जरूरी है।

2. **वर्तमान जरूरतों पर जोर:** प्रकृतिवाद वर्तमान की जरूरत है और एक व्यक्ति की समस्याओं के समाधान पर जोर देता है। यह आध्यात्मिक मूल्यों और दूरदराज के भविष्य के लिए कोई चिंता की वकालत नहीं करता।

3. **पुस्तकों की उपेक्षा:** प्रकृतिवाद जोर देती है कि बच्चे की शिक्षा उसकी गतिविधियों और जीवन के अनुभवों के आधार पर की जानी चाहिए। लेकिन केवल गतिविधियों और अनुभवों से बच्चे के व्यक्तित्व के समग्र विकास को सुनिश्चित नहीं कर सकते।

4. **पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक विषयों को अधिक महत्व:** प्रकृतिवाद वैज्ञानिक शिक्षा पर जोर देते हैं। हर्बर्ट स्पेन्सर, एक कट्टर प्रकृतिवादी पाठ्यक्रम में मानविकी की बजाय वैज्ञानिक विषयों की शिक्षा पर ज्यादा महत्व देता है।

5. **शिक्षक को कोई महत्त्व नहीं:** प्रकृतिवाद शिक्षक के लिए एक मात्र गाइड और पर्यवेक्षक की भूमिका प्रदान करती है। वह बच्चे की अनुभव संरचना में एक सहानुभूति गाइड और सहायक हो सकता है और गतिविधियों का

निरीक्षण करने के लिए है। उसे किसी भी शिक्षण सीधे में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिये।

शिक्षा के क्षेत्र में प्रकृतिवाद के गुण

1. बाल मनोविज्ञान का विकास।
2. समाज और समाजशास्त्र के वैज्ञानिक अध्ययन।
3. अनुभवों केंद्रित पाठ्यक्रम पर जोर।
4. शिक्षण के तरीकों के क्षेत्र में महत्व योगदान।
5. अनुशासन के क्षेत्र में दमन का विरोध।

शिक्षा के क्षेत्र में प्रकृतिवाद के अवगुण

1. बच्चों की स्वतंत्रता और व्यायाम करने को सबसे अधिक महत्व देने पर जोर दिया जाता है।
2. शिक्षकों को कोई महत्व नहीं।
3. बच्चों की वर्तमान जरूरतों पर ही अधिक जोर।

व्यवहारवाद PRAGMATISM

शिक्षा के दर्शन के सबसे महत्वपूर्ण स्कूलों में से एक व्यवहारवाद है। व्यवहारवाद आदर्शवाद और भौतिकवाद के बीच खड़ा है, एक प्रकार के समझौते के रूप में। प्राचीन यूनान के सोफिस्ट दार्शनिक ने कहा कि आदमी ही सब बातों का मूल या माप है। pragmatism एक ग्रीक शब्द से निकला है, जिसका अर्थ है to do, to make, to accomplish. तो ऐसे शब्द कार्रवाई, अभ्यास या गतिविधि के प्रयोग में, कार्रवाई को सोच पर प्राथमिकता दी जाती है। अनुभव ब्रह्मांड के केंद्र में है। हर कोई का अनुभव के स्पर्श-पत्थर पर परीक्षण किया जाता है। मान्यतायें और विचार सत्य हैं, अगर वे व्यावहारिक और लाभदायक हैं, अन्यथा झूठे हैं । इसका मतलब हुआ कि व्यावहारिकता एक दर्शन नहीं है, लेकिन एक विधि है - प्रयोग की विधि। स्कूल अभ्यास के रूप में व्यवहारवाद, पूर्व निर्धारित और पूर्व निर्धारित उद्देश्यों और पाठ्यक्रमों के आधार का विरोध करता है। व्यवहारवादी का कोई अतीत नहीं होता है। मूल्य ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। कोई अंतिम या तय मूल्य नहीं होता है। वे विकसित किये गये है और हर समय के लिए और सभी स्थितियों के लिए सही नहीं भी हो सकते हैं। मूल्यों के एक अविचलित undeviating मानक के अनुसार, व्यवहारवाद व्यक्तिवादी, स्वार्थी हो जाता है; कोई मूल्य नहीं हैं; कोई नैतिकता नहीं है और इस तरह ये सतही है। व्यवहारवाद मानता है कि जो कुछ भी किसी के उद्देश्यों

को पूरा करता है और विकसित करता है वही इनके जीवन का सच है। केवल वही परिकल्पनाएं सच होती हैं जो व्यावहारिक स्थितियों में काम करती हैं। कोई पूर्ण विचार नहीं होते हैं। सभी विचार स्थितियों से सम्बंधित होते हैं, जहाँ वे उत्पन्न होते हैं और वे परिणामों से निरंतर सत्यापन के अधीन हैं। अनुभव विभिन्न प्रकृति के होते हैं और हमेशा बदलते रहते हैं। इसलिए विचारों या मूल्यों का कोई अंतिम, अनन्त वैध प्रणाली को तय नहीं किया जा सकता है। कोई विचार या मूल्य नहीं है जिसे हमेशा ही सत्य कहा जा सके, वे सभी मानव निर्मित उत्पाद ही हैं। वे परमात्मा नहीं हैं और न ही वे शाश्वत हैं।

"व्यवहारवाद हमें अर्थ की एक परिकल्पना, ज्ञान की सच्चाई की एक परिकल्पना, और वास्तविकता की एक परिकल्पना प्रदान करता है"- जेम्स बी प्रैट

"व्यवहारवाद अनिवार्य रूप से एक मानवतावादी दर्शन है, ये मानते हुए कि आदमी गतिविधि करते हुए अपने स्वयं के मूल्य खुद बनाता है, कि वास्तविकता अब भी है और भविष्य में पूरा होने का इंतजार कर रहा है, कि एक अनिश्चितता हमारी सच्चाई को मानव निर्मित् उत्पादों में बदल देती है"- जे. एस. रोस

शब्द व्यवहारवाद ग्रीक शब्द 'pragma' से लिया गया है जिसका अर्थ है - गतिविधि या काम किया। कुछ अन्य विद्वानों का मानना है कि शब्द व्यवहारवाद ग्रीक शब्द 'pragmatikos' से प्राप्त किया गया है जो साध्यता या उपयोगिता दर्शाता है। इस प्रकार, इस विचारधारा के अनुसार साध्यता और उपयोगिता का महान महत्व है।

व्यवहारवाद के प्रकार

- **मानववादी व्यवहारवाद**: इस विचारधारा के अनुसार, केवल वह चीजे या सिद्धांत सत्य हैं जो जरूरत, आवश्यकताओं, आकांक्षाओं और मनुष्य के उद्देश्यों को मानव जाति के कल्याण के लिए पूरा करते हैं। दूसरे शब्दों में, जो मानव प्रकृति को संतुष्ट करे वही सही और वास्तविक है। मानवतावादी व्यवहारवादी मानते है कि "जो कुछ भी मेरे उद्देश्य को पूरा करता है, मेरी इच्छा संतुष्ट करता है, मेरा जीवन विकसित करता है, सच है"।
- **प्रायोगिक व्यवहारवाद**: इस विचारधारा के अनुसार, वह बात या सिद्धांत सच है जो प्रयोग से सच के रूप में सत्यापित किया जा सकता है। इसलिए प्रयोगात्मक व्यवहारवादी के अनुसार, 'जो कुछ भी प्रयोगात्मक रूप से सत्यापित किया जा सकता है, सच है या काम करता है, सच है।

- जैविक व्यवहारवाद: व्यवहारवाद का यह रूप मानव की शक्ति या क्षमता को मूल्यवान समझता है। इस शक्ति को समाज में और पर्यावरण के साथ समायोजित करने के लिए आदमी को सक्षम बनाता है। यह उसे अपनी जरूरतों और उद्देश्यों के अनुसार अपने पर्यावरण को बदलने के लिए सक्षम बनाता है। व्यवहारवाद के इस रूप की जड़ें विकास और प्राकृतिक चयन के डार्विन के सिद्धांत में है। इसके अनुसार, शारीरिक और सामाजिक वातावरण में अस्तित्व के लिए हमेशा संघर्ष देखा गया है। प्रत्येक जीव उसकी शक्ति और ताकत के हिसाब से अपने पर्यावरण के साथ समायोजित करने की कोशिश करता है। इस प्रक्रिया में कमजोर नष्ट हो जाता हैं और केवल योग्यतम जीवित रहते हैं।

व्यवहारवाद के सिद्धांत

1. सत्य हमेशा समय, स्थान और स्थिति के अनुसार बदलता है। एक खास बात जो कल एक व्यक्ति के लिए सच थी, आज भी हो ये जरूरी नहीं है या ऐसा ही कल भी होगा।
2. सत्य तय नहीं है और निश्चित इकाई है। स्थितियों में परिवर्तन नई समस्यायें लाता है, जो नए विचार और नए प्रयास से हल की जा सकती हैं। सत्य पूर्ण नहीं है या सभी आने वाले समय के लिए पूर्व निर्धारित नहीं है।
3. मानव जीवन एक प्रयोगशाला है जहां प्रत्येक व्यक्ति विभिन्न प्रयोगों द्वारा उसकी वृद्धि और विकास में उसके सामने आने वाली समस्याओं का सामना वह करता है। प्रयोग की सफलता, सच के लिए एक खोज है।
4. मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में पैदा होता है और उसके सारे विकास से समाज में जगह लेता है। व्यवहारवादी सामाजिक और लोकतांत्रिक नजरिए और मूल्यों को बनाए रखते हैं।

आदर्श और मूल्य पूर्व निर्धारित नहीं हैं और तय हैं। मूल्य और आदर्श मानव निर्मित हैं और वे परिस्थितियों, समय और स्थानों में परिवर्तन के अनुसार बदल जाते हैं। यह नैतिक और आध्यात्मिक आदर्शों और मूल्यों के प्रति एक उदासीन रवैया होता है।

कोई भी विचार जो हमारे लिए उपयोगी है उचित और सही है। अगर ये, यह किसी काम का नहीं है, तो यह अनुचित, गलत है और सही नहीं है।

7. आदमी में वातावरण को उपयोगी, लाभकारी और उसके स्वयं के विकास और समाज के कल्याण के लिए अनुकूल बनाने की शक्ति है।
8. आदमी एक सक्रिय प्राणी है। वह अपने जीवन में उसकी गतिविधियों के माध्यम से सीखता है। विचार गतिविधियों से पैदा होते हैं।
9. अतीत खत्म हो जाता है और चला जाता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने वर्तमान और भविष्य की समस्याओं को हल करने के लिए सोचना चाहिए।
10. पुराने रिवाज, परंपरायें, प्रतिबंध और वर्ज्य, वंचित हैं। उसे जीवन की वास्तविकताओं, मानव बुद्धि और मानसिक क्षमता में विश्वास रखना है, जिसका परिणाम मानव कल्याण और खुशी में है।
11. आदर्श और मूल्य जो अनुभवों से जांचे जाते हैं सच्चे और वास्तविक होते हैं। यह बहुलवाद में विश्वास रखता है।
12. रवैया, आशावादी, प्रगतिशील और विकास वाला होना चाहिए। वर्तमान दुनिया पूरी तरह से फैल गई है, बिल्कुल सुंदर और पूर्ण, गलत है। दुनिया के गठन और विकास की प्रक्रिया तो अब भी चल रही है।
13. दुनिया बदल रही है और सब कुछ परिवर्तन करने की एक प्रक्रिया के तहत है। इस दुनिया में कुछ भी नहीं तय और अंतिम है। वह अपनी सारी मानसिक संकायों, अपने अनुभव और प्रगति और विकास के रास्ते पर प्रयोगों से सीखता है।

शिक्षा के क्षेत्र में व्यवहारवाद

शिक्षा अपने भविष्य के लिए एक बच्चे की तैयारी नहीं है बल्कि यह जीवन ही है। जीवन शिक्षा के बिना संभव नहीं है। यहाँ जीवन का मतलब सामाजिक जीवन है। ऐसा है क्योंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उनकी गतिविधियों का निर्देशन और निर्धारण वहाँ रहने वाले समाज के द्वारा होता हैं। तो, सामूहिक गतिविधियों स्कूल में आयोजित होती हैं। सामूहिक गतिविधियों में भागीदारी उसे सामाजिक दक्षता और सुशीलता का ज्ञान देती है।

शिक्षा के उद्देश्य

व्यवहारवाद में, शिक्षा के उद्देश्य, बच्चे को गतिशील दिशा और मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, उसके प्राकृतिक हितों, अभिरुचि और शैक्षणिक गतिविधियों में क्षमता के अनुसार जिसमें वह बडा होता है, विकसित होता है, और क्षमताओं का सामना करने में सक्षम होता है, समस्याओं और आधुनिक जीवन की चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर खुश, बेहतर और अमीर जीवन को प्राप्त करता है। इस

शिक्षा के लिए, एक गतिशील, लचीला और अनुकूलनीय मन चाहिए जो हमेशा संसाधित और उद्यमी हो और अज्ञात भविष्य के लिए नए मूल्यों को पैदा करने में सक्षम हो।

पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम बच्चे के हितों, अनुभव, आवेगों और जरूरतों के अनुसार होना चाहिए। पाठ्यक्रम बच्चे केंद्रित होना चाहिए। व्यवहारवादी कहते हैं कि स्कूल के विषय बच्चे की गतिविधियों के अनुसार चुने जाने चाहिए। सबक सामाजिक विषयों जैसे भोजन, आवास, संचार के साधन, भाषण पढ़ना, ड्राइंग और मॉडलिंग के रूप में शुरू करना चाहिए।

आधुनिक शिक्षा मनोविज्ञान सिद्धांतिक रूप में स्वीकार करता है कि शिक्षा के पाठ्यक्रम को बच्चों के व्यक्तिगत अंतर को ध्यान में रख कर बच्चों को उनके व्यक्तिगत और अद्वितीय हितों और दोनों पाठ्यक्रम के संबंध में और शिक्षण की विधि के अनुसार शिक्षित किया जाना चाहिए। जबकि सिद्धांत रूप में यह काफी स्वीकार्य है कोई भी प्रयास तत्काल जटिलताओं के बिना लागू नहीं किया जा सकता है। स्कूल में हर व्यक्ति के बच्चे के लिए एक अलग शैक्षिक योजना प्रदान करना पूरी तरह से असंभव है।

शिक्षक की भूमिका

1. शिक्षक मित्र, दार्शनिक और छात्रों के गाइड के रूप में काम करता है।
2. उसमें छात्रों के हितों को पता लगाने की क्षमता होनी चाहिए।
3. उसे परीस्थिति और समाज को बदलने की स्थिति को समझना चाहिए।
4. उसे आगे के लिए छात्रों को अपने हितों के अनुसार हल करने के लिए समस्याओं का पता होना चाहिए।
5. उसे स्थितियों बनाना, समाज के कल्याण के लिए सामाजिक हितों, व्यवहार और आदतों का विकास करना आना चाहिए।

स्कूल

व्यवहारवाद के अनुसार, स्कूल बच्चों के लिए प्रयोग करने की एक प्रयोगशाला है। स्कूल एक सामाजिक संस्था है, जहां बच्चे को वास्तविक जीवन के वास्तविक अनुभवों का लाभ मिलता है। यह समाज और राष्ट्र के प्रति एक सामाजिक भावना और कर्तव्य विकसित करता है। स्कूल एक लघु समाज है जहां एक बच्चा वास्तविक अनुभवों अधिनियम और अपने हितों, अभिरुचि और क्षमताओं के अनुसार व्यवहार करना सीखता है।

अनुशासन

व्यवहारवाद लागू अनुशासन की निंदा करता है। यह बच्चे की रुचि, गतिविधियों और जिम्मेदारी की भावना पर आधारित सामाजिक अनुशासन की वकालत करता है। स्कूल की उचित लोकतांत्रिक और सामाजिक वातावरण में छात्र आत्म अनुशासन सीखते है। वे सामूहिक गतिविधियों में भाग लेते हैं और सहयोग और नियंत्रण के बारे में जानते हैं। बालकों को अपनी प्राकृतिक क्षमताओं को विकसित करने के लिए पूरी स्वतंत्रता दी गई है। शिक्षक खुद को बच्चे से बेहतर साबित करने में विचार नहीं करता। वह केवल एक पर्यवेक्षक के रूप में कक्षा में काम करता है। वह बच्चों के बीच अलग-अलग अंतर को समझने की कोशिश करता है। खेलना और काम के विलय से बच्चे में रुचि का विकास होगा। इसका उद्देश्य कार्य-भावना को बढ़ा अन्य लोगों के हस्तक्षेप के बिना खुशी और उत्सुकता के साथ काम करने के लिए होगा। यह मानसिक स्थिति आत्मविश्वास, आत्म निर्भरता, सहयोग, सहानुभूति और साथी भावना को विकसित करती है। वह स्वयं और दूसरों के प्रति एक सामाजिक अनुशासन और नैतिक दायित्व का विकास करता है। यह सामाजिक जिम्मेदारी को विकसित कर देश के एक सच्चे नागरिक बनाने में मदद करता है।

गुण

1. एक बच्चा जो विभिन्न गतिविधियों में भाग लेता है, वो अपनी प्राकृतिक प्रगति और विकास को पूरा करने की समस्याओं को हल करने में सक्षम होता है।
2. बाल केंद्रित शिक्षा, जो अपने स्वयं के प्रयासों से बच्चे के व्यक्तित्व का विकास करती है।
3. व्यवहारवाद विचारों गतिविधि के बजाय 'करके सीखने' की विधि पर जोर देता है।
4. शिक्षा द्वारा एक प्रभावी ढंग से जीवन के मूल्यों के लिए बच्चे को तैयार करना चाहिए।
5. यह स्वतंत्रता, पहल, समानता और एक नागरिक के कर्तव्यों के संबंध में जिम्मेदारी की भावना की भावना लाता है। यह लोकतांत्रिक मूल्यों और सामाजिक दक्षता जो सामंजस्यपूर्ण समायोजन और व्यक्तित्व के विकास के लिए है, विकसित करता है।

6. यह शिक्षा की प्रक्रिया में क्रांति ला एक नया जीवन संचार और शिक्षा के क्षेत्र में उत्साह बढ़ाता है। नई शिक्षा, प्रगतिशील शिक्षा और गतिविधि केंद्रित पाठ्यक्रम की अवधारणायें व्यवहारवाद में योगदान करते हैं।
7. व्यवहारवाद जो आदर्शवाद और प्रकृतिवाद के पुराने सिद्धांतों के विरोध का एक तरीका है, व्यक्ति को आगे देखने को प्रेरित करता है और एक बेहतर और खुशहाल जीवन के लिए नए मूल्यों को बनाने में मदद करता है। यह एक गतिशील, लचीला और अनुकूलनीय मन विकसित करता है जो शिक्षा के लिए नए उद्देश्य के लिए दिशा देता है।

आधुनिक शिक्षा पर प्रभाव

1. लोकतांत्रिक मूल्यों और सामाजिक जिम्मेदारियों को शिक्षा के उद्देश्यों में शामिल किया गया है।
2. शिक्षण की गतिविधियां और आत्म अनुभव विधियों की आज बहुत ज्यादा पहचान हैं।
3. व्यावसायिक और पेशेवर पाठ्यक्रमों पर विशेष जोर दिया जाता है।
4. स्कूल में सह पाठ्यक्रम गतिविधियों के संगठन पर जोर।
5. समाज की बदलती जरूरतों के अनुसार हर पांच साल के बाद पाठ्यक्रम का अयतन।
6. आत्म अनुशासन को बढ़ावा देना।
7. लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति सम्मान।
8. 6 साल की उम्र से 14 साल के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा को बढ़ावा देना।
9. प्रारंभिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण का प्रस्ताव।

कर के माध्यम से सीखने की सीमाएं

इसमें कोई शक नहीं है कि बच्चे वास्तव में कुछ करके जल्दी सीखते हैं। लेकिन थ्योरी की अपनी सीमाएं भी है। कई व्यक्ति ज्ञात तथ्य किसी अन्य व्यक्ति से भी अर्जित करते हैं। यह लगभग असंभव है एक व्यक्ति के लिए कि उसे हर तथ्य का प्रायोगिक अनुभव हो। व्यवहारवादी प्रयोग से दुनिया को बेहतर बनाना चाहते हैं। वे दूसरों के अनुभव को अस्वीकार और आत्म अनुभव में विश्वास करते थे। व्यवहारवादी दूसरों के अनुभव को अस्वीकार और आदमी का आत्म अनुभव में विश्वास करते थे। व्यवहारवादी पूर्ण स्वतंत्रता की वकालत करते हैं जिसमें बच्चे

अपनी अपरिपक्वता और अनुभव की कमी की वजह से अपने कैरियर को खराब कर सकते हैं।

अस्तित्ववाद एग्ज़िस्टंटित्सियनलिज़म EXISTENTIALISM

अस्तित्ववाद 19 वीं सदी में उभरा एक आधुनिक दर्शन है, जो अस्तित्व के विश्लेषण और मनुष्य के दुनिया में स्वयं के अस्तित्व पर केंद्रित है। धारणा है कि मनुष्य पहले से मौजूद हैं और उसके बाद प्रत्येक व्यक्ति अपना जीवन उसकी सार या प्रकृति बदलने में खर्च कर देता है। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् अस्तित्ववाद ने अपनी चरम-सीमा को प्राप्त किया। सोरेन किर्क्गार्ड Soren Kierkegaard (1813-1855), एक डेनिश मंत्री और दार्शनिक, अस्तित्ववाद का संस्थापक माना जाता है। अन्य विचारक जिनके कार्य अस्तित्ववादी विषय आधारित है उनमें शामिल हैं: फ्रेडरिक नीत्शे, गेब्रियल मार्सेल, मार्टिन हाइडेगर, जीन पॉल सार्त्र, कार्ल जैस्पर्स, अब्बाग्नामो, बर्दअव और अल्बर्ट कामू आदि। अमेरिकी शिक्षा में, मैक्सिन ग्रीन, जॉर्ज Kneeler और वान क्लीव मॉरिस के रूप में इस तरह के लोग हैं, जो जाने-माने अस्तित्ववादी हैं जिन्होंने व्यक्तिवाद और व्यक्तिगत आत्म-पूर्ति पर बल दिया। अमेरिकी अस्तित्ववादियों ने मानव क्षमता और व्यक्तिगत अर्थ के लिए खोज पर अधिक ध्यान केंद्रित किया है। मूल्य स्पष्टीकरण इस आंदोलन का एक परिणाम है। द्वितीय विश्व युद्ध की अंधकारमय अवधि के बाद, फ्रेंच दार्शनिक, ज्यां पॉल सार्त्र, युवाओं के लिए सुझाव देते हैं, अस्तित्व के पल तब जागते हैं जब युवा व्यक्ति पहली बार एहसास करते है कि उन्हें खुद चुनना है कि वे खुद के लिए खुद जिम्मेदार हैं। उनके सवाल ये हो जाते है "मैं कौन हूँ और मुझे क्या करना चाहिए? अस्तित्ववादियों का एक अन्य समूह, काफी हद तक यूरोपीय, का मानना है कि इस छोटे और कमजोर ग्रह पर, भगवान के माध्यम से मोक्ष में विश्वास की तुलना में, हमें हमारे जीवन की परिमितता को समझना चाहिए। इस जन्म के बाद हमारे अस्तित्व की कोई गारंटी नहीं है, इसलिए वहाँ जीवन और मृत्यु की निश्चितता, आशा या निराशा, के बारे में चिंता है। यूरोपीय दृष्टिकोण के विपरीत जहां ब्रह्मांड को व्यर्थ के रूप में देखा जाता है जब अस्तित्व के अंत की निश्चितता के बारे में कोई बात होती है। 18वीं सदी के दौरान कारण और प्रकृति को अधिक महत्त्व दिया गया है, निष्पक्षता पर बहुत ज्यादा जोर दिया गया था, औद्योगिक और तकनीकी विकास को अग्रणी और विज्ञान को अत्यंत महत्त्व दिया गया था। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, आदमी भी एक वस्तु के रूप में माना गया था। औद्योगिक समाज के विकास में

आदमी मशीनों का गुलाम बन गया। इस स्थिति के खिलाफ अस्तित्ववाद समाज के खिलाफ एक विरोध प्रदर्शन के रूप में उभरा और आदमी के व्यक्तित्व की सर्वोच्चता पर जोर दिया। यह व्यक्ति के अस्तित्व, स्वतंत्रता और पसंद पर जोर देता है। यह माना जाता है कि मनुष्य जीवन में स्वयं के अर्थ को खुद परिभाषित करता है, और एक तर्कहीन ब्रह्मांड में होने के बावजूद तर्कसंगत निर्णय लेने की कोशिश करता है। मुख्य रूप से पहचाननेवाली बात यह है कि अस्तित्व ने सार पछाड़ दिया है। इस करके, अस्तित्ववाद कहता है कि आदमी का अस्तित्व है और उस अस्तित्व में आदमी खुद को और अपने आत्मीयता में दुनिया को परिभाषित करता है, और चुनाव, स्वतंत्रता, और अस्तित्व के गुस्से के बीच भटकता रहता है। सभी आधुनिक दर्शन के यह सबसे अधिक व्यक्तिपरक है। इसकी सर्वोपरि चिंता व्यक्ति के साथ है और इसका प्राथमिक मूल्य व्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता है, जो है कि वह खुद को क्या बनाता है, और जो मूल्यों को अंतिम और स्वतंत्र रूप से खुद के लिए निर्धारित करता है। ज्यादा जोर कला पर, साहित्य पर, और मानवीय अध्ययन पर दिया जाता है, यह वे क्षेत्र है कि जहाँ आदमी खुद को पाता है और वह उन मूल्यों को प्राप्त करने की कोशिश करता है जो उसे चाहिए होते है। यह मानता है कि समाज अप्राकृतिक है और उस के परंपरागत धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष नियमों मनमानी कर रहे हैं और जो कोई सांसारिक इच्छा है, वह व्यर्थ है। अस्तित्ववादी के लिए, मानव जीवन किसी भी तरीके से पूर्ण और संतोषजनक नहीं है, पीड़ा और नुकसान की वजह से जब वह पूर्णता, शक्ति और नियंत्रण की कमी पर विचार कर रहा होता है।

सरल शब्दों में, अस्तित्ववाद एक दर्शन है जो आत्म और मुक्त इचछा के माध्यम से जीवन का अर्थ, पसंद और व्यक्तिगत जिम्मेदारी ढूंढ रहा है। विश्वास है कि लोग जीवन भर किसे और क्या खोज रहे हैं, जब वे अपने अनुभवों, विश्वास और दृष्टिकोण पर आधारित विकल्प खोजने की बात करते हैं। और व्यक्तिगत पसंद कई बार सच्चाई का उद्देश्य जाने बिना आवश्यकता और अनूठा हो जाते है। एक अस्तित्ववादी मानता है कि व्यक्ति को चुनने के लिए और कानूनों, नियमों जातीय या परंपराओं की मदद के बिना जिम्मेदार होने के लिए मजबूर किया जाना चाहिए।

अस्तित्ववाद - यह क्या है और क्या नहीं है

अस्तित्ववाद अंतर्निहित अवधारणाओं को ध्यान में रखता है:

- मानवीय मुक्त इच्छा
- मानव प्रकृति का जीवन विकल्पों के माध्यम से चुना जाना

- एक व्यक्ति सबसे अच्छा है जब अपनी व्यक्तिगत प्रकृति के खिलाफ, जीवन के लिए संघर्ष करता है
- निर्णय तनाव और परिणामों के बिना नहीं होते हैं
- वहाँ कुछ ऐसा है जो तर्कसंगत नहीं है
- व्यक्तिगत जिम्मेदारी और अनुशासन महत्वपूर्ण है
- समाज (सोसायटी) अप्राकृतिक है और उसके परंपरागत धार्मिक और धर्मनिरपेक्ष नियम मनमाने हैं
- सांसारिक इच्छा व्यर्थ है

अस्तित्ववाद मोटे तौर पर अवधारणाओं की कई किस्म में परिभाषित किया गया है और वहां कोई एक जवाब नहीं है कि ये क्या हो सकता है, फिर भी, यह निम्न में से किसी का समर्थन नहीं करता:

- धन, खुशी या सम्मान जीवन अच्छा बनाते है
- सामाजिक मूल्य और संरचना व्यक्ति पर नियंत्रण करते हैं
- जो है और जो जीवन में पर्याप्त है, वही स्वीकार करना चाहिए
- विज्ञान से कर सकते हैं और सब कुछ बेहतर बना सकते हैं
- लोग मूल रूप से अच्छे होते है, लेकिन समाज या बाहरी ताकतों द्वारा बर्बाद कर दिए जाते हैं
- "मैं अब अपने तरीके से करना चाहता हूँ" या "यह मेरी गलती नहीं है।" वाली मानसिकता

कई दार्शनिक, धार्मिक और राजनीतिक विचारधारायें हैं जो अस्तित्ववाद को बनाते हैं, इसलिए इतने आदर्शों और विश्वासों में से कोई सार्वभौमिक समझौता नहीं है। राजनीति में भिन्नता होती है, लेकिन हर एक समाज के भीतर लोगों के लिए सबसे व्यक्तिगत स्वतंत्रता का प्रयास करता है।

अस्तित्ववाद के मुख्य प्रतिपादक

सोरेन किएर्केगार्द Soren Kierkegaard (1813-1855) को आधुनिक अस्तित्ववाद का जनक माना जाता है और पहले यूरोपीय दार्शनिक हैं जो अस्तित्ववादी के तौर पर जाने जाते है। उनके विचार में, आत्मीयता और तीव्रता को सत्य और असलियत के मापदंड के रूप में कीमती माना जाना चाहिए। हम अस्तित्व के गहन क्षणों में विशेषतः दर्दनाक निर्णय के विशेष क्षणों में वास्तविकता पर ध्यान देते हैं। ये क्षण गहरी चिंता की विशेषता है, और जीवन

ऐसे क्षणों में जाना जाता है और सिर्फ विचारों की व्यवस्था करने के लिए कम नहीं किया जा सकता है।

फ्रेडरिक निएत्ज़्चे Friedrich Nietzsche (1844-1900) को अस्तित्ववाद के उदय में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में माना जाता है। उनके अनुसार ईसाई धर्म को, सुपरमैन के सिद्धांत कि आदमी खुद ही खुद से कूद को दूर कर रहा है, से जीता जा सकता है।

मार्टिन हाइडेगर Martin Heidegger (1889-1976) ने अपनी पुस्तक Being and Time में, मानव अस्तित्व के बारे में एक बहुत ही प्रभावशाली विश्लेषण दिया है, अस्तित्ववाद के महत्वपूर्ण विषय जैसे देखभाल, चिंता, ग्लानि और सभी से ऊपर मौत के बारे में बताया है।

जीन - पॉल सरते Jean - Paul Sarte ने जोर देकर कहा कि मनुष्य का अस्तित्व उसके सार से पहले आता है। मनुष्य, जैसा वह बताता है उससे अलग कुछ नहीं है, जब तक उसे खुद का एहसास है कि वह मौजूद है उसका अस्तित्व है; इसलिए वह और कुछ नहीं, अपने कार्यों का योग है, और कुछ नहीं, लेकिन आखिर उसका जीवन क्या है?

आध्यात्मिक स्थान Metaphysical Position

भगवान की अवधारणा: फ्रेडरिक नीत्शे का बयान कि भगवान मर चुका है, संक्षेप में एक अलौकिक दायरे के अस्तित्व के मुद्दे पर नास्तिक अस्तित्ववादी की राय व्यक्त करता है। नीत्शे का कहना है: भगवान कहाँ चला गया है? आपको ये बताने का मेरा मतलब है! हमने उसे मार डाला है - तुम और मैं। मान लें कि ईश्वर है और सभी से शक्तिशाली और सब कुछ जानने वाला और सब-अच्छा है। फिर यह भी मानो कि बुराई दुनिया में मौजूद है। तो भगवान बुराई के अस्तित्व के लिए या तो जिम्मेदार है, खुद भगवान ही बुराई है और सब अच्छा नहीं है; या फिर भगवान बुराई के अस्तित्व के लिए ज़िम्मेदार नहीं है, उसे पता तो था कि यह होने जा रहा था और वो इसे रोक नहीं सकता है, तो भगवान सभी से शक्तिशाली नहीं है; वरना भगवान बुराई को रोका सकता है, या भगवन बुराइ को रोक तो सकता है लेकिन उसे पता ही नहीं था कि यह होने जा रहा था, तो भगवान अन्तर्यामी या सब कुछ जानने वाला न हुआ। तो बुराई को देखते हुए कहा जा सकता है कि, भगवान नहीं सब से अच्छा, नहीं सब से शक्तिशाली है, न ही सर्वज्ञ है , यानि कि मौजूद ही नहीं है।

स्वयं की अवधारणा: आदमी और कुछ नहीं है, वही है जो वह खुद को बनाता है। यही अस्तित्ववाद का पहला सिद्धांत है। मनुष्य की प्रकृति के बारे में सवाल अस्तित्ववादी के लिए अर्थहीन है। यह जोर देकर कहा गया है कि आदमी कि इस तरह कोई प्रकृति नहीं है बल्कि यह कि वह अपना सार खुद ही बनाता है। आदमी की विशिष्टता उसकी भावनाओं, महसूस करने, धारणा और सोच से आती है। अस्तित्ववाद का दर्शन जीवन में अर्थ (meaning) के विकास के माध्यम से अर्थ (meaning) पर जोर देता है; आदमी मूर्खता से जो उसे चारों ओर से घेरे हुए है कुछ कर सकता हैं। मनुष्य निर्माता है, और इसलिए, संस्कृति का मालिक है। यह आदमी ही है जो अपने ब्रह्मांड को एक अर्थ देता है, हालांकि यह ब्रह्मांड अच्छी तरह से उसके बिना भी कार्य कर सकता है। मनुष्य को सिखाया नहीं जा सकता है कि क्या दुनिया होती है। उसे इसे खुद के लिए खुद ही बनाना होगा। आदमी दुनिया में अकेला नहीं है। वह अन्य पुरुषों से जुड़ा हुआ है; वह दूसरों के साथ संचारित है; इसलिए, वह अराजकता की स्थिति में नहीं रह सकता हैं। जीवन एक उपहार है जो एक तरह से, एक रहस्य के रूप में है। मनुष्य जीवन में प्रतिबद्धताओं का चयन करने के लिए स्वतंत्र है, अपनी पसंद के अनुसार, वह अपने आप ही, आप हो जाता है। वह खुद के विकल्पों से बना एक उत्पाद है। वह इसलिए, एक व्यक्ति के रूप में अन्य व्यक्तियों से अलग है। व्यक्तिगत रूप से आदमी, एक खास समूह के भाईचारे के किसी भी पूर्व निर्धारित धारणा से या निष्ठा से अन्य पुरुषों के लिए बाध्य नहीं है। इसके विपरीत, हर आदमी को अपनी स्वतंत्रता, अपने स्वभाव selfhood के निर्माण में, पहले भीड़ से अलग दिखने के लिए, और फिर जिसे वह व्यक्तिगत तौर पर चुनता है के साथ संवाद द्वारा व्यक्त करना चाहिए। सार्त्र का मानना है कि सामाजिक जीवन का पूरा नेटवर्क मानव-मौलिकता विरोधी है। चर्च, स्कूल, राजनीतिक दल और यहां तक कि परिवार के आदमी भी मानव-मौलिकता व पूर्ण स्वतंत्रता के खिलाफ होते हैं।

अस्तित्ववादियों ने आगमनात्मक तर्क की तरफ थोड़ा ध्यान दिया है। विज्ञान, उनका मानना है कि आधुनिक दुनिया में प्रमुख अमानवीय ताकतों में से एक है। ज्ञान के लिए इस ठंडे अवैयक्तिक दृष्टिकोण के विरोध में, अस्तित्ववादियों का तर्क है कि सच्चा ज्ञान, कार्य करना, रहने को चुनना और मर जाना है।

प्रामाणिकता और मानव स्वतंत्रता

अस्तित्ववादियों के लिए प्रामाणिक आदमी का एक विशेष अर्थ है। अस्तित्ववादियों के अनुसार, प्रामाणिक बनना चीजें एक की स्थिति की ओर

निर्धारित करने और एक के संबंध में कार्य करने की अनुमति देता है। आम तौर पर अस्तित्ववादी प्रामाणिक व्यक्तियों को संभावनाओं को चुनने और निर्धारण करने के लिए जिम्मेदारी लेने पर विचार करते हैं और बस एक सांस्कृतिक पल के लिए एक निर्धारित उत्पाद बनने के लिए नहीं। कोई अपनी पहचान और संभावनायें चुन सकता हैं बजाय कि भीड़ द्वारा तय की गई या बताई गई। अस्तित्ववाद नैतिकता के अनुसार, मनुष्य के लिए सबसे अच्छा एक व्यक्ति होना है या

प्रामाणिकता (Authenticity) = मनोवैज्ञानिक जुड़ना + अखंडता
= सिर्फ जिन्दा नहीं

लेकिन एक वास्तविक जीवन जो सच में आप के लिए सही हो। प्रामाणिकता और मानव अस्वतंत्रता में चयन करने में विफलता या किसी के विकल्प के लिए पूरी जिम्मेदारी लेने के लिए विफलता है

अप्रामाणिकता (Inauthenticity) = मानसिक बेतरतीबी + अखंडता की कमी

तदनुसार, सभी की सबसे बुरी बात प्रामाणिकता और अस्वतंत्रता में है, इसलिए यह नैतिक रूप से नाजायज है। अच्छाई के सबसे बड़ा सार चयन है। यह सब जानते है, आदमी कभी भी बुराई नहीं चुनता है। एक आदमी एक आदमी तभी है जब वह चयन पसंद करता हो। जब वह चयन पसंद करता है तो वह अपने ही मूल्यों को पैदा करता है। जब वह अपने स्वयं के मूल्यों को बनाता है, वह अपने आप को ही बनता है या सार बनाता है।

मौलिक अभिधारणाएं

स्थायित्व और बदलाव Permanence and Change: अस्तित्ववादी सार का पहले से ही होने से इनकार करते हैं। वे ये धारणा कि हर इंसान के लिए एक पूर्व निर्धारित प्रकृति है को अस्वीकार करते है। आदमी एक तर्कसंगत आत्मा जो वस्तु से बनी है, शरीर, के साथ पैदा नहीं हुआ है। मनुष्य को जन्म से कोई सार प्राप्त नहीं है; उसको खुद ही अपने लिए सार बनाना होगा। और डार्विन के साथ, अस्तित्ववादी सहमत हैं कि कोई जीवित प्राणि एक जैसा नहीं रहता - सभी बदलने की प्रक्रिया में हैं। नतीजतन, अस्तित्ववाद को परिवर्तन के दर्शन में से एक के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

सार से पहले अस्तित्व Existence precedes essence: अस्तित्ववाद किसी भी तरह के नियतिवाद और आदमी की मुक्त प्रकृति के प्रतिज्ञान के खिलाफ, एक विद्रोह है। वे स्वीकार करते हैं कि अस्तित्व सार से पहले से है कि आदमी मौलिक सार बनाने के लिए स्वतंत्र है। जैसाकि ब्लैक हैम लिखते हैं, "आदमी का कोई

निर्माता नहीं है। आदमी ने खुद ही खुद की खोज की है। पहले उसका अस्तित्व आया; अब वह अपने सार का निर्धारण करने की प्रक्रिया में है। आदमी पहले है, और फिर वह खुद को परिभाषित करता है "।

स्वतंत्रता अस्तित्व के समान है Freedom is identical with existence: उसकी आवश्यक परिपक्वता में आदमी, स्वतंत्र इच्छा नहीं रखता है, बल्कि वह पूर्ण स्वतंत्रता की स्थिति में रहता है। पर्यावरण या वंशानुगत बलों में से कोई भी कितनी भी मजबूत हो, आदमी की स्वतंत्रता नष्ट नहीं कर सकती है। कुछ अस्तित्ववादी आजादी के लिए सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है, कि यह पूर्ण है। कुछ पारंपरिक दार्शनिक की स्वतंत्रता वैकल्पिक वस्तुयों के बीच चयन करने की तरह, इसमें ऐसा कुछ नहीं है। मनुष्य के पास कोई दिग्दर्शिका Guideposts नहीं है जिसके द्वारा वह अपनी पसंद चुन सके। उसे तो बस विकल्प चुनने हैं और इस चुनाव से अपने होने का निर्धारण करना है। वह अपने ही फैसलों और प्रभाव जो उसे अपने पर हैं और दूसरों पर, के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार है।

कारण (Reason): अस्तित्ववाद का दावा है कि लोग वास्तव में बजाय तर्क के जो भी अर्थ बनता है, के आधार पर निर्णय करते हैं। Kierkegaard ने दुनिया में एक तंत्र रूप में मानव के उपयोग होने का भय देखा: " हो सकता है कि मैं तर्कसंगत हूं और वाकी सभी भी तर्कसंगत है, तो इसमें डरने की बात नहीं है और चिंतित महसूस करने के लिए कोई कारण नहीं है"।

बेतुकापन (The Absurd): एक व्यक्ति की चेतना, अगर कुछ अच्छा या सही करने के लिए तरस रही है, और किसी ऐसे व्यक्ति से टकरा जाती है जिसमें अच्छा या कुछ सही करने कि कोई बात ही नहीं है तो यही मूर्खता या बेतुकापन है। बेतुकापन की धारणा इस विचार पर आधारित है कि हम जिसे जो भी नाम देते हैं उससे परे दुनिया में उसका कोई अर्थ नहीं है। इस अर्थहीनता में नीतिभ्रष्टता या दुनिया के अन्याय शामिल हैं। यह धारणा है कि बुरी चीजें अच्छे लोगों को कुछ नहीं कहती है, विरोधाभासों के साथ, दुनिया में, लाक्षणिक रूप से कह सकते हैं कि, एक अच्छा व्यक्ति या एक बुरा आदमी ऐसा कुछ नहीं होता है, जो होता है, यह किसी के भी साथ हो सकता है, एक बुरा आदमी या एक अच्छा व्यक्ति। दुनिया की मूर्खता की वजह से, किसी भी समय में, किसी भी बिंदु पर, किसी को भी, कुछ भी हो सकता है, और एक दुखद घटना बेतुकापन के साथ सीधे टकराव में किसी के लिए भी बोझ हो सकती है।

सत्य शहर (Fact city): मनुष्य नहीं होने के मोड में है। यह और अधिक आसानी से समझा जा सकता है जब इसका सम्बन्ध अतीत के अस्थायी आयाम के साथ जोड़ा जाये: किसी का अतीत है कि वह क्या है, कि वह किस तरह से बनाया-समझाया गया है। हालांकि, यह कहना कि, किसी के अतीत की वास्तविकता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा (वर्तमान और भविष्य) को नजरअंदाज करने का मतलब कि ये बताना कि वह अतीत में क्या था, पूरी तरह से अपने आप को अब से अलग करना होगा। किसी का अपनी ठोस अतीत से इनकार करना एक असिद्ध जीवन शैली को न्योता देना है, और एक ही बार में सारे शहर के तथ्य अन्य के लिए चले जाते है। दूसरे शब्दों में, एक का मूल और उसका उभार, उसके अतीत पर निर्भर करता है।

अलगाव की भावना (Alienation): अलगाव की भावना मान्यता से अपने आप उभर सकता है है कि किसी ने अपने संसार के लिए भीड़ या दूसरों से अपना अर्थ प्राप्त किया हुआ है, और अपने आप से नहीं, या कि कोई भीतर के स्व के साथ संपर्क में नहीं है। और हमारा वर्तमान, व्यक्तिगत और सामूहिक मानसिक अस्थिरता की जड़ें, मुद्दे से दूर अलगाव की भावना, हमारे मानवता के कारणों से अर्थ, मूल्य, उद्देश्य और दृष्टि, अलगाव की भावना के साथ जुड़े अलगाव व मानवता के कारणों से है।

आक्रोश (Angst): आक्रोश, कभी कभी कहा जाता है भय, चिंता या पीड़ा, ये शब्द कई अस्तित्ववादी विचारकों के लिए आम है। आम तौर पर यह नकारात्मकता, मानव स्वतंत्रता और जिम्मेदारी के अनुभव से उत्पन्न होने वाली भावना के कारण है। ठेठ उदाहरण के अनुभव से एक है जब एक चट्टान जहां कोई खड़ा है जहाँ न केवल गिरने का भय है, लेकिन अपने आप को फेंक बंद करने की संभावना का डर भी है। इस अनुभव में कि कोई उसे पीछे नहीं खींच रहा है, कोई सोच सकता है या तो अपने आप को दूर फेंक करने के लिए या अभी भी खड़ा होने के लिए, और कोई अपनी स्वतंत्रता को अनुभव कर सकता है। यह आम तौर पर मानव स्वतंत्रता और जिम्मेदारी का अनुभव माना जाता है। यह वह पूर्ण स्वतंत्रता है जो आदमी खुद ढूंढता है और जिम्मेदारी जो इस कारण आती है आदमी में पीड़ा या आक्रोश की हालत पैदा करती है। इस जिम्मेदारी का अहसास अस्तित्व पीड़ा का कारण बनता है।

संन्यास या परित्याग (Abandonment): परित्याग से, अस्तित्ववाद का मतलब है कि जब भगवान मौजूद ही नहीं है, आदमी को खुद ही इस दुनिया में

जीवित रहने के लिए संसार और [illegible] निर्णय कर सकता है ऐसा कोई आदेश या निर्देश नहीं है; वहाँ व्यवहार का कोई दिव्य कोड भी नहीं है; कोई नैतिक कानून प्रकृति में खोजने के लिए नहीं है, या कुछ आदमी द्वारा मानने के लिए नहीं है। पुरुषों को अपने लिए निर्णय करने के लिए छोड़ दिया जाता है, कि वह क्या करना चाहते हैं; उन्हें अपने लिए खुद ही सार बनाना होगा।

निराशा (Despair): निराशा भी पूर्ण स्वतंत्रता से ही उत्पन्न होती है। सार्त्र इन शब्दों में इस हालत का वर्णन करता है " इसका [निराशा] केवल ये मतलब है कि हम अपने आप को एक चमक तक सिमित कर देते है, जो हमारे चाह के भीतर है, या उन संभावनाओं तक जिनकी वजह से हमारी कार्रवाई संभव हो सके"। इस प्रकार, जब हम कुछ करने का फैसला करते है, तो कई बार यह सोचकर नहीं कर पाते है कि उसका उसके लिए या दूसरों के लिए क्या परिणाम हो सकता है? आदमी को आशा के बिना सोचना व, निर्णय करना होगा। निराशा, अस्तित्ववाद में, आम तौर पर आशा के नुकसान का रूप है। विशेष रूप से, अपनी पहचान या आत्म या पहचान के निर्णायक गुणों से अधिक में टूटने की प्रतिक्रिया, आशा का नुकसान है। अगर किसी व्यक्ति ने कहीं कुछ में निवेश किया है, जैसे एक बस ड्राइवर या एक वहां खड़ा हुआ नागरिक, और तब उसे वहां हो रही वार्तो में समझौता नजर आता है, फिर तो वह सामान्य रूप से निराशा की स्थिति में पाया जाएगा – यह एक निराशाजनक स्थिति है। उदाहरण के लिए, एक गायक जो पीठ के बल गिर जाने से गाने की क्षमता खो देता है, निराश हो जायेगा अगर उसके पास करने के लिए और कुछ नहीं है, कुछ भी नहीं उसकी पहचान के लिए जिस पर भरोसा कर सके। उसे उस वक्त क्या करना चाहिए, उसे परिभाषित करने में वह असमर्थ पाता है – ये निराशा का कारण बनता है।

अस्तित्व संकट (Existential Crisis): चिंता की घटना, जो अस्तित्व संकट की एक महत्वपूर्ण विशेषता है, एक दुर्लभ वस्तु के रूप में माना जाता है और आत्म के लिए स्वतंत्रता की अनुभिव्यक्ति बन सकता है। चिंता का अनुभव किसी में समा सकता है, इसलिए मौत के रूप में एक मुद्दा आसानी से इस संकट से उभरने में नजर आता है क्योंकि केवल अपने आप ही कोई अपनी मौत मर सकता है।

पाठ्यचर्या

शिक्षक, रचनात्मकता और आत्म अभिव्यक्ति दिलाने में प्रतिनियुक्त (vicarious) अनुभवों के साथ छात्रों को मदद प्रदान करने का एक साधन है।

मानविकी के विपरीत, गणित और प्राकृतिक विज्ञान में कम ध्यान दिया जाता है, शायद क्योंकि ये विषय, ठंडे, सूखे, नीरूद्देश्यी समझे जाते हैं, और इसलिए आत्म जागरूकता के लिए कम उपयोगी मने जाते हैं। इसके अलावा, व्यावसायिक शिक्षा को एक आजीविका कमाने की तुलना में अपनी क्षमता के बारे में छात्रों को और अधिक पढाने के एक साधन के रूप में माना जाता है। कला शिक्षण में, अस्तित्ववाद व्यक्तिगत रचनात्मकता और कल्पना को कॉपी करने और स्थापित मॉडल की नकल की तुलना में अधिक प्रोत्साहित करती है। हालांकि कई अस्तित्ववादी शिक्षक कुछ पाठयक्रम संरचना, अस्तित्ववाद, अन्य शैक्षिक दर्शन की तुलना में अधिक प्रदान करते हैं, विषय की अपनी पसंद में छात्रों को ज्यादा महत्त्व देते है। एक अस्तित्ववादी पाठ्यक्रम में, छात्रों को विकल्प के रूप में चुनने के लिए एक विस्तृत विविधता दी जाती है। व्यक्तियों के अस्तित्व को दोनों, स्कूल में और स्कूल के बाहर अध्ययन के कोर का गठन करना चाहिए। यह ध्यान देने योग्य है, तथापि, वे मांग नहीं है कि इतिहास, विज्ञान, गणित, और इस तरह के विषयों को पाठ्यक्रम से बाहर कर दिया जाना चा ‌ए। उनकी आलोचना इसलिए है क्योंकि स्कूलों में पाया जाने वाला वस्तु-विषय, अवैयक्तिक, ठंडी, और सूखी धूल के रूप में पाया जाता है। यह मानना सुरक्षित है, तो दोनों पारंपरिक और आधुनिक विषय अस्तित्ववादी स्कूलों में पाया जाना चाहिए। लेकिन विषय को अपने लिए ही नहीं सीखा जाना चाहिए। देखा गया है कि कोई अपने लिए, या शिष्य की बुद्धि के प्रशिक्षण के लिए, या अपने पर्यावरण में छात्र को समाहित करने के लिए, विषय को सिखाने वाले विचार, अस्तित्ववादी के लिए विदेशी जैसे हैं। अस्तित्ववादी पाठ्यक्रम में मौजूदा प्राथमिक, माध्यमिक और कॉलेज के कार्यक्रमों में तेजी से अंतर करने की एक विशेषता है। इन कार्यक्रमों में अधिकांश, नैतिक और कलात्मक तरीके से अपने व्यक्तित्व को व्यक्त करने का अवसर प्रदान करने के लिए तैयार सामग्री से रहित हैं। अस्तित्ववादी दार्शनिक मामलों के बारे में अपने विश्वासों के संदेश के लिए मीडिया के रूप में कला रूपों का व्यापक उपयोग किया गया है। यह निश्चित रूप से, इन मूल्यों पर, मूल्य-क्षेत्र में यथासंभव विस्तृत पाठयक्रम प्रदान करने के साथ होगा। प्राथमिक स्कूल के प्रारंभिक दिनों में, बच्चे को किसी भी कला जिसे वह चुने, में खुद को व्यक्त करने का अवसर दिया जाना चाहिए। इसके अलावा, स्कूल कार्यक्रम को, युवा छात्र को नैतिक मामले में अपने ही निर्णय करने के लिए असंख्य अवसर प्रदान करने चाहिए। अगर ये माध्यमिक और कॉलेज के कार्यक्रमों के दौरान जारी रखा जाता है, तो छात्र को सही मायने में आजादी के लिए शिक्षित किया जा सकेगा। ऐसा लगता है कि

अस्तित्ववादी वास्तविक पाठ्यक्रम या एक पाठ्यक्रम के विषयों के साथ बहुत चिंतित नहीं है, वह तो शिक्षक और छात्र उनके साथ क्या करता है के साथ सम्बंधित है। एक पाठ्यक्रम के भीतर अस्तित्व स्वतंत्रता, पाठ्यक्रम से अधिक महत्वपूर्ण है। जॉर्ज नेलर George Kneller पाठ्यक्रम के प्रत्येक क्षेत्र, इतिहास, विज्ञान, नागरिकता, संगीत, कला, नाटक, कविता, जीवनी कि बात करता है और बताता है कि कैसे अस्तित्व दृष्टिकोण से हर एक के लिए लागू किया जा सकता है। प्रत्येक उदाहरण में छात्र विषय कि तरह रहता है या बेहतर व्यक्तिगत रूप से विचार के तहत सामग्री के जीवन में शामिल हो जाता है। मानविकी, कविता, नाटक, संगीत, कला, उपन्यास आदि को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है, क्योंकि ये आदमी के निहित दुःख, पाप, दुख, त्रासदी, मृत्यु, नफरत और प्यार का खुलासा करने में मानव प्रभाव डालती है। मानविकी आध्यात्मिक शक्ति है। कला और साहित्य, वे कहते हैं, सिखाया जाना चाहिए, क्योंकि वे प्राथमिक (कारण प्रभाव) मानव प्रकृति की शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन के माध्यम से छात्र दूसरों के विचारों और निर्णय से लाभ उठा सकते हैं। इतिहास छात्रों को, पाठ्यक्रम के इतिहास को बदलने के लिए और भविष्य बदलने के लिए सिखाया जाना चाहिए। वैज्ञानिक विषयों और गणित को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए, लेकिन वे और अधिक तनाव देने वाले नहीं होने चाहिए, क्योंकि वे उद्देश्यी ज्ञान के लिए होते हैं। आत्म ज्ञान सार्वभौमिक ज्ञान से पहले आना चाहिए।

संक्षेप में, वे औपचारिक पढ़ाई जिसमें कुछ विषय या किताबें हों, में विश्वास नहीं करते, लेकिन एक पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए, जो दिल पर भावुक और अच्छा प्रभाव दे, पढ़ने का मन करे, और व्यक्तिगत संपर्क बढ़ाने में मदद करे। पाठ्यक्रम, सुलझा और शिक्षार्थी के स्वामित्व वाला, चुना जाना चाहिए।

निर्देशात्मक क्रियाविधि

अस्तित्ववादी तरीके व्यक्ति पर ध्यान केंद्रित होते हैं। सीखना (लर्निंग) स्वयं निर्धारित, आत्म निर्देशित है और शिक्षक, जो प्रत्येक छात्र के लिए खुले तौर पर और ईमानदारी से संबंधित है, के साथ व्यक्तिगत संपर्क का एक रूप भी है। हकीकत में, जिस तरह विषय नियंत्रित किया जाता है, विषय की तुलना में अस्तित्ववादियों के लिए अधिक महत्वपूर्ण है। व्यक्तिगत मतभेदों को समझने और व्यक्ति की अभिरुचि, जरूरत और क्षमताओं के हिसाब से विविध पाठ्यक्रमों कि इच्छा अस्तित्ववादी के लिए जरूरी है। अस्तित्ववादी व्यक्ति पर ध्यान केंद्रित करते हैं। सीखना (लर्निंग) स्वयं निर्धारित, आत्म निर्देशित है और शिक्षक, जो प्रत्येक छात्र के

लिए खुले तौर पर और ईमानदारी से संबंधित है, के साथ व्यक्तिगत संपर्क का एक रूप भी है। शायद सबसे महत्वपूर्ण धारणा या अंतर्निहित विश्वास शैक्षिक पद्धति के बारे में ये है कि किसी भी शिक्षण पद्धति में जानने के लिए चुनने की जिम्मेदारी वास्तव में व्यक्ति पर होनी चाहिए। यह धारणा पूरी तरह से व्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता पर अस्तित्ववादी के आग्रह के साथ है। जाहिर है, स्वाभिमान पर अस्तित्ववादी, पारंपरिक व्याख्यान-सुनाना, आवंटित-परीक्षण विधि का प्रयोग करेगा। सामाजिक जोर की वजह से, बराबर उत्साह के साथ करणवाद (instrumentalism) की समस्या को सुलझाने की विधि (problem-solving method) को वह अस्वीकार करेगा। कोई भी विधि जो समूह सोच या समूह कार्रवाई को बढ़ावा दे, अस्तित्ववादी के लिए असम्बन्ध होगी। शायद, विधि के लिए एकमात्र कसौटी है कि शिक्षक, उसके उदाहरण के द्वारा बताये कि शिक्षा व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर एकाग्रता, जो तथ्यों और मान्यताओं जो उसके लिए प्रासंगिक है, को स्वीकार करने के लिए छात्र को प्रोत्साहित करती है।

विज्ञान एक व्यक्तिगत, मानव गतिविधि है जिसमें छात्र, विज्ञान के इतिहास को खोजने के महान क्षणों को दोबारा जीवन के जरिये जीते हैं या जीने की कोशिश करते हैं। यह न एक प्रयोगशाला तकनीक के रूप में और न ही सामग्री की एक ठंडी बेजान शरीर में महारत हासिल करने के रूप में सिखाया जाना चाहिए। विज्ञान पढाने का अस्तित्ववाद का तरीका है, छात्रों का उन क्षणों को जीना। जिसने समस्या को सुलझाना है, उसके जीवन से सम्बम्न्धित यदि समस्या है तो सुकराती 'समस्या विधि' (Socratic 'Problem Method') को स्वीकार किया जाना चाहिए। लेकिन यह समस्या समाज की जरूरतों से प्राप्त होता है, तो अस्वीकार्य है। सुकरात की तरह, 'व्यक्तिगत पढ़ने' पर जोर दिया जाना चाहिए। समूह विधि को अस्वीकार करना चाहिए, क्योंकि समूह गतिशीलता, अलग-अलग फैसले पर समूह के निर्णय की श्रेष्ठता प्रमुख है। वहाँ अद्वितीय व्यक्तिवाद और स्वतंत्र चुनाव खोने का खतरा है। शिक्षण के तरीके से बच्चों में रचनात्मक क्षमताओं को विकसित करना होगा। दुनिया और आदमी, उनके उपक्रमों द्वारा खुद को प्रकट करते हैं।

अध्यापक

शिक्षक की भूमिका, छात्रों को अपने स्वयं के सार को परिभाषित करने में मदद कर, उन्हें विभिन्न रास्तों को चुनने में है, जैसा वे अपनी जीवन में चाहते हैं, और एक ऐसा वातावरण जिसमें वे स्वतंत्र रूप से अपने खुद के पसंदीदा तरीके चुन सकते हैं, बनाने में है। चूंकि निर्णय लेने में भावना कारण से अलग नहीं है,

अस्तित्ववादी पूरे व्यक्ति की शिक्षा इस अस्तित्व ढांचे से तैयार शिक्षा के पांच लक्षण हैं। ये हैं, अधिक प्रामाणिक होना, अधिक आध्यात्मिक बनना, आलोचनात्मक रवैया, व्यक्तिगत पहचान का स्पष्ट अर्थ और दूसरों के प्रति एक विकासशील जागरूकता, शामिल हैं। शिक्षक संभवतः एक बहुत ही मूल्यवान 'अन्य क्षितिज' जो गुणात्मक छात्रों की समझ का आकलन करने में सक्षम है, की पेशकश करने में सक्षम हैं। शिक्षक छात्रों को आध्यात्मिकता के शैक्षिक विकास में सबसे प्रभावशाली हो सकता है, तो उनकी बातचीत के माध्यम से, संकट पैदा किया जा सकता है। शिक्षक, शिक्षार्थी का सर्वश्रेष्ठ दुश्मन, घाव करने में सबसे आसान व सक्षम हो सकता है। यह कुछ हद तक, आदेश का परीक्षण करने और अन्य लोगों की समझ को स्पष्ट करने में शैतान के अधिवक्ता खेल की तरह है। संभावनाओं के लिए खुला होने की शिक्षक की विशेषता में, दूसरों को फिर से मूल्यांकन करने के लिए अनुमति देने के लिए एक इच्छा भी शामिल है, जिससे, समझ के उन पहलुओं को व्यक्त किया जा सकता है। शिक्षक को पता होना चाहिए कि कैसे वह पूरे पाठ्यक्रम से संबंधित है। एक शिक्षक की महत्वपूर्ण विशेषता है कि उन में और दूसरों में क्या सार्थक और मूल्यवान है, के संबंध के साथ निर्णय करने की क्षमता है।

अस्तित्ववादी नहीं चाहते है कि शिक्षक, सामाजिक विचारधारा वाले अंपायर या मुफ्त सामाजिक गतिविधि या एक मॉडल के व्यक्तित्व के प्रदाता, के रूप में छात्रों द्वारा सीमित कर दिया जाये। वह अपने आप में एक स्वतंत्र व्यक्तित्व हो, इस तरह के संबंधों और व्यक्तिगत छात्रों को वे विचार देने के लिए कि वे भी उस तरह का मुक्त व्यक्तित्व हो। शिक्षक को खुद और अपने छात्रों के बीच सकारात्मक संबंध का निर्माण करना चाहिए। उसे बच्चों, व्यक्तियों के लिए (जैसे 'आलसी', 'धीमी गति से सीखने' आदि) लेबल लगाने से बचना चाहिए क्योंकि कोई वास्तव में इस तरह से खुद को सोच व मान सकता है। शिक्षक भी बदल रहा है और वह स्वयं की खोज में लगे विद्यार्थी के लिए विद्यार्थी-दिग्दर्शक के रूप में होने लगा है।

छात्र

जिस किसी ने भी शिक्षा की जितनी इच्छा जाहिर की है उसे वह शिक्षा दी जानी चाहिए। यह प्रतिक्रिया जहाँ तक सामान्य रूप से शिक्षा का सवाल है तो शायद सही है, क्योंकि शिक्षा के व्यापक अर्थ में स्कूली शिक्षा से अधिक शामिल हैं। दूसरे शब्दों में, कोई व्यक्ति खुद को इस तरह के रूप में कई मायनों में पढ़ने के द्वारा, काम करके शिक्षित कर सकते हैं और शायद सबसे महत्वपूर्ण है, जीने के द्वारा, तैयार

और अभिनय से। अस्तित्ववादि बच्चे को पूर्ण स्वतंत्रता देना चाहता है। लेकिन बच्चे को अपने 'स्व' की प्रकृति को जानना जरूरी हैं और उसे खुद को समझना और अपूर्णता को पूर्णता में परिवर्तित करना आना चाहिए। वे नहीं चाहते कि बच्चे, स्वार्थी निरंकुश और गैर जिम्मेदार बने। स्वतंत्रता केवल प्राकृतिक विकास के लिए आवश्यक है। शिक्षा बच्चे की शक्तियों और जरूरतों के हिसाब से प्रदान की जानी चाहिए। अपने 'स्व' के साथ बच्चे के संबंध को काटने या तोड़ने की बजाय मजबूत किया जाना चाहिए। बच्चे को विकल्प चुनने और निर्णय लेने है। बच्चे को बेहतर पनपने के लिए तीव्र प्रतिस्पर्धा, कठोर अनुशासन और असफलता के डर कि आवश्यकता है। प्रत्येक बच्चे को अपने स्वयं और मूल्यों को समझते की जरूरत है और उसे बदलने के लिए अनुभवों का प्रभार लेने के लिए विकसित किये जाने की जरूरत हैं। प्राथमिक जोर हमेशा बच्चे पर होना चाहिए, शिक्षार्थी के रूप में और सीखने के प्रोग्राम पर नहीं। बच्चे को सकारात्मक मूल्यांकन की जरूरत है, न कि लेबल की।

स्कूल

स्कूल का माहौल, लोगों को एक स्वस्थ तरीके से विकास प्रदान करने वाला होना चाहिए। स्कूल में कोई भी विषय (एथलेटिक्स, संगीत आदि की तरह अतिरिक्त गतिविधियों भी) शिक्षण और मनुष्य के विकास के लिए अस्तित्व स्थितियों पेश कर सकता हैं। स्कूल कार्यो का उद्देश्य आत्म अनुशासन और आत्म मूल्यांकन पोषण करने के लिए होना चाहिए। स्वशासन, योजना बनाने में शिष्यों की भागीदारी और एक मुक्त वातावरण के लिए प्रोत्साहन, स्कूल की विशेषताएँ होनी चाहिए। मशीनीकरण और अवैयक्तित्व, स्कूल में कम-से-कम (counteracted) किया जाना चाहिए। छात्र की समयसीमा (timetables) और काम प्रोग्रामर (work programmers) कम्प्यूटरीकृत होने चाहियें। और इस तरह छात्रों और स्कूल के बीच संबंध क्रमादेशित व सहृदय होने चाहियें। चिंता और छात्र के लिए व्यक्तिगत सम्मान स्कूल की एक विशेषता होनी चाहिए।

सीमायें Limitations

अस्तित्ववाद के दर्शन का अध्ययन करने के बाद, किसी के मन में सवाल उठता होगा: किस तरह से किसी स्कूल में उद्देश्य, पाठ्यक्रम और तरीके, व्यक्ति की पसंद और स्वतंत्रता पर निर्भर कर सकते हैं? इस तरह के प्रोग्राम किसी संगठन के लिए असंभव हो सकते है और अराजकता फ़ैल सकती है। हर छात्र के व्यक्तित्व के साथ शिक्षक का व्यक्तिगत संबंध और करीबी समझ, समय और प्रयास के लिए एक

बहुत बड़ी आवश्यकता होती है। होना (being), जिसका अर्थ है अवधारणायें कि, व्यक्ति बहुत स्पष्ट नहीं है और अस्पष्ट प्रतीत होता है। यह एक शैक्षिक प्रोग्राम, जिसकी शैक्षिक प्रक्रिया के उद्देश्यों की शब्दावली स्पष्ट नहीं है, का निर्माण करना आसान नहीं है। शैक्षिक मानक और प्रथायें जो मनमाना तरीके से बच्चे के व्यवहार में हेरफेर करते हैं, स्वतंत्र चुनाव के सिद्धांत का उल्लंघन है। कई शिक्षण पद्धतियों, परीक्षण प्रक्रियाओं और वर्गीकृत करने वाले बच्चों की नौकरशाही व्यवस्था पर सवाल उठाया जा सकता है। अस्तित्ववाद की अन्य सीमायें, आधुनिक मनुष्य के लिए एक दर्शन के रूप में सोच, स्कूल की स्वीकार्यता कम करती हैं। इस वैज्ञानिक युग की जटिल समस्याओं को सुलझाने के लिए वे कोई सामाजिक सिद्धांत प्रदान नहीं करते हैं। आदमी, खुद के लिए जिम्मेदार नहीं है, लेकिन अपने साथी के लिए है। एक शैक्षिक दर्शन के रूप में, अस्तित्ववाद, कम से कम अपने मौजूदा स्वरूप में, शैक्षिक सिद्धांत के लिए एक पर्याप्त आधार प्रदान नहीं करता है।

गुण

चूंकि अस्तित्ववाद आशावादी है, जो कार्रवाई के सिद्धांत का उपदेशनात्मक है और स्वतंत्रता, जिम्मेदारी और पसंद की अवधारणा पर जोर देता है, यह शिक्षक, जो नए क्षितिज पर दिखाया गया है, को कुछ करने के लिए एक बदी हुई अपील है। मनुष्य कारण से नहीं समझाया जा सकता है, जैसाकि आदर्शवादीता ने जोर दिया है। यह इन सभी का मूल बताता हैं और आशा करता है कि आदमी उन्हें दूर करेंगे। ये उठते है; जब एक आदमी अपने जीवन की अर्थहीनता की भावना को जन लेता है। ये मनुष्य के प्रागनुभव, जिसका मतलब है कि वह अधिक से अधिक प्रामाणिक हो जाना चाहिए, चाहते हैं। यह मानव कमजोरियों, सीमाओं और संघर्ष का वर्णन और निदान करता है। अस्तित्ववाद एक रवैया और दृष्टिकोण है कि मानव अस्तित्व, प्रकृति का सार और दुनिया के बजाय आदमी या व्यक्तियों के व्यक्तिगत गुणों पर जोर देता है। शिक्षा, इसलिए, उपदेशीत और आदमी के मन को समृद्ध करने वाली होनी चाहिए, कि यह अपनी आँखों में और, दूसरों की आँखों में सम्मानजनक हो सके। यह उसे एक मानव बनाने के लिए मदद करेगी।

प्रश्न (Questions)

1. आप आदर्शवाद से क्या समझते हैं? विस्तार से चर्चा करें।
2. आधुनिक आदर्शवाद पर चर्चा करें।
3. धार्मिक आदर्शवाद क्या है? चर्चा करें।

... साथ आदर्शवाद की शैक्षिक विरासत है। चर्चा करें।

5. आदर्शवाद के सिद्धांतों, गुण और अवगुण पर चर्चा करें।
6. आप प्रकृतिवाद से क्या समझते हैं? विस्तार से चर्चा करें।
7. प्रकृतिवाद क्या है? प्रकृतिवाद के विभिन्न रूपों के बारे में लिखें।
8. प्रकृतिवाद शिक्षा के बारे में क्या बताता हैं? चर्चा करें।
9. प्रकृतिवाद का मूल्यांकन और चर्चा करें।
10. प्रकृतिवाद के सिद्धांतों, गुण और अवगुण पर चर्चा करें।
11. आप व्यवहारवाद से क्या समझते हैं? विस्तार से चर्चा करें।
12. व्यवहारवाद क्या है? व्यवहारवाद के विभिन्न रूपों के बारे में लिखें।
13. व्यवहारवाद के सिद्धांतों, गुण और अवगुण पर चर्चा करें।
14. व्यवहारवाद के आधार पर शिक्षक, स्कूल और अनुशासन के बारे में समझायें।
15. आधुनिक शिक्षा पर व्यवहारवाद के प्रभाव का वर्णन करें।
16. आप अस्तित्ववाद से क्या समझते हैं? विस्तार से चर्चा करें।
17. अस्तित्ववाद के आधार पर आध्यात्मिक स्थिति का वर्णन करें।
18. अस्तित्ववाद के आधार पर प्रामाणिकता और मानव स्वतंत्रता पर चर्चा करें।
19. अस्तित्ववाद के मौलिक तत्व क्या हैं?
20. अस्तित्ववाद पाठ्यक्रम का कैसे वर्णन करता हैं? चर्चा करें।
21. अस्तित्ववाद शिक्षक, छात्रों और शिक्षण पद्धति के बारे में क्या बताता हैं? वर्णन करें।

Chapter 6

वैचारिक पाठ्यक्रम की रूपरेखा
CONCEPTUAL FRAMEWORK OF CURRICULUM

पाठ्यक्रम के लिए एक वैचारिक ढांचा, व्यवस्थित पाठ्यक्रम मूल्यांकन को प्रोत्साहित करता है और हमें अधिक सही वर्णन, समझ, भविष्यवाणी और पाठ्यक्रम के काम को नियंत्रित करने के लिए अनुमति देता है। पाठ्यक्रम, एक लैटिन शब्द से बना है जिसका अर्थ है - एक रथ दौड़ के कार्यक्रम (the course of a chariot race)। अपने जटिल प्रकृति की वजह से इस पद के लिए एक सरल शब्दकोश परिभाषा प्रदान करना मुश्किल है। बस इसे स्कूल में या एक संस्था में पढ़ाये विषयों की सूची के रूप में माना जा सकता है। व्यापक दृष्टि में यह एक अनुभव है जोकि छात्र के माध्यम से होकर गुजरता है, जोकि उस संस्था का हिस्सा होते हैं। पाठ्यक्रम विकास की प्रक्रिया, शैक्षिक उद्देश्यों की सफलता के लिए आवश्यक है। इस प्रक्रिया को अधिक से अधिक कुशल और प्रभावी होना चाहिए; इसे पिछले कार्य के आधार पर बनाया जाना चाहिए। इस प्रक्रिया को एक विशिष्ट एल्गोरिथ्म शैक्षिक प्रक्रिया के अंतिम लक्ष्यों की परिभाषा से शुरू करने में किया जाना चाहिए, इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कुछ खास उपकरणों के चयन के माध्यम से, और एक पाठ्यक्रम के अंदर विभिन्न तत्वों के एकीकरण से प्राप्त किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम विभिन्न विषयों की पच्चीकारी (मोज़ाइक mosaics), शिक्षा और शिक्षण रणनीतियां है और जो एक निश्चित संस्था के लिए विशिष्ट है, वह एक तस्वीर में एकीकृत करना चाहिए। यह संस्था की सभी मौजूदा सामग्री और मानव संसाधनों का सम्मान करना है। पाठ्यक्रम विकास की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण विषयों की भागीदारी प्रक्रिया के पहले चरण से होनी चाहिए, और ये कि पहला चरण संस्था के मिशन के बयान की रचना है। छात्र, शिक्षा और आधुनिक शिक्षा संस्थानों में उपयोग करने की प्रक्रिया में केंद्रीय आंकड़ा है और छात्र केंद्रित दृष्टिकोण पाठ्यक्रम को आकार देने की प्रक्रिया में उनके मुख्य दर्शन के रूप में होना चाहिए। छात्रों को डिजाइन और विकास पाठ्यक्रम की प्रक्रिया में शामिल किया जाना चाहिए। छात्रों और उनके संगठनों के प्रतिनिधियों को समितियों और पाठ्यक्रम डिजाइन के लिए प्रभारी निकायों के काम में शामिल किया जाना चाहिए। यह सच है कि छात्रों को उनके सीखने के आकार में शामिल करना, शिक्षा की प्रक्रिया के लिए विशेष गुणवत्ता देता है। संस्था के सभी हितधारकों को पाठ्यक्रम विकास की प्रक्रिया में शामिल किया जाना चाहिए, और उन सब को वो

वजहें बतानी चाहिए जिनसे सिद्ध होकि संस्था मौजूद है। मिशन के बयान का चित्रांकन किया जाना चाहिए, कि स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के लिए किस तरह के छात्र हम चाहते हैं। पाठ्यक्रम विकास एक प्रक्रिया है जो शिक्षा के सिद्धांत और पद्धति के साथ एक सामग्री क्षेत्र एकीकृत करता है और इसके प्रभाव का मूल्यांकन करता है। जब पाठ्यक्रम विकास एक व्यवस्थित दृष्टिकोण से होता है, तो यह आसानी से संस्था में, शैक्षिक प्रक्रिया में सुधार करने के क्रम में, एक संकाय सदस्य के प्रयासों के प्रभाव के उच्च गुणवत्ता वाले सबूत उपलब्ध कराता है। पाठ्यक्रम विकास की बुनियादी बातों में से एक है कि यह परिणाम प्रक्रियाओं का विश्लेषण और बदलने के लिए निर्णय का लगातार सुधार है। शायद संभव तरीकों में से एक है पाठ्यक्रम की कुंजी निर्गम (outputs) को मापना। हम कई निर्गम (outputs) माप सकते हैं जैसे: भौतिक पहलु, सामाजिक पहलु, पारस्परिक कौशल, सतत शिक्षा, समस्या को हल करना, छात्र संतोष, शिक्षा की लागत, आदि। यह अनुमान लगाना आवश्यक है कि कब इन उत्पादनों को मापने के लिए उचित समय है, क्या यह कैरियर के शुरुआत में है, या अंत में है, शुरुआती दिनों में है, या कई सालों के बाद, या अध्ययन के दौरान है। मापने के लिए उपकरण (Tools) का चयन सावधानी से किया जाना चाहिए। पाठ्यचर्या कुछ स्थिर नहीं है और स्थायी परिवर्तन उनके प्रमुख विशेषताओं में से एक है। पाठ्यक्रम की ताकत शिक्षकों द्वारा उत्पादित या लिखित दस्तावेजों से परे है।

एक पाठ्यक्रम को बस अलग विषयों की एक समग्रता रूप में में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि अध्ययन के एक कार्यक्रम जहां एक पूरा, हिस्से की तुलना में अधिक होता है। पाठ्यक्रम में सामग्री और परीक्षा भी शामिल है। व्यापक फ्रेम में पाठ्यक्रम के उद्देश्य, शिक्षण विधियां और विषय अनुक्रमण भी शामिल है। पाठ्यक्रम की व्यापक अवधारणा शैक्षिक रणनीतियों में से एक परिष्कृत मिश्रण है, जिसमें पाठ्यक्रम सामग्री, सीखने के परिणाम, शैक्षिक अनुभव, मूल्यांकन, शैक्षिक वातावरण और व्यक्तिगत छात्रों की सीखने की शैली, व्यक्तिगत समय सारिणी और काम के कार्यक्रम शामिल है। पाठ्यक्रम में न केवल औपचारिक शिक्षण / सीखना शामिल है, इसमें संस्थागत जीवन से जुड़े मानव विकास के अन्य पहलुओं को भी शामिल किया गया है। इसका उद्देश्य एक नागरिक को छात्र में बदलने का है। सूचना विस्फोट के समय में, पाठ्यक्रम योजनाकारों को, जो सिखाया जाना चाहिए वही तय नहीं करना चाहिए बल्कि यह भी कि क्या पाठ्यक्रम से समाप्त किया जाना चाहिए, इसलिए न्यूनतम आवश्यक ज्ञान और कौशल अर्थात कोर ज्ञान और कौशल

को परिभाषित किये जाने की जरूरत है। पाठ्यक्रम, गतिविधियों की योजना की एक सुसंगत इकाई है जोकि विश्वविद्यालय की कोचिंग के तहत अपने पूरे कैरियर सीखने के दौरान एक शिक्षार्थी द्वारा किए जाते हैं। पाठ्यक्रम ये इंगित करता है कि क्या उद्देश्य छात्र द्वारा प्राप्त किया जाना चाहिए और इसे हासिल करने के लिए, क्या कार्यों का क्रम पूरा किया जाना चाहिए। एक पाठ्यक्रम हमेशा मुख्य रूप से एक पूरे अध्ययन कार्यक्रम से संबंधित होता है और पाठ्यक्रम में विषय और संभवतः पाठ्यक्रम में विषयों के समूह होते हैं। परंपरागत रूप से सामग्री हमेशा पाठ्यक्रम का सबसे महत्वपूर्ण और प्रासंगिक घटक माना गया है।

पाठ्यक्रम - अर्थ और प्रकृति

CURRICULUM - MEANING AND NATURE

पाठ्यक्रम एक लैटिन शब्द 'Currere' से अग्रहित है जिसका अर्थ है एक 'रेस कोर्स' या एक हवाई पट्टी जिससे एक लक्ष्य तक पहुँचा जा सकता है। तदनुसार, पाठ्यक्रम, शिक्षण और शिक्षाप्रद कार्यक्रम है जिसके बाद विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य, आदर्श और जीवन की आकांक्षायें प्राप्त होती है। एक शैक्षिक संदर्भ में पहली बार इस शब्द का ज्ञात उपयोग professio Regia में है, जो पेरिस विश्वविद्यालय में कार्यरत, Professor Petrus Ramus द्वारा किया गया था, और जो 1576 में मरणोपरांत प्रकाशित हुआ था। मोटे तौर पर पाठ्यक्रम को छात्र अनुभव माना गया है जोकि शैक्षिक प्रक्रिया में होने की समग्रता के रूप में परिभाषित है। ये शब्द अक्सर शिक्षक या स्कूल शिक्षण लक्ष्यों के संदर्भ में, शिक्षा की एक योजना अनुक्रम या छात्र के अनुभवों के एक दृश्य को विशेष रूप से संदर्भित करता है। पाठ्यक्रम में शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के मूल्यांकन के लिए शिक्षण सामग्री, सामग्री, संसाधन और प्रक्रियाओं के साथ विद्यार्थियों की योजना शामिल हो सकते है। पाठ्यक्रम पूर्ण मानकीकृत हो सकता है या उसमें उच्च स्तर के प्रशिक्षक या शिक्षार्थी स्वायत्तता शामिल हो सकते हैं। आम तौर पर पाठ्यक्रम की परिभाषा पर कोई सहमति नहीं है। कुछ प्रभावशाली परिभाषाएँ जो पाठ्यक्रम के विभिन्न तत्वों का वर्णन कर सकती हैं निम्नलिखित हैं:

केर (Kerr) पाठ्यक्रम को, "सभी शिक्षण जो योजनानुसार है और स्कूल से निर्देशित होता है, चाहे वह समूह में किया जाता है या व्यक्तिगत रूप से, अंदर या स्कूल के बाहर हो" परिभाषित करता है।

ब्रस्लाव्स्क्य (Braslavsky) ने कहा कि पाठ्यक्रम समुदायों, शैक्षिक पेशेवरों और राज्य के बीच एक समझौते है जो शिक्षार्थि उनके जीवन की विशिष्ट अवधि के दौरान कुछ अच्छा हासिल करने के लिए करते हैं। इसके अलावा, पाठ्यक्रम को, "क्यों, क्या, कब, कहाँ, कैसे और किसके साथ सीखने के लिए" परिभाषित किया जा सकता है ।

कनिंघम (Cunningham) के अनुसार, "यह कलाकार (शिक्षक) के हाथ में एक उपकरण (tool) है जिसकी सहायता से वह उसकी सामग्री (छात्र) को अपने स्ट्रडियो (स्कूल) में अपने आदर्श (उद्देश्य) के अनुसार मोल्ड करता है।"

मुनरो (Munroe) परिभाषित करता है, "पाठ्यक्रम में शामिल हैं वे सभी अनुभव जो स्कूल द्वारा शिक्षा के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए उपयोग किया जाते हैं"।

फ्रोएबेल (Froebel) कहते हैं, "पाठ्यक्रम की ज्ञान और मानव जाति के अनुभव के एक गोल के एक प्रतीक के रूप में कल्पना की जानी चाहिए"।

कौशल, प्रदर्शन, व्यवहार की रूपरेखा और मूल्य, ये सब विद्यार्थियों से स्कूली शिक्षा के माध्यम से जानने की उम्मीद कि जाती हैं। इसमें, शिष्यों के परिणामों के बयान, सामग्री के विवरण और योजना अनुक्रम जोकि विद्यार्थियों के वांछित परिणामों को पाने में मदद करने के लिए इस्तेमाल किया जाएगा, शामिल है।

यह एक स्कूल द्वारा प्रदान पूर्ण सीखने का अनुभव भी हो सकता है। इसमें स्कूल से संबंधित विषयों की सामग्री (पाठ्यक्रम), विधियां (रणनीतियां), और अन्य पहलु जैसे मानदंड और मूल्य, शामिल है।

एक सीखने के माहौल में विषयों के समूह के अध्ययन को भी पाठ्यक्रम के रूप में करार दिया गया है। पाठ्यक्रम में विषय इस तरह से व्यवस्थित कर दिया जाता है कि एक विषय को सीखना आसान हो जाये। स्कूलों में, एक पाठ्यक्रम कई ग्रेड तक फैला होता है।

पाठ्यक्रम एक कक्षा, स्कूल, जिला, राज्य या देश द्वारा प्रदान की पूरे कार्यक्रम का उल्लेख भी हो सकता हैं। स्कूल द्वारा परिभाषित पाठ्यक्रम के वर्गों में से एक कक्षा हो सकती है।

कुछ परिभाषाओं के तहत, पाठ्यक्रम निर्धारित है और एक अधिक सामान्य पाठ्यक्रम (syllabus) पर आधारित है जो केवल यह बताता है कि एक विशेष ग्रेड या मानक को प्राप्त करने के लिए, क्या उपविषय समझे जाने चाहिए और किस स्तर पर। शब्द सिलेबस ग्रीक से निकला है। शब्द का ग्रीक में अर्थ है "संक्षिप्त बयान या एक

प्रवचन का मुखड़ा या सार, एक ग्रंथ की सामग्री और व्याख्यान श्रृंखला के विषयों की तालिका"।

पाठ्यक्रम सात चरणों की एक प्रक्रिया में आदेश दिया जा सकता है:

चरण 1: जरूरतों का निदान।

चरण 2: उद्देश्यों का निरूपण।

चरण 3: सामग्री का चयन।

चरण 4: सामग्री का संग्रह।

चरण 5: सीखने के अनुभव का चयन।

चरण 6: सीखने के अनुभव का संग्रह।

चरण 7: क्या मूल्यांकन करना है और तरीके और इसे करने के साधन का निर्धारण।

पाठ्यक्रम की अलग-अलग दृष्टिकोण से परिकल्पना की जा सकती है। समाज के रूप में क्या महत्वपूर्ण शिक्षण और सीखने की परिकल्पना की गई, उसे इरादा पाठ्यक्रम (intended curriculum) कहा गया। चूंकि यह आम तौर पर सरकारी दस्तावेजों में प्रस्तुत किया जाता है, इसे लिखा या सरकारी पाठ्यक्रम (written or official curriculum) कहकर भी बुलाया जा सकता है। शिक्षार्थी वास्तव में क्या सीखते हैं (अर्थात् क्या आकलन किया जा सकता है और सीखने के परिणामों / शिक्षार्थी दक्षताओं के रूप में प्रदर्शन किया जा सकता है) को हासिल या सीखा पाठ्यक्रम (achieved or learned curriculum) कहते हैं। लिखित पाठ्यक्रम पाठ्यक्रम का अर्थ निकास नहीं है, यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह समाज की दृष्टि का प्रतिनिधित्व करता है। लिखित पाठ्यक्रम का आमतौर पर व्यापक और उपयोगकर्ता के अनुकूल दस्तावेजों में व्यक्त किया जाता है: पाठ्यक्रम चौखटे के रूप में; विषय के पाठ्यक्रम / syllabuses में और प्रासंगिक और उपयोगी अधिगम सामग्री के रूप में, जैसे पाठ्य पुस्तके, शिक्षक गाइड, मूल्यांकन गाइड। कुछ मामलों में, लोग पाठ्यक्रम को पूरी तरह से विषय जो पढ़ाये जाते हैं, या पाठ्यपुस्तकों के सेट रूप में और दक्षताओं और व्यक्तिगत विकास के व्यापक लक्ष्यों को भूल जाते हैं। यही कारण है कि एक पाठ्यक्रम ढांचा महत्वपूर्ण है। यह विषयों को व्यापक प्रसंग में दिखाता है कि विषयों से, लक्ष्यों की प्राप्ति, सीखने के व्यापक अनुभव के लिए योगदान करने की जरूरत है। कई आम भ्रांतियां हैं कि पाठ्यक्रम क्या है और सबसे आम में से एक है कि पाठ्यक्रम केवल एक विषयी पाठ्यक्रम पर जोर देता है। जहां लोगों को अभी भी पाठ्यक्रम (curriculum) और विषयी-पाठ्यक्रम (syllabus)

एक-समान दिखते हैं तो उनकी योजना विषयी-सामग्री तक ही सीमित रहने की संभावना है। पाठ्यक्रम (curriculum) की परिभाषा के मवजूद, एक बात निश्चित है। किसी भी शैक्षिक अनुभव की गुणवत्ता हमेशा इसके लिए जिम्मेदार शिक्षक पर एक काफी हद तक निर्भर करेगी।

पाठ्यक्रम की अवधारणा वैसे ही गतिशील है जैसे समाज परिवर्तनशील है। अपने संकीर्ण अर्थ में, पाठ्यक्रम स्कूल में सिखाया जा रहे विषयों की एक सूची है। एक व्यापक अर्थ में, यह सिर्फ स्कूलों में नहीं बल्कि समाज में भी अच्छी तरह से सीखने के अनुभव को दर्शाता है। विषयी-पाठ्यक्रम या पढाई के विषयों को पाठ्यक्रम तभी कहा जा सकता है जब लिखित सामग्री द्वारा शिक्षार्थी गतिशील हो। बेहतर करने के लिए एक परिवर्तन का मतलब है किसी भी मौजूदा हालत में परिवर्तन, संशोधन या सुधार। सकारात्मक परिवर्तन के लिए विकास, उद्देश्यपूर्ण योजना प्रगतिशील होनी चाहिए। यह पाठ्यक्रम कैसे विकसित होता है:

- पाठ्यक्रम विशेषज्ञों और अधिकारियों द्वारा निर्धारित कुछ है।
- कोई भी सही कहा जाने वाला पाठ्यक्रम नहीं है।
- पाठ्यक्रम वास्तविक दुनिया को प्रतिबिंबित, व्यावहारिक और उपयोग में होना चाहिए।
- कई पाठ्यक्रम है जो हम हम सीखते हैं और जहाँ हम बातचीत कर सकते हैं।
- हम लगता है कि ये प्राकृतिक रूप में होगा लेकिन ऐसा नहीं है। यह विशेषज्ञ प्रणालियों से सोच कर बनाया गया है।
- विशेषज्ञ ज्ञान हमारे दैनिक जीवन में ज्यादा के बारे में हमारी सोच को आकार देता है।

यह मानना आसान है कि पाठ्यक्रम और शिक्षण डिजाइन में प्रणालीगत दृष्टिकोण से, समस्याओं में सुधार उपलब्ध करते हुए गुणवत्ता में सुधार कर सकते हैं। पहचान करने के लिए क्या महत्वपूर्ण है, कि योजनाबद्ध तरीके से, एक संस्थागत सेटिंग में सीखने से संबंधित समस्याओं के समाधान के बीच की कड़ी, औपचारिक शिक्षा के वास्तविक दुनिया अनुभव पर आधारित है। हाल के वर्षों में शिक्षा और इसलिए पाठ्यक्रम के क्षेत्र में इस तरह के संग्रहालयों के रूप में कक्षा की दीवारों के बाहर और अन्य सेटिंग्स में विस्तार किया गया है। इन सेटिंग्स के भीतर पाठ्यक्रम में ऑडियो उपकरणों और शिक्षार्थियों के लिए खुद के रूप में अन्य आगंतुकों, निर्जीव वस्तुओं के रूप में विभिन्न कारकों सहित व्यापक गुंजाइश हासिल कर ली गई है।

व्यापक गुंजाइश के तहत, अब पाठ्यक्रम व्यक्ति की कुल सीखने के अनुभव के रूप में परिभाषित किया जा सका है।

पाठ्यक्रम के घटक
CURRICULUM COMPONENTS

पाठ्यक्रम शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह किसी भी तरह का एक खाका है जो शिक्षक और शिक्षार्थी को वांछित लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए मदद करता है। नतीजतन, अधिकारियों ने इसे इस तरह से डिजाइन किया है कि यह शिक्षक और शिक्षार्थियों को सीखने के वांछित परिणामों को पूरा करने में मदद कर सके। पाठ्यक्रम के चार घटक हैं:

1. **पाठ्यक्रम का उद्देश्य, लक्ष्य और उद्देश्य**
   Curriculum Aims, Goals and Objectives

उद्देश्य: प्राथमिक (ज्ञान को प्रदान करना और कौशल का विकास, रवैया, व्यक्तिगत विकास और जीने के लिए आवश्यक मूल्य और समाज को विकासशील और बदलने के लिए योगदान और आवश्यक मूल्यों, अनुभवों, समाज में बदलाव के लिए के बच्चे की जागरूकता और जवाबदेही बढाने की सीख प्रदान करना; बढावा देने और ज्ञान को पहचानने, पहचान और प्यार राष्ट्र और लोगों के लिए जैसे वे हैं, और काम के अनुभव जो काम की दुनिया के लिए अभिविन्यास विकसित करने और ईमानदार और लाभकारी काम करने के लिए तैयार शिक्षार्थी को बढावा देने), **माध्यमिक** (प्रारंभिक शिक्षा के उद्देश्यों को बढावा देने के लिए, और खोजने और विभिन्न अभिरुचि और छात्रों के हितों को बढाने के लिए उन्हें उत्पादक प्रयास के लिए कौशल से लैस करने के लिए और उन्हें या तृतीयक स्कूली शिक्षा के लिए तैयार करने के लिए) और तृतीयक (सामान्य शिक्षा कार्यक्रम जो राष्ट्रीय पहचान, सांस्कृतिक चेतना, नैतिक और आध्यात्मिक अखंडता ताकत को बढ़ावा दें, व्यवसाय देश के लिए नेतृत्व प्रदान कर उन्हें विकसित करें; राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक कौशल में देश की जनशक्ति बढाना; और अनुसंधान के माध्यम से अग्रिम ज्ञान और लागू मानव जीवन की गुणवत्ता में सुधार और बदलते समाज के लिए प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया के लिए नए ज्ञान)।

लक्ष्य: स्कूल विजन (उदाहरण के लिए, एक मॉडल उच्च विद्यालय जहां छात्रों को अपनी पूरी क्षमता का एहसास करने के लिए ज्ञान, कौशल और चरित्र की शक्ति

से लैस कर रहे हैं) और मिशन (उदाहरण के लिए, विश्व स्तर पर आजीवन प्रतिस्पर्धी शिक्षार्थियों का उत्पादन करने के लिए)।

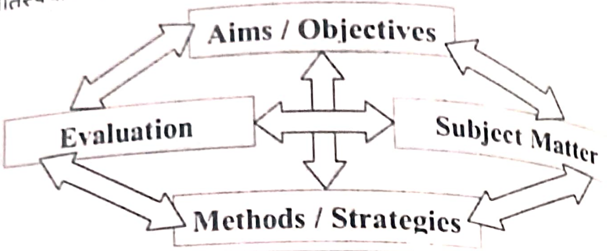

Figure: Interrelationships of the Components of a Curriculum

उद्देश्य: शैक्षिक उद्देश्य

डोमेन:

क. संज्ञानात्मक (Cognitive) - ज्ञान, समझ, आवेदन, विश्लेषण, संश्लेषण, मूल्यांकन

ख. उत्तेजित (Affective) - प्राप्त जवाब, बातों का महत्व देता, संगठन, लक्षण

ग. स्यकोमोटर (psychomotor) - धारणा है, सेट, निर्देशित प्रतिक्रिया, तंत्र, जटिल प्राकट प्रतिक्रिया, अनुकूलन, व्युत्पत्ति

2. पाठ्यक्रम सामग्री या विषय वस्तु

मानव ज्ञान का कोष संचित खोजों और सदियों से आदमी के आविष्कार, दुनिया के आदमी के अन्वेषण के कारण के भंडार का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें स्कूल में सीखने वाली जानकारी भी शामिल है। यह ज्ञान के लिए एक और नाम (तथ्यों, अवधारणाओं, सामान्यीकरण, सिद्धांतों और सिद्धांतों का एक संग्रह) है।

क. **विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम दृश्य:** मानव ज्ञान का कोष उसकी दुनिया के आदमी के अन्वेषण की वजह से, संचित खोजों और सदियों से आदमी के आविष्कार के भंडार का प्रतिनिधित्व करता है

ख. **शिक्षार्थी केंद्रित पाठ्यक्रम दृश्य:** व्यक्ति के ज्ञान को निजी और सामाजिक दुनिया से संबंधित करता है और कैसे वह वास्तविकता को परिभाषित करता है।

पाठ्यक्रम के लिए विषय के चयन में इस्तेमाल किया मानदंड:

1. **आत्मनिर्भरता** - कम शिक्षण प्रयास और शैक्षिक संसाधन, शिक्षार्थी के कम प्रयास, लेकिन और अधिक परिणाम और प्रभावी सीखने के परिणामों - सबसे किफायती तरीके से।
2. **महत्व** - पाठ्यक्रम के समग्र लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बुनियादी विचारों में योगदान, शिक्षण कौशल विकसित।
3. **वैधता** - शिक्षार्थी परिपक्वता, पूर्व अनुभव, शैक्षिक और सामाजिक मूल्य के आधार पर करने के लिए सार्थक।
4. **उपयोगिता** - या तो वर्तमान या भविष्य के लिए सामग्री की उपयोगिता।
5. **सीखने की योग्यता** Learnability - शिक्षार्थियों के अनुभव की सीमा के भीतर।
6. **साध्यता** - समय के अनुसार अनुमति, उपलब्ध संसाधनों, शिक्षक की विशेषज्ञता, शिक्षार्थी की प्रकृति के भीतर सीखा जा सकता है।

सीखने सम्बन्धी सामग्री के आयोजन में पालन करने के लिए सिद्धांत:

1. **संतुलन:** सामग्री पाठ्यक्रम काफी गहराई या अनुशासन और विशेष रूप से सीखने के लिए कोने-कोने में वितरित किया जाना चाहिए। इससे यह सुनिश्चित होगा कि स्तर या क्षेत्र में भीड कम या ज्यादा भीड नहीं होगी।
2. **जोड़बंदी:** विषय के प्रत्येक स्तर पर सुचारू विषय में अगले, स्पष्ट अंतराल या फालतू ओवरलैप से जुड़ा होना चाहिए।
3. **अनुक्रम:** यह विषय की तार्किक व्यवस्था है। ऐसा लगता है जैसे यह उच्च स्तर में लिया जाता है मजबूत बनाने और सामग्री के विस्तार को दर्शाता है।
4. **एकीकरण:** क्षैतिज कनेक्शन विषय क्षेत्रों में इसी तरह जरूरत के है, इसलिए सीखने की एक दूसरे के लिए उत्तेजित हो जाएगा।
5. **निरंतरता:** लर्निंग नए ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण या मूल्यों की एक सतत आवश्यकता है तो इन को दैनिक जीवन में इस्तेमाल किया जाएगा। यह लगातार पुनरावृत्ति, समीक्षा और सीखने के सुदृढीकरण की जरूरत है।

2. **पाठ्यक्रम अनुभव** Curriculum Experience

निर्देशात्मक रणनीतियां और विधियों पाठ्यक्रम अनुभव, कोर और पाठ्यक्रम के दिल को कड़ी हैं। शिक्षण रणनीतियों और तरीकों के क्रम में लक्ष्यों और सामग्री के उपयोग एक परिणाम का उत्पादन करने के लिए होगा।

शिक्षण रणनीतियां शिक्षा के लिए लिखा पाठ्यक्रम परिवर्तित करती है। इनमें समय परीक्षण तरीकों, जांच दृष्टिकोण, रचनावादी और अन्य उभरते रणनीति और शिक्षण और सीखने में नए सिद्धांत के पूरक हैं।

शैक्षणिक गतिविधियां क्षेत्र यात्राएं की तरह, प्रयोगों का आयोजन कंप्यूटर प्रोग्राम और अन्य अनुभवात्मक अधिगम भी शिक्षण के प्रदर्शनों की सूची का हिस्सा बनेगी।

जो भी तरीके शिक्षक पाठ्यक्रम को लागू करने के लिए इस्तेमाल करता है, चयन और उपयोग के लिए मार्गदर्शन के लिए, ये उनमें से कुछ हैः

1. शिक्षण विधियें अंत को प्राप्त करने के साधन हैं।
2. कोई भी अकेली अच्छी शिक्षण पद्धति नहीं है।
3. शिक्षण विधियां शिक्षार्थी की संज्ञानात्मक, भावात्मक, psychomotor, सामाजिक और आध्यात्मिक व्यक्ति के डोमेन को विकसित करने की इच्छा को प्रोत्साहित करती है।
4. शिक्षण विधियों के चुनाव में, छात्रों के शैली सीखने पर विचार किया जाना चाहिए।
5. हर विधि को तीन क्षेत्रों में सीखने के परिणाम के विकास के लिए नेतृत्व करना चाहिए।
6. लचीलापन शिक्षण विधियों के उपयोग में एक विचार होना चाहिए।

4. **पाठ्यक्रम मूल्यांकन** Curriculum Evaluation

प्रभावी हो, सभी पाठ्यक्रम में मूल्यांकन का एक तत्व होना चाहिए। पाठ्यक्रम मूल्यांकन गुणवत्ता, प्रभावशीलता या मूल्य कार्यक्रम, इस प्रक्रिया के और पाठ्यक्रम के उत्पाद की औपचारिक दृढ संकल्प को दर्शाता है। मूल्यांकन के कई तरीके हो सकते हैं। सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला Stufflebeam के CIPP मॉडल है। CIPP मॉडल में प्रक्रिया सतत और पाठ्यक्रम प्रबंधकों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

CIPP मॉडल - एक सतत प्रक्रिया है - संदर्भ Context (पाठ्यक्रम के पर्यावरण), इनपुट Input (पाठ्यक्रम की सामग्री), प्रक्रिया Process (तरीके और लागू करना), उत्पाद Product (लक्ष्यों की उपलब्धि)।

मूल्यांकन किसी भी तरीके और सामग्री का उपयोग करेगा, एक कार्रवाई का सुझाव योजना पाठ्यक्रम मूल्यांकन की प्रक्रिया के लिए जरूरी है। ये कदम उठाए जा सकते हैं:

1. पाठ्यक्रम में से एक विशेष घटक पर ध्यान दें। यह विषय क्षेत्र, ग्रेड के स्तर पर, कोर्स या डिग्री कार्यक्रम होगा? मूल्यांकन के उद्देश्यों को निर्दिष्ट करें।
2. लीजिए या जानकारी इकट्ठा कीजिये। मूल्यांकन की वस्तु के संबंध में आवश्यक सूचना से डेटा बना है।
3. जानकारी को व्यवस्थित करें। यह कदम, कोडिंग के आयोजन, भंडारण और व्याख्या के लिए डेटा पुनः प्राप्त करने के लिए आवश्यक होगा।
4. जानकारी का विश्लेषण करें। विश्लेषण का एक उपयुक्त तरीका इस्तेमाल किया जाएगा।
5. सूचना रिपोर्ट करें। मूल्यांकन की रिपोर्ट को विशिष्ट दर्शकों को सूचित किया जाना चाहिए। यह गोलमेज चर्चा और बातचीत के माध्यम से हितधारकों के साथ सम्मेलनों में औपचारिक रूप से या अनौपचारिक रूप से किया जा सकता है।
6. निरंतर प्रतिक्रिया के लिए जानकारी रीसायकल, संशोधनों और समायोजन कर दिया जाए।

पाठ्यक्रम के लिए निर्माण / विकास सिद्धांत
PRINCIPLES FOR CURRICULUM CONSTRUCTION/ DEVELOPMENT

पाठ्यक्रम एक जटिल अवधारणा है जो सिद्धांत और व्यवहार की तरफ समान चुनौती और जुनून से खुद बेवकूफी की तरह चलती है। एक वैचारिक ढांचे के भीतर सीखने की गतिविधियों की योजना और डिजाइन पाठ्यक्रम, एक महत्वपूर्ण तत्व हो सकता है। जानने और शिक्षा के लिए एक ज्ञान-मीमांसा (epistemological) और शैक्षणिक औचित्य में अंतर महत्वपूर्ण शिक्षा-व्यवसायिकों के समझने के लिए है। पाठ्यक्रम विकास प्रक्रिया को और अधिक स्पष्ट रूप से समझने की जरूरत है, पूरी तरह समझने, पूरी तरह से सराहने और शिक्षा प्रणाली में लगातार सभी स्तरों पर लागू करने की जरूरत है। कार्य विश्लेषण के समय-से-बाहर होने के बावजूद, वैज्ञानिक पाठ्यक्रम बनाने का पर्दाफाश और आज के तकनीकी-केंद्रित और वैश्विक समझ के लिए समाज में इसके लागू परीक्षण करने के लिए कुछ करने की जरूरत है। शायद सबसे प्रमुख, आधार यह है कि इच्छुक शिक्षकों को राजनीतिक पाठ्यक्रम विकास के काम के साथ जुडी वास्तविकताओं को समझने की जरूरत है। शिक्षा के क्षेत्र में राजनीति एक क्षेत्र है जिसने पाठ्यक्रम में अनदेखी की

है। इसे कम से कम समझा जाता है और चर्चा की जाती है, और अभी तक इस पाठ्यक्रम की सफलता आलोचनात्मक है।

1. **पाठ्यक्रम डिजाइन का सार:** पाठ्यक्रम डिजाइन, पूर्ण के रूप में शिक्षा की तरह है, जो परिकल्पना द्वारा दिए गये वर्णन पर निर्भर करता है, लेकिन खुद सैद्धांतिक (theoretical) नहीं है। पाठ्यक्रम विकास एक व्यावहारिक घटना है जोकि सिद्धांत (theory) के साथ अच्छी तरह से कुछ नहीं करता है। चयन के एक विचार प्रक्रिया के रूप में डिजाइन, तैयार करने की योजना और तत्वों, तकनीको और प्रक्रियाओं में एक संगठित सीखने के प्रयास में है। डिजाइनिंग की धारणा में एंबेडेड, अच्छी समझ और वैचारिक सामग्री के रूप में उत्पादन के संकेत का एक गहरा सेट है। पाठ्यक्रम अभ्यास के बहुत पिछले वर्षो मे सिद्धांत द्वारा शिक्षकों और छात्रों के बीच बातचीत व्यवहारवाद या संज्ञानात्मक वैज्ञानिक संदर्भ में परिभाषित किया गया है। इस तरह के सिद्धांत एक पाठ्यक्रम डिजाइन प्रक्रिया है, जो व्यवहार सीखने के उद्देश्य के साथ शुरू हो, सामग्री के फैसले के साथ आगे बढ़ता है और शिक्षण विधियों के साथ खत्म होता है। शिक्षार्थियों की जरूरतों के आधार पर एक दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है, इसके साथ शिक्षक का अनुभव है, और मानव विकास से आकर्षित ज्ञान। इस मामले में नियोजन या पाठ्यक्रम डिजाइन अनुक्रम लोगों के जानने की समझ के साथ शुरू होगा, शिक्षण विधियों कि सीखने की शैलियों के साथ और फिर सामग्री के लिए प्रगति के साथ जारी रहता है। कैसे सफल शिक्षक, पाठ्यक्रम डिजाइन के वैचारिक और व्यावहारिक जटिलताओं में महारत हासिल करते हैं? पाठ्यक्रम डिजाइन की प्रक्रिया का सार तब समझना शुरू होता है जब शिक्षक उम्मीदवारों को कक्षा शिक्षा की उत्पति समझ आती है। अगर एक पाठ्यक्रम निर्धारित है तो काम करना अपेक्षाकृत आसान है। यह एक पेशेवर के रूप में अधिक कठिन है कि पाठ्यक्रम की उत्पति का पता लगाना और अपने आप के लिए तय करना, यदि पाठ्यक्रम सामग्री और प्रक्रिया समझ से बाहर हैं। इस तरह की जानकारी में एक व्यावहारिक घटना के रूप में मान्य पाठ्यक्रम से मदद मिल सकती है।

2. **सीखने के बारे में दृष्टिकोण और विश्वासों का तत्वीकर्ण:** स्कूली शिक्षा के समारोह में विद्यार्थियों को तथ्यों, कौशल और मूल्यों को प्रसारित करने के रूप में देखा जाता है। इस उन्मुखीकरण पारंपरिक शिक्षण के तरीके से,

विशेष रूप से पाठ्यपुस्तक शिक्षा के माध्यम से, पारंपरिक स्कूल विषयों की महारत पर जोर देते है। शिक्षा छात्र और पाठ्यक्रम के बीच एक संवाद के रूप में देखा जाता है, जिसमें छात्र एक संवादात्मक प्रक्रिया के माध्यम से ज्ञान इकट्ठा करते हैं। एक पाठयक्रम रणनीति में उच्च आदेश सीखने का परिणाम (उदाहरण के लिए महत्वपूर्ण सोच) एक उदाहरण प्रदान करता है कि व्यवस्थित व्यवहार, सीखने के बारे में विश्वास के लिए उपयोगी हो सकता है। सीखी सामग्री और गतिविधियों या विषय एक पैटर्न में व्यवस्थित किये जा सकते है कि अधिक से अधिक लचीलापन अनुभव किया जा सके। विश्वास कि स्कूली ज्यादा शिक्षा समस्या केंद्रित हो बजाय के विषय केंद्रित, जिसके लिए शिक्षक उम्मीदवारों को संदर्भ की जरूरत है। अलग विषयों के आसपास स्कूली शिक्षा के विकास के बारे में जानने के बाद, कि कैसे एक एकीकृत पाठ्यक्रम द्वारा यह संभव है, विभिन्न विषयों [लेन-देन की स्थिति] में विचारों और अवधारणाओं के बीच संबंधों का पता लगाने और अधिक रचनात्मक पाठ्यक्रम विकसित करने के लिए शिक्षक उम्मीदवारों को मुक्त कर सकता है। सीखने और स्कूली शिक्षा के बारे में एक के अपने दृष्टिकोण और विश्वासों को समझना शिक्षण प्रक्रिया के लिए संदर्भ देता है। यह भी कि यह आसानी से दूसरों के द्वारा आयोजित सीखने के बारे में विचारों को समझने योग्य बनाता है।

3. **एक ज्ञान-मीमांसा epistemological दलील:** एक शैक्षिक और उपयोगितावादी पाठ्यक्रम के बीच भेद, ज्ञान होने और दिखाने या उस ज्ञान को लागू करने में सक्षम होने के बीच अंतर के रूप में वर्णित किया जा सकता है। संस्थागत सेटिंग्स में शिक्षार्थियों को (परीक्षण, परीक्षा, क्विज़ या याद करने के माध्यम से अर्थात लघु अवधि के ज्ञान) तथ्यात्मक जानकारी की अवधारण को प्रदर्शित करने के लिए कहा जाता है। उन्हें ज्ञान को लागू करने के लिए एक मौका मिलता है? अक्सर ज्ञान एक ठोस काम या परियोजना को पूरा करने की जरूरत है जो छात्रों में तथ्यात्मक ज्ञान को समझने के लिए एक समग्र संदर्भ देता है। जब एक आवश्यकता को शिक्षार्थियों द्वारा भली भाँति मान्यता दी गई है तो, वे अंततः आवश्यकता का जवाब देंगे ही। ज्ञान के आधार के रूप में मानवीय प्रयास की वैधता, अपने आप में, एक बड़ी हद तक, पाठ्यक्रम की प्रामाणिकता के साथ है। पाठ्यक्रम कितना प्रामाणिक है अगर ये रोजमर्रा के अस्तित्व से इनकार

करते है? पाठ्यक्रम प्रामाणिकता धारणा सीखने के लिए जरूरत के साथ उतनी अच्छी तरह से संरेखित करता है जितना ये प्रासंगिक है ।

4. **पाठ्यक्रम विकास / योजना प्रक्रिया**: पाठ्यक्रम विकास प्रक्रिया नए शिक्षकों के लिए पहेलीनुमा puzzling हो सकता है। प्रक्रिया की एक खाका के रूप में साहित्य में चर्चा की गई है जिसमें अक्सर पाठ्यक्रम विषयों की एक सीमा के पार विकास के लिए प्रयोज्यता है। एक वैचारिक ढांचे और पाठ्यक्रम डिजाइन का सार है की एक समझ विकसित करने के बाद, यह इच्छुक शिक्षकों के लिए स्थूल और सूक्ष्म स्तर नियोजन, सीखने के सिद्धांत, और छात्र मूल्यांकन / कार्यक्रम के मूल्यांकन के साथ परिचित बनने के लिए महत्वपूर्ण है। सब स्तर पर, कार्यक्रमों की पेशकश बजाय शिक्षार्थियों की जरूरतों के, एक विश्लेषण विशेषज्ञता और शिक्षकों के हित के क्षेत्रों को दर्शाते हैं। इससे पहले पाठ्यक्रम तैयार किया जाये, पाठ्यक्रम डिजाइनर खाते में घटक जरूरतों सहित समुदाय, स्कूलों, शिक्षकों और छात्रों का एक संयोजन ले लेना चाहिए। क्योंकि समुदाय और क्षेत्र अलग-अलग हैं, छात्र समूह अलग-अलग हैं, स्कूल और शिक्षक भी अलग-अलग हैं, सब एक जैसे नहीं हैं, हर किसी के, एक निर्धारित पाठ्यक्रम के लिए विचार सीमित है। पाठ्यक्रम नियोजन एक बाधा कोर्स बनाने के लिए नहीं होना चाहिए। स्कूल की कक्षाओं में सार्थक सीखने के अनुभव, एक तर्कसंगत प्रक्रिया के माध्यम से, तैयार किये जाने और प्रस्तुत किये जाने की जरूरत है।

5. **पाठ्यक्रम विकास की राजनीतिक वास्तविकतायें**: स्कूल और विश्वविद्यालय स्तर पर पाठ्यक्रम विकास में वास्तविकता यह है कि कई विषय समूह स्कूलों के पाठ्यक्रम में एक प्रतिस्पर्धा है। शिक्षा पैटर्न की एक महत्वपूर्ण समझ में जांच करना शामिल है कि वास्तविकता को बदलने के उद्देश्य से, जहां हमारे लिए सामाजिक वास्तविकता कायम करना आवश्यक है। अंतर्निहित धारणा है कि वास्तविकता सामाजिक रूप से बनाई गई है और निरंतर और अक्सर विच्छेदित या deconstructed (कभी कभी मन में गलत उद्देश्यों के साथ) है। शिक्षकों को पूछने की आवश्यकता होगी या नहीं, कोई रुचि समूह है या तैयार है / एक नई वास्तविकता में जिसके लिए शिक्षा या तो श्रेय या बदनाम है। हमें व्यक्तियों 'व्याख्यात्मक प्रथाओं के निर्माण में सामाजिक संदर्भ के महत्व को समझना चाहिए। इस अध्ययन

के तहत घटना की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की एक मान्यता की आवश्यकता है, साथ ही राजनीतिक और आर्थिक संबंधों के भीतर भावना बनाने की जगह कि जरूरत है।

शिक्षा के क्षेत्र में वैचारिक और व्यावहारिक पाठ्यक्रम काम ने एक अद्वितीय सहयोग किया है। जबकि पाठ्यक्रम सिद्धांतों और पाठ्यक्रम के बारे में विचारधारा विकसित करना, उन विचारधाराओं के संबंध में अभ्यास करने के लिए मुश्किल है। किसी को पाठ्यक्रम के विकास के अनुभव, परिस्थिति और पाठ्यक्रम विकास के सिद्धांतों की समझ है, अंतिम पाठ्यक्रम डिजाइन का निर्धारण की। पाठ्यक्रम निर्माण कुछ अन्य सिद्धांतों नीचे दिए गए के रूप में हो सकते हैं:

1. सांस्कृतिक संरक्षण, स्थानांतरण और रचनात्मकता का सिद्धांत
2. उपयोगिता के सिद्धांत
3. एकता के सिद्धांत
4. रचनात्मक गतिविधि के सिद्धांत
5. रुचि के सिद्धांत
6. व्यक्तिगत मतभेदों के सिद्धांत
7. एकाग्रता और सहसंबंध का सिद्धांत
8. जरूरत और आवश्यकता का सिद्धांत
9. निरंतरता के सिद्धांत
10. शैक्षिक मूल्यों का सिद्धांत
11. समुदाय और जीवन के साथ संबंधों के सिद्धांत
12. सामाजिक प्रासंगिकता के सिद्धांत
13. विकास के सिद्धांत
14. खेलने के लिए और कार्रवाई के सिद्धांत
15. समय और संसाधनों की उपलब्धता के सिद्धांत
16. एक साथ काम करना और समूह की गतिविधियों का सिद्धांत
17. पर्यावरण की देखभाल और संरक्षण के सिद्धांत
18. अध्ययन में लचीलापन का सिद्धांत
19. अंतर-अनुशासनात्मक अध्ययन के सिद्धांत
20. समझ के सिद्धांत

पाठ्यक्रम की नींव (आधार)
BASES OF CURRICULUM

पाठ्यक्रम समाज और देश की संस्कृति को दर्शाता है और यह एक समाज है जोकि उनके बच्चों के प्रति दृष्टिकोण, विचार, व्यवहार और वयस्क समाज और संस्कृति और शिक्षा के उचित तरीके से संस्थागत हैं और कौशल प्रदान करने के लिए शैक्षिक संसथान एक सही चुनाव है। शिक्षकों और स्कूलों का कर्तव्य है कि समाज के युवाओं को अनुशासन के लिए, उन्हें पाठ्यक्रम के रूप में अनुभव के सेट प्रदान करे। ज्ञान और समाज की जानकारी पाठ्यक्रम के गठन में आधार प्रदान करने की जरूरत है। पाठ्यक्रम डेवलपर्स के मन को नींव (Foundations) प्रभावित करते रहे हैं। इस तरह वे पाठ्यक्रम की सामग्री और संरचना को प्रभावित करते हैं। पाठ्यक्रम के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रकृति के विचार की आवश्यकता है और व्यक्ति की जरूरते, आकांक्षायें और समाज की आवश्यकतायें, और प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति को अनुभव प्राप्त होता है। पाठ्यक्रम पर अध्ययन बहुत व्यापक है, दर्शकों का चुनाव जीवन के सभी क्षेत्रों से होना चाहिए। चर्चा के लिए महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम के चार नींव हैं; हमारे अतीत और वर्तमान में शिक्षा प्रणाली में, दार्शनिक, ऐतिहासिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रभावित शिक्षा। चार प्रमुख नींव (आधार) ने प्रत्येक पाठ्यक्रम विकास, शिक्षण प्रथाओं और पाठ्यक्रम विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

दार्शनिक / वैचारिक आधार

दर्शन का मतलब है ज्ञान-चातुर्य का प्यार। यह सच के लिए खोज करता है, सरल सच के लिए नहीं, लेकिन शाश्वत सत्य, वास्तविकता और जीवन के सामान्य सिद्धांतों के लिए। निर्णय लेने में, दर्शन प्रारंभिक बिंदु प्रदान करता है और सफल होने के निर्णय लेने के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। स्कूल किस लिए होते हैं, यह जवाब जानने में मदद करता है, क्या विषय महत्वपूर्ण हैं, छात्रों को कैसे सीखना चाहिए और क्या सामग्री और तरीकों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए? दर्शन शिक्षकों (educators), अध्यापकों (teachers) और पाठ्यक्रम निर्माताओं की योजना के लिए ढांचा, लागू करने और स्कूलों में पाठ्यक्रम का मूल्यांकन प्रदान करता है। पाठ्यक्रम वास्तविक जीवन स्थितियों में और वास्तविकताओं को समझने में और जीवन के विचारों में ज्ञान के व्यावहारिक उपयोग में मदद करता है और इसलिए ये दुनिया पाठ्यक्रम को दर्शन का गतिशील पक्ष कहा जाता है। पाठ्यक्रम छात्रों के व्यवहार के संशोधन के लिए प्रयोग किया जाता है और दर्शन नए तरीके खोजने और शिक्षकों और पाठ्यक्रम योजनाकार के लिए उनके व्यवहार को संशोधित करने की

प्रक्रिया में मदद करता है। दर्शन शिक्षण के नए तरीकों की खोज और शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की बेहतर उपलब्धि के लिए कक्षा स्थिति में इन को लागू करने में मदद करता है। यह छात्र की उपलब्धि के मूल्यांकन के नए तरीके और पाठ्यक्रम के मूल्यांकन के लिए तरीके प्रदान करता है। अतीत के दार्शनिकों ने ज्ञान और पाठ्यक्रम विकास प्रक्रिया की प्रकृति में स्पष्ट और पाठ्यक्रम के लिए एक आधार प्रदान किया है; प्लेटो ने उनकी पुस्तक "गणराज्य" में एक पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया और यह अभी भी आज के पाठ्यक्रम का मूल है। ज्ञान को मानव जीवन में उच्च भूमिका दी गई है। दुनिया अर्थशास्त्र और समाज इन दिनों बहुत तेजी से बदल रहे है, आज शिक्षा के हर अनुशासन में गहराई की जरूरत है। नए तरीके के माध्यम से आदमी वास्तविकता और ज्ञान की नई अवधारणाओं को विकसित कर सकते हैं, और इस गतिशील और बदलते समय में ज्ञान की एक नई संरचना के रूप में मिलते है। इसलिए, एक उच्च मूल्य खोज, आविष्कार और नए पैटर्न में ज्ञान और पाठ्यक्रम के पुनर्गठन के लिए जोर दिया जाता है। अब नए पाठ्यक्रम, नए अनुभव, तार्किक और महत्वपूर्ण सोच के साथ बन रहे है, और ज्ञान की व्याख्या को अवधारणा अनुभव से बाहर लाने की कोशिश कर रहे हैं। दर्शन और विचारधारा के नियम और सिद्धांत, जो शैक्षिक प्रथाओं और नीति नियोजन के बारे में है, निर्णय लेने नेतृत्व प्रदान कर सकते हैं। यह पाठ्यक्रम योजनाकारों को, समाज के दार्शनिक और वैचारिक धारणा के आधार पर, विषय-वस्तु के निर्माण में, स्कूलों की जरूरतों और भविष्य की मांग को ध्यान में रखते हुए, और सामाजिक परिवर्तन से मानव जीवन को बढ़ावा देने में और छात्रों के व्यवहार के माध्यम से, गाइड करते हैं। शिक्षा के दर्शन से उत्पन्न मौलिक विश्वास पर आधारित, पाठयक्रम निर्णयों में कई विषयों और मुद्दों पर विचार शामिल होते है।

दर्शन का अध्ययन हमें हमारे आसपास की दुनिया में हमारी अपनी व्यक्तिगत प्रणाली आधारित मान्यताओं और मूल्यों, के साथ निपटने में मदद करता है और क्या हमारे लिए महत्वपूर्ण है, हमें परिभाषित करने में मदद करता है। दार्शनिक मुद्दों ने हमेशा समाज और शिक्षा के संस्थानों को प्रभावित किया है, पाठ्यक्रम विकास के मामले में शिक्षा के दर्शन का अध्ययन आवश्यक है। संक्षेप में, काफी हद तक एक दर्शन, शिक्षा के प्रभावों और हमारी शिक्षा के फैसलों और विकल्प को निर्धारित करता है। जो लोग पाठयक्रम निर्णयों के लिए जिम्मेदार हैं, इसलिए, उन्हें अपने विश्वास के बारे में स्पष्ट होना चाहिए। हम अस्पष्ट हैं या हम हमारे अपने विश्वासों के बारे में भ्रमित हैं, तो हमारे पाठयक्रम की योजना अस्पष्ट और भ्रामक होने

के लिए बाध्य हैं। शिक्षा के एक निजी दर्शन को विकसित करने में एक महत्त्वपूर्ण कदम, विभिन्न विकल्प और दूसरों ने पिछले कुछ वर्षों में जो विकसित किया है, को समझने का है। यहाँ हम निम्नलिखित चार प्रमुख दार्शनिक स्थितियों पर गौर करेंगे जोकि पाठ्यक्रम विकास प्रभावित करती हैं।

1. **आदर्शवाद:** आदर्शवाद का सिद्धांत मानता है कि वस्तु एक भ्रम है और कि वास्तविकता यह है कि जो मानसिक रूप से मौजूद है। यह दुनिया के प्रमुख स्पष्टीकरण के रूप में नैतिक और आध्यात्मिक वास्तविकता पर जोर देता है और निरपेक्ष कालातीत और सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों को समझाता है।
2. **यथार्थवाद:** दर्शन किस तरह का है या हो सकता है? यथार्थवादि शिक्षा को वास्तविकता के बजाय अटकलों का विषय मानते हैं। शिक्षक की जिम्मेदारी सर्वोपरि है, शिक्षार्थियों को, जिस दुनिया में रहते हैं, के बारे में ज्ञान प्रदान करना। दुनिया में विभिन्न विषयों के विद्वानों ने क्या खोज की है, इसी को ज्ञान कहते हैं।
3. **व्यवहारवाद:** विचार करने के लिए, कि, क्या अपरिवर्तनीय (आदर्शवाद) है और ब्रह्मांड (यथार्थवाद) से विरासत में मिला है और सामाजिक और / या अवधारणात्मक परिवर्तन त्यागने के लिए, समग्र विकास और बच्चों के विकास के लिए हानिकारक है। अब आप कल्पना कर सकते हैं कि कैसे व्यावहारिकता से पाठ्यक्रम तय या प्रभावित होता है।
4. **अस्तित्ववाद:** यदि हम स्पष्ट नहीं हैं, शिक्षा के हमारे दर्शन के बारे में, तो हमारे पाठ्यक्रम योजनायें और शिक्षण प्रक्रियायें असंगत और भ्रमित हो जाते हैं। इसलिए, हमें इस तथ्य के बारे में पता होना चाहिए कि विकास और शिक्षा के एक निजी दर्शन के बारे में जागरूकता लाना एक महत्त्वपूर्ण पेशेवर जिम्मेदारी है। इसके अलावा, हमें लगातार नए विचारों और अंतर्दृष्टि संशोधन या हमारे दर्शन के शोधन के लिए खुला होना चाहिए।

हमारी स्थिति ऐसी होनी चाहिए कि कोई भी एक दर्शन, पुराने या नए, पाठ्यक्रम के बारे में निर्णय लेने के लिए विशेष गाइड के रूप में नहीं होना चाहिए। हमें, पाठ्यक्रम विशेषज्ञों के रूप में, क्या करने की जरूरत है, कि इस विषय में बात या सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विकास, उत्कृष्टता और गुणवत्ता के चरम पर एक उदार दृष्टिकोण अपनाना है। संक्षेप में, हमें जरूरत है एक विवेकपूर्ण दर्शन, राजनीतिक और आर्थिक रूप से व्यवहार्य, जो छात्रों और समाज की जरूरतों के लिए कार्य करता हो। खुले दृश्य शिक्षा को भविष्य के लिए अपने वादे के साथ आगे आना चाहिए।

ऐतिहासिक आधार

सभी मानव गतिविधियाँ, जोकि पाठ्यक्रम के क्षेत्र में होती हैं, समय के भीतर, समय के संदर्भ में होती हैं। हालांकि, कुछ लोग, विशेष रूप से कई विद्वान और पाठ्यक्रम के क्षेत्र के व्यवसायी, इस बयान को चुनौती देते हैं, या तो उन्हें पाठ्यक्रम गतिविधियों के ऐतिहासिक आधार याद नहीं है या उन्हें लगता है कि इस तरह के ज्ञान आवश्यक नहीं है। शायद कुछ का मानना है कि इतिहास को देखने का मतलब है पीछे देखना। पाठ्यक्रम एक पुराना क्षेत्र नहीं है। विद्वानों का बहुमत, फ्रैंकलिन बोब्बित की किताब The Curriculum के प्रकाशन के साथ, 1918 से इसकी शुरुआत मानता है। हालांकि, विश्वविद्यालय के रिकॉर्ड में शब्द पाठ्यक्रम का पहला उल्लेख, having completed the curriculum of his studies, 1582 में, लीडेन, हॉलैंड के विश्वविद्यालय में मिलता है। पाठ्यक्रम गतिविधियां भविष्य की संभावनाओं को साकार करने में व्यस्त हैं।

प्राचीन समय में, भारत में शिक्षा की गुरुकुल प्रणाली थी जिसमें कोई भी, जिसे अध्ययन करने की कामना थी, एक शिक्षक (गुरु) के घर जाता था और सिखाने का अनुरोध करता था। अगर गुरु द्वारा उसे एक छात्र के रूप में स्वीकार कर लिया जाता, तो वह गुरु के घर पर सीखने के लिए ही रहता था और घर पर सभी गतिविधियों में मदद करता था। यह गतिविधि न केवल शिक्षक और छात्र के बीच एक मजबूत टाई बनाती थी, बल्कि यह भी कि घर चलाने के बारे में भी सब कुछ छात्र को पढ़ाया जाता था। गुरु सब कुछ बच्चे को, जो वह सीखना चाहता था, संस्कृत के पवित्र ग्रंथों और गणित से मीमांसा, अध्यात्म तक सिखाता था। छात्र के रूप में लंबे समय तक, जब तक वह कामना करता था, या गुरु जब तक महसूस करता थे कि वह अभी भी उसे कुछ सिखा सकते हैं तब तक, सीखने के लिए वह गुरु के घर पर ही रुकता था। सभी शिक्षण बारीकी से, प्रकृति और जीवन से जुड़ा हुआ था, और कुछ भी जानकारी को सिर्फ याद रखना तक ही सीमित नहीं था। मॉडर्न स्कूल प्रणाली को 1835 में लॉर्ड थॉमस बबिन्गतों मैकाले द्वारा भारत के लिए लाया गया था। मूल रूप से पाठ्यक्रम विज्ञान और गणित के रूप में, अंग्रेजी भाषा सहित, आधुनिक विषयों तक ही सीमित था, और तत्वमीमांसा और दर्शन जैसे विषयों को अनावश्यक माना जाता था। शिक्षण कक्षाओं तक ही सीमित था और प्रकृति के साथ सम्बन्ध, शिक्षक और छात्र के बीच के करीबी रिश्ते का रूप भी, टूट गया था। उत्तर प्रदेश (भारत में एक राज्य) हाई स्कूल बोर्ड और इंटरमीडिएट शिक्षा बोर्ड, वर्ष 1921 में भारत में स्थापित पहला बोर्ड था जिसका अधिकार क्षेत्र राजपूताना, मध्य भारत

और ग्वालियर तक था। 1929 में हाई स्कूल और इंटरमीडिएट शिक्षा, राजपूताना, स्थापित किया गया था। बाद में, बोर्ड कुछ राज्यों में स्थापित किए गए थे। लेकिन 1952 में, बोर्ड के संविधान में संशोधन किया गया और इसे केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई) का नाम दिया गया। दिल्ली के सभी स्कूलों और कुछ अन्य क्षेत्रों को बोर्ड के तहत लाया गया। बोर्ड को पाठ्यक्रम, पाठ्य पुस्तके और इससे संबद्ध सभी स्कूलों के लिए परीक्षा प्रणाली, आदि के बारे में फैसला करने का अधिकार दिया गया। आज इस बोर्ड से संबद्ध हजारों स्कूल, दोनों भारत के भीतर और अफगानिस्तान से जिम्बाब्वे तक, कई अन्य देशों में है।

मनोवैज्ञानिक आधार

पाठ्यक्रम मनोविज्ञान से प्रभावित है। मनोविज्ञान शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया के बारे में जानकारी प्रदान करता है। यह भी बताता है कि कैसे एक पाठ्यक्रम, क्रम से इष्टतम स्तर पर, छात्रों के सीखने को प्राप्त करने में सक्षम हो सकता है, और जानकारी के रूप में, क्या वे पाठ्यक्रम की विभिन्न सामग्री सीखने में अवशोषित कर सकते हैं। शिक्षण / सीखने की प्रक्रिया, लोगों को जानने सम्बन्धी शिक्षा मनोविज्ञान को, समझने के लिए एक आधार प्रदान करती है। इसके प्रभाव के रूप में, यह शिक्षार्थियों के बीच विविधता को पहचान करने की जरूरत पर जोर देती है। हालांकि, यह भी सच है लोग केवल कुछ सामान्य विशेषतायें ही सॉझा करते है। इन्हें बुनियादी मनोवैज्ञानिक की जरूरत है जो आवश्यक व्यक्तियों के लिए एक पूर्ण और सुखी जीवन व्यतीत करने के लिए मदद कर सके। इस खंड में, प्रमुख सीखने के सिद्धांतों और पाठ्यक्रम विकास में उनके योगदान के बारे में बात की जाएगी। इसके अलावा, हम लोगों की बुनियादी मनोवैज्ञानिक की जरूरत और पाठ्यक्रम में उनके अनुवाद पर प्रतिबिंबित करेंगे। इस मोड़ पर हमें खुद को याद दिलाना है कि हमारा मुख्य जोर, पाठ्यक्रम विकास के लिए सीखने के सिद्धांतों द्वारा किए गए योगदान पर होना चाहिए। इसलिए हमें यह स्पष्ट करना है कि, विस्तार, जो पहले से ही अन्य पाठ्यक्रमों में कुछ हद तक किया या पढ़ा जा चुका है, का अध्ययन करने में कोई दिलचस्पी इस अध्याय की नहीं हैं। सीखने में कुछ मनोवैज्ञानिक सिद्धांत निम्नलिखित है जोकि पाठ्यक्रम विकास को प्रभावित करते हैं:

1. **व्यवहार या आचरण** (Behaviorism): 20वीं सदी में शिक्षा व्यवहारवाद का वर्चस्व था। विषय की महारत पर अधिक जोर दिया जाता था। तो, सीखने को एक कदम दर कदम प्रक्रिया में आयोजित किया जाता था। अभ्यास और पुनरावृति के उपयोग तो आम है। इस कारण से, कई शैक्षिक

मनोवैज्ञानिकों ने इसे यांत्रिक और दिनचर्या के रूप में देखा। हालांकि कई लोग इस सिद्धांत के बारे में उलझन में है, हम इस तथ्य से इनकार नहीं कर सकते कि यह हमारी शिक्षा प्रणाली को प्रभावित करता है।

2. **संज्ञानात्मकता** cognitivism: संज्ञानात्मक सिद्धांतकार व्यक्ति प्रक्रिया की जानकारी, निगरानी और उनकी सोच के प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करते हैं। संज्ञानात्मक मनोवैज्ञानिकों के अनुसार कुछ बुनियादी सवाल हो सकते हैं:

- कैसे शिक्षार्थि जानकारी की प्रक्रिया और उनकी सम्भाल करते है?
- वे डेटा कैसे निकालते हैं और कैसे निष्कर्ष उत्पन्न करते है?
- वे कितनी जानकारी को अवशोषित कर सकते है?

अपने विश्वासों के साथ, वे समस्या को सुलझाने और सोच कौशल के विकास को बढ़ावा देते हैं और चिंतनशील सोच, रचनात्मक सोच, सहज सोच, खोजकर सीखने, दूसरों के बीच के प्रयोग को लोकप्रिय करते है।

3. **मानवतावाद** (Humanism): मानवतावाद, गेस्टाल्ट Gestalt, इब्राहिम मासलो Abraham Maslow के सिद्धांत और कार्ल रोजर्स Carl Rogers के सिद्धांतो से लिया जाता है। मनोवैज्ञानिकों के इस समूह का मानव क्षमता के विकास के साथ संबंध है। इस सिद्धांत में पाठ्यक्रम प्रक्रिया है, उत्पाद नहीं है; व्यक्तिगत आवश्यकताओं पर केन्द्रित है, विषय पर केंद्रित नहीं है, और मनोवैज्ञानिक अर्थ और पर्यावरणीय स्थितियों को स्पष्ट करता है। संक्षेप में, पाठ्यक्रम मानवतावाद के विचारों पर आधारित है, कि शिक्षार्थि मनुष्य ही हैं जो उनके जीव विज्ञान, संस्कृति और पर्यावरण से प्रभावित हैं। वे न तो मशीन और न ही जानवर हैं। एक और अधिक उन्नत, और अधिक व्यापक पाठ्यक्रम जोकि मानव क्षमता को बढ़ावा देता है, को इस रूप-रेखा के साथ तैयार किया जाना चाहिए। शिक्षक केवल मन ही शिक्षित नहीं करते है, लेकिन दिल भी अच्छी तरह से शिक्षित करते है।

सामाजिक आधार

स्कूल या शिक्षण संस्थान सामाजिक संदर्भ के भीतर ही मौजूद हैं। पाठ्यक्रम के सामाजिक आधार पर, हमें यह समझना चाहिए कि समाज को शिक्षित करते कई संस्थानों में केवल एक स्कूल ही है। समाज और पाठ्यक्रम के बीच एक आपसी और शामिल संबंध है क्योंकि स्कूल सामाजिक संदर्भ के भीतर मौजूद है। घर, परिवार, समुदाय भी वैसे ही समाज में लोगों को शिक्षित करते हैं। लेकिन स्कूल

औपचारिक संस्थाओं में से एक है जो अधिक जटिल और समाज और दुनिया को संबोधित करते हैं। चूंकि समाज गतिशील है, वहाँ कई घटनायें है, जिनका सामना करना और उन्हें समायोजित करना काफी मुश्किल हो रहा हैं। लेकिन स्कूल न एक देश में बल्कि दुनिया में, न केवल समस्या को समझने और बल्कि अच्छी तरह से उसको परिवर्तनयोग्य बना पा रहे हैं। इसलिए, स्कूलों को अपने पाठ्यक्रम को अधिक अभिनव और अंत विषय प्रासंगिक करना चाहिए। एक पाठ्यक्रम, वैश्विक शिक्षार्थियों की विविधताओ, इंटरनेट के माध्यम से ज्ञान का विस्फोट, और शैक्षिक सुधारों और संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी अनिवार्य या सिफारिश नीतियों को संबोधित कर सकता या फैला सकता है। हालाकि, यह भी जरूरी है कि एक देश का एक पाठ्यक्रम, राष्ट्रीय पहचान के लिए अपनी संस्कृति और आकांक्षाओं को बरकरार रखता है या बनाए रखता है। कोई फर्क नहीं पडता कि कितनी दूर तक लोग रहें, कि स्कूल, नागरिकों को शिक्षित करने के अपने उद्देश्य में कार्य करता है, यह सुनिश्चित करना देश की जिम्मेदारी हैं।

संस्कृति के समूह और संस्थायें और शिक्षा के लिए उनके योगदान का, सहित समाज के मुद्दों का पाठ्यक्रम पर एक प्रभाव है। पाठ्यक्रम बनाने में, समाज के कई पहलुओं पर विचार की जरूरत है। इसमें शामिल है:

- सामाजिक संरचनाओं में होने वाली परिवर्तन;
- संस्कृति के संचरण
- पाठ्यक्रम के लिए मुद्दों के रूप में सामाजिक समस्यायें;
- अर्थशास्त्र के मुद्दे।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से, शिक्षा का निम्नलिखित उद्देश्य हो सकता है:

- सामाजिक भावनाओं और गुणों का विकास
- सामाजिक रूप से कुशल व्यक्ति का विकास
- व्यावसायिक दक्षता में सुधार
- खाली समय और स्वस्थ मनोरंजन व्यवसाय के विकास का उपयोग
- सामाजिक विरासत के प्रेषण
- अधिक से अधिक ज्ञान के प्रसार
- व्यक्ति की निर्माणात्मक और रचनात्मक दृष्टिकोण का विकास
- समाज सेवा के लिए शिक्षा, सामाजिक दक्षता,
- भावनात्मक एकीकरण, राष्ट्रीय एकता और देशभक्ति के लिए शिक्षा

समाज से संबंधित शिक्षा के उपर्युक्त उद्देश्य पर निर्भर करता, पाठ्यक्रम होना चाहिए:

- स्थिति, समस्याओं और समाज की जरूरतों के आधार पर
- संस्कृति के बुनियादी मूल्यों के प्रसारण के लिए एक एजेंट के रूप में
- वैश्विक / दुनिया समाज के लिए बच्चे को तैयार करना
- लचीले और सामाजिक रूप से चुने गये उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रभावी
- वास्तविक समूह 'हम महसूस करते है' अर्थात सामाजिक संपर्क की भावना होने के विकास के लिए

जब सामाजिक आधार को ध्यान में रखते हुए, पाठ्यक्रम तैयार किए जाते है, तो निम्नलिखित शिक्षण विधियों का पालन करने के लिए शिक्षक को सक्षम होना चाहिए:

- कौशल और ज्ञान की जरूरत प्राप्त करने के लिए बच्चे को सक्षम करना
- सामाजिक समायोजन के लिए एक क्षमता का विकास
- समस्या को हल करने के लिए और रचनात्मक सोच विकसित करना
- समाजिकता तकनीक; परियोजना और समूह के तरीके
- शिक्षकों द्वारा राष्ट्र के भाग्य-निर्माताओं को आकार देना
- स्वतंत्रता की अवधारणा से अवगत कराना, व्यक्ति की गरिमा, अधिकारों और कर्तव्यों को युवा पीढ़ी को हस्तांतरित करने के लिए
- सामाजिक व्यवहार से सही दृष्टिकोण के अधिकारी का चुनाव
- जातिवाद, क्षेत्रवाद से अलग रहने बारे

सामाजिक आधार पर पाठ्यक्रम तैयार करते हुए, यह कहा जा सकता है कि

- शिक्षा समाज में जगह लेती है
- शिक्षा अनिवार्य रूप से एक सामाजिक प्रक्रिया है
- सामाजिक माहौल में शिक्षित बच्चे को शिक्षा एक सामाजिक भूमिका निभाना सिखाती है
- शिक्षा एक आजीवन प्रक्रिया है
- शिक्षा से मतलब सिर्फ स्कूली शिक्षा ही नहीं है
- शिक्षा, औपचारिक गैर-औपचारिक और अनौपचारिक हो सकती है
- शिक्षा प्रकृति में सामाजिक होनी चाहिए और छात्रों में लोकतांत्रिक कौशल और मूल्यों को विकसित करना चाहिए।

वैज्ञानिक आधार

विज्ञान सामग्री में विज्ञान समझ, विज्ञान जांच कौशल और एक मानवीय प्रयास के रूप में विज्ञान की तीन किस्में शामिल है। पाठ्यक्रम की तीन किस्में आपस

में सम्बंधित हैं और उनकी सामग्री को एक एकीकृत रास्ते से सिखाया या पढ़ाया जाता है। तरीके से और विस्तार में जो सामग्री विवरण, शिक्षण और सीखने के कार्यक्रमों में विद्यार्थिओं को दिया जाना है, का फैसला शिक्षक द्वारा ही किए जाना है। वैज्ञानिक अनुसंधान का लक्ष्य है, ज्ञान की रचना, जबकि पाठ्यक्रम विकास के लक्ष्य शिक्षण सामग्री का उत्पादन करना होता है। वैज्ञानिक ज्ञान मूल्यवान है क्योंकि यह विश्वसनीय, सही, दस्तावेजी, साझा शोध पद्धति पर आधारित ज्ञान प्रदान करता है। एक विज्ञान के रूप में, पाठ्यक्रम विकास के दौरान बनाया व उत्पन्न किया ज्ञान एक वैज्ञानिक अनुसंधान कोष के भीतर होना चाहिए, और समिक्षित व प्रकाशित होना चाहिए। क्योंकि वैज्ञानिक प्रगति अंततः समय के साथ एक वैज्ञानिक समुदाय के आत्म विनियमन मानदंडों पर आधारित हैं, लक्ष्य एक आदर्श पाठ्यक्रम के विकास का नहीं हो सकता बल्कि गतिशील समस्या को हल करने, प्रगति, उन्नति और क्षमता की वर्तमान सीमाओं से परे होना चाहिए। एक वैध वैज्ञानिक पाठ्यक्रम, को विकास कार्यक्रम व्यवहार, नीति और सिद्धांत के तीन डोमेन में प्रभाव और शर्तों के बुनियादी मुद्दों का समाधान करना चाहिए। संतोषजनक ढंग से और वैज्ञानिक रूप से इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, डेवलपर्स को मौजूदा अनुसंधान में भी ढूंदना चाहिए ताकि जो पहले से ही मौजूद है को प्रत्याशित पाठ्यक्रम में लिया जा सके; संरचना और प्रकृति और बच्चों की सोच और एक डोमेन सीखने के मॉडल के अनुसार पाठयक्रम घटकों की सामग्री में संशोधन करना चाहिए; और उत्तरोत्तर सामाजिक संदर्भों के विस्तार की एक श्रृंखला के अनुसार रचनात्मक और संकलित summative मूल्यांकन आचरण बदलना चाहिए। इस प्रकार, अनुसंधान पाठ्यक्रम विकास और अनुसंधान की प्रक्रिया, प्रारंभिक वैज्ञानिक आधार से रचनात्मक और संकलित summative मूल्यांकन के सभी चरणो में मौजूद होना चाहिए, और इसलिए भी कि सबसे रचनात्मक प्रक्रिया में फैसले के प्रलेखन एकीकृत किये जायें और अंतिम कूबड़ (hunches) चेकिंग प्राप्त हो और सभी प्रक्रियाओं की पूरी रिपोर्टिंग हो। ऐसे प्रलेखन पाठ्यक्रम विकास और अनुसंधान के बीच कनेक्शन के लिए एक आम भाषा की आवश्यकता है। पाठ्यक्रम अनुसंधान ढांचे में निम्नलिखित शामिल हो सकते हैं:

1. **विषय-वस्तु के प्राथमिक आधार** (Subject Matter A Priori Foundation): शैक्षिक लक्ष्यों की स्थापना के लिए कई कारक हैं, जिसमें सभी के लिए वैज्ञानिक ज्ञान को शामिल करना संभव नहीं है। अनुसंधान चरण वैज्ञानिक प्रक्रियाओं का उपयोग विषय वस्तु सामग्री अनुशासन के

भीतर वैध है और लक्ष्य पाने में, छात्रों के गणितीय विकास की पहचान करने की प्रक्रिया के लिए, एक ठोस योगदान करता है। यही कारण है, अवधारणाओं और डोमेन की प्रक्रियाओं में, विषय वस्तु डोमेन चाहिए जोकि एक केंद्रीय भूमिका निभा रहा है, ताकि छात्रों के अतीत और वर्तमान के अनुभवों, और छात्रों में उत्पादकता से भविष्य समझ का विकास हो सके।

2. **सामान्य प्राथमिक आधार** (General A Priori Foundation): पाठ्यक्रम सिद्धांत और अनुसंधान के दृष्टिकोण छात्रों और शिक्षकों के अनुभव पाठ्यक्रम पर, साथ ही स्कूल और समाज (जैसे इक्विटी के लिए) पर, सामान्य लक्ष्यों और दिशाओं की स्थापना में मदद करते हैं।
3. **शैक्षणिक प्राथमिक आधार** (Pedagogical A Priori Foundation): शैक्षिक रूप से प्रभावी गतिविधियों के विशिष्ट प्रकार, प्रेरित और प्रभावशाली पर अनुभवजन्य निष्कर्ष, गतिविधियों की पीढी के लिए सामान्य दिशा निर्देश बनाने के लिए, समीक्षा कर रहे हैं।
4. **विशिष्ट लर्निंग मॉडल के अनुसार संरचना** (Structure According to Specific Learning Models): गतिविधियां सीखने के डोमेन-विशिष्ट मॉडल के अनुसार संरचित हैं। इसमें दो परस्पर पहलु शामिल हो सकते है। सबसे पहले, गतिविधियां बच्चों की सोच और लक्षित विषय वस्तु डोमेन है, जो काफी हद तक शिक्षण और सीखने पर ध्यान केंद्रित करके, पाठ्यक्रम डिजाइन को प्राभावित कर, सीखने के अनुभव से, आधारित मॉडल के साथ संगत करने के लिए, बनाया जा सकता है।
5. **बाजार अनुसंधान** (Market Research): बाजार अनुसंधान, ग्राहक, और ग्राहक क्या चाहता है के बारे में, उपभोक्ता उन्मुख अनुसंधान है। ऐसे बाजार अनुसंधान में आमतौर पर राज्य के मानक, निर्देश, और पाठ्यक्रम और मानकीकृत परीक्षण शामिल है। वैज्ञानिक बाजार अनुसंधान लक्ष्यों, जरूरत, प्रयोज्य, और संभावना और कार्यान्वयन के बारे में उपयोगी जानकारी एकत्र करता है।
6. पाठ्यक्रम अनुसंधान के लिए academe के समर्थन बढ़ाने के पाठ्यक्रम, अनुसंधान, और शैक्षिक अनुसंधान की जनता की राय में सुधार होगा।

7. आर्थिक सहायता एजेंसियों के वित पोषण आवश्यकताओं और इस उपक्रम के लिए समय फ्रेम पर फिर से विचार पाठ्यक्रम अनुसंधान और अधिक सफल हो सकता है।
8. पाठ्यक्रम अनुसंधान से लाभ के लिए, पूरी शिक्षा समुदाय का समर्थन और शोध के आधार पर पाठ्यक्रम विकास की जरूरत है और पूरी तरह स्पष्टता और परिणाम की उम्मीद के लिए विशिष्ट तरीके इस्तेमाल किया जाने की जरूरत है।

अब, यह अपने को पूरी तरह से प्रतिबिंबित करने का समय है। क्या आप अपने अनुभवों के बारे में सोच सकते हैं; जिसमें पाठ्यक्रम के प्रमुख आधार यह समझा सके? दर्शन हमारे कार्यों के लिए एक उद्देश्य देता है। दर्शन शिक्षकों के एक ढांचे या स्कूलों और कक्षाओं के आयोजन के लिए ढांचे के साथ, विशेष रूप से, पाठ्यक्रम निर्णय में मदद प्रदान करता है। क्योंकि इसके सिद्धांत, ऐतिहासिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक आधार एक साथ एकजुट है, एक एकीकृत संस्था के रूप मे छात्र, स्कूलों और शिक्षकों की सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक जरूरतों को पूरा करने के लिए पाठ्यक्रम की एक दार्शनिक नींव, आवश्यक है। किसी भी दिन शिक्षकों को चुनौतियों के लिए सबसे अच्छा समाधान पाने के लिए कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। एक दार्शनिक दृष्टिकोण, उन चुनौतियों और समाधान में एक दिशा देता है। पूर्व-ज्ञान पाठ्यक्रम के निर्माण में उपयोगी है, योजना सबक और क्या पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए। एक दार्शनिक आधार से शिक्षक उन चुनौतियों का सामना कर सकते हैं। लेकिन सभी पाठ्यक्रम विकल्पों के लिए एक एकीकृत दिशा और निर्धारित लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने में एक उद्देश्य की जरूरत है।

प्रश्न (Questions)

1. आप इस शब्द से क्या समझते हैं - पाठ्यक्रम। इसका अर्थ और प्रकृति पर चर्चा करें।
2. परिभाषित करें और समझायें - पाठ्यक्रम।
3. पाठ्यक्रम की अवधारणा गतिशील है। चर्चा करें।
4. पाठ्यक्रम विकास के घटकों की विस्तार से चर्चा करें।
5. पाठ्यक्रम का उद्देश्य, लक्ष्यों और उद्देश्यों का वर्णन करें।
6. सीखने की सामग्री के आयोजन में जिन सिद्धांतों का पालन किया जाता है, उन पर चर्चा करें।

7. पाठ्यक्रम मूल्यांकन पर चर्चा करें।
8. पाठ्यक्रम विकास के लिए सिद्धांतों का वर्णन करें।
9. पाठ्यक्रम के आधारों की चर्चा करें।
10. पाठ्यक्रम के दार्शनिक आधारों का वर्णन करें।
11. पाठ्यक्रम के मनोवैज्ञानिक आधारों का वर्णन करें।
12. पाठ्यक्रम के सामाजिक आधार क्या है? वर्णन करें।
13. पाठ्यक्रम के सामाजिक आधारों के आधार पर शिक्षा के क्या उद्देश्य हो सकते है?
14. पाठ्यक्रम के सामाजिक आधारों के आधार पर शिक्षण पद्धति पर चर्चा करें।
15. पाठ्यक्रम के वैज्ञानिक आधार का वर्णन करें।

7 Chapter

पाठ्यक्रम सिद्धांत के अलग-अलग दृष्टिकोण

DIFFERENT APPROACHES TO CURRICULUM THEORY

पाठ्यक्रम सिद्धांत मूल्यांकन और शैक्षिक पाठ्यक्रम को आकार देने के लिए समर्पित एक शैक्षिक अनुशासन है। पाठ्यक्रम सिद्धांत की कई व्याख्यायें हैं, इतनी संकीर्ण की कि एक कक्षा में एक बच्चे के सीखने की प्रक्रिया की गतिशीलता, आजीवन सीखने के पथ के रूप में। पाठ्यक्रम सिद्धांत, शैक्षिक, दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक विषयों से समझाया जा सकता है। पाठ्यक्रम सिद्धांत का मौलिक मूल्यों, पाठ्यक्रम के ऐतिहासिक विश्लेषण, वर्तमान शैक्षिक पाठ्यक्रम और नीतिगत फैसलों और भविष्य के पाठ्यक्रम के बारे में सैद्धांतिक होने के तरीके के साथ संबंध है। शब्द पाठ्यक्रम का पहला उल्लेख 1582 में लीडेन, हॉलैंड के विश्वविद्यालय के रिकॉर्ड में: having completed the curriculum of his studies में पाया गया। हालांकि, अध्ययन के एक क्षेत्र के रूप में पाठ्यक्रम सिद्धांत को 1828 में क्लासिक्स की रक्षा पर येल रिपोर्ट प्रकाशन में पाया गया था, जिसने लैटिन और ग्रीक सहित एक शास्त्रीय पाठ्यक्रम के अध्ययन को, दुहराव memorization के साथ बढ़ावा देने का सुझाव दिया था। पाठ्यक्रम के विचार शायद नया नहीं है, लेकिन जिस तरह से हम समझते हैं, यह सिद्धांत पिछले कुछ वर्षों में बदल गया है और अर्थ के रूप में काफी विवाद पैदा हो गया है। पाठ्यक्रम सिद्धांत और व्यवहार के करीब पहुंचने के चार तरीके हैं:

1. ज्ञान की एक संस्था के रूप में पाठ्यक्रम का प्रसारण।
2. छात्रों (उत्पाद) में कुछ निश्चित परिणाम को प्राप्त करने के एक प्रयास के रूप में पाठ्यक्रम।
3. प्रक्रिया के रूप में पाठ्यक्रम।
4. अमल (प्रतिबद्ध कार्रवाई) के रूप में पाठ्यक्रम।

अरस्तू के ज्ञान के प्रभावशाली वर्गीकरण के आलोक में पाठ्यक्रम सिद्धांत और व्यवहार के करीब पहुंचने के इन तरीकों पर विचार करने के लिए तीन विषय उपयोगी है: सैद्धांतिक, उत्पादक और व्यावहारिक (the theoretical, the productive and the practical)। पाठ्यक्रम सिद्धांत और व्यवहार के बारे में सोचने का तरीका, प्रबंधन की सोच और व्यवहार के विकास से प्रभावित है।

पाठ्यक्रम विकास के लिए कई दृष्टिकोण है। पाठ्यक्रम, शिक्षक, छात्र और संदर्भ - ये विभिन्न दृष्टिकोण, पाठ्यक्रम डेवलपर्स, पाठ्यक्रम तत्वों के बारे में भिन्न-भिन्न पाते हैं। कुछ पाठ्यक्रम डेवलपर्स, छात्र और उनके सीखने के लक्ष्यों, दूसरों को सीखने की शिक्षक की कार्रवाई के प्रभाव पर ध्यान केंद्रित करते है। कुछ दूसरों के सीखने के संदर्भ और डिग्री जिस तक व्यक्तियों ने स्वायत्त [illegible] किया है या वस्तुओं जिस पर पाठ्यक्रम का काम काम किया है, पर ध्यान केंद्रित करते है।

परंपरागत दृष्टिकोण

TRADITIONAL APPROACH

पारंपरिक पाठ्यक्रम एक शैक्षिक पाठ्यक्रम है जो स्थापित निर्देशों और प्रथाओं का पालन करता है। इसका उल्लेख एक पूरे पाठ्यक्रम के लिए कर सकते है, विषयों के सम्बन्ध में जिनमें छात्र स्नातक होना चाहते है और क्रम जैसा प्रस्तुत किया गया है, और एक व्यक्ति को वर्ग में सिखाई सामग्री के रूप में। इस पाठ्यक्रम की कभी-कभी संकीर्ण होने के लिए भी आलोचना की जाती है और शिक्षा के पेशेवरों ने वैकल्पिक शिक्षा के असंख्य तरीके ढूंड लिए है, या एक पारंपरिक पाठ्यक्रम को और अधिक विस्तार में पढ़ाने के लिए सुझाव विकसित किये है। एक पूरे पाठ्यक्रम के अर्थ में, एक पारंपरिक पाठ्यक्रम में मुख्य विषय और ऐच्छिक भी शामिल होते है। मुख्य विषयों में आम तौर पर गणित, विज्ञान, इतिहास और अंग्रेजी जैसे विषय शामिल हैं। छात्र सामाजिक विज्ञान का विषय भी ले सकता है, और कला, विदेशी भाषा, संगीत, अभिनय, और कई ओर विषयों के साथ अपने पाठ्यक्रम का विस्तार कर सकते हैं। पाठ्यक्रम छात्रों की आवश्यकता के साथ एक प्रगतिशील तरीके से बनाया जाता है, प्रत्येक स्तर में यह थोड़ा पिछले की तुलना में अधिक चुनौतीपूर्ण होता है, ताकि छात्र कौशल निर्माण कर सकें और उन्हे पाठ्यक्रम के माध्यम से अपने तरीके से उनके काम के रूप में उपयोग करें।

पारंपरिक शिक्षा, जिसे मूल बातों की ओर वापसी के रूप में जाना जा सकता है, सतही शिक्षा या प्रथागत शिक्षा, जैसा लंबे समय से स्थापित रिवाज है कि समाज परंपरागत रूप से स्कूलों को इस्तेमाल करने के लिए संदर्भित करता है। शिक्षा में सुधार के कुछ रूप, प्रगतिशील शिक्षा प्रथाओं को गोद लेने को बढ़ावा देते है, एक और अधिक समग्र दृष्टिकोण है जो व्यक्तिगत छात्रों की जरूरतों और आत्म नियंत्रण को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। सुधारकों के अनुसार, रटना सीखने और याद करने पर केंद्रित पारंपरिक शिक्षक केंद्रित तरीके, छात्र केंद्रित और कार्य-आधारित दृष्टिकोण के

पक्ष में छोड़ दिये जाने चाहिए। हालांकि, कई माता-पिता और रूढ़िवादी नागरिक शैक्षिक परीक्षण पर आधारित मानकों के रखरखाव के पक्ष में हैं, जो एक और अधिक परंपरागत दृष्टिकोण से संबंधित है। पारंपरिक शिक्षा का मुख्य बिंदु है, अगली पीढ़ी के लिए वह कौशल, तथ्य, और नैतिक और सामाजिक आचरण जोकि वयस्क अगली पीढ़ी के लिए सामग्री और सामाजिक सफलता के लिए आवश्यक समझते हैं। पारंपरिक शिक्षा अधिकांश संस्कृतियों में अभी भी स्वीकार्य लगता है क्योंकि यह ज्यादा मजबूती से तत्वों के साथ जुड़ा हुआ है। वर्तमान में, यह एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति तक भिन्न है, लेकिन अभी भी वैकल्पिक शिक्षा हटकर यह शिक्षा की एक बहुत उच्च स्तर की विशेषता बना हुआ है। हम में से अधिकांश पाठ्यपुस्तक, कार्यपुस्तिका या काम-पाठ के लिए इस प्रकार का उपयोग करते हैं। यदि आप घरेलू स्कूल homeschooling के लिए नए हैं, पारंपरिक सामग्री की तरह वास्तव में आप को इसकी जरूरत महसूस हो सकती है। जब हम पारंपरिक तरीकों का उपयोग करते हैं तो हम सुरक्षित महसूस करते हैं कि हम सीखने के अंतराल की आशंका को मिटाकर सब कुछ कवर कर रहे हैं, क्योंकि सबक में आम तौर पर एक उम्मीद के मुताबिक गुंजाइश और अनुक्रम है और सब कुछ वैसा ही है जैसा पहले था। यहां कुछ विचार हैं मन में रखने के लिए जोकि पारंपरिक सामग्री का उपयोग करते जरूरी हैं:

- संशोधन के लिए मुक्त महसूस करिये
- समृद्ध होने के लिए स्वतंत्र महसूस करिये
- शामिल और वैसा होने या करने के लिए स्वतंत्र महसूस करिये

व्यक्तिय कक्षा में, पारंपरिक पाठ्यक्रम में ब्लॉक या इकाइयों के रूप में जानकारी की प्रस्तुति शामिल है जो जानकारी की छोटी इकाइयों में तोड़ी जाती है और छात्रों के लिए शिक्षक द्वारा प्रस्तुत की जाती हैं। परंपरागत रूप से, छात्रों और शिक्षकों के बीच विनिमय कम प्रोत्साहित किया जाता है, और कक्षा में चर्चा की सुविधा भी इस पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं है। कुछ शिक्षकों द्वारा इसे कमियों के रूप में देखा जाता है, जिन्हें लगता है कि छात्रों को अधिक महत्वपूर्ण सोच कौशल विकसित करनी चाहिए और जानकारी को लागू करना चाहिए अगर वहां वर्ग के साथ विचार विमर्श हो, वर्तमान परियोजनायें उन्हें सामग्री का विस्तार करने देते हैं, और आगे। तेजी से, ऐसी गतिविधियों के लिए दुनिया भर के पाठ्यक्रम में स्वीकार किया जा रहा है। पारंपरिक पाठ्यक्रम भी भारी मानकों पर आधारित हो सकता है अगर परीक्षण के साथ उपलब्धि और प्रगति को मापने के लिए इस्तेमाल किया जाये। इस

अभ्यास की शिक्षा में आलोचना की गई है, क्योंकि मानकों पर आधारित पाठ्यक्रम एक "परीक्षण करने के लिए सिखाने" प्रारूप में है जिसमें छात्रों को वह जानकारी प्रदान की जाती है जिससे उन्हें एक टेस्ट पास करने में मदद मिलेगी, लेकिन ये जरूरी नहीं कि वे उस जानकारी का कोई उपयोग भी कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, गणित शिक्षा में बहुत सेट सूत्र और गणित करने के तरीके होते हैं जिन्हें सीखा जा सकता है, लेकिन गणित ऐसा कौशल नहीं सीखाता है जो वास्तविक जीवन में उपयोगी हो सकता है।

पारंपरिक पाठ्यक्रम विकास के लिए उपलब्ध कई अलग-अलग दृष्टिकोण हैं:

सामग्री दृष्टिकोण Content approach

यह सबसे आम तरीका है। यहाँ पाठ्यक्रम मूल रूप से ज्ञान चीजों की एक सूची हैं जो शिक्षार्थियों द्वारा पता करने की जरूरत है। आम तौर पर इस सूची को एक पाठ्यक्रम समिति या समूह द्वारा या ट्रेनर द्वारा, या विषय वस्तु विशेषज्ञों द्वारा तैयार किया जाता है। सामग्री दृष्टिकोण आमतौर पर एक पाठ्यक्रम है, जो बहुत ही सैद्धांतिक शैक्षणिक, और विषयों के आधार का (उदाहरण के लिए मिट्टी, प्लांट फिजियोलॉजी, जंगल सूची, मिट्टी-पानी बातचीत, आदि) परिणाम है। इस दृष्टिकोण में, ट्रेनर सीखने की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने पर कम या कोई मार्गदर्शन प्राप्त नहीं करता है।

उत्पाद दृष्टिकोण Product approach

एक और दृष्टिकोण जो आमतौर पर इस्तेमाल किया जाता है, उत्पाद दृष्टिकोण है। इस मामले में, क्या शिक्षार्थि ऐसा करने में सक्षम हो जाएगा (और ज्ञान और कौशल जिसकी उन्हें आवश्यकता होती है) जब कोर्स समाप्त हो जायेगा। यह दृष्टिकोण, आमतौर पर, एक व्यवस्थित योजना प्रक्रिया का प्रकार है, और मान लिया गया है कि वहाँ पर्याप्त विशेषज्ञता, संसाधन और प्रौद्योगिकी के प्रावधान के साथ सभी शिक्षार्थियों के लिए एक आम लक्ष्य हैं। उद्देश्यों की स्थापना इस दृष्टिकोण का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है। जरूरतों की पहचान दृढ़ता से किसी कार्य या कार्यों के सेट से जुडी हुई है जोकि किये जाने हैं। DACUM1 कार्यप्रणाली जरूरतों की पहचान के लिए एक अच्छी तरह से जाना जाता उपकरण (tool) है, जिसमें विभिन्न हितधारक, विशेष रूप से विशिष्ट नौकरी से संबंधित कौशल के साथ लोग, को नौकरियों की प्रकृति जो पेशेवरों को उनके काम के माहौल से बाहर ले जाना चाहिए, के बारे में जानकारी प्रदान करना है। इसे एक सटीक, विस्तृत विवरण और नौकरी से सम्बंधित विवरण (कार्य और कौशल) की आवश्यकता है, कभी कभी जिसे निपुणता

या क्षमता competences भी कहा जाता है। DACUM भी काफी उपयोगी हो सकता है, लेकिन यह अभी भी मानता है कि किसी खास काम के लिए कौशल के एक पूरे सेट की पहचान की जा सकती है। यह निश्चित रूप से कुछ नौकरियों के लिए सच है, लेकिन खेती या वानिकी बहुत जटिल पेशे हैं। किसानों और फॉरेस्टर की निपुणता या क्षमता competences की पहचान करना बहुत मुश्किल हो सकता है, विशेष रूप से एक गतिशील और बदलते कृषि वानिकी परिवेश में।

प्रक्रिया दृष्टिकोण Process approach

प्रक्रिया दृष्टिकोण अलग-अलग धारणा और व्यवहार, और शिक्षार्थियों के विभिन्न समूहों के सामाजिक स्तरों में बदलाव की मान्यता की विशेषता है। यह एक कम संरचित प्रक्रिया है, और व्यक्तियों के बीच लगातार बातचीत स्थानांतरण, समझ और ज्ञान पर आधारित है, और उनके वातावरण के बीच की एक प्रक्रिया पर निर्भर करती है। सामग्री और उत्पाद दृष्टिकोण, बंद, निरंतर, उम्मीद के मुताबिक और सुरक्षित है। प्रक्रिया दृष्टिकोण एक अधिक खुले, विविध, अप्रत्याशित और जोखिम भरे पाठ्यक्रम का परिणाम है। विशिष्ट उद्देश्य अक्सर इस्तेमाल नहीं किये जाते, हालांकि वहां समग्र सीखने के परिणामों की पहचान करने का प्रयास किया जा सकता है। इन्हें बजाय सभी शिक्षार्थियों के, व्यक्तिगत आधार पर करने के लिए निर्धारित किए जाने की संभावना है। एक प्रक्रिया दृष्टिकोण के साथ, पाठ्यक्रम विकास में ही एक हस्तक्षेप है, जिसका व्यक्तियों के साथ ही संगठनों और संस्थाओं पर भी प्रभाव हो सकता है।

शिक्षार्थी आधारित दृष्टिकोण
LEARNER DRIVEN APPROACH

शिक्षार्थी केंद्रित दृष्टिकोण, पाठ्यक्रम विकास के लिए एक वैकल्पिक दृष्टिकोण है जो पाठ्यक्रम, योजना के लक्ष्यों, शिक्षण उद्देश्यों, और कार्यान्वयन के बीच एक करीबी रिश्ता इंगित करता है। एक छात्र केंद्रित पाठ्यक्रम में, हालांकि शिक्षक पाठ्यक्रम विकास का मुख्य एजेंट है, दोनों शिक्षकों और छात्रों पर सीखने की प्रक्रिया की पूरी जिम्मेदारी है। शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षा, मोटे तौर पर शिक्षक से छात्र पर शिक्षा का फोकस शिफ्ट करने का शिक्षण का तरीका हैं। मूल रूप में, छात्र केंद्रित सीखने में छात्रों के हाथों में ज्ञान मार्ग के लिए जिम्मेदारी डाल, शिक्षार्थी स्वायत्तता और स्वतंत्रता को विकसित करना है। छात्र केंद्रित शिक्षा कौशल और प्रथाओं पर केंद्रित है कि आजीवन सीखने और स्वतंत्र समस्या को सुलझाने के लिए सक्षम हो

सकें। छात्र केंद्रित सीखने के सिद्धांत और व्यवहार रचनावादी सिद्धांत सीखने कि नई जानकारी और पूर्व के अनुभव से अर्थ के निर्माण में शिक्षार्थी की महत्वपूर्ण भूमिका पर आधारित हैं। छात्र केंद्रित सीखना छात्रों के हितों की पहल है, और सीखने के अनुभव के लिए छात्र की आवाज स्वीकार करना है। छात्र केंद्रित सीखने में, छात्रों को खुद चुनना होता है कि वे क्या सीखना चाहते हैं, वे कैसे सीखना चाहते हैं, और कैसे वे अपने खुद के सीखने का आकलन करेंगे। छात्र केंद्रित सीखना, छात्रों को खुद सीखना और सीखने की अपनी गति के साथ, सक्रिय, जिम्मेदार प्रतिभागी होना सिखाता है। एक छात्र केंद्रित पाठ्यक्रम में, सिद्धांतों और योजना लागू करने के लिए प्रक्रियाओं को शामिल करना चाहिए, और पाठ्यक्रम मूल्यांकन निम्न प्रमुख तत्वों से मिलकर करना चाहिए:

- प्रारंभिक और पढ़ रहे छात्रों के विश्लेषण की जरूरत है;
- सामग्री चयन और स्थापना प्राथमिकतायें (लक्ष्यों सहित);
- क्रियाविधि (चयन और सीखने की गतिविधियों और सामग्री के उन्नयन सहित);
- निगरानी, आकलन, और मूल्यांकन।

इन तत्वों के अनुसार शिक्षक के कार्य एक चक्र के संदर्भ में निम्नलिखित तरह से वर्णित किये जा सकते हैं:

- छात्रों के लिए प्रारंभिक विश्लेषण की जरूरत है;
- लक्ष्यों की स्थापना और सामग्री का चयन;
- शिक्षण गतिविधियों और सामग्री का चयन;
- आकलन और शिक्षण परिणाम का मूल्यांकन।

शिक्षण परिणाम के आधार पर शिक्षक, जो पूरी प्रक्रिया पर नजर रखता है, फिर चक्र शुरू करता है और एक नए विश्लेषण को करता है ...

शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षण के लक्षण

Characteristics of Learner-Centered Teaching

सक्रिय सीखने, छात्र व्यवस्तता और अन्य रणनीतियां जो छात्रों को शामिल करती हैं और सीखने का उल्लेख करती हैं - शिक्षार्थी केंद्रित कहा जाता है। और यद्यपि शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षण और प्रयास, छात्रों को शामिल करने में, रोजी-रोटी के रिश्ते का एक प्रकार है, तब भी ये एक ही बात नहीं कह सकते हैं।

1. शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षण अधिगम के कठिन, झंझटपूर्ण काम में छात्र संलग्न है।
2. शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षण में स्पष्ट कौशल शिक्षा शामिल है।

3. शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षण छात्रों के लिए वे क्या सीख रहे हैं और कैसे वे इसे सीख रहे हैं पर प्रतिबिंबित करने के लिए प्रोत्साहित करती है।
4. शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षण उन्हें सीखने की प्रक्रिया पर कुछ नियंत्रण देकर छात्रों को सिखने के लिए प्रेरित करता है।
5. शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षण सहयोग के लिए प्रोत्साहित करती है।
6. शिक्षार्थी कैसे और कब जानने के लिए के बारे में निर्णय ले सकते हैं, साथ ही गति जिसमें वे सीखना चाहते हैं में भी उनकी एक भूमिका है।
7. शिक्षक ज्ञान प्रदान नहीं करता है, लेकिन छात्रों को ज्ञान प्राप्त करने में मदद जरूर करता है; वह अक्सर एक सुविधा के रूप में देखा जाता है।
8. रचनावादी अनुदेश दृष्टिकोण के इस तरह के प्रतिनिधि है - समस्या आधारित अधिगम, जांच के आधार पर सीखना ... इस प्रतिमान से उद्धरित है।
9. शिक्षार्थियों की जागरूकता, कुशलता, व्यवहार, पिछले ज्ञान, सीखने की शैलियाँ, एक दूसरे के गौरव के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।

सामग्री चयन और प्राथमिकता सेटिंग

Content Selection and Priority Setting

सामग्री के चयन के लिए एक छात्र केंद्रित पाठ्यक्रम स्पष्ट मापदंड में सामग्री और शिक्षण गतिविधियों के चयन पर मार्गदर्शन देने और आकलन और मूल्यांकन में सहायता करते हैं। किसी पाठ्यक्रम की सामग्री के उद्देश्यों और, अपने स्वयं के लक्ष्यों को निर्धारित करने के लिए शिक्षार्थियों को प्रशिक्षण के द्वारा, निम्नलिखित लाभ अर्जित किया जा सकता है:

- छात्र एक दिये पाठ्यक्रम में क्या प्राप्त कर सकता है का एक अधिक यथार्थवादी विचार है।
- लर्निंग धीरे-धीरे प्राप्त लक्ष्यों तक पहुंचने की प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए।
- छात्र की शिक्षार्थियों के रूप में भूमिका, और क्या यह बहुत जल्दी एक शिक्षार्थी बन सकता है की नहीं बल्कि स्पष्ट विचार करने के लिए अधिक से अधिक संवेदनशीलता का विकास।
- स्व-मूल्यांकन और अधिक संभव हो जाता है।
- कक्षा की गतिविधियों को शिक्षार्थियों के वास्तविक जीवन की जरूरत के लिए संबंधित, देखा जा सकता है।

- क्षमता competences के विकास बजाय एक सब या कुछ भी नहीं प्रक्रिया की तुलना में एक क्रमिक रूप में देखा जा सकता है।

पारंपरिक और छात्र कैंद्रित पाठ्यक्रम विकास के बीच एक महत्त्वपूर्ण अंतर यह है कि, बाद वाले में, संरचना परिवर्तन और रूपांतरों के लिए खुली है। यह इसलिए है कि एक पाठ्यक्रम की शुरुआत में चयनित सामग्री को निश्चित रूप में नहीं देखा जाता है; वे अलग-अलग होंगी, और शायद छात्रों को सीखने की गतिविधियों के विभिन्न प्रकार के अनुभव और शिक्षकों को छात्रों के व्यक्तिपरक जरूरतों के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करने के रूप में संशोधित किया जाना होगा। शिक्षार्थि के लिए यह मुश्किल है उनकी जरूरतों और प्राथमिकताओं को स्पष्ट करना, एक पाठ्यक्रम के प्रारंभिक चरणों को सीखने के अनुभव के लिए प्रयोग किया जा सकता है। इसके अलावा, कम स्तर के भाषा शिक्षार्थियों के साथ (low-level language learners), विकासशील महत्त्वपूर्ण आत्म जागरूकता, मातृभाषा में संसाधनों से प्रयोग की जा सकती है। कुछ मामलों में द्विभाषी सहायकों का उपयोग, उपयोगी हो सकता है। चूंकि कार्य का समय अक्सर सीमित होता है, क्लास के समय को प्रभावी ढंग से और उत्पादकता संभव के रूप में इस्तेमाल करना निम्न उद्देश्यों द्वारा संभव हो सकता है:

- प्रभावी शिक्षण रणनीतिय छात्रों को प्रदान कर;
- सीखने के अपने पसंदीदा तरीकों की पहचान करने के लिए छात्रों की सहायता करना;
- पाठ्यक्रम के लिए बातचीत करने के लिए आवश्यक कौशल विकसित करना;
- छात्रों को अपने लक्ष्यों को निर्धारित करने के लिए प्रोत्साहित करना;
- छात्रों को यथार्थवादी लक्ष्य और समय फ्रेम को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना;
- आत्म मूल्यांकन द्वारा छात्रों के कौशल का विकास करना।

एक छात्र केंद्रित पाठ्यक्रम के लाभ

Advantages of a Student-Centered Curriculum

पाठ्यक्रम की योजना में एक छात्र केंद्रित दृष्टिकोण के लाभ हैं:

- शिक्षण और पाठ्यक्रम के बीच एक मजबूत बांड;
- छात्रों की जरूरतों पर ज्यादा जोर, एक ऐसा पहलू है जो मुख्य रूप से उन लोगों के लिए विशेष रूप से उपयोगी हो सकता है जो ऐसे पाठ्यक्रम करते हैं जो उनके लिए नहीं हैं;

- शिक्षण पर अनुसंधान (उदाहरण के लिए कार्रवाई अनुसंधान), और अधिक प्रासंगिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करना,
- एक और अधिक सहयोगवादी अर्थात शिक्षक की भूमिका के लिए जो दबाव बढ़ रहा है और इसलिए पाठ्यक्रम हितकारी होंगे,
- उपकरण जो शिक्षकों की मदद और अधिक कुशलता से अपने काम करने का विकास करें;
- विश्वविद्यालयों पर एक मजबूत मांग, अधिक अच्छी तरह से उनकी आवश्यकताओं को परिभाषित करने के लिए,
- उच्च शिक्षा शिक्षण (अर्थात्, विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षण) दृष्टिकोण जिससे सभी छात्रों को मदद मिलेगी।

पारंपरिक पाठ्यक्रम विकास बनाम छात्र केंद्रित पाठ्यक्रम
TRADITIONAL CURRICULUM DEVELOPMENT VERSUS STUDENT-CENTERED CURRICULUM

वयस्क शिक्षा के संदर्भ में, एक छात्र केंद्रित पाठ्यक्रम में कई तत्व होते है जो पारंपरिक पाठ्यक्रम विकास योजना लागू करने, और मूल्यांकन में उन लोगों के समान हैं। दो मॉडलों के बीच मुख्य अंतर यह है कि पहले में, पाठ्यक्रम शिक्षकों और शिक्षार्थियों का एक सहयोगात्मक प्रयास है क्योंकि शिक्षार्थियों बारीकी से पाठ्यक्रम की सामग्री और जिस तरह से यह सिखाया जाता है, के बारे में निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल हैं। जहां तक पाठ्यक्रम प्रक्रिया का संबंध है, एक छात्र केंद्रित दृष्टिकोण की विशेषता है कि यह प्रारंभिक नियोजन प्रक्रियाओं द्वारा पारंपरिक तरीकों से अलग किया जा सकता है। इन प्रक्रियाओं में शिक्षार्थियों के बारे में जानकारी का संग्रह शामिल होता है जिससे कि जरूरतें, जोकि शिक्षार्थी के लिए बाहरी हैं, का निदान करने का उद्देश्य पूरा हो सके। यह प्रारंभिक डेटा संग्रह है, जो आमतौर पर सतही है, वरीय लंबाई और पाठ्यक्रम की तीव्रता, पसंदीदा सीखने की व्यवस्था और लक्ष्यों के बारे में अधिक जानकारी, और वरीय कार्यप्रणाली से संबंधित जानकारी, छात्रों की सीखने की शैली वरीयतायें, आदि। हालांकि, इस तरह की सूचना जो, एक सीखने की स्थिति में, एक व्यक्ति के रूप में, छात्र की व्यक्तिपरक जरूरतों से संबंधित है, को केवल एक बार एक कोर्स शुरू होने के बाद ही प्राप्त किया जा सकता है। शिक्षकों और छात्रों की मदद के लिए उपकरण विकसित और इस्तेमाल होने चाहिए जो अलग-अलग उद्देश्य और व्यक्तिपरक जरूरतों के बारे में बता सकें।

पारंपरिक रूप से, मूल्यांकन पाठ्यक्रम प्रक्रिया में अंतिम चरण होता है। एक छात्र केंद्रित पाठ्यक्रम में, हालांकि, मूल्यांकन अन्य पाठ्यक्रम गतिविधियों के साथ समानांतर है और योजना और कार्यान्वयन के चरण के दौरान, साथ ही एक साथ कार्यान्वयन चरण के दौरान, विभिन्न समय पर किया जा सकता है। एक पारंपरिक मूल्यांकन मॉडल में, मूल्यांकन परीक्षण के समान ही है और एक गतिविधि पारंपरिक पाठ्यक्रम मॉडल में, सीखने की प्रक्रिया के अंत में किया जाता है, किसी के द्वारा जो कि बाहर है जो सीखने की प्रक्रिया के साथ जुड़ा नहीं है। दूसरे शब्दों में, जोर योगात्मक के बजाय रचनात्मक मूल्यांकन पर है। एक छात्र केंद्रित मॉडल में, मूल्यांकन आम तौर पर एक अनौपचारिक निगरानी, जोकि शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया के साथ किया जाता है, मुख्य रूप से उस प्रक्रिया में प्रतिभागियों द्वारा, जोकि शिक्षक और शिक्षार्थियों के रूप में है। शिक्षण प्रक्रिया में मूल्यांकन से, शिक्षार्थियों के लिए अधिगम सामग्री, अध्ययन गतिविधियों, और उद्देश्यों का मूल्यांकन किया जा सकता है। शिक्षकों को प्रोत्साहित करने के लिए, गंभीर रूप से अपने खुद के प्रदर्शन का मूल्यांकन करने के लिए, मूल्यांकन दोनों, पाठ्यक्रम और शिक्षक विकास का एक अभिन्न हिस्सा बन जाता है। पाठ्यक्रम के भीतर किसी भी तत्व का मूल्यांकन किया जा सकता है। नियोजन स्तर पर, तकनीकों और प्रक्रियाओं का मूल्यांकन किया जा सकता है, कार्यान्वयन के दौरान, जिन तत्वों का मूल्यांकन किया जाता है, में सामग्री, शिक्षण गतिविधियों, अनुक्रमण, शिक्षा व्यवस्था, शिक्षक, प्रदर्शन और शिक्षार्थी उपलब्धि शामिल हो सकते हैं।

गंभीर दृष्टिकोण
CRITICAL APPROACH

क्रिटिकल अध्यापन शिक्षण और सामाजिक आंदोलन शिक्षा का एक दर्शन है जो शिक्षा को क्रिटिकल सिद्धांत के साथ जोड़ती है। क्रिटिकल अध्यापत शिक्षण में पढ़ाने और सीखने के बीच के रिश्तों शामिल है। इसके समर्थकों का दावा है कि यह नासीखना (unlearning), सीखने और दोबारा सीखने (relearning) की एक सतत प्रक्रिया है। यह इतिहास, शिक्षा के विकास और व्यवहार और शैक्षिक परिकल्पना पर एक गंभीर नज़र रखती है। क्रिटिकल शिक्षा के सिद्धांत, सामाजिक परिवर्तन का एक साधन के रूप में और सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इक्विटी प्राप्त करने के एक साधन के रूप में, शिक्षा की विचारधारा को बढ़ावा देते है। यह क्षेत्र एक विस्तृत शैक्षिक मुद्दों की श्रृंखला को शामिल किया करता है – पाठ्यक्रम, अध्यापन या

शिक्षण शैली, राज्य की भूमिका, कॉर्पोरेट शक्ति, तथाकथित छिपा पाठ्यक्रम, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत पहचान के मुद्दे, आदि। यह प्रभाव महत्वपूर्ण है कि क्रिटिकल सिद्धांत एक ही दृष्टिकोण का गठन नहीं है, बल्कि संबंधित दृष्टिकोण के एक परिवार के रूप में पाया जा सकता है - नारीवाद, मार्क्सवाद, उत्तर-संरचनावाद, उत्तर आधुनिकतावाद, उपनिवेशवाद, महत्वपूर्ण अनुवांशिक सिद्धांत और समलैंगिक सिद्धांत, आदि। क्रिटिकल सिद्धांत को एक अभिविन्यास, स्वभाव, और दुनिया को बदलने के तरीके के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। महत्वपूर्ण दृष्टिकोण संवाद-सार्थक और द्वंद्वात्मक है। संवादात्मक प्रतिभागिता, अवलोकन के संयोजन और बातचीत और प्रतिबिंब और द्वंद्वात्मक का पोषण करने का उद्देश्य है, जो अक्सर प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण संरचनाओं में बदला जा सकता है, जहां दुराग्रह (misapprehensions) और अज्ञानता और अधिक जानकारी के साथ बातचीत करने के लिए कार्य-परिवर्तक के प्रभाव की आवश्यकता है, उसको चेतना और समझने में तब्दील करने के लिए प्रत्यक्ष विरोध वर्णन किया गया है। क्रिटिकल सिद्धांत में गुणवत्ता शिक्षण का प्रयोग तरीकों के प्रकार, मात्रात्मक, गुणात्मक या मिश्रित तरीके पर निर्भर है। इस बात के होते हुए, यहाँ तीन मुख्य निर्णायक कारक है जिन्हें अवश्य ही हासिल किया जाना चाहिए, यदि शिक्षण को अच्छा माना जाता है। शिक्षण साथ-साथ, व्याख्यात्मक, व्यावहारिक और मानक भी होना चाहिए। व्याख्यात्मक, जिसका अर्थ है कि यह मुद्दों की पहचान करने में सक्षम होना चाहिए जो सामाजिक वास्तविकता के साथ गलत हैं, व्यावहारिक कि आलोचना के लिए दोनों स्पष्ट मानदंडों और सामाजिक परिवर्तन के लिए प्राप्त व्यावहारिक लक्ष्य प्रदान करके इसे मानक बदलने के लिए पहचाना जा सके। इसमें सिर्फ तथ्यों को एकत्रित करना ही शामिल नहीं है, बल्कि अध्ययन की वस्तु के लिए व्यक्तिपरक पक्ष देता है और भविष्य के विकास को बढ़ावा देता है। नतीजतन, सशक्त बनाने, प्रतिभागि, इस मामले में शिक्षक, पर चिंतन और उनके दीन हालत बदलने के लिए प्रयास करना है। अनुसंधान से पता चलता है कि शिक्षकों के पास पाठ्यक्रम सामग्री, कक्षा सामाजिक प्रक्रिया, अकादमिक कार्यों और छात्रों की समझ और इरादों का समृद्ध ज्ञान है। बिना शक शिक्षक शिक्षा के लिए केंद्रीय हैं। हालांकि, हैरत की बात है, उनसे कोई सलाह नहीं ली जाती, जब पाठ्यक्रम विकास की बात आती है। जब सशक्त कर दिया जाये, शिक्षक अपने काम के स्वामित्व का दावा कर सकते है और इसके अनुसार इसमें निवेश कर सकते हैं। इसके अलावा, जब शिक्षक पाठ्यक्रम को एक निजी जिम्मेदारी की योजना बनाते है, वे आम तौर पर एक बेहतर काम करने और

पाठ्यक्रम विकास में तभी सफल हो सकते है अगर शिक्षकों और समुदायों को पाठ्यक्रम परिवर्तन और संरचनात्मक परिवर्तनों के विकास में शामिल किया जाये।

कई पाठ्यक्रम गठबंधन, पाठ्यक्रम की योजना बनाने के लिए ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर की बेहतरीन सुविधायें और दृष्टिकोण होने का दावा करते हैं, क्योंकि इस से, वे स्कूलों या अन्य शैक्षिक संस्थानों (राष्ट्रीय मानकों के रख-रखाव सुनिश्चित करने) के लिए दोनों केंद्रीय मार्गदर्शन और संस्थानों और शिक्षकों के लिए पर्याप्त लचीलापन, शिक्षा के कार्यक्रमों को डिजाइन करने में स्थानीय जरूरतों के लिए प्रदान करते हैं। परिणाम छात्रों के सीखने में अनुभव और / या इस तरह सीखने के एक परिणाम के रूप में ऐसा करने में सक्षम, पर आधारित होते हैं। पाठ्यक्रम युवा लोगों को कुछ बनाने में सक्षम होना चाहिए:

- सफल शिक्षार्थि,
- आत्मविश्वास से लबरेज व्यक्ति,
- जिम्मेदार नागरिक,
- प्रभावी योगदानकर्ता।

इन परिणामों का एक दृष्टिकोण है जिसने पाठ्यक्रम से ज्ञान छीन लिया गया है, कि बजाय सामान्य कौशल पर ध्यान दे। पाठ्यक्रम परिणामों से ज्ञान / सामग्री के बाहर या अलग करना, क्षमता या कोर / महत्वपूर्ण दक्षताओं के आसपास नव पाठ्यक्रम तय करना है। अगर छात्रों के लिए अलग मानक और पाठ्यक्रम बनाने हैं, तो हमें निर्णय लेने के सभी स्तरों के केंद्र में शिक्षार्थी और उनके सीखने को रखने की जरूरत है। यह भी महत्वपूर्ण है कि शिक्षकों को अपने छात्रों के सीखने की क्षमता बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। लक्ष्य प्राप्त करने में छात्र कैसे सफल होते हैं यह सीखने की दिशा में एक सकारात्मक स्वभाव पर पर निर्भर करता है, खुद को गंभीरता से संभालना, लक्ष्य निर्धारण, बाधाओं को दूर करने, और दूसरों के साथ मिलकर कार्य करना पर भी। पाठ्यक्रम को क़ीमती बनाया जाना चाहिए। हमारे पाठ्यक्रम में हमें वास्तविक गर्व होना चाहिए: राष्ट्र द्वारा अपने युवा को सीखाने के लिए जो सेट किया गया है। शिक्षकों, अभिभावकों, नियोक्ताओं, मीडिया और जनता, सब को पाठ्यक्रम को समर्थन देने के लिए, और जश्न मनाने के रूप में देखना चाहिए। सब से अधिकांश, युवा लोगों को पाठ्यक्रम की खोज और अवसर देने के लिए धन्यवादी होना चाहिए। गंभीर यथार्थवाद कई महत्वपूर्ण अवधारणायें देता है, जो महान प्रासंगिकता है और पाठ्यक्रम तैयार करने में परिलक्षित होती है। पाठ्यक्रम सिद्धांत, समझ और आलोचना के लिए वैचारिक उपकरण प्रदान करने

वाला होना चाहिए। जैसे, यह सम्भवत: अधिक सूचित पाठ्यक्रम नीति और इस तरह की नीति को लागू करने के लिए अधिक व्यवस्थित और कर्मकर्ता दृष्टिकोण के विकास का समर्थन करता है। इस तरह की सामाजिक संरचनायें, रिवाज और परंपराओं के रूप में सामाजिक वस्तुयें, जो समय और जगह में जारी रहती है, ज्ञान करने के लिए स्वतंत्र रूप से और पूर्वकाल में मौजूद होती है, और सामाजिक घटनाओं और लोगों के कार्यों पर प्रेरणा या असली प्रभाव डालती है। इसके विपरीत, सामाजिक संबंध, बदलने के लिए या मौजूदा सामाजिक वस्तुओं की रक्षा करने के लिए काम करते हैं, साथ ही नए सांस्कृतिक, संरचनात्मक और अलग-अलग रूपों के विकास के लिए भी अग्रणी होते हैं। पाठ्यक्रम को खाई या खाली जगह को भरने में सक्षम होना चाहिए; क्या होना चाहिए; यह क्या है, और यह कैसे होता है, का अनुभव हो जाएगा? यह हमें, विभिन्न पहलुओं से कोई दी हुई सामाजिक स्थिति का खुलासा करने के लिए योगदान सुलझाना, किसी भी सामाजिक स्थिति में संस्कृति, संरचना और एजेंसी के सम्बन्ध में प्रेरणा के बारे में निर्णय करने के लिए, सक्षम अनुमति देता है। इसमें, स्पष्ट रूप से ज्ञान और पाठ्यक्रम, निर्णय लेने के ज्ञान, उनकी औपचारिक शिक्षा के पाठ्यक्रम में युवा लोगों द्वारा, क्या विकसित किया जाना चाहिए, के संबंध में परिभाषित संभावनाएं है? क्या सामग्री मानव ज्ञान के विशाल कोष से चुना जा सकता है? शैक्षिक परिवर्तन के एक विशाल साहित्य में से क्या सामग्री चुनी जाये? यह अपरिहार्य है कि सांस्कृतिक-सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक-क्षेत्रीय रूप, जो नीति निर्माण में शामिल हैं, वे शिक्षा प्रणाली के माध्यम से संचारित होते है, और कारक जो इस प्रक्रिया पर प्रभाव डालते हैं, अत्यधिक चर (variable) और केंद्रीय नीति निर्माताओं के नियंत्रण से बाहर हैं। इस प्रकार, पारंपरिक सफलता के एक मूल्यांकन उपाय के रूप में, मूल नवाचार करने के लिए, निष्ठा की धारणा पर शक हो जाता है। तो, अनुभवजन्य और वास्तविक के बीच का अंतर कुछ प्रभावी और मूल्यवान पाठ्यक्रम से भरने की कोशिश की जा रही है।

किस दृष्टिकोण का उपयोग करें?
WHICH APPROACH TO USE?

नवाचार (Innovations) हमेशा मौजूदा नवाचारों और तकनीक के साथ देखने और व्यवहार के नए तरीके, की मांग करता है। एक अकादमिक स्तर पर, सुधार के प्रबंधन के लिए, एक व्यावहारिक साधन के रूप में, क्रिटिकल यथार्थवाद, संभावित प्रभावी और मूल्यवान पाठ्यक्रम नीति के साथ उलझाने के लिए विधि

(methodological) उपकरण प्रदान करता है। इस तरह, नवाचार के लिए बनाई गई नीति को, लक्ष्य उद्भव के सार्थक और रचनात्मक होना चाहिए। उद्भव एक नीति उद्भव के रूप में निम्न प्रकार से हो सकता है:

1. **व्यक्तिगत उद्भव** (Individual emergence), उदाहरण के लिए, शिक्षकों की बढ़ाई, क्षमता बढ़ाने के लिए।
2. **संरचनात्मक या स्ट्रक्चरल उद्भव** (Structural emergence), उदाहरण के लिए, स्कूलों में नई भूमिकाओं और प्रणालियों के पद पर नई नीति की सुविधा के लिए।
3. **सांस्कृतिक उद्भव** (Cultural emergence), उदाहरण के लिए पेशेवर की व्यवस्तता के परिणाम के रूप में खुद ही नीति का शोधन।

इस तरह के उद्भव का परिणाम सामाजिक प्रथाओं के विस्तार के लिए किया जाता है। ऐसे व्यवस्तता के लिए मध्यम, और बाद में उद्भव के लिए, सामाजिक सम्पर्क है।

शिक्षण विधियां, जो सीखने की गतिविधियों और सामग्री में शामिल है, आम तौर पर ऐसा क्षेत्र है जहां शिक्षक और छात्रों के बीच संघर्ष के लिए सबसे बड़ी क्षमता या प्रतिस्पर्धा है। एक पारंपरिक पाठ्यक्रम में इस संघर्ष के आधार पर कि शिक्षक सर्वश्रेष्ठ जानता है को नजरअंदाज कर दिया जाता है। एक छात्र केंद्रित पाठ्यक्रम में यह जरूरी है कि संघर्ष विशिष्ट तकनीक और बातचीत और विचार-विमर्श की प्रक्रियाओं द्वारा हल किया जाये।

इन तरीकों में से जो दूसरों की तुलना में कौन बेहतर है, यह तय करना मुश्किल है। सामग्री परंपरागत दृष्टिकोण से सफल सीखने में कम परिणाम की संभावना है, इसलिए नहीं की, सिफारिश की जाती है। दोनों उत्पाद और प्रक्रिया पारंपरिक तरीकों में, निश्चित लाभ और नुकसान है। प्रशिक्षण से पहले स्थिति का विश्लेषण तय करने के लिए कि कौन सा दृष्टिकोण सबसे उपयुक्त है, ट्रेनर की मदद लेनी चाहिए। उदाहरण के लिए, जहां एक नौकरी और कार्य, बहुत स्पष्ट रूप से परिभाषित कर रहे हैं, तो एक उत्पाद परंपरागत दृष्टिकोण बहुत प्रभावी होना चाहिए, जब तक कि लंबे समय के रूप में व्यक्तिगत शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखा जाता है। जहाँ विशिष्ट नौकरी मे संबंधित क्षमता (competences) की पहचान करना मुश्किल है, वहां यह बेहतर हो सकता है कि एक अधिक ओपन एंडेड, प्रक्रिया दृष्टिकोण से मदद ली जाये, जिसमें शिक्षार्थि और प्रशिक्षक लगातार सीखने की जरूरी समीक्षा कर सकते हैं जैसे वे सीखने की प्रक्रिया के माध्यम से एक साथ प्रगति करना चाहते है। चाहे एक उत्पाद या प्रक्रिया परंपरागत दृष्टिकोण का इस्तेमाल

किया जाता है, पाठ्यक्रम विकास में जो शामिल है को पहचानना आवश्यक है, और यह भी सुनिश्चित करना होगा कि सभी समूह और व्यक्ति, जो प्रशिक्षण प्रक्रिया में वास्तविक रूप में हिस्सेदार है, पाठ्यक्रम विकास में योगदान करने में सक्षम है और महत्वपूर्ण है। यह अक्सर नहीं होता है; उत्पाद दृष्टिकोण आमतौर पर एक बहुत ऊपर से नीचे कि ओर हो। जनशक्ति नियोजन, उत्पाद दृष्टिकोण का एक उदाहरण है, और अक्सर सरकार के एक बहुत ही उच्च स्तर पर प्रयोग किया जाता है। कुछ लोगों को कई अन्य लोगों की ओर से निर्णय करने होते हैं। DACUM, दूसरी ओर, अक्सर बहुत भागीदारी है, हालांकि यह एक धारणा पर आधारित है कि एक नौकरी एक समूह, जो कि क्षेत्र में विशेषज्ञ माना जाये, द्वारा वर्णित किया जा सकती है। इसके अलावा, एक प्रक्रिया दृष्टिकोण के स्वभाव से भागीदारी होने की संभावना है। हालांकि, इस प्रक्रिया दृष्टिकोण के साथ वहाँ एक खतरा यह है कि निगरानी और मूल्यांकन करने के लिए किसी भी उत्पाद प्रक्रिया के साथ पर्याप्त प्रयास नहीं करते है, यह सुनिश्चित करने के लिए कि वास्तव में प्रशिक्षण से एक प्रभाव पड़ता है। प्रशिक्षण में स्पष्ट रूप से, अच्छी गुणवत्ता वाले उत्पादों की जरूरत है। तो, किस दृष्टिकोण द्वारा इन उत्पादों की संभावना बढ़ जाएगी, ये महसूस किया जाने की कोशिश की रही है?

पाठ्यक्रम सिद्धांत और नीति, विधि (methodological) उपकरण तैयार करने के विकास के पाठ्यक्रम परिवर्तन के क्षेत्र के लिए केवल एक संभावित योगदान है। स्कूल और अन्य शैक्षणिक संस्थान जटिल सामाजिक संगठन है। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के विकास के लिए नए सिरे से सैद्धांतिक दृष्टिकोण की एक कमी है, और उन लोगों के पाठ्यक्रम में ज्ञान / सामग्री के विनिर्देश सहित, और विशेष रूप से शैक्षिक परिवर्तन की गतिशीलता को समझने के संदर्भ में। गंभीर यथार्थवाद अलग-अलग तरीकों से समझ में आ रही समस्याओं के दोबारा दृष्टव्य (revisioning) के साधन प्रदान करता है जिन्हें शायद आंशिक रूप से ही समझा गया है।

प्रश्न (Questions)

1. पाठ्यक्रम विकास के विभिन्न तरीकों का वर्णन करें।
2. शैक्षिक पाठ्यक्रम के परंपरागत दृष्टिकोण पर चर्चा करें।
3. विभिन्न पारंपरिक पाठ्यक्रम विकास के लिए उपलब्ध दृष्टिकोण का वर्णन करें।
4. शैक्षिक पाठ्यक्रम के शिक्षार्थी आधारित दृष्टिकोण पर चर्चा करें।

5. शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षण की विशेषताओं का वर्णन करें।
6. आप छात्र केंद्रित पाठ्यक्रम में सामग्री चयन और प्राथमिकता सेलेक्शन से क्या समझते हैं? चर्चा करें।
7. पाठ्यक्रम की योजना बना, पढ़ाने के लिए एक छात्र केंद्रित दृष्टिकोण के लाभ क्या हैं? वर्णन करें।
8. छात्र केंद्रित पाठ्यक्रम दृष्टिकोण व पारंपरिक पाठ्यक्रम विकास की तुलना करें।
9. पाठ्यक्रम विकास के लिए महत्वपूर्ण दृष्टिकोण क्या है? चर्चा करें।
10. आपके क्षेत्र में पाठ्यक्रम के विकास में इस्तेमाल किये दृष्टिकोण के प्रकार पर चर्चा करें।
11. पाठ्यक्रम दृष्टिकोण के विभिन्न प्रकारों की उपलब्ध की तुलना करें।

पाठ्यक्रम प्रक्रिया और पाठ्यक्रम सिद्धांत तक पहुंचने के विभिन्न तरीके

8

Chapter

CURRICULUM PROCESS AND DIFFERENT WAYS OF PPROACHING CURRICULUM THEORY

पाठ्यक्रम के विचार शायद ही नया है - लेकिन जिस तरह से हम समझते है और इसके बारे में सैद्धांतिक रूप से कहते हैं, वर्षों से बदल गया है। पाठ्यक्रम सभी शिक्षण के रूप में देखा जा सकता है, जो योजनामयी है और स्कूल द्वारा निर्देशित है, चाहे वह समूह में किया जाता है या व्यक्तिगत रूप से, स्कूल के अंदर हो या बाहर। कॉलेजों में क्या पढाया जाता है; सीखने वाले और सामान्य लोगों द्वारा सीख प्रदाताओं और स्कूलों में सीखने को प्राकृतिक रूप में माना जाता है। महत्वपूर्ण और चिंतनशील अभ्यास इन दी गई चुनौतियों को मान्यता दिए जाने की आवश्यकता बताता है। यह जवाब देने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है:

क्या सिखाया जाता है? यह क्यों सिखाया जाता है? यह कौन है जो सीखाता है? सीखने की क्या सामग्री होनी चाहिए? यह कैसे सिखाया जाता है? यह कैसे सीखा जाता है?

कुछ एक पाठ्यक्रम का मतलब विषय-सामग्री से लेते हैं; कुछ दूसरे इसे एक संस्था या एक राष्ट्रीय स्तर पर की प्रावधान की सीमा, द्वारा प्रदान कुल शिक्षण कार्यक्रमों की पेशकश के रूप में मानते है। पाठ्यक्रम, अपनी पूरी भावना में, न केवल सामग्री जो सीखा है, शामिल करते हैं; लेकिन यह भी कि यह कैसे सीखा है; इसका कैसे मूल्यांकन किया है; व्यापक व्यक्तिगत, बौद्धिक, सीखने और सामाजिक कौशल विकसित करने के लिए क्या करना है; सीख प्रदाता के मूल्य और, आजीवन सीखने के मामले, मूल्य जो शिक्षकों के लिए मानकों की आधारशिला हैं, को भी शामिल करते हैं। इससे ऊपर, एक पूरी तरह से सही पाठ्यक्रम, एक स्पष्ट दर्शन और एक तर्क, भले ही उलझाव, रखता है, उस शिक्षण के वे सभी पहलू जिनको समझाया जा सकता है और चर्चा की जा सकती हैं। इसलिए, पाठ्यक्रम को नियत समय में छात्रों को उत्पादित करना चाहिये, जो समकालीन दुनिया के साथ कुशलता से निपटने में सक्षम हों। यह अंतिम अवधारणा के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाना चाहिए, लेकिन इसके बजाय शिक्षार्थी के पक्ष को शामिल करना चाहिए और मिश्रित करना चाहिए कि कैसे शिक्षार्थी अपने / अपनी दुनिया के विचारों को देखते हैं। इस

परिप्रेक्ष्य में, बच्चों के व्यवहार को चिह्नित करने को वर्णन करने के लिए, चार प्रवृत्तियां इस्तेमाल की जाती हैं। ये सामाजिक, रचनात्मक, अर्थपूर्ण, और कलात्मक होती हैं। तब पाठ्यक्रम, जिस दुनिया में बच्चा रहता है, में एक तार्किक भावना का निर्माण कर सकता है। पाठ्यक्रम को एक अंतःविषय रास्ते के साथ, समस्याओं को हल करने के लिए, विषयों को एक साथ लाना चाहिए। बल्कि नए शिक्षार्थियों के लिए, ज्ञान का स्तर निचे करने की बजाय, उनको (शिक्षार्थियों) प्रायोगिक जांच के माध्यम से वास्तविक स्थितियों के लिए अपने ज्ञान को लागू करना सिखाना चाहिए। यह छात्रों को नागरिकता, दैनिक जीवन और भविष्य के कैरिअर के लिए तैयार करता है। मनुष्य सामाजिक प्राणी हैं और एक दूसरे के साथ, वास्तविक जीवन की गतिविधियों में, सबसे अच्छा सीख सकते हैं। इसलिए शिक्षा को, इस सिद्धांत पर आधारित होना चाहिए।

उत्पाद, ज्ञान के रूप में पाठ्यक्रम

CURRICULUM AS BODY OF KNOWLEDGE - PRODUCT

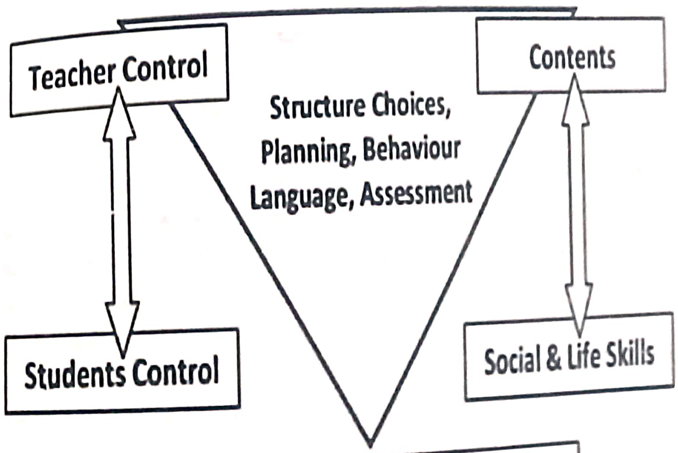

Figure: Curriculum as Product

बहुत से लोग अभी भी एक पाठ्यक्रम को एक विषय-पाठ्यक्रम के समान रखते हैं। सिलेबस (विषय-पाठ्यक्रम) शब्द ग्रीक भाषा से निकला है, और इसका मूल रूप से मतलब है: एक संक्षिप्त बयान, एक ग्रंथ की सामग्री, और विषयों की एक व्याख्यान श्रृंखला। एक परिचितता जिससे हम में से कई जुडे हुये है, इसे परीक्षाओं के लिए अग्रणी सामग्री समान समझते हैं। जहां लोग अभी भी एक पाठ्यक्रम को विषय-पाठ्यक्रम समान मानते हों, उनकी अपनी योजना को सामग्री के एक विचार या वस्तु-ज्ञान तक सीमित करने की संभावना जो कि वे संचारित करना चाहते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि वहाँ विशेष होने के लिए कुछ कौशल और पता करने के कुछ तथ्य ही होते हैं। ज्ञान को एक उत्पाद या कुछ इसी तरह के रूप में देखा गया है जोकि मानव-निर्मित है। आम तौर पर, एक कुछ भी नहीं जानने से शुरू होता है, उसे सिखाया जाता है, और फिर वह उस ज्ञान को एक कार्रवाई में बदलता है। पाठ्यक्रम के उत्पाद रूप में, शिक्षा को सामग्री के प्रसारण के रूप में देखा जाता है। अधिकांश के लिए, इस बिंदु का कुछ समय तक महत्व रहा, क्योंकि यह बड़े तरीके से सीखने में मदद करता था। एक उत्पाद के रूप में पाठ्यक्रम, छात्रों में निश्चितता को प्राप्त करने के प्रयास की तरह है। प्रमुख मुद्दा है कि कौन सामग्री परिभाषित करता है और सामग्री का चयन करता है और किस प्रयोजन के लिए कोई ऐसा करता है।

हमारी प्रणाली में शिक्षा के ज्यादातर विषय एक स्वीकृत ज्ञान पर आधारित है, जिनकी सामग्री और तरीकों अपेक्षाकृत कुछ निर्धारित हैं और निकायों द्वारा विनिर्देशों और परीक्षाओं के रूप में स्वीकृत है। भाषा, गणित, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, धार्मिक अध्ययन, आदि विषयों, जो स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में अध्ययन विषय के रूप में हैं और हम में से ज्यादातर के लिए परिचित है, को आम तौर पर लोगों द्वारा, सबसे स्थित और विश्वसनीय माना जाता है, जबकि हाल ही में आगमित जैसे मीडिया स्टडीज को कम अनुकूल माना जाता है। पाठ्यक्रम का यह दृश्य भी खास है कि शिक्षा के मुख्य कार्यों में से एक समाज की संस्कृति को संचारित करने का है। यह, जैसेकि हम तर्क दे सकते हैं, समाज की निरंतरता के लिए आवश्यक है, लेकिन फिर एक सवाल जन्म लेता है – कौन सी संस्कृति को प्रेषित किया जाना है? बहुसंस्कृतिवाद की धारणा काफी बहस का विषय रहा है, लेकिन यह निर्विवाद है कि हम में से, उदाहरण के लिए, धर्म, जातीयता, सामाजिक वर्ग, लिंग और विकलांगता के मामले में एक विविध समाज में रहते हैं। यहां एक राजनीतिक आयाम और शामिल किए जाने के लिए एक स्पष्ट कड़ी है। अगर मुख्यधारा की

संस्कृति मुख्य रूप से धर्म, वर्ग, धन, क्षेत्र, आदि पर आधारित है तो अलग-अलग संस्कृतियों या अलग-अलग जीवन के अनुभवों के लोग, खुद को बाहर बाहरी महसूस कर सकते हैं या शिक्षा प्रणाली में पूरी तरह से भाग लेने में असमर्थ। ये चिंतायें स्पष्ट हैं जब नेता और शिक्षक दावा प्रतिस्पर्धा कर रहे होते हैं कि विद्यालय के इतिहास के पाठ्यक्रम में या भाषाओं के साहित्य में क्या पढ़ाया या सिखाया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम को शिक्षा के लिए एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित होना चाहिए, मुख्य बात यह है कि अगर लक्ष्य और उद्देश्य को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जाये तो शैक्षिक परिणामों को अधिक सही और मजबूती से मूल्यांकित और सूचित किया जा सकता है। पाठ्यक्रम के उत्पाद भी, भाग में, राल्फ टायलर (टायलर 1949) के साथ जुडे शिक्षा के लक्ष्य और उद्देश्य दृष्टिकोण से उद्धरित हैं और बाद में, बेंजामिन ब्लूम (ब्लूम 1956) के शैक्षिक उद्देश्य का वर्गीकरण, से विकसित हुए। वहाँ उत्पाद के लिए अग्रणी कदम की एक श्रृंखला है, पाठ्यक्रम को जिनके हिसाब से तैयार किया जा सकता है। वे कदमों हैं:

चरण 1: जरूरत का निदान

चरण 2: उद्देश्यों का निरूपण

चरण 3: सामग्री का चयन

चरण 4: सामग्री का संचय

चरण 5: सीखने के अनुभव का चयन

चरण 6: सीखने के अनुभव का संचय

चरण 7: मूल्यांकन करने के लिए दृढ़ संकल्प, और तरीके और इसे करने का मतलब।

उत्पाद उन्मुखीकरण के साथ एक समस्या यह है कि छात्रों को आम तौर पर तस्वीर से बाहर छोड़ दिया जाता है। उत्पाद मॉडल, एक पूर्व निर्धारित योजना या कार्यक्रम होने से, इसमें शिक्षण के लिए ध्यान प्रत्यक्ष जाता है। उदाहरण के लिए, ध्यान दिया जाता है: कैसे जानकारी दी गई है? मानव जीवन कितना भी विविध क्यों न प्रतीत होता हो, इसमें विशिष्ट गतिविधियाँ होती ही हैं। इसलिए, शिक्षा, जीवन के लिए एक छात्र को तैयार करती है जैसे कि, ऐसी गतिविधियों के लिए निश्चित रूप से और पर्याप्त रूप से वह तैयार रहे। प्रचुर और विविध होने के बावजूद, उन्हें किसी भी सामाजिक वर्ग के लिए अवगत कराया जा सकता है। यह किसी को मामलों भरी दुनिया में जाने के लिए और उनमें से उसके विशेष मामलों को ढूंढ कर पता लगाने के लिए बाध्य करता है और क्षमतायें, रूप, आदतेंन, प्रशंसा और रवैया,

जो लोगों की जरूरत है, को दिखाने के लिए आसान होगा। ये पाठ्यक्रम के उद्देश्य होने चाहिये, इस तरह इसे (पाठ्यक्रम) कैसे-जानना प्रगति बनाने में कि सभी स्तरों पर शिक्षार्थियों के पास उन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए माध्यम हो।

पाठ्यक्रम प्रक्रिया के रूप में
CURRICULUM AS PROCESS

पाठ्यक्रम का उत्पाद रूप में, मुख्यतः, छात्रों के जानने के साथ सम्बन्ध है। प्रक्रिया मॉडल, इसके विपरीत, शिक्षार्थि कैसे जानते हैं, से सम्बंधित है और मनुष्य के रूप में उनका विकास और संवृद्धि के साथ संबंध है। अगर हम इस प्रक्रिया के रूप में पाठ्यक्रम को देखते हैं तो, इस मॉडल में शिक्षार्थियों को वस्तु नहीं माना जाता जिन पर काम किया जा रहा हैं। हर सत्र में उनकी एक स्पष्ट आवाज है। फोकस बातचीत पर है। इसका मतलब हो सकता है कि यह अध्यापन से सीखने की और है। इस दृश्य में, शिक्षार्थियों को ज्ञान के रूप में सक्रिय भागीदारी और समझ के विकास के निर्माण के रूप में देखा जाता है बजाय के निष्क्रिय ज्ञान प्राप्तकर्ताओं के रूप में। यह इसलिए, सीखने की संज्ञानात्मक और रचनावादी सिद्धांतों के साथ और सक्रिय सीखने और गहरे सीखने के विचार के साथ जुडा हुआ है। सीखने के इस दृष्टिकोण से शिक्षार्थी को अधिक स्वायत्तता और आजीवन सीखने के लिए एक प्रवृत्ति विकसित होने की संभावना है। इसमें प्रक्रिया के रूप में पाठ्यक्रम पर जोर दिया जाना करने की जरूरत है, जो एक भौतिक बात की तरह नहीं है, बल्कि शिक्षक, छात्रों और ज्ञान के बीच की बातचीत है। दूसरे शब्दों में, पाठ्यक्रम वो होता है जो वास्तव में कक्षा में होता है और जो लोग कुछ करने और मूल्यांकन करने के लिए करते है। पाठ्यक्रम के लिए और लर्निंग के लिए इस दृष्टिकोण की एक लंबी परंपरा है। व्हाइटहेड (1932) ने सुझाव दिया कि पाठ्यक्रम को गतिविधि और अनुभव के संदर्भ में सोचा जाना चाहिए बजाय के ज्ञान की तुलना में संग्रहित तथ्यों का अधिग्रहण किया जाना। जॉन डेवी (1938) ने शिक्षा के क्षेत्र में अनुभव के महत्व पर बल दिया। प्रक्रिया पाठ्यक्रम के लिए सबसे अक्सर उद्धृत संदर्भ लॉरेंस स्तेन्हौसे का है, An Introduction to Curriculum Research and Development (1975), जिसमें अपने तर्क व्यवहार को उद्देश्यों के खिलाफ, पाठ्यक्रम के लिए आधार के रूप में और सीखने के लिए एक जांच-आधारित दृष्टिकोण का उनका प्रस्ताव है। जबकि स्तेन्हौसे एक विषय के आधार पर ज्ञान पारित करने के महत्व से इनकार नहीं करता है, जांच और शिक्षार्थियों की समझ के विकास में खोज और अनायास ही सीखने के परिणामों

के उद्भव के लिए अनुमति देने के महत्त्व पर जोर दिया, जो उद्देश्यों में निर्दिष्ट नहीं किया जा सकता है और, न ही जरूरी, आकलन किया जा सकता है। बल्कि बजाय सीखने की सामग्री के लक्ष्य और उद्देश्य और सीख-संरचना, स्तेन्हौसे की योजना लिखित रूप में तैयार किए उद्देश्यों का उपयोग करती है जिसमें शिक्षार्थि पता लगा सकते हैं और विषय या अध्ययन के क्षेत्र के भीतर खोज कर सकते हैं।

इस मॉडल में लगातार संपर्क के तत्वों की एक संख्या हैं। शिक्षक का गंभीर रूप से सोचने की क्षमता के साथ विशेष स्थितियों में प्रवेश; उनकी भूमिका की समझ और उम्मीदें उनके लिए जो दूसरों की है; और कार्रवाई के लिए एक प्रस्ताव

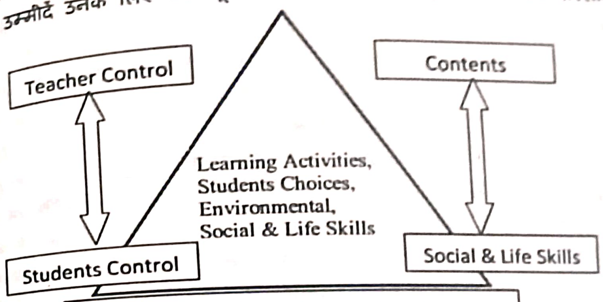

Figure: Curriculum as Process

आवश्यक सिद्धांतों और शैक्षिक मुठभेड़ की सुविधाओं के लिए। इन से प्रेरित होकर, वे लोगों के बीच और लोगों के साथ बातचीत को प्रोत्साहित करते हैं - जिस से वहाँ सोच और कार्रवाई प्रकट हो सकती है। वे लगातार प्रक्रिया का मूल्यांकन कर परिणामों को देख सकते हैं । स्तेन्हौसे ने पाठ्यक्रम सिद्धांत और व्यवहार की एक प्रक्रिया मॉडल के सबसे प्रसिद्ध अन्वेषणों में से एक का उत्पादन किया। उसने पाठ्यक्रम को अंतरिम रूप से संवाद करने के आवश्यक सिद्धांतों और एक शैक्षिक प्रस्ताव की सुविधाओं के एक प्रयास के रूप में परिभाषित किया जो व्यवहार में महत्वपूर्ण जांच के लिए खुला है और प्रभावी अनुवाद करने में सक्षम है। उनका सुझाव है कि एक पाठ्यक्रम रसोई में एक नुस्खा की तरह से है। एक पाठ्यक्रम, एक डिश के नुस्खा की तरह है, जो पहले एक संभावना की तरह होता है, और बाद में प्रयोग के विषय के रूप में होता है। नुस्खा जिसकी सार्वजनिक रूप से पेशकश की जाती है असल में प्रयोग पर एक रिपोर्ट है। इसी तरह, एक पाठ्यक्रम भी अभ्यास पर आधारित होना चाहिए। यह कक्षाओं में किये कार्य को वर्णन करने का प्रयास है। अंत में, सीमाओं में, नुस्खे स्वाद

के अनुसार अलग-अलग किये जा सकते है - तो एक पाठ्यक्रम को भी कर सकते है। स्तेन्हौसे ने यहां बात को बदलने की कोशिश की है। वह यह नहीं कह रहा कि पाठ्यक्रम एक प्रक्रिया है, बल्कि एक साधन, जिसके द्वारा एक शैक्षिक प्रस्ताव व्यवहार अनुभव को कार्यवाही के रूप में उपलब्ध कराया गया है।

जब हम एक पाठ्यक्रम के बारे में सोचते हैं, तो अनगणित संभव समस्याओं के बारे में सोचते हैं। पहले, जो लोग क्या सिखाया जाता है, में बड़े पैमाने में एकरूपता चाहते हैं, यह एक समस्या है। पाठ्यक्रम के सिद्वांत के लिए यह दृष्टिकोण है, क्योंकि यह अर्थ बताने वाले और सोचने वाले को कोर में रखता है और वस्तुओं की तुलना में शिक्षार्थियों को विषयों के रूप में समझता है, कक्षाओं में बहुत अलग तरीके से और सामग्री के रूप में कुछ अलग ही तरीके से मानता है। स्तेन्हौसे की टिप्पणी के रूप में, यह प्रक्रिया मॉडल अनिवार्य रूप से एक महत्वपूर्ण मॉडल है, बल्कि एक अंकन मॉडल नहीं है। एक बड़ी कमजोरी और, वास्तव में, इस प्रक्रिया मॉडल की ताकत है कि यह शिक्षकों की गुणवत्ता पर टिका हुई है। अगर ये पूर्णतया तक नहीं है तो, वहाँ निर्धारित पाठ्यक्रम सामग्री के रूप में कोई सुरक्षा तंत्र नहीं होता है। यह दृष्टिकोण कक्षा में ज्ञान-चातुर्य और अर्थ बनाने पर निर्भर है। अगर शिक्षक इतना नहीं जनता है, तो वहाँ शैक्षणिक रूप से क्या हो सकता है, एक गंभीर मुद्दा होगा। कुछ प्रयास, खोज या समस्या को सुलझाने की प्रक्रिया पर, ध्यान केंद्रित विकास के द्वारा इस समस्या को दूर करने के लिए किया गया है। लेकिन इस दृष्टिकोण में एक खतरा है। प्रक्रियायें कौशल के सेट तक ही सीमित हो जाते हैं - उदाहरण के लिए, एक लेम्प बर्नर को कैसे जलाएं। जब छात्र निश्चित कौशल का प्रदर्शन करने में सक्षम हैं, तो मान लिया जाता है कि इस प्रक्रिया को उन्होने पूरा कर लिया है। कार्रवाई अंत तक पहुंच गई हैं; प्रक्रियायें उत्पाद बन गए हैं। चाहे या न, छात्र दुनिया की भावना बनाने के लिए कौशल को लागू करने में सक्षम हैं, उनसे किसी भी तरह अनदेखी की गई है।

क्यों नहीं प्रक्रिया और उत्पाद?
WHY NOT PROCESS AND PRODUCT?

शिक्षा वांछनीयता या एक सिद्वांत या दूसरे पर विचार की प्रभावकारिता के विषय में तर्क के साथ आक्रांत है। नेता, शिक्षाविद, शिक्षक और सांस्कृतिक टिप्पणीकार जमकर अपने अपने दृष्टिकोण का पक्ष लेते हैं और अपनी बात का बचाव और स्वीकारं करवाने के लिए जमकर प्रयास करते हैं। लिखने के समय,

शिक्षण तथ्यों और सम्बंधित गुणों पर खूब बहस होती है और छात्र केंद्रित सीखने की चर्चा होती है और नीतियों के आधार वो बनते हैं जो तर्क जीतते है और सबसे ठोस सबूत, उनकी मान्यताओं का समर्थन करने के लिए एकत्र कर लिए जाते हैं। पाठ्यक्रम नहीं होना चाहिए और शायद नहीं हो सकता है -न तो प्रक्रिया और न ही उत्पाद। चार्ल्स डिकेंस के विपरीत, ग्रादि्ग्रंद Gradgrind, जिसके लिए तथ्य केवल आवश्यक बातें थी और बाकी सब बेकार, बेरहमी से भुलाने वाला, पाठ्यक्रम को उत्पाद, जिसका सबसे प्रबल समर्थन था, मानने से इनकार कर दिया, कि शिक्षार्थियों के लिए विकास और संवृद्धि एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है जो उन्हें चाहिए। जो लोग प्रक्रिया को मानते हैं उनकी अक्सर आलोचना होती है क्योंकि वे व्यक्ति के विकास को पहले मानते हैं, बजाय विषय के ज्ञान के। यह सुझाव बहुत महत्त्वपूर्ण है कि जब आप अपने पाठ्यक्रम या एक प्रोग्राम डिजाइन कर रहे हैं तो आप को पारस्परिक रूप से लाभप्राद संयोजन में, दोनों प्रक्रिया और उत्पाद दृष्टिकोण के विकास को ध्यान में रखना चाहिए। समझ का विकास, शिक्षा का एक वांछनीय उद्देश्य है, लेकिन यह कुछ की एक समझ हो गया है - आम तौर पर एक विषय या एक व्यावसायिक क्षेत्र में। हम इसे पसंद करें या नहीं, विषयों की सामग्री अधिक या कम हद तक, निर्धारित ही होती है। शिक्षक अपने स्वयं के विशेष अनुभवों पर आधारित कार्यक्रम के पक्ष में, सिलेबस को अस्वीकार नहीं कर सकते हैं। वे क्या कर सकते हैं कि केवल 'क्या' विषय है और कि यह 'कैसे' सिखाया या पढाया जाता है। शिक्षार्थियों को ऐसे व्यवहार करना चाहिए, जैसे कि वे वैज्ञानिक हों। अर्थात,

- समस्या के बोधगम्य हो।
- समस्या को चित्रित करने में सक्षम हो।
- इसे हल करने की परिकल्पना या सुझाव दे सकें।
- किसी के अतीत के अनुभवों से परिकल्पनाओं के परिणामों को तोल सकें।
- सबसे अधिक संभावना समाधान का परीक्षण करें।

पाठ्यक्रम का एक प्रकार जिसकी जड़ें वर्तमान के अनुभवों से हैं, अधिक स्वायत्त है और आगे की ओर देखने वाला है। इस पाठ्यक्रम की गुणवता होनी चाहिए:

- कर के सिखने पर जोरः अर्थात, हाथों की परियोजनायें, अनुभवात्मक अधिगम द्वारा सीखने पर जोर
- विषयगत तत्वों पर ध्यान केंद्रित पाठ्यक्रम एकीकृत
- दृढ़ता से समस्या को सुलझाने और महत्वपूर्ण सोच पर जोर

- समूह में काम करने और सामाजिक कौशल के विकास को प्रोत्साहन
- रटना के विपरीत, समझ और कार्रवाई सीखने के उद्देश्य के रूप में ज्ञान होना चाहिए।
- सहयोगी और सहकारी सीख परियोजनाओं पर दबाव
- सामाजिक जिम्मेदारी और लोकतंत्र के लिए शिक्षा पर जोर
- दैनिक पाठ्यक्रम में सेवा लर्निंग परियोजनाओं और सामुदायिक सेवा एकीकृत।
- आगे का देखने वाले कौशल भावी समाज में वांछनीय विषय सामग्री का चयन।
- अन्य विविध सीखने के संसाधनों के पक्ष में संसाधनों के सीखने के रूप में पाठ्यपुस्तकों पर जोर देना हतोत्साहित करना।
- जीवन भर सीखने और सामाजिक कार्य-कुशलता पर जोर।
- शिक्षार्थी की परियोजनाओं और प्रस्तुतियों के आकलन व मूल्यांकन पर आधारित।

पाठ्यक्रम भागीदारी क्यों होना चाहिए?
WHY SHOULD CURRICULUM BE PARTICIPATORY?

बातें करना, शिक्षकों और प्रशिक्षकों के लिए, बहुत आम बात है। उन्हें विशेषज्ञ की भूमिका से, और शिक्षार्थियों के लिए ज्ञान हस्तांतरण करने के लिए प्रयास करना चाहिए। शिक्षार्थियों को कुछ करने के लिए नहीं कहा जाता हैं सिवाय कि वहाँ शांत रहने के लिए, और शायद कुछ भी, अन्य। हो सकता है कि कभी-कभी वे एक सवाल पूछ लें, जिसका शिक्षक / ट्रेनर जवाब दे दें। इस स्थिति में, यह संभावना नहीं है कि किसी को कुछ भी करने के लिए प्रशिक्षित किया जाए, और वहां ज्यादा सीखने की बात नहीं होती है। सिवाय इसके कि कुछ लोग सीखते होंगे कि शिक्षण या प्रशिक्षण एक बहुत ही उबाऊ गतिविधि होती है। यह कैसे, प्रशिक्षण पाठ्यक्रम जो आपने अनुभव किया है के साथ तुलना करते हुए भिन्न है या तो एक ट्रेनर के रूप में, या एक शिक्षार्थी के रूप में? कुछ विषयों / पाठ्यक्रम में, हालांकि, वहाँ बहुत अधिक भागीदारी होती है। इसका मतलब यह है कि शिक्षक / ट्रेनर से अधिक लोग, सक्रिय रूप से शिक्षण या प्रशिक्षण में भाग ले रहे हैं। शिक्षार्थियों सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, तो उनके ओर अधिक जानने की संभावना है, और प्रशिक्षण के ओर अधिक प्रभावी होने की संभावना है। क्योंकि उनकी जरूरतों की

...प्रक्रिया और ... उन्हें प्रशिक्षण में अधिक स्वामित्व दिया जा सकता है, ... कर ली गई है और ... भी निर्णय लेने में, उनकी जरूरतों को पूरा किया ... उन्हें उम्मीद हो जाती है कि वे भी निर्णय लेने में, उनकी जरूरतों को पूरा किया ... में शामिल किये जाएंगे। यह उनकी प्रेरणा वृद्धि होगी, जो उन्हें और अधिक ... ढंग से जानने में मदद करेगी। कई लोगों का विचार है कि प्रशिक्षण और शिक्षा में भागीदारी एक अच्छी बात है। दुर्भाग्य से, भागीदारी शायद ही कभी प्रशिक्षण की डिलीवरी से परे तक फैली हुई होती है। अधिक से अधिक लाभ पूरे पाठ्यक्रम विकास की प्रक्रिया में भागीदारी को प्रोत्साहित करने के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। यदि आप इस सिद्धांत का पालन करें तो क्या लाभ मिल सकते हैं?

- आप को चर्चा और विभिन्न हितधारकों (शिक्षार्थियों, और लोगों के समूह जो शिक्षण, शिक्षा और प्रशिक्षण में रुचि रखते हैं) के साथ प्रतिबिंब के लिए अधिक से अधिक अवसर देना चाहिए। इससे हर किसी को जानने के लिए मदद मिलेगी, और अधिक प्रभावी ढंग से एक साथ सभी काम कर सकते हैं।
- आप और अधिक आसानी से लिंक और नेटवर्क बना सकते है, जो आपको पहले से बेहतर जानकारी साझा करने के लिए अनुमति देगा; आपके पाठ्यक्रम स्थानीय संदर्भ के लिए ओर अधिक प्रासंगिक हो जाएंगे।
- ऐसी महिलाओं, गरीब लोगों को, या बच्चों के रूप में कुछ समूह और व्यक्ति, जिन्हें सामान्य रूप से एक आवाज नहीं मिल पाती, बातचीत और वार्ता में शामिल हो सकते हैं; उन्हें प्रशिक्षण का एक परिणाम के रूप में और अधिक लाभ होगा।
- अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों के साथ अधिक से अधिक संतुष्टि में आप नए संपर्क और संचार लाइनें, स्थापित कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप एक गतिशील पाठ्यक्रम डिजाइन की प्रक्रिया स्थापित करने में सक्षमता हासिल होगी।
- विभिन्न हितधारकों के पाठ्यक्रम विकास प्रक्रिया के विभिन्न चरणों के लिए अधिक से अधिक जिम्मेदारी हासिल कर सकते हैं; इस प्रेरणा से प्रतिबद्धता बढ़ जाती है।

यह दिलचस्प है कि भागीदारी दृष्टिकोण विश्वविद्यालयों और औपचारिक शिक्षण संस्थानों द्वारा की तुलना में जमीनी विस्तार संगठनों द्वारा अधिक व्यापक रूप से अपनाया गया है। इसके अलावा, जहां भागीदारी दृष्टिकोण इस्तेमाल किया गया है, लाभ देखा गया है: हर किसी को शामिल कर अधिक से अधिक स्वामित्व, जटिल

समस्याओं के लिए बेहतर समाधान है, और अधिक स्थायी परिणामों को पाता गया है।

पार्टिसिपेटरी पाठ्यक्रम विकास दृष्टिकोण में सभी स्तरों पर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए क्षमता है, लेकिन स्पष्ट रूप से यह है, जहां शिक्षा संस्थानों और व्यक्तियों को स्वायत्तता की योजना है और यहां नवीन पाठ्यक्रम विकास के दृष्टिकोण को लागू करने की संभावना है। चूंकि ज्यादातर देशों में, प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक सरकार / मंत्रालय है जो एक राष्ट्रीय पाठ्यक्रम विकसित करता है, वहां आमतौर पर स्कूलों या स्थानीय शिक्षा अधिकारियों के लिए थोड़ी स्वतंत्रता होती है स्थानीय परिस्थितियों को उस पाठ्यक्रम के अनुकूल करने के लिए। इन रणनीतियों पर वास्तविक विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा पाठ्यक्रम लेनदेन की प्रक्रिया की आवश्यकता होती है, और यहां तक अन्य हितधारकों भी शामिल हो सकते है जैसेकि उदाहरण के लिए, माता-पिता और स्थानीय समुदाय के सदस्य। बेशक, इस तरह के अभ्यास, क्षमता और व्यक्तिगत शिक्षकों के हित पर एक बड़ा सौदा निर्भर करता है क्योंकि राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली शायद ही कभी एक बड़े पैमाने पर, इस तरह की क्षमताओं के विकास का समर्थन करने में सक्षम होती हैं। रणनीतिक, फिर, यह महत्वपूर्ण है, व्यक्तियों के अनुभव और नवाचारों से अधिक व्यापक रूप से जानना, सुझाव है कि ज्यादा स्थानीय अच्छे अभ्यास से राष्ट्रीय स्तर पर सीखा जा सकता है, साथ ही नवाचारों को कम सफल या अस्थिर दिखाया गया है। भागीदारी पाठ्यक्रम नवाचारों की एक श्रृंखला के रूप में निम्न प्रकार संभव हो सकते हैं:

- सीखने की प्रक्रिया में सुधार के लिए स्कूल, समुदाय और शिक्षार्थी द्वारा संयुक्त प्रयास।
- पाठ्यचर्या सम्मेलनों का आयोजन किया जा सकता है, जो प्रशिक्षण स्कूलों के लिए पाठ्यक्रम सामग्री के उत्पादन में विभिन्न हितधारकों को शामिल कार्यशालाओं के लिए एक मंच प्रदान करते हैं।
- पेड शिक्षण, जिससे शिक्षकों, पाठ्यक्रम डेवलपर्स, शिक्षा अधिकारियों और प्राकृतिक संसाधनों के वैज्ञानिकों के साथ, जसमें शिक्षण और सीख सप्रसंगता के लिए क्षमता का पता लगाया जा सकता हैं।
- कार्रवाई अनुसंधान शिक्षक परियोजना द्वारा जूनियर स्तर के छात्रों के लिए पाठ्यक्रम में इकाइयों के लिए शिक्षण सामग्री के उत्पादन की सुविधा कर सकते हैं।

- सामाजिक वानिकी, जिसमें शिक्षण, शिक्षा और स्कूल-समुदाय संबंधी सीख सप्रसंगता, समुदाय आधारित गतिविधियाँ, विशेष रूप से सामाजिक वानिकी में स्कूली बच्चों की भागीदारी के माध्यम से किया जाता है।
- अध्ययन और अध्यापन भागीदारी पहल से, संस्थानों में एक बहुत अभिनव और भागीदारी पाठ्यक्रम विकास की एक सीमा के बंटवारे को सक्षम कर सकते हैं।

क्यों भागीदारी दृष्टिकोण का इस्तेमाल नहीं कर रहे हैं?

Why are participatory approaches not used?

एक कारण यह है कि भागीदारी के लिए अधिक समय और संसाधनों की आवश्यकता होती है। ये सच है, लेकिन यह भी आमतौर पर पाया जाता है कि बेहतर प्रक्रिया और उत्पादन के साधनों (जिसका मतलब है अधिक समय की जरूरत हो सकती है), का मतलब है उच्च उत्पाद की गुणवत्ता। समय और पैसे के रूप में आदानों का सावधान प्रबंधन भी बहुत महत्वपूर्ण है। एक अन्य कारण, वास्तविक भागीदारी का मतलब है शक्ति साझा करना जैसे, वास्तव में शक्ति और इसके लाभ को साझा करने आदि संसाधन, शक्ति और उनके उपयोग, निर्णय लेने की शक्ति, कई लोगों और संगठनों के लिए यह मुश्किल कार्य है ! कभी-कभी उन्हें लगता है कि वे कुछ लाभ के लिए खुद को खो देंगे, लेकिन कई बार, यह है क्योंकि उन्होंने वास्तव में अभ्यास में भाग लेने के बारे में कभी नहीं सोचा है। यदि आप पाठ्यक्रम के विकास के लिए एक भागीदारी दृष्टिकोण का उपयोग करते हैं, आप और अधिक लोगों को और अधिक चीजें जो उपयोगी होती हैं उनका उपयोग कर सकते हैं, खुद को और दूसरों के लाभ के लिए आप मदद करने के लिए सक्षम हो जाते हैं। हर कोई, आप सहित, लाभ में होगा।

अंत में, एक स्वीकार्य पाठ्यक्रम वह है जो एक शिक्षार्थी को रचनात्मक बनाता है, आत्मनिर्भर बनता है और उसे जीवन के सभी पहलुओं और इच्छाओं में उत्कृष्टता प्राप्त करने में मदद करता है। ऐसा पाठ्यक्रम अनुचित होगा जो एक बच्चे के सामाजिक पहलू पर ध्यान नहीं देता है क्योंकि वह भी एक समाज का हिस्सा है और वह भी सामाजिक है। पाठ्यक्रम जो वह वास्तविक जीवन के अनुभव में कक्षा में सीखता है को लागू करने के लिए छात्र को सक्षम होना चाहिए। संघर्ष के भीतर एक महत्वपूर्ण शक्ति को मजबूत बनाने और शिक्षा प्रणाली के सभी स्तरों पर

शिक्षण और प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए के रूप में पाठ्यक्रम की शक्ति को अवलोक करने की जरूरत है।

प्रश्न (Questions)

1. पाठ्यक्रम के उत्पाद दृष्टिकोण पर चर्चा करें।
2. पाठ्यक्रम के प्रक्रिया दृष्टिकोण पर चर्चा करें।
3. उत्पाद या प्रक्रिया फार्म के रूप में ज्ञान की तुलना करें।
4. वर्तमान परिदृश्य में पाठ्यक्रम के गुणों का वर्णन करें।
5. पाठ्यक्रम में भागीदारी होनी चाहिए। क्यूं? कैसे? चर्चा करें।
6. पाठ्यक्रम की भागीदारी दृष्टिकोण का प्रयोग किया जाता है या नहीं? यदि नहीं तो क्यों नहीं? चर्चा करें।

Chapter 9

पाठ्यक्रम डिजाइन मॉडल
CURRICULUM DESIGN MODELS

मॉडल कोई कार्रवाई करते हुए दिशानिर्देश के रूप में मदद करते हैं। मॉडल शिक्षा के लगभग हर रूप में पाए जाते हैं। शिक्षा व्यवसाय में, निर्देश, प्रशासन, मूल्यांकन, पर्यवेक्षण, आदि मॉडल हैं। पाठ्यक्रम विकास जैसी गतिविधियों में एक मॉडल का उपयोग अधिक से अधिक कुशलता और उत्पादकता के लिये कर सकते हैं। पाठ्यक्रम मॉडल समझने के लिए हम एक कदम वापस लेने और पाठ्यक्रम के बारे में ही बात करने की जरूरत है। पाठ्यक्रम को शिक्षा के क्षेत्र में एक योजना की तरह प्रयोग किया जाता है जो शिक्षक को निर्देश देता है। कई जिलों और स्कूलों के शिक्षक, अपने सबक को गति प्रदान करने के लिए एक उपकरण (tool) का उपयोग करते हैं, जिसे पाठ्यक्रम गाइड कहा जाता है। लेकिन पाठ्यक्रम और पाठ्यक्रम गाइड सिर्फ सिर्फ कहने या बोलने से ही नहीं बन जाते हैं। काफी समय और ऊर्जा इन दस्तावेजों के निर्माण में लगता है। इस प्रक्रिया को पाठ्यक्रम विकास के रूप में जाना जाता है।

कई अवधारणायें पाठ्यक्रम के सभी प्रकार के विकास और समीक्षा, दोनों

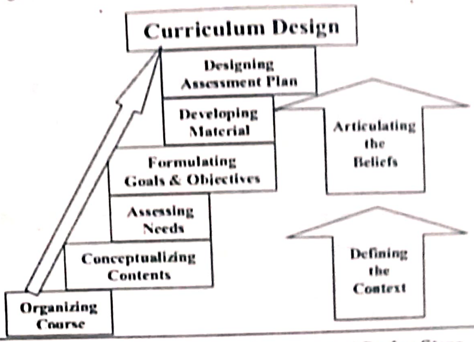

Figure: Curriculum Development and Design Steps

कार्यक्रम और विषय-पाठ्यक्रम, के स्तर पर मार्गदर्शन कर सकते हैं।

- **संरेखण और जोड़ना** - पाठ्यक्रम के सभी भागों को एक दूसरे के साथ तार्किक अनुरूप होना चाहिए। वहाँ एकरसता या भागों के बीच एक समन्वय होना चाहिए।
- **विस्तार** - सीमा या सामग्री की हद (क्या सूचना को सीखा जाना है, कौशल का अधिग्रहण किया जाना है, आदि) जिसे एक पाठ्यक्रम या कार्यक्रम में शामिल किया जाना है। यह कार्यक्रम या पाठ्यक्रम परिणामों को प्राप्त करने के लिए, शिक्षार्थियों का नेतृत्व करने के लिए पर्याप्त होना चाहिए। हालांकि, वहाँ चौड़ाई और गहराई के बीच एक निरंतर तनाव होता है जब विस्तार पर विचार कर रहे होते है। सामान्य तौर पर, जब कुछ गहराइ तक सीखने की आवश्यकता है, तो झुकाव सबसे अच्छा होता है।
- **अनुक्रम** - सीखने के अनुभव का अनुक्रम ताकि शिक्षार्थि पिछले अनुभवों के आधार पर सीख सकें और व्यापक, गहरा या अधिक जटिल को आसानी से समझ और लागू कर सकें। पाठ्यक्रम में अनुक्रमण सामग्री के सामान्य तरीके हैं, जिनमें सरल से जटिल की ओर, पूरे से भागों में (या भागों से पूरे की ओर), क्षमतायें, और कालानुक्रमिक शामिल हैं।
- **निरंतरता** - कार्यक्षेत्र में समय के साथ विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रमुख पाठ्यक्रम तत्वों की पुनरावृत्ति (खड़ी संचय या अभिव्यक्ति (vertical organization or articulation) के रूप में जाना जाता है) को दर्शाता है। यह भाव या कौशल की पहचान करने के लिए महत्वपूर्ण है जिसकी जरूरत है, एक कार्यक्रम के माध्यम से चलाने के लिए और नक्शा करने के लिए कि कैसे उन्हें हर स्तर पर संबोधित किया जाएगा।
- **एकीकरण** - क्षैतिज समय में किसी भी विंदु पर प्रमुख पाठ्यक्रम घटकों के बीच संबंध (क्षैतिज संगठन के रूप में जाना जाता है) को दर्शाता है। एकता की प्रमुख शिक्षा के सुदृढीकरण और पाठ्यक्रम सीमाओं के पार सीखने की कोशिश को बढावा देने की जरूरत है।

छात्रों को, सीखने के परिणामों की उपलब्धि प्रदर्शित करने लिये, ये बताये जाने की जरूरत है कि वे क्या जानते हैं। इस संदर्भ में, अवधारणाओं और सिद्धांतों के परिणाम आधारित पाठ्यक्रम डिजाइन से जुडे पाठ्यक्रम विकास मार्गदर्शन कर सकते हैं।

परिणाम आधारित शिक्षा एक छात्र केंद्रित और परिणाम उन्मुख डिजाइन है, जो सभी व्यक्ति जान या सीख सकते हैं, पर आधारित है। परिणाम आधारित शिक्षा की रणनीति का तात्पर्य निम्नलिखित हो सकता है:

- छात्र क्या जानना चाहते हैं, स्पष्ट रूप से पहचाना जा सकता है।
- प्रत्येक छात्र की प्रगति का प्रदर्शन दिखाई उपलब्धि के आधार पर किया जा रहा है।
- प्रत्येक छात्र की सीखने की जरूरतों को कई शिक्षण रणनीतियों और मूल्यांकन उपकरण के माध्यम से संबोधित किया जाना है
- प्रत्येक छात्र को उसकी क्षमता का एहसास कराने के लिए समय और सहायता प्रदान की जानी चाहिए।

उल्लेख सभी बातेन, एक पाठ्यक्रम मॉडल पर आधारित हैं। एक मॉडल वास्तव में पाठ्यक्रम के विकास में पहला कदम है। एक पाठ्यक्रम मॉडल का इस्तेमाल पाठ्यक्रम के प्रकार को निर्धारित करता है; इसमें शैक्षिक दर्शन, शिक्षण के लिए दृष्टिकोण, और पद्धति शामिल हैं। पाठ्यक्रम डिजाइन एक ठोस इकाई में एक पाठ्यक्रम के तत्वों की व्यवस्था है। पाठ्यक्रम डिजाइन केवल तभी पूरी तरह से समझा जा सकता है अगर यह सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से सप्रसंगज्ञ है। पाठ्यक्रम से हम शिक्षार्थी के बारे में सूचना प्राप्त कर सकते हैं; वह कैसे सीखता है, रवैया बनाता है, हित या रुचि उत्पन्न करता है और मूल्यों को विकसित करता

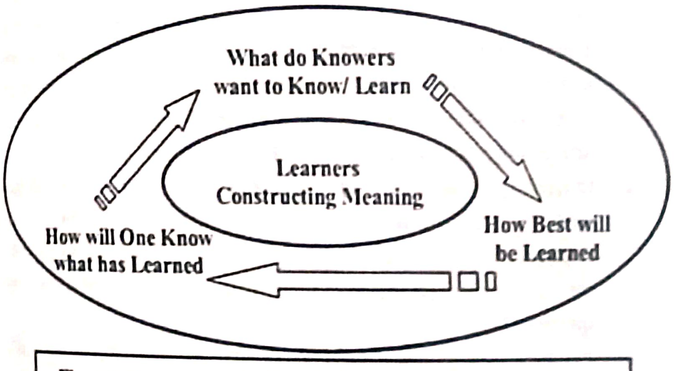

Figure: Outcome-based Curriculum Development and Design

है। पाठ्यक्रम मॉडल, पांच क्षेत्रों को परिभाषित करते हैं जिनमें से प्रत्येक एक अलग कोण से शिक्षा को देखते हैं।

फोकस (focus) अवधारणा एक विषय या एक छात्र पर होता है और निर्देश देता है।

पहुंच (approach) घटक एक पारंपरिक या आधुनिक तरीका है और शिक्षा के प्रकार में इस्तेमाल किया जाता है।

सामग्री (content) घटक में, एक विषय या सामग्री के आधार पर कोण तय किया जाता है, और जाना जाता है कि कैसे इकाइयां या किस्में लिखी जायेंगी।

प्रक्रिया (process) संरचना आकलन में दिखता है: प्रारंभिक या संचयी। अंत में, संरचना (structure) घटकों की समीक्षा की प्रणाली, उनके निर्धारण और पाठ्यक्रम संशोधन पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

पाठ्यक्रम विकास के डिजाइन आयाम में विस्तार, अनुक्रम, निरंतरता, एकता, अभिव्यक्ति और संतुलन की विशेषतायें शामिल हैं।

- **विस्तार** (Scope) पाठ्यक्रम सामग्री की चौड़ाई और गहराई है। इसमें सीखने के संज्ञानात्मक, भावात्मक, स्यकोमोटर डोमेन, शामिल हैं और साथ ही इसमें नैतिक या आध्यात्मिक डोमेन भी होते है।
- **अनुक्रम** (Sequence) पाठ्यक्रम क्षेत्रों के बीच खड़ी रिश्ता (vertical relationship) है। यह सामग्री और अनुभवों घटना और पुनर्घटना (reoccurrence) है ताकि छात्रों को कनेक्ट करने और प्रस्तुत या अनुभवी पाठ्यक्रम की उनकी समझ को समृद्ध किया जा सके। इसमें सरल से जटिल की ओर, पूरे से भागों में (या भागों से पूरे की ओर), क्षमतायें, और कालानुक्रमिक सीखना शामिल हैं।
- **निरंतरता** (Continuity) कुछ प्रमुख विचारों या कौशल को फिर से उन छात्रों को याद करवाना जिनके बारे में शिक्षकों का मानना है कि छात्रों के पाठ्यक्रम की लंबाई से अधिक गहराई और ज्ञान के विस्तार में वृद्धि हुई है। यह खड़ी हेरफेर (vertical manipulation) या पाठ्यक्रम घटकों की पुनरावृत्ति है।
- **एकीकरण** (Integration) पाठ्यक्रम योजना के भीतर निहित ज्ञान और अनुभव के सभी प्रकारों को जोड़ने के लिए है। यह एकीकृत ज्ञान को अलग-अलग समझने के लिए सक्षम बनाता है।

- **जोड़बंदी** (Articulation) दो प्रकार के होते है। कार्यक्षेत्र अभिव्यक्ति (Vertical Articulation), विषय या पाठ्यक्रम अनुक्रम में प्रदर्शित करने के लिए पाठ्यक्रम अनुक्रम में कुछ पहलुओं के संबंधों को दर्शाता है। क्षैतिज अभिव्यक्ति (Horizontal Articulation) तत्वों के बीच या एक साथ होने वाली सहयोग को संदर्भित करता है।
- **संतुलन** (Balance) डिजाइन के प्रत्येक पहलू को उचित वजन देता है ताकि वहां विकृतियों न हो।

पाठ्यक्रम मॉडल को दो बहुत व्यापक मॉडल, उत्पाद मॉडल और प्रक्रिया मॉडल में विभाजित किया जा सकता है। ये दो मॉडल उसी तरह से हैं जैसे वे ध्वनित हो रहे हैं।

- उत्पाद मॉडल - यह मॉडल, परिणामों पर केंद्रित है, जैसे ग्रेड या एक उद्देश्य तक पहुंचना। ज्यादातर वजन तैयार उत्पाद पर होता है बजाय कि सीखने की प्रक्रिया में।
- प्रक्रिया मॉडल - इसके विपरीत, इस प्रक्रिया मॉडल में सीखने पर ध्यान केंद्रित है और ये अधिक ओपन एंडेड है। पाठ्यचर्या प्रक्रिया मॉडल पर ध्यान केंद्रित करना; छात्र कैसे सीख रहे हैं, उनकी क्या सोच है, और यह सीखना भविष्य पर कैसे असर करेगा।

पाठ्यक्रम की संरचना, तैयार सामग्री और छात्र की जरूरतों के बीच के रिश्ते पर, अधिक या कम डिग्री तक, केंद्रित है। छात्रों को, चुनने के लिये, ज्यादा से ज्यादा, अवसर प्रदान किये जाते है जो विषय-वस्तु वे सीखना चाहते हैं।

- **व्याख्यान आधारित अधिगम** (Lecture-based learning): विषय काफी हद तक पाठ्य पुस्तकों या अध्यायों द्वारा निर्धारित किया जाता है जो सीखा जाने की जरूरत है। शिक्षक व्याख्यान में समझाते हैं और सामग्री स्पष्ट करते हैं। ट्यूटोरियल, प्राप्त ज्ञान को गहरा, समस्याओं का स्पष्ट समाधान और कार्य पर प्रतिक्रिया प्रदान करते हैं। सेमेस्टर के अंत में एक परीक्षा, छात्रों की व्याख्यान सामग्री समझ का आकलन करती है।
- **संसाधन आधारित अधिगम** (Resource-based learning): कार्य के माध्यम से प्रेरित होकर स्वयं अध्ययन करना। छोटे समूहों में कार्य-चर्चा की जाती है

- **महारत आधारित अधिगम** (Mastery based learning): छात्र पूर्व निर्धारित सीखने के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अपने स्वयं के सीखने को विनियमित करते हैं। ये व्यावसायिक विकास योजना भी है।
- **समस्या - आधारित सीखना** (Problem-based learning): छात्रों को समझने समझाने और समस्याओं को हल करने के लिए छोटे समूहों में काम किया जाता हैं। ट्यूटोरियल समूह समस्या का विश्लेषण करता है और सीखने के उद्देश्यों को पहचानता है। स्वतंत्र अध्ययन की अवधि के बाद छात्रों को उनके सीखने की रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होती है। छात्रों के लिए एक शिक्षक होता है, जो समूह प्रक्रियाओं के साथ सहायता व निर्देशित करता हैं।
- **परियोजना केंद्रित सीखना** (Project-centered learning): प्रामाणिक, वास्तविक जीवन कार्यों को पेशेवर अभ्यास से निकाला जाता है। छात्र छोटे समूहों में या समानांतर में, इस परियोजना पर काम करते हैं। शिक्षक के साथ नियमित बैठकें। प्रक्रिया के परिणाम, वापस छात्रों के पूरे समूह को रिपोर्ट करने होते हैं।
- **काम सीखने आधारित** (Work-based learning): छात्रों अभ्यास से सीखने के साथ विश्वविद्यालय से सीखने का गठबंधन करते हैं।
- **आत्म निर्देशन में सीखना** (Self-directed learning): छात्र अपने विषय क्षेत्रों की खुद स्थापना करते हैं और शिक्षक के पर्यवेक्षण के साथ एक परियोजना का कार्य करते हैं।

पाठ्यक्रम मॉडलों को तकनीकी या गैर तकनीकी दृष्टिकोण के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। इस तोड़ नीचे दिए पाठ्यक्रम मॉडल के उत्पाद / प्रक्रिया ब्रेक डाउन करने से भिन्न नहीं है। इन तरीकों को द्वैतवादी के रूप में या सकारात्मक या नकारात्मक होने के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

तकनीकी-वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Technical–Scientific approach) में, पाठ्यक्रम विकास सीखने के माहौल, संरचना के लिए एक उपयोगी खाका तैयार करते है। दृष्टिकोण, तार्किक, कुशल और शिक्षा प्रदान करने में प्रभावी होने के रूप में वर्णित किया गया है।

इसके विपरीत, **गैर-तकनीकी** (Non-Technical) को, व्यक्तिपरक व्यक्तिगत और सौंदर्य के रूप में वर्णित किया गया है और शिक्षार्थी पर केंद्रित है।

... कुछ ज्यादा पढने के लिये, इससे पहले कि हम विशिष्ट मॉडल पर बात ... पाठ्यक्रम मॉडल कैसे तैयार किये जाते हैं के बारे में बात करते हैं। पांच व्यापक ... को पाठ्यक्रम मॉडल को परिभाषित करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है:

- **विषय केन्द्रित** (Subject- or discipline-centered) - इस ढांचे में, पाठ्यक्रम को विषयों के आसपास, गणित या विज्ञान की तरह आयोजित किया जाता है।
- **एकीकृत** (Integrated) - जैसे की यह नाम से लगता है, इस ढांचे में एक साथ कई विषय शामिल होते है। हम इस मॉडल का प्रयोग समस्या आधारित सीखने और अनुभवात्मक सीखने में देखते हैं।
- **कुंडली** (Spiral) - इस ढांचे में, सामग्री को स्कूल वर्ष के अंतराल में कई बार प्रस्तुत किया जाता है। ज्यादातर इसे गणित में देखा जाता है, इस डिजाइन का उपयोग छात्रों को पेश (introduce) करने के लिए और उसके बाद फिर से सामग्री प्रस्तुत करने की अक्सर अनुमति देता है।
- **पूछताछ या समस्या आधारित** (Inquiry- or problem-based) – इसे एकीकृत मॉडल के साथ भ्रमित नहीं करना चाहिये, यह पाठ्यक्रम में केंद्रीय समस्या या प्रश्न पर केंद्रित है। इस फ्रेम में, पूरा पाठ्यक्रम, समस्या आधारित होता है, जबकि एकीकृत में यह हो भी सकता है या नहीं भी हो सकता है।
- **अनुभवात्मक** (Experiential) - इस ढांचे का उपयोग छात्र, अपने काम के साथ वास्तविक जीवन के तरीके में भाग लेने के लिए कर सकते हैं, जैसे, परिकल्पना के साथ प्रयोग करना, समस्याओं के माध्यम से काम करना, और समाधान खोजने की कोशिश करना।

विषय केंद्रित डिजाइन
DISCIPLINE CENTERED DESIGN

यह मॉडल पाठ्यक्रम की सामग्री पर केंद्रित है। विषय केंद्रित डिजाइन ज्यादातर विशिष्ट विषय के लिए लिखी पाठ्यपुस्तक से मेल खाता है। विषय केंद्रित पाठ्यक्रम में पारंपरिक विषयों पर अंतःविषय रूप-विषयों में, विस्तृत विविधता पर, ध्यान केंद्रित किया जा सकता है जो पारंपरिक क्षेत्रों में प्रक्रियाओं के बारे में, जैसेकि

उपभोक्ता छात्रों के शिक्षण लक्ष्य जानकारी के महत्वपूर्ण समस्या समाधान के रूप में काफी क्षेत्र प्रभावित करता है।

लक्षण Characteristics

1. **विषय सीखना अपने आप में एक अंत है** (Learning subject matter is an end in itself): क्योंकि नियत समय में किसी विषय-विशेष को सीखना होता है; शिक्षक और छात्र संतुष्टि महसूस करते हैं यदि विषय की आवश्यक सामग्री को समझ या सीख लिया है।
2. **ज्ञान के पूर्व निर्धारित निरंतर मानक** (Pre-determined uniform standard of knowledge): फ़ॉलोअर्स (Followers) ज्ञान के न्यूनतम मानकों को दृढ़ता से सीखने की वकालत करते हैं, बस सत्रांत परीक्षाओं में अर्हता प्राप्त करने के लिए। अगर छात्र परीक्षा में विफल हो गया तो पाठ्यक्रम दोहराया जाएगा। अगर विफलता जारी रहती है, तो छात्र संस्था से हटा दिया जाता है।

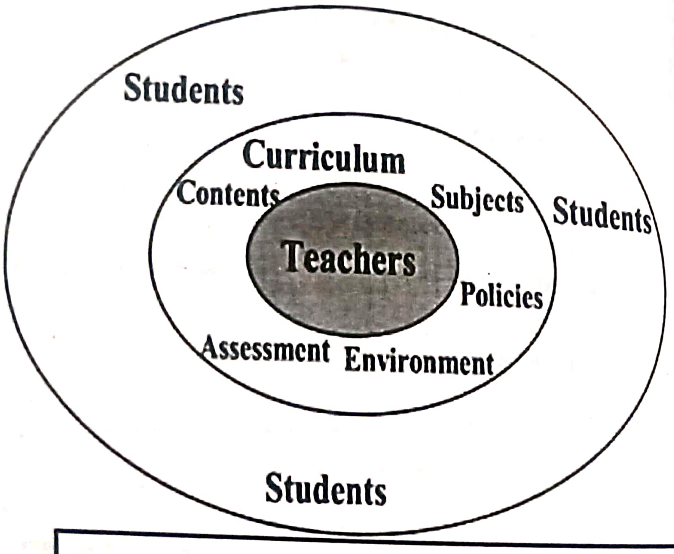

Figure: Discipline-centered Curriculum setup

3. **कौशल में अभ्यास पर जोर दिया जाता है** (Practice in skills is emphasized): ड्रिल सत्र, उपचारात्मक काम, समीक्षा का काम, कोचिंग कक्षायें अक्सर कौशल के विशिष्ट प्रकार के लक्ष्य को हासिल करने के लिए समर्पित करते हैं। इस कवायद को एक समूह में सभी छात्रों को समान रूप से दिया जाता है।
4. **भविष्य में उपयोग के लिए जानकारी प्राप्त करने पर बल दिया जाता है** (Emphasized is placed upon acquiring information for future use): एक कोर्स के लिए चुने गए विषय को बजाय बच्चे के, वयस्क के लिए तत्काल जरूरत के मूल्य का माना जाता है।
5. **एक छात्र ने किसी विषय में कितना सीखा है, से प्रगति को मापा जाता है** (Progress is measured by how much of the subject a pupil has learnt): विषय क्योंकि महत्वपूर्ण है, किसी विषय में महारत को कितनी अच्छी तरह हासिल किया गया है, द्वारा सीखने को मापा जाता है। लगातार परीक्षण छात्रों को जांच करने के लिए, उपलब्धि की हद तक, दिया जाता है।
6. **प्रत्येक विषय को अपनी खुद की एक तार्किक संगठन के साथ एक अलग इकाई (इकाई) के रूप में देखा जाता है** (Each subject is treated as a distinct entity (unit) with a logical organization of its own): अलग तर्कसंगत आयोजित विषयों में कौशल, तथ्यों और जानकारी के अधिग्रहण पर जोर दिया गया है। नीति निर्माता, प्राधिकरण, प्रशासन, शिक्षक, लोग और छात्र, पाठ्यक्रम योजना एक साथ नहीं बनाते है और न ही वे आम समस्याओं पर चर्चा करते हैं।
7. **वयस्कों और वरिष्ठ नागरिकों के द्वारा पिछले शिक्षण-अधिगम स्थितियों के अनुसार विषय चुना जाता है** (Subject matter is selected by adults and seniors previous to the teaching-learning situations): जैसेकि विषय-वस्तु को तर्कसंगत आयोजित विषयों में सिखाया जाता है, इसलिए विषय की सामग्री सिखाने से पहले पाठ्यक्रम को चुना जाता है। इस उद्देश्य के लिए वे विषय विशेषज्ञों, पर्यवेक्षकों, प्रशासकों और पाठ्य पुस्तक लेखकों से मदद प्राप्त करते हैं।

इस मॉडल में, मुख्य ध्यान पाठ्यक्रम विकास (मानव विकास नहीं), विषय विशेषज्ञों के साथ छात्र एकरूपता के लिए उच्च मानकों को विकसित करने पर है; हमारे समाज का मानना है कि सभी छात्रों को जानना चाहिए और ग्रेड-स्तर की जांच

के बिंदुओं पर ऐसा करने में सक्षम होना चाहिए। शिक्षक को क्या और कैसे सिखाना के लिए कहा जाता है।

विशेषताएं Features

1. मुख्य लक्ष्य और उद्देश्य छात्रों को मानकीकृत करने के लिए, उन्हें एक व्यापक पाठ्यक्रम के साथ समान रूप से बनाने के लिए है। व्यर्थ के परीक्षण की एक बड़ी मात्रा छात्रों को दंड देने के रूप में शिक्षकों पर थोपी गई है।
2. शिक्षक को बड़ी-बड़ी क्लासेज लेनी पडती है कि प्रत्येक बच्चे को अच्छी तरह से एक करीबी रिश्ता बनाने के लिए पर्यास समय, शिक्षकों को मिल ही नहीं पाता। माता-पिता आम तौर पर शामिल हो ही नहीं पाते हैं, शिक्षक के सौंपे होमवर्क में अपने बच्चे की मदद को छोडकर।
3. शिक्षक ज्यादा समय राज्य द्वारा प्रदान पाठ्यक्रम को हल करने में बिता देते हैं। छात्रों को क्या पता नहीं है उसपर वे ध्यान केंद्रित करना चाहते हैं पत ऐसा वे नहीं कर पाते। छात्र के लिए शिक्षक द्वारा सौंपा होमवर्क करना आवश्यक हैं।
4. छात्रों को सवालों को पूछने के लिए कभी प्रोत्साहित ही नहीं किया जाता। सीखना, केवल-मात्र परीक्षा पारित करने के लिए, उथला और अस्थायी है।

विषय केन्द्रित डिजाइन सबसे लोकप्रिय और व्यापक रूप से इस्तेमाल होने वाले डिजाइन हैं। स्कूलों में शैक्षणिक बुद्धिवाद का एक मजबूत इतिहास है; इसके अलावा, स्कूल के लिए उपलब्ध सामग्री का उपयोग भी सामग्री संगठन को दर्शाता हैं। एक पाठ्यक्रम भी एक विषय के केंद्र के चारों ओर इस तरह की समस्या को हल करने, निर्णय लेने या टीम वर्क के रूप में कुछ प्रक्रियाओं, रणनीति, या जीवन कौशल, पर ध्यान केंद्रित कर सकता है। विषय केंद्रित पाठ्यक्रम के उदाहरण हैं:

विषय डिजाइन (Subject Design):

विश्वास के आधार पर कि मनुष्य को अनूठा और विशिष्ट कौन बना सकता है, उनकी बुद्धि; और खोज और ज्ञान की प्राप्ति क्या बुद्धि के लिए प्राकृतिक पूर्ति कर रहे हैं? पाठ्यक्रम का आवश्यक ज्ञान क्या विभिन्न विषय के अनुसार क्षेत्रों में विकसित किया गया है।

ताकतें: मौखिक गतिविधियों पर जोर दिया जाता है, छात्रों का परिचय समाज के लिए आव्श्यक ज्ञान के लिए है, आराम देने और पारंपरिक करने के लिए।

कमजोरियां: वैयक्तिकरण को रोकता है, छात्रों को शक्ति-रहित करता है सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और शारीरिक विकास को बढ़ावा देने में विफल रहता है

सीखने को कम (Compartmentalizes) करता है, छात्रों की जरूरत, रुचियों, व अनुभव पर ध्यान नहीं देता है, और निष्क्रियता को बढ़ावा देता है। कभी कभी सीखने इस में इतने बंटे है। यह सामग्री पर इतना जोर देता है कि यह छात्रों की स्वाभाविक प्रवृत्ति, ब्याज और अनुभवों के बारे में भूल जाता है।

विषय-समूह डिजाइन (Discipline Design):

यह सामग्री के निहित संगठन पर आधारित है। जिस तरह से सामग्री को सीखा जाना है इन तरीकों का विद्वानों ने सुझाव दिया है जो अपने क्षेत्रों की सामग्री का अध्ययन करते हैं। यह विशिष्ट ज्ञान है और एक विधि के द्वारा विद्वानों को उनके क्षेत्र की एक विशिष्ट सामग्री का अध्ययन करने के लिए उपयोग के माध्यम से संदर्भित करता है।

ताकत: छात्रों को सामग्री और स्वतंत्र सीखने की महारत हासिल होती है, विषयों के विकास के किसी भी स्तर पर किसी भी बच्चे को सिखाया जा सकता है।

कमजोरियां: विषय-समूह ज्ञान के रूप में जिसे वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है उस जानकारी की ये अनदेखी करता है, कॉलेज के ही हितों की बात करता है, छात्रों को इस पाठ्यक्रम को मानना ही होगा।

व्यापक क्षेत्र डिजाइन (अंत:विषय) (Broad Fields Design (Interdisciplinary)):

तार्किक आधार पर जो सामग्री फिट हो सकती है उसे समन्वित करने की कोशिश करता है, पाठ्यक्रम सामग्री के विभिन्न पहलुओं के बीच छात्रों को एकीकृत करने के लिए प्रयास करता है, संबंधों के साथ-साथ अर्थ की पूर्णता विचार करने की अनुमति देता है, छात्रों को अर्थ या अर्थ के लोभ में, पूरे के अर्थ में भाग लेने के लिए आमंत्रित करता हैं।

ताकत: छात्रों के पाठ्यक्रम सामग्री के विभिन्न पहलुओं के बीच संबंधों को विचार करने के लिए अनुमति देता है, छात्र निर्माण में भाग लेते हैं।

कमजोरियां: चौड़ाई बनाम गहराई जारी करना।

सहसंबंध डिजाइन (Correlation Design):

पाठयक्रम सामग्री के विखंडन को कम करने में अलग-अलग विषयों में से कुछ लिंकेज के लिए अनुमति देता है।

ताकत: कुछ विषयों के संबंध विखंडन को कम करने के लिए अनुमति देता है।

कमजोरियां: समय निर्धारण के वैकल्पिक रूपों की आवश्यकता होती है, अलग (सहयोगात्मक) योजना के लिए शिक्षकों की आवश्यकता होती है।

प्रक्रिया डिजाइन (Process Design):

क्रियाविधि और प्रक्रियायें जिनके द्वारा व्यक्ति ज्ञान अर्जन करता है, या तो विशिष्ट विषयों में या सामान्य रूप में, ये प्रक्रियायें और स्वभाव छात्रों को वास्तविकताओं का विश्लेषण और चौखटे, जिसके द्वारा ज्ञान व्यवस्थित किया जा सकता है, बनाने के लिए सक्षम कार्य करने के लिए जोर देता है।

ताकत: सिखाता है कि कैसे गंभीर जाना जाये और सोचा जाये।

कमजोरियां: सामग्री पर जोर देने का अभाव है।

शिक्षार्थी केंद्रित डिजाइन
LEARNER CENTERED DESIGN

छात्र इस केंद्र या कार्यक्रम का केंद्र होते हैं। इस का प्रभाव प्राथमिक स्तर पर बहुत मजबूत है। बच्चे के हितों और जरूरतों पर ये छात्र केंद्रित डिजाइन बहुत ध्यान देता है। कोई कुछ करके अच्छी तरह सीखता है। शिक्षार्थी उसके वातावरण के साथ व्यस्त रहता है। इस तरह की शिक्षा एक छात्र की जरूरतों पर केंद्रित होती है कि कौन है, वह क्या कर सकते हैं और वह क्या बनना चाहते है। इसमें शिक्षक को एक पेशेवर के रूप में माना जाता है।

ये डिजाइन शिक्षार्थियों के विकास और प्रेरक जरूरतों का समर्थन करते हुए उनके महत्व पर जोर देता है। इसके अलावा, क्योंकि शिक्षार्थियों की अलग-अलग सीखने की जरूरत होती हैं है और अलग-अलग तरीकों से वे जानते या सीखते हैं, पाठ्यक्रम शिक्षार्थी की विशिष्टता के अनुसार तैयार किया जाना चाहिए। शिक्षार्थियों का बेहतर समर्थन करने के लिए, पाठ्यक्रम को इस रूप में डिजाइन किया जाना चाहिए कि वे शिक्षार्थियों की जरूरत का समर्थन करे। संकेत के उदाहरण है, स्पष्टीकरण और प्रोत्साहन में मदद से शिक्षार्थियों द्वारा एक प्रक्रिया को समझना, और शिक्षार्थियों को प्रतिबिंबित करने में मदद करने के लिए सवाल कि वे क्या सीख रहे हैं। जब एक शिक्षार्थी को अधिक समर्थन की जरूरत हो, तो शिक्षक द्वारा, शिक्षार्थी को आगे बढ़ने के लिये, व्यस्त रहने के लिये, और किसी कौशल में माहिर होने के लिये मदद करनी चाहिये। जब शिक्षार्थी महारत तक पहुंच रहा है, तो शिक्षक को शिक्षार्थी की वृद्धि हुई कौशल के स्तर के जवाब में कम सहायता प्रदान करनी चाहिये।

विशेषताएं Features

1. मुख्य लक्ष्य और उद्देश्य, मानवीय विकास है ताकि प्रत्येक छात्र मानव शक्तियों को खोजकर उन्हें विकसित कर सके, इससे ऐसे अपनी अद्वितीय प्रतिभा का विकास करने और समाज के लिए एक योगदानकर्ता बनने की ख्वाहिश पूर्ति में मदद मिलेगी। छात्रों को विषयों के कई विकल्पों का अध्ययन करना होता है। शिक्षक छात्रों को उनके काम का मूल्यांकन करने में मदद कर सकते हैं।
2. शैक्षणिक कक्षाएं काफी छोटी होनी चाहिये ताकि शिक्षकों को प्रत्येक बच्चे को अच्छी तरह से जानने का मौका मिल सके और माता-पिता के साथ काम करने में मदद कर प्रत्येक छात्र को महान, असीमित क्षमता का स्वामी बनाया जा सके।
3. शिक्षक को छात्रों की, चिंताओं, हितों और सवालों से आगे बढ़ना चाहिये। प्रत्येक छात्र जो पहले से ही जानता है, को सीखने के लिए और करके देखने के लिये कोशिश करनी चाहिये। छात्र अक्सर घर में बैठकर अध्ययन कर समय बिताते हैं।
4. छात्र उनकी जिज्ञासा और रचनात्मकता के द्वारा आमतौर पर माता-पिता और शिक्षकों को आश्चर्यचकित करते हैं इसलिए उन्हें प्रेरित और सराहना करते रहना चाहिये।

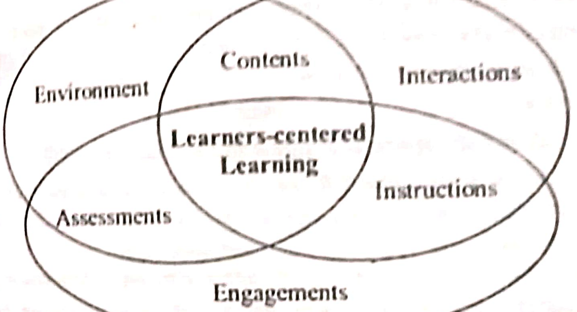

Figure: Learners-centered Curriculum Development and Design

शिक्षार्थी केंद्रित पाठ्यक्रम डिजाइन में प्रभावी और मूल्यवान पाठ्यक्रम के लिए, निम्नलिखित सिद्धांत हो सकते हैं:

1. प्रसंग (Context): लर्निंग कार्य एक वास्तविक दुनिया के अनुसार होने चाहिये जिससे कि शिक्षार्थि, जो वे क्या सीख रहे हैं, को व्यक्तिगत रूप से दुनिया से कनेक्ट कर सकें।
2. सृजन (Construction): शिक्षार्थि, नया सीखने के साथ-साथ अपने स्वयं के अनुभवों और पूर्व ज्ञान से जोड़ने के लिए सक्षम होना चाहिए।
3. सहयोग (Collaboration): एक समस्या सुलझाता परिदृश्य शिक्षार्थियों को उनके विचारों का विश्लेषण करने, विकास, परीक्षण, और दूसरों की राय से अवगत कराने की अनुमति देता है। सहयोग पूर्ण होने के बाद प्रत्येक शिक्षार्थी एक व्यक्ति के समापन स्तर पर आ जाएगा।
4. बातचीत (Conversation): शिक्षार्थियों के साथ और के भीतर, संचार, प्रभावी ई-लर्निंग पाठ्यक्रम के लिए आवश्यक है। शिक्षार्थियों को बातचीत में समय बिताने और कुछ नया सीखने की भावना बनानी चाहिए।

लक्षण Characteristics

1. शिक्षार्थी महत्वपूर्ण है और रूचि के केंद्र में है।
2. शिक्षार्थी के हित शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण है।
3. शिक्षक की भूमिका कार्य-मास्टर की नहीं है लेकिन केवल एक गाइड की तरह है। सीखने के बगीचे में, शिक्षक को एक माली की तरह बर्ताव करना चाहिये, जबकि शिक्षार्थी एक पौधे की तरह है।
4. छात्रों को अपने ज्ञान और विशेषताओं के आधार पर कई विकल्प दिए जा सकते है।
5. छात्र योजना और मूल्यांकन में सक्रिय भूमिका निभाते हैं।
6. शिक्षार्थी का अनुभव, सीखने में, एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है।

शिक्षार्थी केंद्रित दृष्टिकोण की दिशा में आवश्यक परिवर्तन
Changes required towards learner-centered approach

एक पाठ्यक्रम के लिए एक शिक्षार्थी केंद्रित दृष्टिकोण में विकसित सामग्री या कठोर उम्मीदों त्याग की आवश्यकता नहीं है। पूरी तरह से शिक्षार्थी केंद्रित पाठ्यक्रम को लागू करने के लिए समय के साथ छोटे परिवर्तन कर इसे लागु कर सकते हैं। इन परिवर्तनों में शामिल हैं:

- **स्थानांतर मानसिकता** (Shifting mindset): शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षा के डिजाइन को, सीखने के बारे में विश्वासों को चुनौती देने, और भूमिका जो शिक्षक इस प्रक्रिया में खेलता है, एक बदलाव की आवश्यकता है। शिक्षार्थी केंद्रित अनुभवों के लिए पाठ्यक्रम को परिवर्तित करने के लिए पहला कदम मानसिकता बदलना है। शिक्षार्थि इस सेटिंग में और अधिक सक्रिय होते हैं; वे पूछताछ कर सकते हैं, विश्लेषण कर सकते हैं, चर्चा कर सकते हैं, योग्यता और निष्कर्ष निकल सकते हैं। एक शिक्षक के रूप में, एक स्वस्थ शिक्षार्थी केंद्रित पर्यावरण की सुविधा के लिए, अपनी मानसिकता बदलने की, उसकी अपनी जिम्मेदारी है। सोचने का यह नया तरीका आपके सभी शिक्षण निर्णय को प्रभावित करता है: क्या सामग्री शामिल करनी है या क्या नहीं; यह कैसे व्यवस्थित किया जाना है और इसे कैसे सिखाया जा सकता है, और कैसे इसका आकलन किया जायेगा।
- **शिक्षार्थी को जानने की कोशिश** (Getting to know the learner): यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि वहाँ, एक आकार जो सभी पर फिट बैठता है, वाला दृष्टिकोण नहीं है। सभी शिक्षार्थियों अलग-अलग हैं और वहाँ अनगिनत तरीके हैं जिनसे व्यक्तियों की किस्म के अनुसार पाठ्यक्रम को शिल्प किया जा सकता हैं। शिक्षार्थियों के बीच विविधता पर ध्यान देना बहुत जरूरी है, ऐसा करने में विफल रहने पर, निश्चित रूप से सफलता में एक बड़ा फर्क आ सकता हैं और छात्र केंद्रित सामग्री की सुविधा के लिए परिणाम में अक्षमता हावी हो सकती है। एक त्वरित शिक्षार्थी विश्लेषण जानकारी, छात्रों को अतिरिक्त सहायता और छात्रों की व्यक्तिगत ताकत जानने के लिए मदद प्रदान करती है।

शिक्षण उद्देश्यों पर पुनर्विचार (Rethinking the learning objectives): विचार करें, क्या छात्र कोर्स के अंत में सक्षम हो जाएगा, परिप्रेक्ष्य स्थानांतरण का उद्देश्य, उद्देश्य निर्माण या पुनर्निर्माण से है। शिक्षार्थी केंद्रित मॉडल का यह एक अनिवार्य हिस्सा है। उद्देश्यों में पाठ्यक्रम सामग्री का वर्णन करने के बजाय, ऐसे तरीके पर ध्यान केंद्रित करना होगा जिनसे छात्रों को ऐसा करने में सक्षम किया जा सके, जो भी वे कार्य करना चाहते हैं और जिन उपकरणों का उपयोग वे उन कार्यों से निपटने के लिए कर सकते हैं।

- **सत्ता का संतुलन स्थानांतर (Shifting the balance of power):** ऐसे पाठ्यक्रम बनाना जोकि छात्र की तरफ, सत्ता का संतुलन के सकें, वे शिक्षार्थी की जिम्मेदारी को आवश्यक करने का एक शानदार तरीका है। बजाय इसके कि, इंतजार किया जाये सामग्री के वितरण का, छात्रों अपने स्वयं के अर्थ बनाने और सीखने में समय लगा सकते हैं। यह परिवर्तन पहली बार में थोड़ा भयावह लग सकता है लेकिन यह निश्चित रूप से अच्छा है। सत्ता का संतुलित स्थानांतर छात्रों को अपने ज्ञान, अपनी गति, प्रबंधन और उनके व्यक्तिगत प्रयासों पर प्रतिबिंबित करने का अवसर प्रदान करता है। वहाँ उपलब्ध तकनीकें, ऑनलाइन क्विज, ब्लॉग्स और चर्चा बोर्ड, प्रभावी लर्निंग पाठ्यक्रम की दार्शनिक पारी को और भी अधिक समृद्ध बनाते है।

शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षक एक ही शिक्षण पद्धति का प्रयोग नहीं करते है। यह दृष्टिकोण विभिन्न प्रकार के तरीकों पर जोर देता है जो शिक्षकों की भूमिका जानकारी प्रदाता से छात्र के सीखने की सुविधा में बदलता है। परंपरागत रूप से शिक्षक, कि उन्होंने क्या किया है पर ध्यान केंद्रित करते हैं और न कि इस बात पर कि छात्र क्या सीख रहे हैं। शिक्षक जिस बात पर अक्सर जोर देते हैं उससे छात्रों के निष्क्रिय सीखने के उदाहरण बढ़ते हैं, और जो अपने खुद के सीखने के लिए जिम्मेदारी नहीं ले पाते। शिक्षक इसे पारंपरिक विधि कहते हैं, जोकि शिक्षक केन्द्रित शिक्षण भी हैं। इसके विपरीत, शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षण तब होता है जब शिक्षकों का ध्यान छात्र के सीखने पर केंद्रित हो। डिजाइन के इस प्रकार के, निम्नलिखित उदाहरण हो सकते है:

बाल केंद्रित डिजाइन (Child Centered Designs):

अगर हम सीखने का अनुकूलन करना चाहते हैं तो छात्रों को अपने वातावरण में सक्रिय होना चाहिए, पाठ्यक्रम छात्रों के जीवन, जरूरतों और हितों पर आधारित होना चाहिए।

ताकत (Strengths): ज्ञान के स्वामित्व के माध्यम से छात्रों को सशक्त बनाता है, रचनावादी सीखने के लिए अनुमति देता है।

कमजोरियां (Weaknesses): सामग्री विशिष्ट नहीं।

अनुभव केंद्रित डिजाइन (Experience Centered Designs):

सब कुछ मौके पर ही किया जा सकता है। हितों और बच्चों की जरूरतों को प्रत्याशित नहीं किया जा सकता।

ताकत (Strengths): बच्चों के प्राकृतिक अनुभवों के आधार पर।

कमजोरियां (Weaknesses): विशिष्ट नहीं।

प्रेमपूर्ण (कट्टरपंथी) डिजाइन (Romantic (Radical) Designs):

मुक्ति शिक्षा का लक्ष्य है, व्यक्ति को जागरूकता, दक्षता, और व्यवहार द्वारा अपने जीवन का नियंत्रण हासिल करना चाहिए., लोगों के बीच बातचीत के परिणाम सीखने के लिए उन्हें सक्षम करना चाहिये, सामग्री को चुनौती देने और सामग्री के बारे में अलग-अलग विचार को अनुमति देने के लिए, साथ ही प्रस्तुत जानकारी के प्रयोजनों के द्वारा आलोचनात्मक (critiquing) होना होगा।

ताकत (Strengths): शिक्षार्थी मुक्तिवाद (emancipates) को बढ़ाता है।

कमजोरियां (Weaknesses): यथास्थिति का खतरा है।

मानववादी डिजाइन (Humanistic Designs):

केंद्रित मानव अस्तित्व के विषय पर ध्यान होना चाहिए, सीखने और महसूस करने के बीच एक रिश्ता है, व्यक्तियों को सशक्त बनाने, सकारात्मक स्व-अवधारणा और पारस्परिक कौशल के विकास के लिये।

ताकत (Strengths): आत्म सम्मान को बढ़ावा, व्यक्तियों का सशक्तिकरण।

कमजोरियां (Weaknesses): शिक्षार्थियों के लिए तरीकों के अपर्याप्त विचार, व्यक्तियों और सभी छात्रों के अनुभव की गतिविधियों की विशिष्टता पर असंगत जोर, समग्र समाज पर व्यक्ति की जरूरतों पर ज्यादा जोर, मानव सीखने और विकास के बारे में एकीकृत न होना।

समस्या केंद्रित डिजाइन
PROBLEM CENTERED DESIGN

एक समस्या केंद्रित दृष्टिकोण लक्ष्यों और उद्देश्यों की पाठ्यक्रम में पहचान हासिल करने के लिए एक वाहन है। अनुसंधान और अंतरराष्ट्रीय अध्ययन से साक्ष्य बताते है कि हमारे छात्र प्रक्रियाओं में कुशल हैं, लेकिन समस्याओं को हल करने के लिए अवधारणाओं को समझने की जरूरत नहीं है। दुनिया जिसमें, वे रहते हैं और

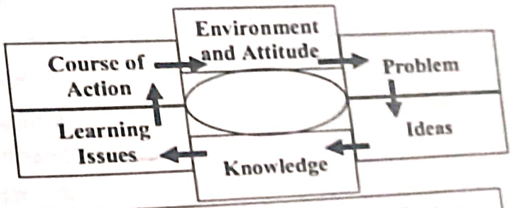

Figure: Problem based Learning Process

काम करते है, को जटिल समस्याओं का समाधान खोजने की प्रक्रिया में, इकट्ठा संगठित करने और व्याख्या डेटा के लिए उनकी आवश्यकता होगी। यह केवल तार्किक महसूस होता है कि एक ही कक्षा में बैठाना जहां इसी तरह के मुद्दों का सामना करना पड़ेगा। असली दुनिया में, वे जिन समस्याओं का सामना करते है, वे वो नहीं है जिनके लिए वे कई विकल्पों में से एक जवाब चयन कर रहे हैं। अंतिम ग्रेड और कोर्स के अंत में परीक्षण, समस्या को सुलझाने की रणनीतियों द्वारा संज्ञानात्मक ज्ञान की मांग के स्तर को ही बढा सकते हैं। शिक्षक जिन्होंने इन उपकरणों की समीक्षा की है ने समस्या केंद्रित शिक्षा प्रदान करने की जरूरत पर टिप्पणी की है।

एक कक्षा के शिक्षक की भूमिका एक सक्रिय समस्या समाधानकर्ता की तरह है जो स्रोतों की विविधता में से डेटा के एक निरंतर प्रवाह के साथ अनुदेशात्मक निर्णय लेता है। एक प्रभावी कक्षा शिक्षक को डिजाइन करना चाहिए अनुभवों को, कि निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए छात्र सक्षम हों और छात्र उन अनुभवों के माध्यम से प्रगति कर सकें। इन अनुभवों के तरीके ऐसे होने चाहियें कि छात्र गणितीय समझ विकसित पर उसे स्थापित कर सकें। छात्र गणितीय समझ का निर्माण करते हैं जब वे गणित के बारे में विचार, बहस और आलोचनाओं द्वारा नए ज्ञान का निर्माण करने के लिए आवश्यक कोशिश करते हैं। जहां ज्ञान के लचीले रूप का उपयोग चाहिए वहां छात्रों को समस्याओं का अनुभव करना चाहिए। कार्य जहाँ दिनचर्या एक समाधान की तरह है वहां कोई गणितीय सोच आवश्यक नहीं होती है। निर्देशन और ध्यान केंद्रित सवाल छात्रों के लिए चुनौती भरे होते हैं जिनके लिए रणनीतियों की भरमार होती है। छात्रों को समस्याओं का विश्लेषण करना है, और ये जानना है कि उन्हें हल करने के लिए क्या जरूरत है, और कैसे डिजाइन समाधान की जरूरत है। उचित कार्य में सभी छात्रों को शामिल करना चाहिए और छात्रों को कम से कम उम्मीदों से परे जाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए अवसर उपलब्ध कराने चाहिए। शिक्षक एक शिक्षक या कोच, जो छात्रों की जांच की सुविधा के लिए सुविधामय हो, हो जाता है। समस्या को हल करने की दिनचर्या व्यायाम से अधिक होनी चाहिए। इसे मात्र एक कक्षा अनुदेश के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि एक महत्वपूर्ण लक्ष्य माना जाना चाहिए। समस्या को सुलझाने को, गणितीय समझ के लिए एक साधन के रूप में और अच्छी तरह की प्रक्रियाओं के एक सेट के रूप में देखा जाना चाहिए। समस्या केंद्रित सीखने में छात्रों की व्यवस्तता, उलझे छात्रों के भीतर, बाहर और सामग्री क्षेत्रों के बीच कनेक्शन को देखने के लिए

अनुमति देगी। छात्र रोजगार और समाधान डिजाइन करने के लिए रणनीतियों की एक किस्म के औचित्य का चयन करने की क्षमता का विकास कर पाएगें। समस्या केंद्रित सीखना एक मॉडल बनाता है, जहां छात्र विचारक होता है और समाधान के लिए एक आत्म निर्देशित खोज में लगा रहता है।

यह संस्थागत और समूह जीवन की कथित वास्तविकताओं, व्यक्तिगत और सामान्य समाज, की समस्याओं पर केंद्रित है। सांस्कृतिक परंपराओं को मजबूत करने और उन लोगों को भी समुदाय और सामाजिक आवश्यकताओं में शामिल करने जो इनका हिस्सा नहीं है, को संबोधित करने के लिए कोशिश करता है। सरल शब्दों में, एक समस्या आधारित दृष्टिकोण शिक्षार्थियों को परिणामों के बिना किसी डर के, एक वास्तविक जीवन प्रदान करता है। यह दृष्टिकोण प्रतिभागियों के समस्या कौशल को विकसित कर उन्हें उनके मौजूदा ज्ञान में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, और ज्ञान जैसा वे चाहते हैं को विकसित करने की कोशिश करता है।

समस्या आधारित सीखने के लक्षण

1. समस्या आधारित सीखने के लिए एक छात्र केंद्रित दृष्टिकोण होना चाहिए।
2. लर्निंग छोटे समूहों में होती है।
3. शिक्षक एक सुविधा या एक संरक्षक से अधिक है।
4. समस्या, समस्या को सुलझाने के कौशल विकसित करने का आधार या उत्तेजना बनाता है।
5. नए ज्ञान सीखना, आत्म निर्देशित के माध्यम से संभव है।

बेहतर सीखने की दिशा में समस्या केंद्रित दृष्टिकोण की मनोवृत्ति

Attitude of problem-centered approach towards better learning

एक समस्या केंद्रित दृष्टिकोण बेहतर सीखने में मदद कर सकता है। यह निम्नलिखित तरीके से समझा जा सकता है:

- **शिक्षार्थी निर्माता है** (The Learner is the Producer): एक समस्या केंद्रित दृष्टिकोण का मुख्य लाभ है कि यह शिक्षार्थियों को ज्ञान के उपभोक्ताओं के बजाय उत्पादक बनने के लिए अनुमति देता है। समस्या आधारित सीखने में शिक्षार्थी की विभिन्न वास्तविक जीवन स्थितियों प्रदान करके मदद कर सकते हैं। समस्या आधारित दृष्टिकोण अक्सर एक शिक्षार्थी केंद्रित दृष्टिकोण ज्ञान के रूप में जाना जाता है कि जो शिक्षार्थी को एक गहन अनुसंधान, अभ्यास के साथ सिद्धांत को एकीकृत करने और एक विशेष समस्या को हल करने के लिए आवेदन करने की अनुमति देता है।

इस प्रकार, शिक्षार्थी विभिन्न विषयों की बुनियादी अवधारणाओं की समीक्षा से एक व्यवहार्य समाधान के विकास पर अधिक ध्यान केंद्रित कर पाता है।

- **संज्ञानात्मक कौशल में सुधार होता है** (Cognitive Skills are Improved): यह भी देखा गया है कि समस्या आधारित सीखने की और झुकाव, आत्म चिंतनशील प्रकृति को मजबूत करने में मदद करता है। यह उसके संज्ञानात्मक प्रसंस्करण कौशल को पैना व सक्षम बनाता है। जिस कारण से समस्या संरचित है और विभिन्न तरीकों का इस्तेमाल इसे हल करने के लिए किया जाता है, शिक्षार्थियों को असली दुनिया की स्थितियों का अनुभव मिलता है। संचार कौशल, तर्क क्षमता, और शिक्षार्थियों की महत्वपूर्ण सोच, एक समस्या आधारित दृष्टिकोण का उपयोग कर कौशल को बहुत बढ़ा सकती है। समस्या आधारित सीखना, शिक्षार्थियों द्वारा बॉक्स के बाहर सोचने के लिए सही समाधान है जिसमें समूह के सदस्यों के साथ संवाद स्थापित करना शामिल है, जब कोई विशेष समस्या-समाधान पर चर्चा आवश्यक लग रही हो।
- **सहयोग का मूल्य उच्च होता है** (The Value of Collaboration is High): समस्या आधारित सीखना, सहयोग के मूल्य को समझने में मदद करता है। समस्या आधारित सीखने में, टीम के काम के महत्व के साथ-साथ समूह बुद्धिशीलता, विचार विमर्श और सूचना समूह के सदस्यों के बीच जानकारी साझा करने पर जोर दिया जाता है। समूह के सदस्यों के बीच यह सहयोगात्मक दृष्टिकोण, विचार और समाधान, हमेशा एक और अधिक मजबूत समाधान को प्रोत्साहित करते है। समस्या केंद्रित सीखना न केवल शिक्षार्थियों को सहयोगात्मक सीखने की प्रक्रिया में मदद करता है बल्कि यह भी कि एक सांझे उद्देश्य की ओर, एक टीम के रूप में काम करने की, आदत शुरू करवाता है।

सिद्धांत Principles

समस्या आधारित सीखना एक शिक्षार्थी केंद्रित सीखनेकि परिकल्पना पर आधारित है, जहां शिक्षार्थी एक समस्या के हल के अनुभव के माध्यम से सीखता है। इसमें निम्नलिखित सिद्धांत हो सकते है:

1. **सक्रिय शिक्षा** (Active learning): शिक्षार्थि अपने खुद के सीखने की प्रक्रिया को नियंत्रित करने के लिए स्वतंत्र है, साथ ही उनके सवालों के जवाब खोजने के लिए भी सक्षम हैं।

2. **एकीकृत सीखना** (Integrated learning): सीखने की रणनीति समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करने और वास्तविक दुनिया अनुभव से जुड़ी है।
3. **संचयी सीखना** (Cumulative learning): समस्याएं अधिक कठिन और शिक्षार्थी के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकती है। ये शिक्षार्थी के पूर्ण विकास का अनुभव करने के लिए मदद करते हैं।

छोटे समूहों में प्रारंभिक चर्चा, प्रासंगिक शिक्षा, ज्ञान और जटिल समस्याओं के एकीकरण, आदि के छात्र सीखने पर कई संज्ञानात्मक प्रभाव है। ये प्रभाव हैं: नैदानिक समस्याओं में ज्ञान की वृद्धि, बुनियादी विज्ञान अवधारणाओं के एकीकरण की वृद्धि, आत्म निर्देशित सीखने के कौशल का विकास, और विषय में छात्रों की आंतरिक रुचि की वृद्धि। इस डिजाइन के परिणाम एक अलग ही तरह से है क्योंकि यह शिक्षार्थी के जीवन के साथ उसकी डीलिंग का सवाल है। यह डिजाइन शिक्षार्थियों या छात्रों की समस्या को हल करने और निर्णय लेने की कला में निष्णात लाने के लिए जाना जाता है। समस्या आधारित डिजाइन के उदाहरण कुछ इस प्रकार हैं:

जीवन स्थिति डिजाइन (Life Situation Design):

लगातार स्थित जीवन स्थितियों एक समाज के सफल संचालन के लिए महत्वपूर्ण हैं; उनके चारों ओर एक पाठ्यक्रम का समन्वय समझदारी दर्शाता है; छात्रों को स्पष्ट पता रहेगा कि वे क्या पढ़ रहे हैं और वे प्रत्यक्ष प्रासंगिकता देखेंगे, अगर सामग्री सामुदायिक जीवन के पहलुओं के आसपास ही आयोजित हो; छात्रों का सामाजिक या जीवन स्थितियों का अध्ययन, न केवल समाज में सुधार ला सकता है, बल्कि वे सुधार का एक हिस्सा भी हो सकते है।

ताकत (Strengths): एक समन्वित तरीके से विषय प्रस्तुत करता है; जानने के लिए और समस्या को हल करने की प्रक्रियाओं को लागू करने के लिए छात्रों को प्रोत्साहित करती है; प्रासंगिक।

कमजोरियां (Weaknesses): सीखने के आवश्यक क्षेत्रों के विस्तार और अनुक्रम का निर्धारण करने की क्या गुंजाइश है; अपनी सांस्कृतिक विरासत का पर्याप्त रूप से छात्र के लिए खुलासा नहीं करता; अपरम्परागत (Nontraditional)।

कोर डिजाइन (Core Design):

सामान्य शिक्षा पर केंद्रित है और आम मानवीय गतिविधियों से उत्पन्न होने वाली समस्याओं पर आधारित है।

...क विषय-वस्तु प्रदान करता है,
...साहित करता है; कक्षा में लोकतांत्रिक प्रक्रिया को

कमजोरियां (Weaknesses): अपरम्परागत (Nontraditional); बुनियादी बातों पर ध्यान नहीं देता; सामग्री खोजने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ती है; एक असाधारण शिक्षक की आवश्यकता होती है।

सामाजिक समस्यायें और पुनः निर्मित डिजाइन (Social Problems and Re-constructionist Design):

सामाजिक पुनः निर्मित पाठ्यक्रम में, कई गंभीर समस्याओं से भिड़ने का विश्लेषण कर, शिक्षार्थी को व्यस्त रखने का प्राथमिक उद्देश्य है। पाठ्यक्रम को समकालीन सामाजिक समस्याओं और समाज के पुनर्निर्माण के उद्देश्य से सामाजिक कार्य परियोजनाओं का पता होना चाहिए; शिक्षक सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित करते हैं और एक अधिक अच्छे समाज का निर्माण कर सकते हैं।

शिक्षार्थी केंद्रित बनाम पाठ्यक्रम केन्द्रित शिक्षक
LEARNER-CENTERED VS CURRICULUM-CENTERED TEACHERS

शिक्षार्थी केंद्रित और पाठ्यक्रम केंद्रित कक्षाओं के बीच का अंतर दार्शनिक है। दर्शन व्यवहार बनता है, इसलिए जब यह शिक्षण शैली में आता है, यह विश्वास प्रणाली की गहरी समझ के लिए महत्वपूर्ण हो जाता है। सिखाने का रहस्य, छात्रों और शिक्षकों की भूमिका एक पढ़ाने की विधि का निर्धारण करते हैं। विचार से कोई खुद को शैक्षणिक सातत्य (pedagogical continuum) पर परख सकता है:

- गतिविधियों के प्रकार जो कोई सृजित कर सकता है
- कक्षा के लेआउट (कैसे और कहाँ बैठना है)
- छात्रों के जानने के तरीके
- क्लास को तैयार करना (कैसे)
- शैलियों को कैसे सबसे अच्छा बनाया जाये

शिक्षण शास्त्र Pedagogy

शिक्षक जो शिक्षार्थी केंद्रित कक्षाओं का पालन करते हैं, रचनावाद द्वारा जोरदार रूप से प्रभावित होते हैं। रचनावाद का मानना है कि पूर्व ज्ञान (prior knowledge) एक नींव है जिस से नया सीखने में मदद होती है क्योंकि लोग और उनके अनुभव अलग-अलग होते हैं, वे प्रवीणता के विभिन्न स्तर से स्कूल में पहुंचते

हैं। एक छात्र को उसके समीपस्थ विकास का उसका व्यक्तिगत क्षेत्र चुनौती देता है। एक छात्र का वास्तविक विकास का स्तर और उसकी क्षमता के बीच अंतर समीपस्थ विकास का क्षेत्र है। अच्छी शिक्षा प्रत्येक बच्चे के सीखने से मेल खाता है। शिक्षक जो पाठ्यक्रम केंद्रित कक्षाओं का पालन करते हैं, मानकों पर आधारित आंदोलन से बहुत प्रभावित होते हैं। सभी छात्रों को एक ही तरह का ज्ञान सिखाया जाता है। विकास के स्तरों में बदलाव की परवाह किए बिना, सभी बच्चों को एक ही समय अवधि में एक ही सामग्री के संपर्क में रखा जाता है। उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होता है कि यहाँ जो भी सिखाया जाता है, उसमें कोई शैक्षणिक अंतराल न हो।

शिक्षार्थी केंद्रित कक्षायें (Learner-centered classrooms)

शिक्षार्थी केंद्रित कक्षायें, मुख्य रूप से व्यक्तिगत छात्रों के सीखने पर केन्द्रित होती हैं। शिक्षक की भूमिका, हितों और सार्थक शिक्षा के द्वारा, एक गाइड के रूप में, छात्रों की अद्वितीय जरूरतों का उपयोग करते हुए, छात्रों के विकास की है। छात्र केंद्रित कक्षायें विशेषतयः सभी के लिए निः शुल्क होनी चाहिए। ये कक्षायें लक्ष्य आधारित होती हैं। छात्रों का सीखना पूर्व निर्धारित, विकासात्मक उन्मुख उद्देश्यों से सिद्ध किया जा सकता है। संक्षेप में, हर कोई सामग्री में माहिर होकर ही कुछ कमा सकता हैं। क्योंकि लोग सबसे अच्छा सीखते हैं जब वे सुनते है, देखते हैं, और चर हेरफेर (manipulate variables) करते हैं, विधि जिसके द्वारा सीखना होता है वह आम-तौर पर प्रयोगात्मक है।

पाठ्यक्रम केन्द्रित कक्षायें Curriculum-centered classrooms

पाठ्यचर्या केन्द्रित कक्षायें अनिवार्य रूप से शिक्षण पाठ्यक्रम पर केन्द्रित होती हैं। शिक्षक निर्धारित करता है, कि क्या, कब, कैसे और क्या समय सीमा में, सिखाया जायेगा। पाठ्यक्रम में साल भर के लिए जो शामिल किया जाना चाहिए, वो पूर्वता के आधार पर होता है। इन कक्षायों में अक्सर सख्त अनुशासन की आवश्यकता होती है, क्योंकि बच्चों के हितों पर विचार, सामग्री की आवश्यकतायें स्थापित करने के बाद ही होता हैं। इस ढांचे में छात्रों की एक दूसरे के साथ तुलना होती हैं। छात्र सफलता, दूसरों के साथ तुलना करके मापी जाती है। उपलब्धि के निश्चित मानक जरूरी नहीं है कि मिल ही जाएँ। इन कक्षाओं में ग्रेड परिचित घंटी वक्र जैसे लगते हैं।

शिक्षक जिन तरीकों से कक्षा में और कक्षा के बाहर अपने समय बिताते हैं, यह उनके शिक्षण दर्शन के बारे में बताता हैं। एक शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षक दूसरों के साथ सहयोग में समय बिताता है और समस्या का समाधान चुनौतियों के रूप में

लेता है। यह शिक्षक अपना समय नए विचार, शोध और महत्वपूर्ण अवधारणाओं को सीखने में खर्च करता है जोकि छात्रों को योग्यता हासिल करने के लिए जरूरी है। मूल्यांकन चलता रहता है और ज्यादातर, छात्रों के शिक्षण के संदर्भ में किया जाता है। एक पाठ्यक्रम केंद्रित शिक्षक खुद का ज्यादातर समय अध्यापन या सबक विकसित करने में लगाता है। जब शिक्षक, टीम की बैठकों में सहयोग करते हैं, तो इसमें शामिल सभी एक ही सबक सिखाने के लिए सहमत हो सकते हैं। ये कार्य आम तौर पर अंत में सही परिणाम देने में कामयाब हो सकता है।

Learner-centered शिक्षार्थी केंद्रित	**Curriculum-centered** पाठ्यक्रम केंद्रित
Child-centered	Teacher-centered
Constructivist-driven	Standards-driven
Progressive	Traditional
Information-age model	Factory model
Criterion-based	Norm (bell curve) based
Depth	Breadth
Thematic integration	Single subjects
Process- and product-oriented	Product-oriented
Block scheduling	Short time periods
Collaboration	Isolated teaching and learning
Experiential knowledge	Rote knowledge

अगर आप मूल रूप से एक पाठ्यक्रम केंद्रित शिक्षक हैं, तो सिस्टम पहले से ही आप के लिए निर्धारित है; कोई चिंता करने की जरूरत नहीं! अगर आप अनिवार्य रूप से एक शिक्षार्थी केंद्रित शिक्षक हैं, तो आप को अपनी शिक्षण शैली के लिए समर्थन हासिल करने की जरूरत पड़ सकती है।

पाठ्यक्रम विकास में आवश्यक घटक

COMPONENTS REQUIRED IN CURRICULUM DEVELOPMENT

पाठ्यक्रम विकास प्रक्रिया, क्या सिखाया जाएगा, कौन सिखायेगा और यह कैसे सिखाया जाएगा, को व्यवस्थित करता है। प्रत्येक घटक अन्य घटकों को प्रभावित और सूचना का आदान प्रदान करता है। उदाहरण के लिए, क्या सिखाया

जाएगा कौन सिखायेगा (उदाहरण के लिए उनकी उम्र, परिपक्वता, और शिक्षा के क्षेत्र में विकास के चरण) से प्रभावित होता है। सामग्री को किस तरीके सिखाया जाता है निम्न से प्रभावित है:

- किसको सिखाया जा रहा है,
- उनकी विशेषतायें, और
- वातावरण।

उपरोक्त तीन आवश्यक घटकों पर विचार करते हुए, गैर-औपचारिक

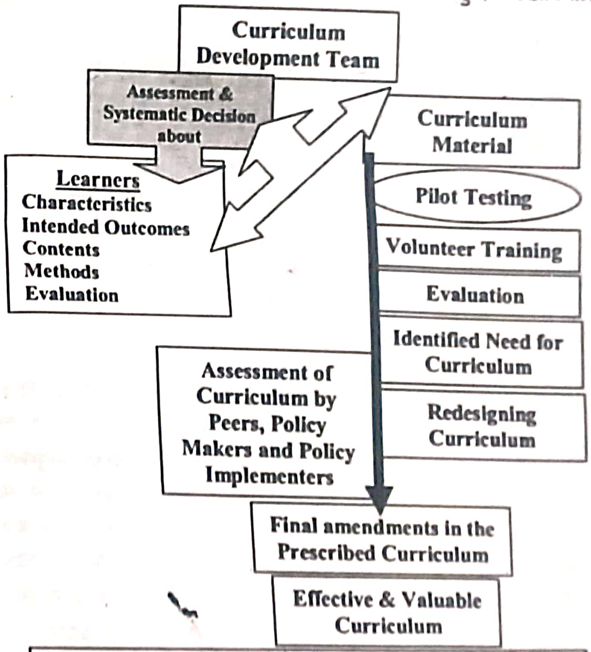

Figure: Steps a Typical Curriculum preparation Follows

सेटिंग्स में अनुभवात्मक शिक्षा के क्षेत्र में निम्न आवश्यक विचार, व्यापक रूप से, माने जाते हैं:

1. मुद्दे / समस्यायें / जरूरतें (यानी क्या शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में शामिल किया जाना है और क्या परिवर्तन की आवश्यकता है)।

2. लक्षण और शिक्षार्थियों की जरूरतें (अर्थात् लक्षित दर्शक)।
3. शिक्षार्थियों के लिए इच्छित परिवर्तन (अर्थात् परिणाम / लक्ष्य, जैसे शिक्षार्थी क्या करते हैं या प्राप्त करने में सक्षम हो जाएगा)।
4. महत्वपूर्ण और प्रासंगिक सामग्री (अर्थात् आवश्यकताओं के अनुसार क्या)।
5. इच्छित परिणाम पाने के तरीके (अर्थात् कैसे, शिक्षण विधियां, शिक्षण रणनीति)।
6. विधियों, सामग्री और इच्छित परिणामों (अर्थात् प्रभावी औज़ार, परिणाम, पर्यावरण) के लिए मूल्यांकन रणनीतियां।

ये विचार एक दूसरे से और पाठ्यक्रम विकास प्रक्रिया से संबंधित हैं। यह तब शुरू होते हैं जब कोई मुद्दा, चिंता का विषय, या समस्या को संबोधित करने की जरूरत होती है।

पाठ्यक्रम शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह किसी भी तरह का एक खाका है जो शिक्षक और शिक्षार्थी को वांछित लक्ष्यों तक पहुंचने के लिए मदद करता है। नतीजतन, अधिकारियों को इसे इस तरह से डिज़ाइन करना होता है कि यह शिक्षक का सही नेतृत्व कर सके और शिक्षार्थियों को सीखने के वांछित परिणामों को पूरा करने में मदद कर सके। पाठ्यक्रम के चार घटक हैं:

3. **पाठ्यक्रम का उद्देश्य, लक्ष्य और उद्देश्य**

Curriculum Aims, Goals and Objectives

उद्देश्य: प्राथमिक (ज्ञान को प्रदान करना और कौशल का विकास, रवैया, व्यक्तिगत विकास और जीने के लिए आवश्यक मूल्य और समाज को विकासशील और बदलने के लिए योगदान और आवश्यक मूल्यों, अनुभवों, समाज में बदलाव के लिए के बच्चे की जागरूकता और जवाबदेही बढ़ाने की सीख प्रदान करना; बढ़ावा देने और ज्ञान को पहचानने, पहचान और प्यार राष्ट्र और लोगों के लिए जैसे वे हैं, और काम के अनुभव जो काम की दुनिया के लिए अभिविन्यास विकसित करने और ईमानदार और लाभकारी काम करने के लिए तैयार शिक्षार्थी को बढ़ावा देने), माध्यमिक (प्रारंभिक शिक्षा के उद्देश्यों को बढ़ावा देने के लिए, और खोजने और विभिन्न अभिरुचि और छात्रों के हितों को बढ़ाने के लिए उन्हें उत्पादक प्रयास के लिए कौशल से लैस करने के लिए और उन्हें या तृतीयक स्कूली शिक्षा के लिए तैयार करने के लिए) और तृतीयक (सामान्य शिक्षा कार्यक्रम जो राष्ट्रीय पहचान, सांस्कृतिक चेतना, नैतिक और आध्यात्मिक अखंडता ताकत को बढ़ावा दें, व्यवसाय देश के लिए नेतृत्व प्रदान

का उन्हें विकसित करें, राष्ट्रीय विकास के लिए आवश्यक कौशल में देश की जनशक्ति बढ़ाना, और अनुसंधान के माध्यम से अग्रिम ज्ञान और लागू मानव जीवन की गुणवत्ता में सुधार और बदलते समाज के लिए प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया के लिए नए ज्ञान)।

लक्ष्य: स्कूल विजन (उदाहरण के लिए, एक मॉडल उच्च विद्यालय जहां छात्रों की अपनी पूरी क्षमता का एहसास करने के लिए ज्ञान, कौशल और चरित्र की शक्ति से लैस कर रहे हैं) और मिशन (उदाहरण के लिए, विश्व स्तर पर आजीवन प्रतिस्पर्धी शिक्षार्थियों का उत्पादन करने के लिए)।

उद्देश्य: शैक्षिक उद्देश्य

डोमेन:

क. संज्ञानात्मक (Cognitive) - ज्ञान, समझ, आवेदन, विश्लेषण, संश्लेषण, मूल्यांकन

ख. उत्तेजित (Affective) - प्राप्त जवाब, बातों का महत्व देना, संगठन, लक्षण

ग. स्यकोमोटर (psychomotor) - धारणा है, सेट, निर्देशित प्रतिक्रिया, तंत्र, जटिल प्रकट प्रतिक्रिया, अनुकूलन, व्युत्पत्ति

2. पाठ्यक्रम सामग्री या विषय वस्तु

मानव ज्ञान का कोष संचित खोजों और सदियों से आदमी के आविष्कार, दुनिया के आदमी के अन्वेषण के कारण के भंडार का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें स्कूल में सीखने वाली जानकारी भी शामिल है। यह ज्ञान के लिए एक और नाम (तथ्यों, अवधारणाओं, सामान्यीकरण, सिद्धांतों और सिद्धांतों का एक संग्रह) है।

ग. **विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम दृश्य:** मानव ज्ञान का कोष उसकी दुनिया के आदमी के अन्वेषण की वजह से, संचित खोजों और सदियों से आदमी के आविष्कार के भंडार का प्रतिनिधित्व करता है

घ. **शिक्षार्थी केंद्रित पाठ्यक्रम दृश्य:** व्यक्ति के ज्ञान को निजी और सामाजिक दुनिया से संबंधित करता है और कैसे वह वास्तविकता को परिभाषित करता है।

पाठ्यक्रम के लिए विषय के चयन में इस्तेमाल किया मानदंड:

7. **आत्मनिर्भरता** - कम शिक्षण प्रयास और शैक्षिक संसाधन, शिक्षार्थी के कम प्रयास, लेकिन और अधिक परिणाम और प्रभावी सीखने के परिणामों - सबसे किफायती तरीके से।

8. महत्व - पाठ्यक्रम के समग्र लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बुनियादी विचारों में योगदान, शिक्षण कौशल विकसित।

9. वैधता - शिक्षार्थी परिपक्वता, पूर्व अनुभव, शैक्षिक और सामाजिक मूल्य के आधार पर करने के लिए सार्थक।

10. उपयोगिता - या तो वर्तमान या भविष्य के लिए सामग्री की उपयोगिता।

11. सीखने की योग्यता Learnability - शिक्षार्थियों के अनुभव की सीमा के भीतर।

12. साध्यता - समय के अनुसार अनुमति, उपलब्ध संसाधनों, शिक्षक की विशेषज्ञता, शिक्षार्थी की प्रकृति के भीतर सीखा जा सकता है।

सीखने सम्बन्धी सामग्री के आयोजन में पालन करने के लिए सिद्धांत:

6. **संतुलन:** सामग्री पाठ्यक्रम काफी गहराई या अनुशासन और विशेष रूप से सीखने के लिए कोने-कोने में वितरित किया जाना चाहिए। इससे यह सुनिश्चित होगा कि स्तर या क्षेत्र में भीड़ कम या ज्यादा भीड़ नहीं होगी।

7. **जोड़बंदी:** विषय के प्रत्येक स्तर पर सुचारू विषय में अगले, स्पष्ट अंतराल या फालतू ओवरलैप से जुड़ा होना चाहिए।

8. **अनुक्रम:** यह विषय की तार्किक व्यवस्था है। ऐसा लगता है जैसे यह उच्च स्तर में लिया जाता है मजबूत बनाने और सामग्री के विस्तार को दर्शाता है।

9. **एकीकरण:** क्षैतिज कनेक्शन विषय क्षेत्रों में इसी तरह जरूरत के है, इसलिए सीखने की एक दूसरे के लिए उत्तेजित हो जाएगा।

10. **निरंतरता:** लर्निंग नए ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण या मूल्यों की एक सतत आवश्यकता है तो इन को दैनिक जीवन में इस्तेमाल किया जाएगा। यह लगातार पुनरावृति, समीक्षा और सीखने के सुदृढीकरण की जरूरत है।

4. **पाठ्यक्रम अनुभव** Curriculum Experience

निर्देशात्मक रणनीतियां और विधियाँ पाठ्यक्रम अनुभव, कोर और पाठ्यक्रम के दिल को कड़ी हैं। शिक्षण रणनीतियों और तरीकों के क्रम में लक्ष्यों और सामग्री के उपयोग एक परिणाम का उत्पादन करने के लिए होगा।

शिक्षण रणनीतियां शिक्षा के लिए लिखा पाठ्यक्रम परिवर्तित करती हैं। इनमें समय परीक्षण तरीकों, जांच दृष्टिकोण, रचनावादी और अन्य उभरते रणनीति और शिक्षण और सीखने में नए सिद्धांत के पूरक हैं।

शैक्षणिक गतिविधियां क्षेत्र यात्रा की तरह, प्रयोगों का आयोजन कम्प्यूटर प्रोग्राम और अन्य अनुभवात्मक अधिगम भी शिक्षण के प्रयोगों की सूची का हिस्सा बनेगी।

जो भी तरीके शिक्षक पाठ्यक्रम को लागू करने के लिए इस्तेमाल करता है, चयन और उपयोग के लिए मार्गदर्शन के लिए, ये उनमें से कुछ है

1. शिक्षण विधियाँ अंत को प्राप्त करने के साधन हैं।
2. कोई भी अकेली अच्छी शिक्षण पद्धति नहीं है।
3. शिक्षण विधियां शिक्षार्थी की संज्ञानात्मक, भावात्मक, psychomotor, सामाजिक और आध्यात्मिक व्यक्ति के डोमेन को विकसित करने की इच्छा को प्रोत्साहित करती हैं।
4. शिक्षण विधियों के चुनाव में, छात्रों के शैली सीखने पर विचार किया जाना चाहिए।
5. हर विधि को तीन क्षेत्रों में सीखने के परिणाम के विकास के लिए संतुलन करना चाहिए।
6. लचीलापन शिक्षण विधियों के उपयोग में एक विचार होना चाहिए।

4. **पाठ्यक्रम मूल्यांकन** Curriculum Evaluation

प्रभावी हो, सभी पाठ्यक्रम में मूल्यांकन का एक तत्व होना चाहिए। पाठ्यक्रम मूल्यांकन गुणवत्ता, प्रभावशीलता या मूल्य कार्यक्रम, इस प्रक्रिया के और पाठ्यक्रम के उत्पाद की औपचारिक दृढ़ संकल्प को दर्शाता है। मूल्यांकन के कई तरीके हो सकते हैं। सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला Stufflebeam के CIPP मॉडल है। CIPP मॉडल में प्रक्रिया सतत और पाठ्यक्रम प्रबंधकों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

CIPP मॉडल - एक सतत प्रक्रिया है - संदर्भ Context (पाठ्यक्रम के पर्यावरण), इनपुट Input (पाठ्यक्रम की सामग्री), प्रक्रिया Process (तरीके और लागू करना), उत्पाद Product (लक्ष्यों की उपलब्धि)।

मूल्यांकन किसी भी तरीके और सामग्री का उपयोग करेगा, एक कार्रवाई का सुझाव योजना पाठ्यक्रम मूल्यांकन की प्रक्रिया के लिए जरूरी है। ये कदम उठाए जा सकते हैं:

1. पाठ्यक्रम में से एक विशेष घटक पर ध्यान दें। यह विषय क्षेत्र, ग्रेड के स्तर पर, कोर्स या डिग्री कार्यक्रम होगा? मूल्यांकन के उद्देश्यों को निर्दिष्ट करें।

2. लीजिए या जानकारी इकट्ठा कीजिये। मूल्यांकन की वस्तु के संबंध में आवश्यक सूचना से डेटा बना है।

3. जानकारी को व्यवस्थित करें। यह कदम, कोडिंग के आयोजन, भंडारण और व्याख्या के लिए डेटा पुनः प्राप्त करने के लिए आवश्यक होगा।

4. जानकारी का विश्लेषण करें। विश्लेषण का एक उपयुक्त तरीका इस्तेमाल किया जाएगा।

5. सूचना रिपोर्ट करें। मूल्यांकन की रिपोर्ट को विशिष्ट दर्शकों को सूचित किया जाना चाहिए। यह गोलमेज चर्चा और बातचीत के माध्यम से हितधारकों के साथ सम्मेलनों में औपचारिक रूप से या अनौपचारिक रूप से किया जा सकता है।

6. निरंतर प्रतिक्रिया के लिए जानकारी रीसायकल, संशोधनों और समायोजन कर दिया जाए।

पाठ्यक्रम को डिजाइन करने के पैटर्न
PATTERNS OF CURRICULUM DESIGNING

जिस तरह से पाठ्यक्रम तैयार किया जाता है यह उस क्षेत्र, राज्य या देश में पाठ्यक्रम डिजाइन अनुशासन निर्धारित करने के बारे में बताता है।

पाठ्यक्रम को डिजाइन करने के केन्द्रीकृत पैटर्न

Centralized Pattern of Curriculum Designing

एक केंद्रीकृत पाठ्यक्रम डिजाइन पैटर्न वह है जिसमें विषय-वस्तु के बारे में एक केंद्रीय राष्ट्रीय कार्यालय द्वारा निर्णय लिया जाता है। पाठ्यक्रम को डिजाइन करने के लिए एक केंद्रीकृत पैटर्न के लक्षण नीचे दिए गए अनुसार हैं:

- विषय सामग्री पर फैसला केन्द्रित होता है। राष्ट्रीय विषय-वस्तु, राष्ट्रीय लक्ष्यों और दर्शन व मुझावित् सामान्य शिक्षण उद्देश्यों के अनुसार निर्धारित किये जाते हैं।
- **विषय सामग्री के मूल्यांकन के साधनों का विकास भी केन्द्रित होता है और इन उपकरणों को कब और कैसे लागू किया जायेगा, की जिम्मेदारी भी शिक्षा मंत्रालय या परीक्षा बोर्ड को सौंपी गई है।**
- **स्कूलों द्वारा पेशकश किये जा रहे विषयों का निर्धारण भी केन्द्रित होता है। स्कूल एक दी गई सूची में से अपने विषयों का चयन करते हैं।**

- एक ही विषय लेने वाले सभी शिक्षार्थियों का एक ही परीक्षा से और एक ही कौशल में मूल्यांकन किया जाता है। हालांकि, परीक्षण में किसी तरह से विकलांग छात्रों के लिए समायोजन तरीके भी होते हैं।
- प्रमाणन नियंत्रण भी केन्द्रित होता है। प्रमाण पत्र इंगित करता है कि छात्र ने क्या सीखा है और कैसे अच्छी तरह से एक छात्र द्वारा अन्य छात्रों की तुलना में एक ही पाठ्यक्रम में प्रदर्शन किया गया है या सीखा गया है।
- आम तौर पर, पाठ्य पुस्तकें भी शिक्षा मंत्रालय द्वारा अनुमोदित की जाती हैं और उसके बाद ही कोई स्कूल इन पुस्तकों का उपयोग करता है।
- आम तौर पर, विभिन्न स्तरों पर विभिन्न पाठ्यक्रम विकास टीमें होती हैं।
- एक निरीक्षणालय या मानक नियंत्रण प्रभाग इन सीखने और सिखाने की गतिविधियों पर नजर रखने का कार्य करता है।
- अंतिम पाठ्यक्रम दस्तावेज लिखे जाने और स्वीकृत होने में काफी लंबा समय लेता है।

यह देश पर निर्भर करता है, कि कौन लोग पाठ्यक्रम राष्ट्रीय पैनल पर हो सकते हैं:

- मुख्यालय और क्षेत्रों से विषय शिक्षा अधिकारी
- प्रत्येक क्षेत्र से विषय शिक्षक
- विशेष विषय एसोसिएशन से एक प्रतिनिधि
- शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों, कॉलेजों से लेक्चरर और स्कूल के शिक्षक
- विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधि
- तकनीकी कॉलेजों के प्रतिनिधि
- जांच बोर्ड (Examining Board) के प्रतिनिधि, अगर यह शिक्षा मंत्रालय नहीं है जो मानक परीक्षा नियंत्रण विकसित कर रहा है
- डिजाइन या आलोच्य विषय से संबंधित व्यावसायिक संगठनों के प्रतिनिधि
- उद्योग और वाणिज्य से सम्बंधित प्रतिनिधि
- शोधकर्ता
- डिजाइन या आलोच्य विषय से संबंधित मंत्रालय विभागों के प्रतिनिधि।

आदर्श पैनल में समाज के सभी क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व होना चाहिए। राष्ट्रीय केंद्र में कार्यरत विषय अधिकारियों का यह कर्तव्य है कि सभी गतिविधियों का संचालन व समन्वय करे। पैनल विषय-वस्तु और परिणाम उम्मीदों को अंतिम रूप

देता है। जबकि आदर्श स्थिति में क्या वर्णित किया जाता है, अंतिम दस्तावेज के मसौदा तैयार करने में क्या समस्यायें पेश आ सकती है। उदाहरण के लिए:

- क्यों बहुत कम लोग, सत्र में भाग लेते है
- नियमित रूप से पैनल बैठकें हमेशा आयोजित नहीं की जाती है,
- सदस्यों को कई बार उनकी भूमिकाओं के बारे में पता ही नहीं होता।

नतीजतन, राष्ट्रीय पाठ्यक्रम विकास इकाई और विषय शिक्षा अधिकारियों के जिम्मे ही सबसे अधिक काम आता है। केन्द्रीकृत पाठ्यक्रम को डिजाइन करने के लिए कुछ फायदे और नुकसान भी है।

पाठ्यक्रम डिजाइन के केन्द्रीकृत पैटर्न के लाभ:

पाठ्यक्रम डिजाइन के एक केंद्रीकृत पैटर्न के लाभ में से कुछ नीचे सूचीबद्ध है:

- यह राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आसान है, क्योंकि सभी स्कूलों में एक ही दस्तावेज का उपयोग होता है।
- शिक्षार्थियों का एक से दूसरे स्कूल से हस्तांतरण, बिना किसी परेशानी या नुकसान से, कर सकते हैं।
- विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में प्रवेश आवश्यकतानुसार निर्धारित व केन्द्रित किया जा सकता है और समता व एकरूपता सुनिश्चित की जा सकती है।
- शैक्षिक आवश्यकताओं के बारे में स्कूलों में संचार, आसान है, क्योंकि शिक्षा मंत्रालय इसमें सीधे शामिल होता है।
- अधिगम सामग्री का बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जा सकता है, ताकि यह दोनों उत्पादकों और उपभोक्ताओं के लिए कम खर्चीला हो सके।
- संस्थानों में अच्छे कर्मचारी नियुक्त किये जा सकते है और बड़े पैमाने पर भी क्योंकि विशेषज्ञता और संसाधनों का एक राष्ट्रीय पूल संभव होता है।

पाठ्यक्रम डिजाइन के केन्द्रीकृत पैटर्न के नुकसान:

पाठ्यक्रम का विकास केन्द्रित के नुकसान से कुछ नीचे सूचीबद्ध हैं:

- यह प्रक्रिया अंतिम दस्तावेज के उत्पादन तक, एक लंबा समय लेती है।
- डिजाइन देश के भीतर कुछ समूहों की जरूरतों के प्रति असंवेदनशील हो सकता है।
- पाठ्यक्रम डिजाइन में समन्वय और संचार की समस्यायें हो सकती हैं।

- समुदाय के विभिन्न सदस्य सीमित भागीदारी हो सकते है, इसलिए कार्यान्वयन चरण के दौरान थोड़ी प्रतिबद्धता, कम परिणाम प्रस्तुत कर सकती है।
- शिक्षक और अन्य समुदाय के सदस्यों की ओर से रचनात्मकता और पहल अवरोधक हो सकती है।
- आम तौर पर, केंद्रीकृत पैटर्न सामग्री, मुख्य रूप से ज्ञान पर, दृष्टिकोण और कौशल के विकास की कीमत पर जोर देती है। प्रमाण पत्र के लिए एक संघर्ष, विकास और उत्पादक कौशल के प्रदर्शन को कम सराहनीय कर देता है।

पाठ्यक्रम डिजाइन का विकेन्द्रीकृत पैटर्न

Decentralized Pattern of Curriculum Design

पाठ्यक्रम डिजाइन का विकेन्द्रीकृत पैटर्न तब होता है जब स्थानीय अधिकारियों या अलग-अलग राज्यों द्वारा अपने स्वयं के पाठ्यक्रम का मसौदा तैयार किया जाता है। डिजाइनिंग के ये प्रकार विकसित देशों में आम है। हालांकि, बड़ी आबादी और राज्यों वाले कुछ विकासशील देश भी पाठ्यक्रम डिजाइन की विकेन्द्रीकृत पैटर्न का उपयोग कर रहे हैं। पाठ्यक्रम डिजाइन के इस पैटर्न कि निम्नलिखित विशेषताएं हैं:

- स्थानीय समुदाय उनकी स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप इसमें परिवर्तन कर सकते हैं।
- शिक्षक माता-पिता के साथ काम कर के उपयुक्त सामग्री का निर्धारण कर सकते हैं। इसमें सीखने के अनुभव, जो उपलब्ध है, पर आधारित हैं।
- स्कूलों में विषय एक ही हो सकता है, लेकिन सामग्री जिले, स्कूल, और राज्य में अलग अलग हो सकती है।
- प्रत्येक स्कूल, राज्य या जिले का अपना सिलेबस होता है जो स्थानीय स्तर पर ही तैयार किया जाता है।
- आम तौर पर, पाठ्यपुस्तकें केन्द्र द्वारा अनुमोदित नहीं होती हैं।
- प्रत्येक स्कूल, राज्य या जिले के लिए एक अलग ही मूल्यांकन का रूप होता है।
- बहुत कम लोग पाठ्यक्रम को डिजाइन करने में शामिल होते हैं।

विकेन्द्रीकृत पैटर्न के लाभ: पाठ्यक्रम को डिजाइन करने के विकेन्द्रीकृत पैटर्न के कुछ निम्नलिखित फायदे हो सकते हैं:

- पाठ्यक्रम स्थानीय जरूरतों की पूर्ती करता है।

... समुदाय के लोग सीधे शामिल हो सकते हैं और निष्पादन/कार्यान्वयन के लिए प्रतिबद्ध होते हैं।

- ये प्रणाली शिक्षक की ओर से रचनात्मकता और पहल को प्रोत्साहित करती है।
- एक केंद्रीकृत पैटर्न के मुकाबले यह पाठ्यक्रम कम समय में ही तैयार किया जा सकता है।
- छात्रों को वो जानने का मौका मिलता है जो स्थानीय समुदाय के लिए प्रासंगिक है।

विकेन्द्रीकृत पैटर्न के नुकसान: नुकसान से कुछ निम्नलिखित हैं:

- यहां कोई गारंटी नहीं है कि राष्ट्रीय लक्ष्यों को हासिल किया जा सकता है।
- शिक्षार्थियों को आसानी से एक से दूसरे स्कूल में स्थानांतरित नहीं कर सकते जब उनके परिवार कहीं दूसरी जगह विस्थापित होते हैं।
- यहां आम तौर पर शिक्षण सामग्री तक पहुँचना एक समस्या हो सकती है और अगर वो उपलब्ध नहीं हैं, तो उसका उत्पादन करना काफी महंगा हो सकता है।
- यहां स्थानीय समुदाय में इस तरह के पाठ्यक्रम को विकसित करने के लिए पर्याप्त विशेषज्ञता नहीं भी हो सकती है।

पाठ्यक्रम परिवर्तन: अर्थ और जरूरत

CURRICULUM CHANGE: MEANING AND NEED

पाठ्यक्रम शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक हवाई पट्टी की तरह है। यह एक शैक्षिक कार्यक्रम के एक खाके के रूप में माना जाता है। किसी भी मौजूदा पाठ्यक्रम में सुधार करने के लिए पाठ्यक्रम परिवर्तन के मजबूत आधार होने चाहिए। पाठ्यक्रम परिवर्तन की प्रक्रिया मौजूदा पाठ्यक्रम को भविष्य-जरूरतों के हिसाब बदलने का आकलन करती है, एक दृढ संकल्प के साथ कि क्या बदला जाना चाहिए और समस्याओं का संभव समाधान क्या हो और साधन जिसके द्वारा आवश्यक परिवर्तन हासिल किया जा सकता है।

पाठ्यक्रम संशोधन (Curriculum revision) का मतलब है पाठ्यक्रम को किसी तरह से अलग रूप देना, इसे एक नई स्थिति या दिशा के लिए तैयार करना। इसका अक्सर मतलब होता है, इसके लक्ष्य और उद्देश्य के माध्यम से दर्शन में

बदलाव, शामिल विषय-वस्तु की समीक्षा, उसके तरीकों में संशोधन और इसकी मूल्यांकन प्रक्रियाओं की पुनः सोच।

पाठ्यक्रम नवाचार (Curriculum innovation) को जानबूझकर मानवीय बातचीत, हाथ की गतिविधियों और छात्रों की राय द्वारा एक सीखने के माहौल में सुधार के लिए छात्रों को विषय-वस्तु पेश करने की एक विधि के रूप में परिभाषित किया गया है। पाठ्यक्रम में परिवर्तन नवाचार द्वारा होता है, लेकिन सामान्य रूप में, पाठ्यक्रम के संदर्भ को बदलने के लिए एक नई शैक्षिक विधि, और जरूरी नहीं, मानव बातचीत के साथ एक विधि। जब पाठ्यक्रम नवाचार या परिवर्तन कक्षा में किया जाता है, तो यह छात्रों के सामाजिक कौशल को बढा सकता है और ऐतिहासिक, तकनीकी, संगठनात्मक या राजनीतिक सबक सिखाने के लिए अद्वितीय तरीकों पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता हैं। एक अभिनव सबक से छात्रों को प्रयोगशाला के प्रयोग और आउटडोर पुरातत्व कारनामों पर हाथ-ऑनलाइन उपकरण, मल्टीमीडिया सॉफ्टवेयर अनुप्रयोग उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। एक अभिनव पाठ्यक्रम छात्रों पर निर्भर है, कि एक विशेषज्ञ, सीखने का निर्देशन एक प्रशिक्षक या एक संरक्षक के रूप में करता है। परियोजनाओं में व्यक्तिगत स्वयं अध्ययन कार्य या समूह की गतिविधियां शामिल हो सकते हैं जोकि समाचार पत्र, वीडियो, प्रस्तुति या नाटकीय उत्पादन के रूप में एक अंतिम उत्पाद का उत्पादन करते हैं। पाठ्यक्रम नवाचार शिक्षकों को प्रोत्साहित करती है, आदर्श का विरोध करते और कुछ हटकर सोचने के ताकि व्यक्तिगत शैली के साथ सभी प्रकार के शिक्षार्थियों तक पहुंच सके, बजाय सबक पर ध्यान केंद्रित करने के लिए जो एक कक्षा में बस कुछ ही औसत छात्रों के लिए प्रभावी हो। पाठ्यक्रम परिवर्तन, परिवर्तन के कई आयामों पर वर्गीकृत किया जा सकता है:

आयाम	रेंज
मूल्यांकन	रैपिड या धीमी गति से
स्केल	बड़े या छोटे
उपाधि	मौलिक या सतही
निरंतरता	क्रांतिकारी या विकासवादी
दिशा	रेखीय या चक्रीय

हमारे पाठ्यक्रम पर बहुत ज्यादा दबाव है, और हम देख रहे हैं कि हमारे पाठ्यक्रम वास्तव में बदल रहे हैं। बदलव स्पष्ट है, योग्यतायों में वृद्धि की विशेषज्ञता के माध्यम से, और विशिष्ट विषयों के माध्यम से। पाठ्यक्रम विकास है, विषय-

आधारित, वृद्धिशील, छात्र मांग और कर्मचारियों की वरीयता से प्रभावित। पाठ्यक्रम में बड़े बदलाव शैक्षणिक फैशन, वित्तीय चिंताओं और शैक्षणिक योग्यता के आधार पर ही छात्र की मांग के कारण, संचालित हो रहे हैं। पाठ्यक्रम परिवर्तन की निम्नलिखित व्यापक श्रेणियां हैं:

1. एक नया डिग्री प्रोग्राम या स्नातक स्तर पर विशेष वर्ग को शुरू करना।
2. स्नातकोत्तर स्तर पर एक नये (पाठ्यक्रम) डिग्री कार्यक्रम की शुरूआत।
3. एक नये विषय की शुरूआत, या एक मौजूदा विषय का विलोपन।
4. स्नातक छात्रों को प्रथम भाषा के एक बदलाव के रूप में, परिवर्तन के लिए या प्रथम वर्ष या अन्य मुख्य विषय में परिवर्तन।
5. तीसरे वर्ष विषय में इस्तेमाल भाषा के चुनाव में, एक परिवर्तन के रूप में, या एक वैकल्पिक विषय में परिवर्तन।

पाठ्यक्रम को बदलने की जरूरत

Need to Change the Curriculum

बच्चे आज अधिक सजातीय, बेहद सक्षम और शामिल अपने माता पिता के साथ प्रेरित हैं; समान रूप से वर्गीकृत और पूर्ण रूप से संसाधित हैं; इत्यादि। इसलिए यह समझा जा सकता है, शिक्षण संसाधन और विषय क्षेत्र की विशेषज्ञता और एक शीर्ष स्तरीय विशेषज्ञ से एक वंशावली की क्यों प्रथानुसार शिक्षकों से उम्मीद नहीं की गई है। इसी के साथ विशेष रूप से स्वतंत्र स्कूल, जहां शिक्षक लाइसेंस, निर्धारित पाठ्यक्रम, सबक योजना, संग जुड़ी गुंजाइश और शिक्षा का अनुक्रम, और अन्य ऐसी नौकरशाही रचित अवरोध न हों, में माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों के बीच अकादमिक स्वतंत्रता, की अपील की गई है। समय और बच्चे बदल रहे हैं। छात्र संस्थानों / स्कूलों में, जानने कम, और अधिक (और अधिक जटिल) व्यक्तिगत चुनौतियों (सीखने के मतभेद जैसे ध्यान की कमी और सक्रियता विकार, डिस्लेक्सिया, और आटिज्म), और हमारे देश के इतिहास में किसी भी पिछले की तुलना में कम परिवारिक समर्थन के साथ, आते हैं। एक ही समय में, हम पहले से कहीं अधिक शिक्षण और सीखने के बारे में जानते हैं। नतीजतन, संस्थानों / स्कूलों में शैक्षणिक स्वतंत्रता के कारण नहीं सक्रिय रूप से शिक्षण में सुधार के लिए रणनीति को आगे बढ़ाने के लिए मांग उठ रही है।

1. हितों या शिक्षार्थियों की क्षमता के अनुसार पाठ्यक्रम का पुनर्गठन करने की जरूरत है।
2. अनावश्यक इकाइयों, शिक्षण विधियों और सामग्री को खत्म करने के लिए।

3. शिक्षण और सामग्री, नए ज्ञान और प्रथाओं के लिए नवीनतम और अद्यतन तरीकों के साथ।
4. शिक्षा के समय को बढ़ाने, घटाने या हटाने के लिए।
5. छात्र के सिद्धांत पाठ्यक्रम और सीखने की प्रथाओं के बीच सहसंबंध बनाने बारे।
6. उद्देश्यों पर आधारित सीखने के अनुभव का चयन करने।
7. छात्रों को खुद जिम्मेदारियों को संभालने में या विकल्प बनाने में कोई अनुभव प्राप्त करने; सब कुछ में शिक्षक या व्यवस्थापक द्वारा उनके लिए फैसला किया जाता है।

औपचारिक रूप शिक्षण में सुधार और पाठयक्रम बदलने के लिए संकाय प्रतिरोध इसलिए नहीं है कि शिक्षकों में इच्छा या क्षमता में सुधार करने की कमी है, बल्कि इसलिए कि, सामूहिक रूप में, शिक्षकों को अपने स्वायत्तता मूल्य, उनके बढ़ती काम का बोझ और समय की कमी के बारे में चिंता है, और स्वभाविक रूप में, जोखिम और बदलव के खिलाफ तो सभी जाते हैं। लेकिन पाठ्यक्रम परिवर्तन आवश्यक है।

निम्नलिखित बिंदु इसकी जरूरत पर बल देते हैं:

1. पिछले कुछ वर्षों में, शोध के आधार पर, कक्षा-सिद्ध सबसे अच्छा अभ्यास शिक्षण रणनीतियों, सीखने और शिक्षार्थियों के बारे में अग्रणी खोजों, पर विकास में बहुत वृद्धि हुई है। शिक्षण और सीखने के मॉडल स्टैंड-एंड-डिलीवर, जिसमें शिक्षक केंद्र में है, आज के युवाओं के लिए तेजी से असंगत होता जा रहा है।
2. छात्र, जिन्होंने समान रूप से स्वतंत्र और पब्लिक स्कूलों से हैं, पहले से कहीं अधिक सीखने की चुनौतियां संग आये हैं, और इस रुझान के पलटने का कोई संकेत नहीं दिखता है। बच्चों की बदलती जरूरतों की मांग है कि शिक्षक जानकारी के पैरोकार से परे अपनी भूमिका का विस्तार करें, सुविधादायक (facilitators), सह-जांचकर्ता, गाइड और समन्वयक बनें। स्वतंत्र स्कूल के शिक्षक, शिक्षण और सीखने पर उभरते अनुसंधान के साथ विकसित हों, और छात्रों की बदलती जरूरतों के लिए उनको शिल्प अनुकूल करने की जरूरत है। अकादमिक स्वतंत्रता अपनी जगह है, निश्चित रूप से है; लेकिन, सच में, हम बहुत ज्यादा जानते हैं कि क्या हमारे छात्रों के लिए संभव है, उसकी अनदेखी करने के लिए।

3. परिवर्तन बहुत तेजी से जगह ले रहे हैं, सूचना के वैश्विक यातायात के लिए एक औद्योगिक अर्थव्यवस्था तात्कालिक आधार पर किये जाने की जरूरत है। आज के स्कूल, हमारे विस्फोटक ज्ञान अर्थव्यवस्था या प्रक्रिया पर परिणामों के लिए, बच्चों को, उनकी मांग के अनुसार तैयार करने के लिए तैयार ही नहीं हैं; जानकारी (पाठ्यक्रम) के असतत, कट निकाय, अन्य विषय क्षेत्रों से अलगाव में प्रस्तुत वितरण शिक्षकों के पारंपरिक मॉडल, हमारी दुनिया के लिए बच्चों को तैयार करने के लिए एक मार्ग के रूप में, तेजी से अप्रचलित हो रहे है। लेकिन शिक्षकों के लिए, ये स्थानांतरण गतिशीलता पहचान, अनुदेशात्मक परिवर्तन के माध्यम से उन्हें संबोधित करना, और फिर सार्थक, स्थायी परिवर्तन को लागू करना, एक चुनौतीपूर्ण काम है।

अच्छे के लिए, नव शैक्षिक जानकार प्रणाली, लंबे समय से व्यापक प्रशिक्षण, प्रमाणीकरण और शिक्षकों के व्यावसायिक विकास की मांग कर रही है। नई शिक्षा प्रणाली को, चौंका देने वाले, उपहारित, सीखने में अंतर वाले, दूसरी भाषा, विशेष शिक्षा, व्यवहारिक अलग, उच्च-स्तरीय प्रेरित, और ख़ाली बच्चे, जो सभी नियमित रूप से एक ही (अक्सर बड़े) कक्षा समूह के सदस्यों के रूप में इकट्ठा होते हैं, एक शिक्षक के लिए अलग-अलग, असंख्य जटिलतायें और चुनौती देते हैं, ध्यान केन्द्रित करना है। ये शिक्षक, विविध शिक्षण शैली और असमान जरूरत, और प्रभावी शिक्षण पद्धतियां और शिक्षण और सीखने पर वर्तमान शोध में चल रहे व्यावसायिक विकास प्रदान प्रशिक्षण से निपटने के लिए पेशेवर तैयारी, आधुनिक स्कूलों में जीवन का एक तरीका बन गए हैं। चार बुनियादी वजहों से पाठ्यक्रम अभिव्यक्ति, जो चल रहे एक अलग ग्रेड के स्तर और विषयों के शिक्षकों के बीच, समीक्षित है कि क्या पढ़ाया जाता है और कैसे मूल्यांकन किया है, कब, और क्यों, प्रभावी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के लिए एक महत्वपूर्ण अभ्यास हैं:

1. एक सहज और प्रकाशित गुंजाइश और शिक्षा का अनुक्रम, ग्रेड के स्तर के बीच या विभाग पाठ्यक्रम जो दे सकता है, या अतिरिक्तता (redundancies) के बिना विकसित करने के लिए, शिक्षकों को क्या सिखाते हैं और कैसे आकलन करते हैं और क्या छात्र, बालवाड़ी से प्रारंभ कर सीखने की उम्मीद कर रहे हैं, का प्रतिनिधित्व करता है;

2. स्कूल के पाठ्यक्रम और शिक्षण रणनीतियों, प्राथमिकताओं, और उनके सहयोगियों के साथ या बीच में, प्रतिभा, जागरूकता बढ़ाने के लिए, जैसे वे समय के साथ उभरते हैं;
3. शिक्षण के विस्तार और अनुक्रम का लिखित प्रमाण जो नये शिक्षकों को सीखने में मदद करेगा जब वे स्कूल में आने के लिए, उनके शिक्षण कार्य के लिए तैयार होंगे, और जो भावी छात्रों, मान्यता टीमों, और दूसरों के लिए स्कूल के शिक्षण कार्यक्रम समझाने, में मददगार होगा;
4. प्रत्येक वर्ष हम क्या सिखाते हैं, क्यों सिखाते हैं, कैसे उसका आकलन करते हैं, और कैसे हम चीजों को अलग कर हमारे छात्रों को बेहतर शिक्षण प्रदान कर हमारी स्वयं की प्रतिभा को भुनाने की कोशिश करते हैं, के बारे में हर साल चल रही चर्चा के लिए आधार प्रदान करने के लिए।

शिक्षण और सीखने पर अनुसंधान ने, पिछले कुछ वर्षों में हमें काफी उन्नत किया है, शायद पिछले अर्धशतक की तुलना में अधिक, और परिणामस्वरूप खोज ने, शिक्षा की सर्वोत्तम प्रथायें दी, जिनमें से ज्यादातर ने शिक्षक प्रमाणन कार्यक्रम में शिक्षकों और राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन में योगदान दिया। बहरहाल, जब तक वयोवृद्ध स्कूल शिक्षक सक्रिय रूप से इस पेशे में नवीन नवाचार को आगे न बढ़ायें, सभी शोध के आधार पर सबसे अच्छी अभ्यास विधियों से अनजान हो सकते है, जोकि राष्ट्रव्यापी कक्षाओं में शिक्षण और सीख बदलने की कोशिश कर रहे हैं। शिक्षण और सीखने में जिन्होंने कक्षा में उनके मूल्य साबित किये है, में कई बुधिमतायें (intelligences), विभेदित शिक्षा, प्रारंभिक और पाश्य आकलन डिजाइन, और सीखने का अवसर, संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान, जनसांख्यिकी और सीख, जांच विज्ञान के तरीके, आदि शामिल हैं। यह सब पूरे काम का एक अंश है और बेहतर रूप में हमारे स्कूलों में बच्चों और परिवारों की सेवा में शिक्षकों की सहायता के लिए चल रहा है, और यह मन्ना भी जरूरी है कि कई स्वतंत्र शिक्षक पहले से ही अपने काम में अद्यतन सर्वोत्तम प्रथाओं पर काम कर रहे हैं, और कई स्कूल वास्तव में शिक्षण बदलाव के लिए प्रेरित कर महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। फिर भी, कई ऐसा नहीं कर रहे हैं।

बदलाव के प्रकार
TYPES OF CHANGE

बदलव दो प्रकार में वर्गीकृत किया जा सकता है। ये प्रकार नीचे वर्णित हैं:

इन परिवर्तनों को जैसे नए कक्षायें, उपकरण, किताबें और खेलने का मैदान के रूप में, सुविधाओं के लिए परिवर्धन कर सकते हैं।

- सॉफ्टवेयर प्रकार Software Types

ये पाठ्यक्रम की सामग्री और विस्तार को प्रभावित करते हैं। ये पाठ्यक्रम शुरू करने वाले, डिजाइनरों और डेवलपर्स द्वारा सिफारिश वितरण के तरीकों से संबंधित हो सकता है।

बदलाव के रूप
FORMS OF CHANGE

बदलाव के रूपों में हो सकते हैं:

प्रतिस्थापन
Substitution

इस परिवर्तन में, एक तत्व जो उपयोग में पहले से है की जगह दूसरा ले लेता है। उदाहरण नई पाठ्य पुस्तकें, नए उपकरण या शिक्षक और प्रशासक।

परिवर्तन
Alteration

इसमें पूरे पाठ्यक्रम, विषय-पाठ्यक्रम या विषय-अध्ययन के एक पूरी प्रतिस्थापन के बजाय मौजूदा ढांचे में बदलाव शामिल है।

सयोंजन
Addition

यह तत्वों या पैटर्न को बदले बिना एक नये घटक की शुरूआत है। नए तत्वों को गंभीरता से निर्धारित पाठ्यक्रम की मुख्य संरचना और सामग्री के बिना हटाये मौजूदा कार्यक्रम में ही जोड़ देते हैं। जैसे दृश्य-श्रव्य एड्स, कार्यशालायें और उपकरण।

पुनर्गठन
Restructuring

इस में वांछित परिवर्तन को लागू करने में पाठ्यक्रम की पुनर्व्यवस्था शामिल है। इसमें स्कूलों या संस्थानों के एक समूह के बीच संसाधनों के बंटवारे को भी शामिल कर सकते हैं।

पाठ्यक्रम परिवर्तन के लिए रणनीतियाँ
STRATEGIES FOR CURRICULUM CHANGE

परिवर्तन और नवाचार के सफल होने के लिए, पाठ्यक्रम को लागू करने की रणनीति पर ध्यान से विचार किया जाना चाहिए। नवाचार की एक रणनीति की योजना, प्रक्रियाओं और तकनीक परिवर्तन के लिए खोज को दर्शाता है।

सहभागी समस्या को सुलझाना Participative Problem-Solving

इस रणनीति उपयोगकर्ताओं, उनकी जरूरतों और कैसे वे इन जरूरतों को पूरा करते हैं, पर केंद्रित है। सिस्टम पहचानता है और अपनी जरूरतों के निदान, अपने स्वयं के समाधान ढूंढता है, सँभालने की कोशिश करता है और समाधान का मूल्यांकन करता है और समाधान को लागू करता है, अगर यह संतोषजनक है। यह स्थानीय पहल पर होता है।

नियोजित लिंकेज Planned Linkage

इस मॉडल में, मध्यवर्ती एजेंसियां जैसे स्कूल, नवाचार के उपयोगकर्ताओं को एक साथ लाने के लिए कोशिश करते हैं।

बलपूर्वक रणनीतियाँ Coercive Strategies

ये रणनीतियां शक्ति व बलपूर्वक संचालित होती हैं उन लोगों द्वारा जो सता में होते हैं, कानून, निर्देशिका, परिपत्र आदि। शिक्षा के मंत्रालय भी आमतौर पर इन रणनीतियों का उपयोग करते हैं।

खुले इनपुट रणनीतियाँ Open Input Strategies

ये खुला, लचीला, व्यावहारिक दृष्टिकोण है कि बाहरी विचारों और संसाधनों का उपयोग किया जाये।

योजना और क्रियान्वित बदलाव
PLANNING AND EXECUTING CHANGE

एक बदलाव के लिए पाठ्यक्रम में जो लागू किया जाना है, एक प्रक्रिया को पालन करना पड़ेगा। इस प्रक्रिया के चार प्रमुख कारक निम्नलिखित है।

परिवर्तन एजेंट The change agent

एजेंटों में शिक्षक, स्कूल प्रमुख, स्थानीय अधिकारी और शिक्षा मंत्रालय शामिल हैं। सामान्यतः एजेंट नवाचार या पाठ्यक्रम परिवर्तन शुरू करते हैं।

नवान्मेष या नवाचार The innovation

इस क्रियान्वयन में परिवर्तन खुद शामिल है; कि इसका प्रयोग करें या यह प्रयोग के लिए है।

उपयोगकर्ता प्रणाली The user system

इस व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह है, जिस पर नवाचार निर्देशित किया जाता है।

पहर या समय Time

अभिनव एक सामाजिक प्रक्रिया है, जो समय के साथ जगह ले लेता है।

हमेशा याद रखें कि ये कारक परिवर्तन सम्बन्धी हैं और नवाचार की प्रक्रिया के दौरान एक दूसरे से बदलते रहते हैं। यह भी ध्यान दें कि पाठ्यक्रम परिवर्तन में एजेंट प्रक्रिया, योजना और रणनीति शामिल होती है, और अक्सर नवाचार के उपयोगकर्ता के लिए महत्वपूर्ण है। नवाचार और परिवर्तन आम तौर पर कई तार्किक कदम का पालन करते हैं:

1. एक समस्या को पहचाने, एक असंतोष या आवश्यकता पर ध्यान देने की जरूरत है।
2. पहचान की समस्या या जरूरत के लिए संभव समाधान उत्पन्न कीजिये।
3. एक विशेष समाधान या नवीनता का चयन करें जिसकी सबसे उपयुक्त के रूप में पहचान की गई है।
4. एक परीक्षण का संचालन करें।
5. प्रस्तावित समाधान का मूल्यांकन करें।
6. मूल्यांकन की समीक्षा करें।
7. नवाचार की पहचान समस्या का हल है, तो एक व्यापक पैमाने पर इसे लागू किया जाये।
8. अपनाइये और नवाचार को संस्थागत रूप से या किसी अन्य समाधान के लिए लागू कीजिये।

पाठ्यक्रम परिवर्तन को प्रभावित करने वाले कारक
FACTORS AFFECTING CURRICULUM CHANGE

सोचिये क्या जरूरतें है, कैसे उन्हें संबोधित करें और कैसे स्थापित पाठ्यक्रम को संशोधित करें, सभी अक्सर कई पाठ्यक्रम डेवलपर्स और प्रशासकों की तरफ ही देखते रहते है। नवपर्वतक शैक्षिक परिवर्तन की जटिलता को नजरअंदाज

करते है और उस परिवर्तन के कई कारक होते है जोकि सम्बंधित होते है और प्रभावित् करते है कि क्या एक नवाचार को सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया जाता है। यह समझा जाना चाहिए कि परिवर्तन एक रेखीय प्रक्रिया है या सिर्फ घटनाओं के दृश्य है, बल्कि वास्तव में अलग-अलग चरणों में अभिनय करते विभिन्न कारक हैं, ताकि जो कुछ भी एक चरण में होता है का प्रभाव और बदल किसी अन्य रूप में भी हो। पाठ्यक्रम विकास कई कारकों से प्रभावित होता है। कई कारक दोनों संगठित शैक्षिक सेटिंग्स और निगम शिक्षा केंद्रों में 21वीं सदी के शिक्षार्थियों की जरूरतों को पूरा करने में सभी पाठ्यक्रम विकास को प्रभावित करते हैं। पाठ्यक्रम विकास प्रभावित करने वाले कारकोण में शामिल हैं सरकारी नियम, जो अन्य कारकों को प्रक्रिया में शामिल करते हैं। मान्य पाठ्यक्रम विकास के लिए लक्षित समुदाय की सामाजिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक विविधता के बारे में जागरूकता की आवश्यकता है।

शिक्षकों के मामले में पाठ्यक्रम परिवर्तन

Curriculum change in terms of Teachers

शिक्षक को, नए पाठ्यक्रम के सफल क्रियान्वयन के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है, क्योंकि ये कक्षा वास्तविकताओं में नवाचारों द्वारा साधन के रूप में इस्तेमाल होते हैं। शिक्षकों से नए विचारों को अपनाने और उन्हें अपने शिक्षण में लागू किये जाने की संभावना की जाती है अर्थात् पाठ्यक्रम में परिवर्तन शिक्षकों के व्यवहार में परिवर्तन से ही संभव है।

- **शिक्षकों में व्यवहारिक परिवर्तन को प्रभावित करते कारक:** योजना व्यवहार की परिकल्पना, पारंपरिक मानदंडों के प्रभाव (स्वीकार विश्वासों और प्रथाओं), साथ ही व्यक्ति के विश्वास और व्यवहार, उनके इरादे बदलने पर जोर देती है। उनके इरादे, उनके व्यवहार को प्रभावित करते हैं। एक और पहलू है जो शिक्षकों के इरादे बदलने को प्रभावित कर सकता है: उनका व्यवहार नियंत्रण। कथित व्यवहार नियंत्रण का किस हद तक लोगों के साथ संबंध है कि ये सफलतापूर्वक कुछ व्यवहार प्रदर्शन कर सकते हैं। आत्म प्रभावकारिता शिक्षकों को अपने दक्षताओं का आकलन करने के लिए संदर्भित करता है। शिक्षक प्रभावकारिता उनकी क्षमताओं, इच्छा, प्रतिबद्धता और नवाचारों को लागू करने की प्रेरणा के साथ जुड़ी हुई है। शिक्षक आत्म प्रभावकारिता का एक नवाचार लागू करने के बारे में, जो शिक्षकों से परिवर्तन की उम्मीद करती है, महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है क्योंकि शिक्षकों की, इस तरह के पाठ्यक्रम को कवर करने और परीक्षाओं

के लिए तैयारी के रूप में स्कूल द्वारा लगाए गए बाधाओं विषय में, अलग मान्यतायें होंगी। यह पाठ्यक्रम कवर करने और समझने के लिए शिक्षण की आवश्यकता के बीच एक तनाव पैदा करता है।

- **नवाचार के कथित मूल्य** (Perceived value of the innovation): कथित मूल्य कैसे शिक्षक कार्यक्रम को लागू करने के लिए लिए जा रहे हैं, विभिन्न घटकों के अनुभव को संदर्भित करता है। अगर लक्ष्य और कार्यक्रम के मूल्य, शिक्षक के अनुसार ण हों तो, नवाचार के लागू होने की संभावना अल्पज्ञ या न कार्यान्वित होने की अधिक होती हैं। दूसरी ओर, यदि सुझाव मूल्य, शिक्षकों के विश्वासों के अनुकूल पाया जाता है तो उसके ओर अधिक कार्यान्वित होने की संभावना ज्यादा होती है।
- **अपर्याप्त योग्य शिक्षक और प्रशिक्षण का स्तर**: वहाँ अन्य कारक हैं जो प्रभावित कर रहे हैं कि शिक्षक बदल रहे हैं और कितनी तेजी से बदल रहे हैं, जैसेकि शिक्षकों का सामग्री ज्ञान और प्रशिक्षण। अच्छी तरह से प्रशिक्षित शिक्षक, उनके विज्ञान पाठ्यक्रम के जटिल सर्पिल संरचना को समझने में सक्षम थे, जबकि कम-प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा विषय को एक भ्रामक पुनरावृत्ति जैसा पाया गया था। शिक्षकों के प्रशिक्षण, सफल कार्यान्वयन के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है ताकि शिक्षक समझ सकें कि क्या परिवर्तन हो रहे हैं और कैसे वे उन्हें अमल में ला सकते हैं। शिक्षक सफलतापूर्वक आवश्यक परिवर्तन लागू कर सकते हैं अगर उन्हें उचित प्रशिक्षण, आवश्यक ज्ञान और कौशल विकास प्रदान करवा दिया जाता है।
- **शिक्षकों के लिए उचित सहायता सामग्री की कमी**: शिक्षक सहायता सामग्री एक कम्पास के रूप में कार्य करती हैं कि कैसे पाठ्यक्रम को शिक्षक लागू कर सकते है। शिक्षक नवाचारों के निहितार्थ स्पष्ट पाठ्यक्रम सामग्री क्रियान्वयन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं और वे इसे लागू करने में मदद कर सकते है। कार्यान्वयन के प्रारंभिक दौर में यह बहुत महत्वपूर्ण है। पाठ्यक्रम को लागू करने के बारे में दिया गया एक स्पष्ट दिशा निर्देश, शीघ्र कार्यान्वयन की चिंताओं को कम करने में शिक्षकों की मदद करता है।

भौतिक संसाधनों के रूप में पाठ्यक्रम परिवर्तन

Curriculum change in terms of Physical Resources

- **शिक्षार्थियों के लिए सहायता सामग्री का अभाव**: पाठ्यपुस्तकें सबक या पाठ में छात्र की भागीदारी को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, और विषयों में उपलब्धि पर सबसे अधिक असर होता है, क्योंकि वे शिक्षार्थियों के लिए आधिकारिक जानकारी का सबसे सुलभ व मुख्य स्रोत हैं। उपयुक्त संसाधनों, मुख्य रूप से पाठ्य पुस्तकों को कमी, की एक कार्यान्वयन समस्या के रूप में पहचान की गई है।
- **उपकरणों की कमी**: संसाधनों की कमी या संसाधनों की खराब गुणवत्ता, अक्सर सबसे अच्छा शिक्षकों के प्रयास को भी कम से कम कर देती है, और गंभीरता से नए विचारों के कार्यान्वयन में बाधा खड़ी कर देती हैं। विकासशील देशों में शिक्षकों को अक्सर एक नवाचार की विफलता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, और तर्क दिया जाता है कि संदर्भ और स्थानीय परिस्थितियां कार्यान्वयन को कठिन बनाते हैं, यहां तक कि अच्छे शिक्षकों के लिए भी यही खा जाता है।

विशिष्ट कारकों के संदर्भ में पाठ्यक्रम परिवर्तन

Curriculum change in terms of Specific Factors

- **प्रभावशाली या मुखर व्यक्ति** (Influential or outspoken individuals): पहला कारक, बदलाव की शुरुआत में, अकादमिक स्टाफ द्वारा स्वीकार मजबूत नेतृत्व है। ऐसे नेतृत्व की प्रमुख विशेषता, पर्यावरण के भीतर का समर्थन कर रहे सैद्धांतिक शैक्षिक उद्देश्यों के पीछे, अन्य शैक्षणिक कर्मचारियों को आकर्षित करने की क्षमता है। दूसरा पहलू साझा करने और बदलाव की जरूरत है, एक बिंदु जो अक्सर वर्तमान उत्पादन और नियोक्ताओं द्वारा वांछित है। पाठयक्रम परिवर्तन की हद, चाहे व्यापक पैमाने पर हो या नाबालिग, एक तीसरा पहलू है। अंत में, क्योंकि कई अकादमिक स्टाफ एम्बेडेड शिक्षण और पेशेवर प्रथायें रखते है, विभागीय कर्मचारियों के लिए लचीलेपन की डिग्री को अंतिम कारक के रूप में देखा जाता है। शिक्षा शिष्टाचार (और उदासीनता) का कभी-कभी मतलब होता है कि मुखर व्यक्तियों का खण्डन नहीं मिलता है, तब भी जब ये गलत होते हैं। आदर्श रूप में वहाँ सूचित लोग होते हैं जो किसी भी प्रस्तावित पाठ्यक्रम परिवर्तन के लिए दोनों पक्षों में बहस कर रहे हैं, और हम सब, फलस्वरूप बहस के लिए बेहतर हैं।

- **वित्तीय दबाव**: जाहिर ही शक्तिशाली बजटीय बल हमारे निर्णय को प्रभावित कर रहे हैं। कक्षा आकार वित्तीय सख्तियों, जिनके तहत हम काम करते हैं का एक परिणाम हैं। छोटी कक्षायें बहुत औसत छात्र की हालत में सुधार ला सकती है, और वह कम से कम एक स्टाफ सदस्य के साथ एक व्यक्तिगत संबंध बनाने के लिए सक्षम होगा। लागत के दबाव, कर्मचारियों के अनुपात के अलावा अन्य मुद्दों को प्रभावित कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक विभाग या स्कूल कुछ सॉफ्टवेयर या एक साइट का लाइसेंस शायद छात्रों को न दे सके, और इसलिए व्याख्यान को हाथ की दूरी से ही सिखाने के लिए सक्षम होना पड़ेगा; इसी तरह, एक विभाग स्नातक इस्तेमाल के लिए अपने सबसे पुराने कंप्यूटिंग सुविधाओं का आवंटन कर सकता है। तब यह मुश्किल होगा सॉफ्टवेयर के नवीनतम संस्करण के बिना इसे चलाना, या वांछित जटिलता की परियोजना का काम आवंटित करना।
- **स्टाफिंग मुद्दे, काम के बोझ सहित** (Staffing issues, including workload): भले ही कर्मचारियों के पदों के लिए धन उपलब्ध हो, यह हमेशा संभव नहीं होता कि उन्हें भरा जा सके। यह संभावना है कि किसी शिक्षाविद को कम समय में डेटाबेस विषय, या परमाणु संरचना, या रिमोट सेंसिंग, या सिद्धांत पाठ्यक्रम को पढाने के लिए पूछा जाये, उस स्थिति में, क्योंकि एक सहयोगी ने इस्तीफा दे दिया है, या एक स्थिति में विज्ञापित तो किया गया है लेकिन भरा नहीं गया है। स्टाफ की कमी का मतलब हो सकता है कि विषयों की पेशकश की सीमा संकीर्ण होती चली जाये।
- **नियोक्ता और उद्योग के दृष्टिकोण** (Employer and industry viewpoints): व्यावसायिक निकाय, अंततः नियोक्ता और उद्योग की उम्मीदों को प्रतिबिंबित करते हैं, ये दबाव भी कभी-कभी सीधे लगाए गए हैं। सफलता या अन्यथा, ऊर्जा और समय पर भारी निर्भर है कि उद्योग जगत के प्रतिनिधि कार्य करने में सक्षम हैं। ज्यादा वास्तविक सबूत है कि नियोक्ताओं की, पाठ्यक्रम के बारे में मजबूत राय है, आमतौर पर हस्तातरणीय कौशल (जैसे संचार, सामाजिक, विश्लेषणात्मक, और महत्वपूर्ण सोच कौशल) पर अधिक जोर का अनुरोध है।
- **छात्र दृष्टिकोण**: छात्र अक्सर जोर देते हैं कि वे ग्राहक नहीं हैं; और वैसे भी, ग्राहक वे है जो रुपये और डॉलर खर्च करते है, और निर्णय को प्रभावित कर सकते हैं। इन विषयों के शिक्षण स्टाफ छात्रों के इस दृष्टिकोण की रक्षा

करने के लिए बाध्य महसूस करते हैं, जिन्होंने अपने उच्च विद्यालय के अन्य साथियों को अधिक सीखते देखा है। अंशकालिक छात्र जटिल मुद्दों को प्रस्तुत करते हैं। इन छात्रों को शाम की कक्षायें पसंद हैं। समय निर्धारण कठिनाइयां, किसी और चीज की संरचना में समझौता करने के लिए नेतृत्व और निर्णयों को प्रभावित कर सकते हैं। हालांकि, पूरे तौर पर, छात्र मांगों का पाठ्यक्रम पर एक सीमित प्रभाव दिखाई देता हैं।

- **छात्र क्षमतायें**: एक आदर्श दुनिया में, हमारे कार्यक्रम उच्चतम संभव क्षमता के स्नातकों को बनाने के लिए हमारी इच्छाओं से तय किये जाते हैं। और, क्या हम पर्याप्त मात्रा में सही कच्चे माल की सोर्सिंग के लिए सक्षम थे, शायद हम इस लक्ष्य को प्राप्त कर सकते है। दुर्भाग्य से, दोनों स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय छात्रों का कोटा भरने की अनिवार्यता का मतलब है कि कमजोर छात्र कभी-कभी हमारी उम्मीदों को पूरा नहीं करते।
- **शैक्षणिक तर्क, शैक्षणिक योग्यता** (Pedagogical argument, academic merit): कई परिवर्तनों का प्रस्ताव हैं क्योंकि ये निर्विवाद रूप से एक अच्छी बात हैं। कोई यह बहस कठिन मानेगा, उदाहरण के लिए, कि कोई विषय प्रयोगशाला कक्षाओं की शुरूआत से पहले व्याख्यान और ट्यूटोरियल पर पूरी तरह से आधारित था। कुछ निर्णयों के लिए, शैक्षिक योग्यता की प्रासंगिकता स्पष्ट नहीं है। एक उदाहरण जहाँ अध्यापन-शास्त्र (pedagogy) प्रासंगिक है, लेकिन केवल कुछ हद तक, कि कुछ विषयों को कोर या वैकल्पिक होना चाहिए; हम सभी को विवादों में शामिल किया गया है कि क्या एक विषय मौलिक या केवल महत्वपूर्ण है।
- **विश्वविद्यालय और सरकार विनियमन** (University and government regulation): विश्वविद्यालय प्रशासन संसाधनों के कुशल उपयोग के लिए मामले को तेजी देने लगा है। प्रस्तुत कार्यक्रमों की संख्या एक लंबे समय से बढ रही है, वहीं समापन कार्यक्रम असामान्य है, वहां आमतौर पर कम नामांकन विषयों को बंद करने का काफी दबाव होता है। इस तरह के दबाव में सामान्य रूप में शिक्षण के तरीके पर असर हो सकता है, और कई कुछ विशिष्ट विषय में व्यावहारिक कक्षाओं को दूर करने के लिए, या ट्यूटोरियल को पूरी तरह हटा देने का दबाव होता है। एक और तरीका है जिसमें विश्वविद्यालय दबाव डालते हैं, छात्र विषय के मूल्यांकन के संबंध में है। सरकार विनियमन और नीति में परिवर्तन एक और महत्वपूर्ण कारक हैं।

- राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रमाणन निकाय (National and international accreditation bodies): संरचनाओं पर सकारात्मक प्रभाव का एक अन्य स्रोत विभिन्न कार्यक्रम व्यावसायिक निकायों द्वारा तैयार संरचनाएं है। विभिन्न अन्य निकायों की डिग्री कार्यक्रमों की जांच, यहां तक कि विशेष पाठ्यक्रम विनिर्देशों के अभाव में, और ऐसा करने में एक शक्ति की तरह कार्य करते हैं जो कुछ दिशाओं में पाठ्यक्रम कि गाइड करते है।
- एकेडमिक फैशन: नामांकन बाजार प्रतिस्पर्धी है। हम अपने कार्यक्रमों के लिए छात्रों को आकर्षक करना चाहते हैं, और चाहते हैं कि सबसे अच्छे छात्र हमारी संस्था का चयन करें। सिद्धांत रूप में, हम अपने कार्यक्रमों का प्रतिष्ठा पर चुना जाना चाहते हैं: मजबूत अकादमिक, सबसे अप-टू-डेट, सबसे बड़ा उद्योग प्रासंगिकता, सर्वश्रेष्ठ शिक्षण, या जो कुछ भी विशेष सुविधा हमें विश्वास है कि तृतीयक शिक्षा के लिए हमारे विशेष दृष्टिकोण का वर्णन है। अभ्यास में, हम सभी जानते हैं कि छात्रों को कई अन्य कारकों पर विचार करना चाहिए: कितने विषय हैं पास करने के लिए, लचीलापन, परिसर में आवश्यक घंटे, अभिव्यक्ति रास्ते, कार पार्किंग की उपलब्धता, और आदि। अगर हमें शक है कि छात्र प्रतियोगी चुनते है, क्योंकि कहते हैं, वे वेब प्रौद्योगिकी पर एक कार्यक्रम की पेशकश करते है, हम भी ऐसा ही कर सकते हैं। अंत में, छात्र संख्या बढ़ाने के लिए हम उन आवेदकों को स्वीकार कर लेते हैं जिन्हें अन्य संस्थायें अस्वीकार कर देती हैं और किसी विषय सामग्री की कठिनाई में कटौती करना।

जनरल कारकों के संदर्भ में पाठ्यक्रम परिवर्तन

Curriculum change in terms of General Factors

- **सांस्कृतिक कारक:** सांस्कृतिक कारक में धर्म, लिंग, जातियां आदि इस तरह के पहलुओं, लेकिन यह भी कि व्यावसायिक संगठनों और अन्य सांस्कृतिक समूहों के विचार को भी शामिल करना चाहिए। एक पाठ्यक्रम सांस्कृतिक कारकों के दो सेट पर निर्भर करता है: स्कूल के के लिए, और समुदाय के लिए। चूंकि पाठ्यक्रम स्कूल द्वारा सरकारी मान्यता प्राप्त एक समूह की संस्कृति के पहलुओं का प्रतिनिधित्व करता है, प्राचार्य को स्वीकार किये विश्वासों और मानदंडों, दोनों स्कूल और समुदाय के लोगों के आचरण को शासित करने के बारे में पता होना चाहिए और लागू करने की प्रक्रिया के हिसाब से मार्गदर्शन करना चाहिए। यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण

है कि पाठ्यक्रम नहीं बल्कि समुदाय के उन लोगों के बाहर की धारणाओं से, समुदाय की जरूरतों को फिट करने के लिए विकसित किया जा रहा है।

- **राजनीतिक कारण:** राजनीतिक कारणों को अभिनव शिक्षा के कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण संकेतक के रूप में देखा जाता है, ये स्वीकृति या शैक्षिक सरकार की नीतियों की अस्वीकृति को निर्देशित कर सकते हैं। वे लक्ष्यों को निर्धारित करते हैं, सामग्री को परिभाषित करते हैं, शिक्षा के क्षेत्र में सीखने के अनुभव और मूल्यांकन रणनीतियां निर्धारित करते हैं, लेकिन यह भी कि पाठ्यक्रम सामग्री, कभी कभी कर्मियों की भर्ती, धन और परीक्षा प्रणाली निर्धारित करते हैं।
- **आर्थिक और तकनीकी कारक:** आर्थिक और तकनीकी कारक दोनों चिंता अनुकूलन और श्रम बाजार के सफल एकीकरण, क्रमशः उद्योग में प्रगति के लिए प्रशिक्षण के बारे में समकालीन समाज की बाध्यताओं को शिक्षा के अनुकूलन करते हैं। पाठ्यक्रम कार्यान्वयन से संबंधित आर्थिक आधार अक्सर प्रिंसिपल के प्रत्यक्ष नियंत्रण से बाहर होता है। इसका मतलब यह नहीं है कि उसकी इस क्षेत्र में कोई भूमिका नहीं है। इसके विपरीत, सबसे प्रभावी प्रिंसिपल अक्सर वो होते हैं जो आर्थिक बाधाओं और संभावित संसाधनों की एक स्पष्ट तस्वीर, राष्ट्रीय, राज्य और स्थानीय स्तर पर समझते हैं, और बाधाओं को कम करने और संसाधनों को भुनाने के लिए सक्षम हैं। वित्तीय संसाधनों ह्रासमान के इन दिनों में, प्रिंसिपल न केवल पाठ्यक्रम विकास और कार्यान्वयन में, लेकिन नवाचारों के लिए भुगतान करने के लिए मदद करने में उनके स्कूलों का नेतृत्व करने की उम्मीद कर रहे हैं।
- **संगठनात्मक कारक:** कई संगठनात्मक स्कूल के प्राकृतिक और निर्मित पर्यावरण से संबंधित कारक राज्य के नियमों और दिशा निर्देशों के अधीन हैं और प्रिंसिपल के तत्काल नियंत्रण में नहीं होते है। जब जगह और अन्य संसाधनों के आवंटन निर्णय लिए जा रहे होते हैं, तो स्कूल का विजन और दार्शनिक अभिविन्यास में व्यक्त सीख को बढ़ावा देना चाहिए।
- **मनोवैज्ञानिक और शैक्षणिक कारक:** मनोवैज्ञानिक और शैक्षणिक कारक प्रिंसिपल के लिए पाठ्यक्रम लागू करने में विचार करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण है क्योंकि ये मानव विचारों के साथ सौदा कर रहे होते हैं, और सभी परिवर्तन का अंततः अनुकूल होना इसमें शामिल लोगों की इच्छा पर

निर्भर करता है। इसका मतलब यह है कि वहाँ प्राचार्य, शिक्षकों, और स्कूल समुदाय के बीच एक उच्च स्तरीय विश्वास होना चाहिए। प्रधानाध्यापकों को उनके शिक्षकों के समय और प्रयास को अच्छी तरह पता करना चाहिए। उन्हें छात्रों का अच्छी तरह पता होना चाहिए और एक निश्चित सीमा तक, माता-पिता का भी। प्रधानाध्यापकों को न केवल महत्व और पाठ्यक्रम नवाचार की प्रासंगिकता को समझना चाहिए, लेकिन यह भी कि कैसे लोगों को शामिल परिवर्तन का जवाब देंगे। प्रिंसिपल प्रभावी शिक्षकों के लिए समर्थन और प्रोत्साहन प्रदान करते हैं और उन्हें समय पर आश्वस्त करते हैं जब उन्हें परिवर्तन को लागू करना अनिश्चित लग रहा है।

- पर्यावरणीय कारक: पर्यावरण के मुद्दे पाठ्यक्रम विकास प्रभावित करते हैं। विश्व जागरूकता और प्रदूषण समाप्त होने की ओर कार्रवाई पाठ्यक्रम विकास को प्रभावित करने के लिए जारी है। ठेठ प्राथमिक कक्षाओं में रीसाइक्लिंग और स्वस्थ पर्यावरण प्रथाओं के बारे में सिखाया जाना चाहिए। समय के साथ, लोग अपने आसपास और प्राकृतिक संसाधनों के प्रति असंवेदनशील हो गए हैं। इस आकाश, जमीन और समुद्र को प्रभावित किया है। अंतिम परिणाम है कि मानवता को इन विचारों से प्रतिकूल प्रभावित किया जा रहा है। औद्योगिक कचरे ने दुनिया प्रदूषित कर दिया है। उदाहरण के लिए, वायुमंडल में ओजोन परत है, जो सूर्य से हानिकारक विकिरण से हमें बचाता है, को समाप्त किया जा रहा है। लोग इस का निवारण करना चाहते हैं। ऐसा नहीं है कि शिक्षा के माध्यम से निवारण प्रभावित नहीं हो सकता है। पर्यावरण के लिए आवश्यक प्रभाव पर विचार को, पाठ्यक्रम डिजाइन में भविष्य की पीढ़ियों के अस्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए करना चाहिए। विज्ञान में उच्चतर शिक्षा पर्यावरण की डिग्री प्रदान करता है जैसे पर्यावरण डिग्री, जैव प्रौद्योगिकी, आदि
- कानूनी कारक: कानूनी कारक, मानक पाठ्यक्रम नवाचार के कार्यान्वयन में शामिल पहलुओं को एकीकृत व्यावसायिक नैतिकता कोड, शैक्षिक संस्थानों के विशिष्ट नियम के रूप में समन्वित करता है।

सामाजिक कारकों के संदर्भ में पाठ्यक्रम परिवर्तन
Curriculum change in terms of Social Factors

सौसायटी की अपने लक्ष्य और उद्देश्य से उम्मीद का पाठ्यक्रम को डिजाइन करते हुए विचार किया जाना चाहिए। यह भी कि स्कूल प्रणाली के उत्पाद को किस तरह दिखना चाहिए। पाठ्यक्रम डिजाइनरों को सामाजिक बातों को ध्यान में

रखना इसलिए भी आवश्यक है। अगर ऐसा नहीं होता है, तो पाठ्यक्रम अप्रासंगिक हो जाता है। पाठ्यक्रम सामग्री की डिजाइन और उसकी प्रस्तुति में समाज की संस्कृति को समायोजित करना चाहिए। तथापि, तथ्य यह है कि पाठ्यक्रम विषमताओं को बनाए रखने के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। एक पाठ्यक्रम महिला और बच्चों के खिलाफ पक्षपाती नहीं होना चाहिए क्योंकि यह शिक्षण सामग्री है और महिलाओं और लड़कियों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण को चित्रित कर सकता है। ऐसी संस्कृति का पाठ्यक्रम पर दोनों सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव संभव है। जिस समाज में आप रहते हैं उसमें शामिल सभी समूहों की संख्या पर विचार करना जरूरी है। ऐसा पेशेवर संगठनों, सांस्कृतिक समूहों और धार्मिक संगठनों के बारे में हो सकता है। सूची अंतहीन है। इन समूहों को पाठ्यक्रम डिजाइन पर अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए कहा जा सकता है। यह इसलिए है क्योंकि कोई भी पाठ्यक्रम हितधारकों की एक विस्तृत श्रृंखला के व्यापक परामर्श का परिणाम होता है।

- जनसंख्या वृद्धि
- जनसंख्या पैटर्न
- शहरीकरण
- प्राकृतिक संसाधनों की खपत

यह तर्क दिया जा सकता है कि एक नया पाठ्यक्रम नए इरादों की एक अभिव्यक्ति है। हालांकि, नवाचार और परिवर्तन के बीच भेद, चर्चा का एक विषय हो सकता है। एक नए पाठ्यक्रम की शुरुआत नवीनता और परिवर्तन की प्रक्रिया का तात्पर्य होता है। हम इस दावे को स्वीकार करते हैं, तो इसका मतलब है कि नवाचार परिवर्तन का एक वाहक है। शिक्षकों को अपने दैनिक कक्षा संगठन, छात्र शिक्षकों के साथ अपने रिश्तों को, और यहां तक कि उनके शिक्षक प्रशिक्षकों के रूप में खुद की दृष्टि बदलना चाहिए। यह शैक्षणिक मूल्यों का एक संशोधन माध्यम है जिसमें नवाचार मौलिक परिवर्तन को शामिल करने के लिए कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए, शिक्षक प्रशिक्षक नई सामग्री का उपयोग कर सकते हैं और वे इस नई सामग्री और दृष्टिकोण, जो शायद व्यवहार के रूप में मौलिक परिवर्तन कर सकता है, का प्रयोग, छोटे या कोई समझ के साथ नए तरीकों को अपनाने में कर सकते हैं।

प्रश्न (Questions)

1. अवधारणायें जो पाठ्यक्रम का विकास और समीक्षा निर्देशित करती है, का वर्णन करें।
2. पाठ्यक्रम मॉडल से परिभाषित क्षेत्रों का वर्णन करें।
3. पाठ्यक्रम डिजाइन आयामो की विशेषताओं का वर्णन करें।
4. सामग्री और छात्रों की जरूरतों के आधार पर सीखने को वर्गीकृत करें।
5. व्यापक श्रेणियों जो पाठ्यक्रम मॉडल का ध्यान केंद्रित करती है को परिभाषित कर वर्णन करें।
6. विषय केंद्रित डिजाइन के द्वारा आप क्या समझते हैं? चर्चा करें।
7. विषय केंद्रित डिजाइन की विशेषताओं का वर्णन।
8. विषय केंद्रित डिजाइन के विभिन्न उदाहरण क्या हैं? चर्चा करें।
9. विषय केंद्रित डिजाइन के विभिन्न प्रकार के नाम और उनके शक्तियों और कमजोरियों का उल्लेख करें।
10. शिक्षार्थी केंद्रित डिजाइन से आप क्या समझते हैं? चर्चा करे।
11. शिक्षार्थी केंद्रित डिजाइन के विभिन्न उदाहरण क्या हैं? चर्चा करें।
12. शिक्षार्थी केंद्रित डिजाइन के विभिन्न प्रकार के नाम और उनके शक्तियों और कमजोरियों का उल्लेख करें।
13. शिक्षार्थी केंद्रित डिजाइन की सिद्धांतों और विशेषताओं का वर्णन करें।
14. शिक्षार्थी केंद्रित दृष्टिकोण की दिशा में आवश्यक परिवर्तन पर चर्चा करें।
15. समस्या केंद्रित डिजाइन के विभिन्न उदाहरण क्या हैं? चर्चा करें।
16. समस्या केंद्रित डिजाइन के विभिन्न प्रकार के नाम और उनके शक्तियों और कमजोरियों का उल्लेख करें।
17. समस्या केंद्रित डिजाइन की सिद्धांतों और विशेषताओं का वर्णन करें।
18. बेहतर सीखने की दिशा में समस्या केंद्रित दृष्टिकोण के रवैये पर चर्चा करें।
19. शिक्षार्थी केंद्रित और पाठ्यक्रम केंद्रित अध्यापकों के बारे में तुलना और चर्चा करें।
20. पाठ्यक्रम विकास में आवश्यक घटक क्या हैं? चर्चा करें।
21. वर्णन करते हुए पाठ्यक्रम के विकास के लिए आवश्यक विचार पर चर्चा करें।
22. पाठ्यक्रम विकास घटकों पर चर्चा करें।

23. पाठ्यक्रम को डिजाइन करने के पैटर्न का वर्णन करें।
24. पाठ्यक्रम के विकास में कौन राष्ट्रीय पैनल पर हो सकता है?
25. पाठ्यक्रम डिजाइन और गैर केंद्रीय पैटर्न के फायदे और नुकसान पर चर्चा करें।
26. पाठ्यक्रम परिवर्तन क्या है? इसका क्या मतलब है? चर्चा करें।
27. पाठ्यक्रम को बदलने की जरूरत पर चर्चा करें।
28. कैसे पाठ्यक्रम परिवर्तन प्रभावी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सहायक हो सकता है?
29. पाठ्यक्रम परिवर्तन में क्या परिवर्तन संभव है?
30. पाठ्यक्रम परिवर्तन से जुड़े रणनीतियों का वर्णन करें।
31. योजना बनाने और पाठ्यक्रम परिवर्तन को क्रियान्वित कौन से प्रक्रिया कारक कर रहे हैं? वर्णन करें।
32. पाठ्यक्रम परिवर्तन प्रभावित करने वाले कारकों पर चर्चा करें।
33. शिक्षकों के मामले में पाठ्यक्रम परिवर्तन के प्रभाव को चर्चा करें।
34. कैसे मनोवैज्ञानिक और शैक्षणिक कारक पाठ्यक्रम परिवर्तन को प्रभावित कर सकते हैं? चर्चा करें।
35. जिस संदर्भ में एक पाठ्यक्रम तैयार किया है और कार्यान्वित किया जाता है के घटकों पर चर्चा करें।
36. अपने देश में शिक्षा व्यवस्था पर विचार करें। क्या पाठ्यक्रम के नजरिए पर आप कह सकते हैं कि आपके सिस्टम किस दृष्टिकोण पर आधारित है?
37. अपने देश के पाठ्यक्रम सामग्री, तरीकों, उद्देश्य के मूल्यांकन को कौन तय करता है?
38. एक चित्र बनाएं जोकि एक पाठ्यक्रम में शामिल तत्वों / घटक के बीच कनेक्शन को दिखाता हो।
39. क्या आपको लगता है कि syllabuses और पाठ्यपुस्तकें अपने स्कूलों में इस्तेमाल पर्याप्त रूप से अपने राष्ट्रीय विचारधारा और अपने समाज की मांगों को प्रतिबिंबित करते हैं?
40. पाठ्यक्रम डिजाइन को प्रभावित कारकों का विवरण दें। व्याख्या करें इन कारकों में से किन्हीं तीन की जो पाठ्यक्रम को प्रभावित करते हैं।
41. एक अभ्यास शिक्षक के रूप में, जो मॉडल या पाठ्यक्रम डिजाइन आप अपने स्कूल के पाठ्यक्रम में पढ़ाते हैं किस राष्ट्रीय मॉडल के आधार पर

बताया गया था? कैसे मोडल प्रभावित करता है जो भी आप वास्तव में करना में चाहते हो?

42. कार्य शिक्षिका की प्रक्रिया के चरणों की व्याख्या करें जिनकी आप या एक पाठ्यक्रम को डिजाइन पालन करते हुए आवश्यकता होती है।

43. जिस तरह से आपने पाठ्यक्रम बनाया है पर र शिक्षक की भागीदारी की डिग्री को दर्शायें।

44. मान लें कि आपका स्कूल शीघ्र ही कम्प्यूटर की मदद से शिक्षा को लागू करेगा। आप इस नवाचार के किस पहलू के रूप में पहचानेंगे?

25. इस अध्याय में कई नियम और परिवर्तन और नवाचारों के कार्यान्वयन से संबंधित परिभाषाओं को प्रस्तुत किया है। बल्कि इन सभी को याद करने की कोशिश की तुलना में, एक विशेष परिवर्तन जो आप लागू करना चाहते हैं पर चर्चा करें

46. नवाचार सफल हो सकता है अगर वे प्रभावी ढंग से योजना बनाई गई है। तत्व या संसाधन सुनिश्चित करने के लिए किस क्रम की जरूरत है?

47. कोई महत्वपूर्ण बदलाव को लागू करने में शामिल बुनियादी कदम क्या है?

For enriching Knowledge, following books may be helpful:

- Agarwal, V. & Bhatnager, R. P (1997). Educational Administration. Meerut: R. Lall Book Depot.
- Aggarwal, J. C. (1967). Education Administration, School Organisation and Super vision. Delhi: Arya Book Depot.
- Aggarwal, J. C. (2003). Handbook of Curriculum and Instruction. Delhi: Doaba Book House.
- Aggarwal J. C. Curriculum Development 2005: Towards Learning without Burden and Quality of Education - An Evaluation.
- Awad, E. M., Ghaziri, H. M. Knowledge Management. PHI Learning
- Bhatia, K. K. & Chadda D. P. C (1980). Modern Indian Education and its problems. Ludhiana: Prakash Brothers
- Chopra, R. K. (1993). Status of Teacher in India. NCERT
- Gaind, D.N. and Sharma, R. P. Education Theories and Modern trends.
- Goodland, J. (1979). Curriculum Enquiry the Study of Curriculum Practices. New York: McGraw Hill
- Hass, G. (1991). Curriculum Planning, A new Approach. Boston: Allyn Bacon.
- Hooer, R. (1971). Curriculum: Context, Design and Development, New York: Longmans.
- Lawten, D. (1986). School Curriculum Planning, London: Holders and Stayhton.
- Menon, T. K. N. & Kaul, G. N. (1954). Experiments in Teacher Training, New Delhi: Sterling Publishers.
- Nicholls, H. (1978). Developing Curriculum- A Practical Guide, London: George Aleen and Unwin.
- NCTE (2009). National Curricular Framework for Teacher Education. NCERT, New Delhi.
- Sharma, C. (1997). A critical theory of Indian philosophy. Delhi: Motilal Banarsidass Publishers. Pp415.
- Sharma, R.A. (2005). Philosophical problems of education. Meerut: Loyal book depot.
- NCERT (2005). National Curricular Framework for School Education. NCERT, New Delhi.

- Payne, D. A. (1973). Curriculum Coalition: Commentaries on Purpose, Process and Product. Boston: D.C. Heath.
- Reddy, R. B. (2007). Knowledge Management
- Srivastava S. H. Curriculum and Methods of Teaching
- Singh, R. P. (1990). Studies in Teacher Education. New Delhi: Bahri Publication.
- Singh, L. C. and Sharma, P. C. (1995). Teacher Education and the Teacher. New Delhi: Vikas Publishing House.
- Siddiqi, M. A. (1993). In Service Education of Teachers. New Delhi: NCERT.
- Yadav, K., Khandaik. H. and Mathur, A. Innovation in Indian Education System.

PT. SITARAM SHASTRI B.Ed. TRAINING COLLEGE
LIBRARY
Acc. No. ....
BHIWANI

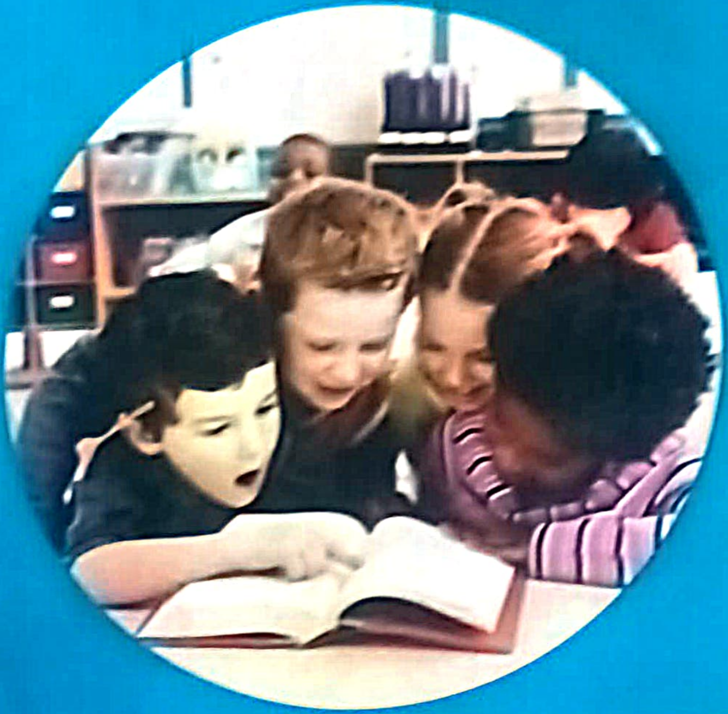

VIJAYA PUBLICATIONS

Educational Publishers

Books Market, Ludhiana-141 [illegible]

Ph. : 0161-2726190

Mobile : 9814067258, 977936[illegible]

Email : vijayapublication@yah[illegible].in

http://www.facebook.com/Vijaya Publications Ludhiana

ISBN 978-93-84004-79-8

9 789384 004798